भोगेगा अपना किया रे

(जैसी करनी वैसी भरनी)

प्रकाशक व मुद्रक :-
राष्ट्रीय समाज सेवा समिति के सर्व सदस्य
(यह समीति पूर्ण रूप से धार्मिक तथा गैर-राजनीतिक संस्था है।)
पुस्तक संबंधी किसी प्रकार की जानकारी के लिए
सम्पर्क सूत्र :- 09992373237, 09416296541,
09416296397, 09813844747

जीव हमारी जाति है, मानव धर्म हमारा।
हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई धर्म नहीं कोई न्यारा।।

--: विषय सूची :-- पृष्ठ

I. मानव समाज से निवेदन - I
II. भक्ति करना क्यों अनिवार्य है? - I
III. हरियाणा की जनता से विशेष निवेदन - VIII
IV. परमात्मा के कौन-से नाम से मोक्ष संभव है? - XII

1. भोगेगा अपना किया रे - 1
2. महर्षि दयानंद का वेद विरूद्ध आध्यात्मिक ज्ञान - 2
3. डीघल गांव में मौत का कहर - 6
4. बाघपुर गांव में मौत का ताण्डव - 12
5. बाघपुर में 13 वीं क्रिया से पहले दूसरी जवान मौत - 12
6. सतलोक आश्रम करौंथा के आसपास गांव के सभी व्यक्ति बुरे नहीं - 17
7. डीघल गांव के तथा अन्य सर्व भक्त सुखी - 18
8. करौंथा गांव में किए का फल मिला - 18
9. गांव बरहाना में मौत का कहर - 21
10. उस क्षेत्र को किसने क्या दिया? - 22
11. आश्रम से चोरी करने वाले पुलिसवाले का सर्वनाश - 22
12. श्री कृष्ण जी मथुरा त्यागकर द्वारिका में बसे - 23
13. भूपेन्द्र नाम से हुई घृणा - 24
14. आर्यसमाजियों का हथियार उन्हीं पर चला - 24
15. मुख्यमंत्री भूपेन्द्र सिंह का सुदर्शन चक्र उसी पर चला- 26
16. आर्यसमाजी आचार्यों के पाप का घड़ा भर गया - 27
17. भ्रष्ट जजों का बुरा इतिहास - 28
18. महर्षि दयानंद के पाप का घड़ा भरा, भुगत कर मरा - 28
19. आर्यसमाजियों ने माना परमात्मा के अवतार हैं - 28
20. संत घीसा दास जी को सताने की कथा - 31
21. आम आर्यसमाजी बुरे नहीं - 32
22. संत गरीबदास जी को सताने का फल - 33
23. शेखतकी पीर ने अपना किया भोगा - 36
24. महर्षि दयानंद का अज्ञान - 39

25. महर्षि दयानंद जी का भूगोल-खगोल का ज्ञान - 42
26. महर्षि दयानंद व्यसन करता था - 44
27. शास्त्रानुकूल साधना से हुए भक्तों को लाभ - 47
- डा. ओमप्रकाश (C.M.O.) को जीवन दान - 47
- डा. भक्तमति सुशीला की आँख ठीक करना - 50
- डा. जयनारायण चौधरी की बेटी को जीवनदान - 50
- भक्त रामकुमार (Ex.Headmaster M.A.B.ED.) के परिवार को जीवन दान - 52
- भक्त बहीद् खाँ की आत्मकथा - 56
- भक्त दीपक दास के परिवार की आत्म कथा - 57
- अनहोनी की परमेश्वर ने - 61
- जीवन दाता अवतार - 63
- प्रभु प्यासे भक्त बसंत सिंह सैनी को मार्ग मिलना - 66
28. परमात्मा का अवतार - 72
29. अमेरिका की भविष्यवक्ता फ्लोरेंस की महत्वपूर्ण भविष्यवाणी - 72
30. भाई बाले वाली जन्म साखी में प्रमाण - 75
31. एक महापुरूष के विषय में जयगुरुदेव की भविष्यवाणी - 81
32. भक्ति नाश का कारण - 83
33. शास्त्रों के आधार से पूर्ण संत तारणहार की पहचान - 88
34. तारणहार परम सन्त की अन्य पहचान - 90
35. परमेश्वर कबीर जी द्वारा अवतार धारण करने की भविष्यवाणी - 91
36. कलयुग का 5505 वर्ष कौन से सन् में पूरा होता है - 103
37. परमेश्वर कबीर जी द्वारा अवतार धारण का समय - 103
38. आओ जानें कलयुग कितना बीत चुका है - 105
39. उसी दिव्य महापुरूष के विषय में नास्त्रेदमस की भविष्यवाणी - 108

40. नास्त्रेदमस के समर्थन में अन्य भविष्यवक्ताओं की भविष्यवाणीयाँ - 115
41. संत रामपाल दास जी महाराज का संक्षिप्त परिचय - 118
42. झूठे मुकदमें - 125
- जज श्री सुशील कुमार गुप्ता का भ्रष्टाचार - 125
- आश्रम की जमीन का झूठा मुकदमा - 135
- आर्यसमाजियों को रिश्वत लेकर बरी किया - 141
43. हमारा उद्देश्य महर्षि दयानंद का अपमान करना नहीं है- 148
44. महर्षि दयानंद के अज्ञान व दुर्व्यसन का प्रमाण - 148
45. महर्षि दयानंद तम्बाकू खाता था, सूंघता था, का प्रमाण- 148
46. महर्षि दयानंद को श्रीमद्भगवत गीता का भी ज्ञान नहीं था - 149
47. महर्षि दयानंद भांग पीता था, का प्रमाण - 150
48. महर्षि दयानंद का स्वतंत्रता संग्राम में कोई योगदान नहीं था - 151
49. महर्षि दयानंद सन् 1877 तक हुक्का पीता था - 152
50. महर्षि दयानंद की दुर्गति से सन् 1883 में मृत्यु - 154
51. महर्षि दयानंद की दुर्गति का कारण - 159
52. नाम जाप से मोक्ष होता है या नहीं? - 163
53. गांव बरहाना में करौंथा काण्ड के पश्चात् मौत के कहर के शिकार हुए नौजवानों की सूची - 165
54. गांव करौंथा में मौत का कहर - शेष - 166

मानव समाज से निवेदन

आप जी से निवेदन है कि इस पुस्तक के एक-२ अक्षर को परमात्मा का संदेश मानकर पढ़ें जो हम संदेशवाहकों द्वारा आप पुण्यात्माओं तक भेजा गया है।

''भक्ति करना क्यों अनिवार्य है?''

कबीर, रामनाम की लूट है, लूटि जा तो लूट।
पीछै फिर पछताएगा, प्राण जहांगे छूट।।
काया तेरी है नहीं, माया कहां से होय।
भक्ति करो भगवान की, जीवन है दिन दोय।।
राम सुमरले सुकर्म करले, कौन जानै कल की, खबर नहीं एक पल की।
कबीर, राम रटत निर्धन भला, टूटी घर की छान।
वो सुंदर महल किस काम के, जहां भक्ति नहीं भगवान।।

परमेश्वर ने मानव को अन्य प्राणियों से भिन्न शरीर दिया है, विशेष बुद्धि दी है और विशेष आहार भी दिया है। इसलिए इसका कार्य भी भिन्न है। आत्मा के ऊपर जो स्थूल शरीर है। इसको आध्यात्मिक भाषा में वस्त्र कहते हैं। जैसे श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 2 श्लोक 22 में कहा है कि जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर नए वस्त्र ग्रहण कर लेता है। ऐसे ही जीवात्मा एक शरीर छोड़कर दूसरे प्राणियों का या उसी प्राणी का शरीर धारण कर लेती है। श्रीमद्भगवत गीता अनुसार ही हम विचार करें कि जिन प्राणियों को मानव शरीर प्राप्त है, (यह एक पोशाक है) वे सर्व इस पोशाक (मानव शरीर) वाले विद्यार्थी हैं। विद्यार्थी यदि अपना कर्त्तव्य भूलकर अन्य खेल-कूद या सिनेमा देखने में या शराब, तम्बाकू आदि का सेवन करके अपना विद्यार्थी जीवन नष्ट करता है तो वह बाद में आजीवन दुःखी रहता है।

★ एक व्यक्ति एक सड़क पर मिट्टी डालने की मजदूरी कर रहा था। उसकी पत्नी भी वहीं मजदूरी कर रही थी। उनके बच्चे वहीं वृक्ष के नीचे जमीन पर खेल रहे थे। सड़क महकमें का बड़ा अधिकारी (एक्सीयन) सड़क के कार्य का निरीक्षण करने के लिए सरकारी गाड़ी में बैठकर आया। जब वह चला गया तब वह मजदूर कहने लगा कि यह XEN मेरा सहपाठी (Classfellow) था। मेरी किस्मत फूट गई, मैं नहीं पढ़ा। घर से स्कूल के लिए जाता था। स्कूल में थैला रखकर बाहर एक अन्य साथी के साथ वृक्षों पर चढ़-उतर कर खेलता रहता था। धुम्रपान का भी आदी हो गया। बार-बार परीक्षा में फेल हो जाने के कारण घरवालों ने विद्यालय छुड़ा दिया। उसके पश्चात् विवाह हुआ और मजदूरी कर रहा हूँ। मेरे बच्चे वृक्ष के नीचे गर्मी में जमीन पर पड़े हैं। इस अधिकारी XEN (Executive Engineer) के बच्चे शहर में वातानुकूल कक्षों

में रहते हैं। यह स्वयं सरकारी गाड़ी में चलता है। यदि मैं पढ़ लेता तो आज मैं भी इसी प्रकार सुखी होता। अब मुझे वो गए दिन बहुत सता रहे हैं। कई बार तो रोता हूँ कि मैंने वह समय व्यर्थ नहीं करना चाहिए था। पाठकों से निवेदन है जैसे वह व्यक्ति पछता रहा है कि यदि पढ़ लेता तो मैं भी, मेरे बच्चे भी सुखी होते। इसी प्रकार उन मानव शरीर रूपी पोषाक वाले प्राणियों को गधे, कुत्ते बनकर पछताना पड़ेगा। फिर कुछ नहीं बनेगा। परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि :-

आच्छे दिन पाच्छै गए, गुरू से किया ना हेत।
अब पछतावा क्या करै, जब चिड़िया चुग गई खेत।।

भावार्थ :- जो व्यक्ति समय रहते परमात्मा की भक्ति नहीं करते वे ऐसे पछताऐंगे। जैसे किसान अपनी फसल की रखवाली न करके बाजरे की फसल को चिड़िया आदि पक्षियों द्वारा नष्ट करने के बाद पछताता है। इसी प्रकार गुरु से नाम लेकर भक्ति न करने वाला पछताता है।

परमेश्वर कबीर जी के परम भक्त गरीबदास जी ने भी कहा है कि :-

यह संसार समझदा नाहीं, कहंदा शाम दोपहरे नूं।
गरीबदास यह वक्त जात है, रोवोगे इस पहरे नूं।।

भावार्थ है कि जब तक मानव सत्संग नहीं सुनता, तब तक कष्ट पर कष्ट उठाता रहता है। उसको पता नहीं चलता कि कष्ट किस कारण से हो रहा है और हल्के कष्ट को ही सुख मानकर संतोष कर लेता है। उदाहरण के लिए:- एक व्यक्ति के तीन पुत्र थे। कुछ दिन उपरान्त एक की मृत्यु हो गई। वह बहुत व्याकुल था, न खाना खा रहा था, केवल रो रहा था। नगर के व्यक्ति शोक व्यक्त करने के लिए आ रहे थे। उनमें एक ऐसा व्यक्ति था जिसका एक ही पुत्र था, वही परमात्मा को प्यारा हो चुका था। सांत्वना देने वालों ने बताया कि भाई देख इस भाई का एक ही पुत्र था। वह भी मर गया। इसने भी संतोष कर लिया, आप भी कुछ हिम्मत करो। यह सुनकर उस व्यक्ति को कुछ राहत मिली तथा मन में विचार किया कि हे परमात्मा! इससे तो मैं ही ठीक हूँ। मेरे दो पुत्र तो जीवित हैं। तब उसने कुछ खाना खाया तथा सामान्य हुआ। विचार करने की बात है कि अधिक दुःखी को देखकर हम अपने कम दुःख को सुख मान लेते हैं। वह सुख नहीं दुःख ही है। क्या उस व्यक्ति का पुत्र जीवित हो गया? नहीं। केवल अपने से अधिक दुःखी को देखकर राहत मान ली। दुःख ज्यों का त्यों ही है। इसलिए सन्त गरीबदास जी ने कहा है कि यह संसार सत्संग को न समझ कर दोपहर को ज्येष्ठ मास की गर्मी (जो दिन के 12 बजे के आस-पास होती हैं उसी को) शाम (सूर्य अस्त होने के समय को शाम कहते हैं। उस समय गर्मी कम हो जाती है, ठण्डक

होती है।) कह रहा है अर्थात् दोपहर की गर्मी शाम कहने का तात्पर्य यह है कि गलती से दुःख को ही सुख मान रहा है। यदि भक्ति नहीं करोगे तो अगले जन्म में कुत्ते के शरीर को प्राप्त करके रोया करोगे। यह मानव जीवन का वक्त (समय) हाथ से छूट जाने के पश्चात् इस पहरे (मानव जन्म के समय को) को याद करके रोया करोगे। जैसे रात्रि के समय कुत्ते ऊपर आकाश की और मुंह करके रोते हैं। उनको मानव जीवन का समय (पहर) याद आता है, परन्तु अब क्या बने। यह मनुष्य शरीर रहते-रहते ही कुछ करना था।

ठीक इसी प्रकार मानव शरीर धारी (विद्यार्थी) भक्ति रूपी (पढ़ाई) न करके कोठी-बंगले बनाने, शराब, तम्बाकू का सेवन करने तथा विवाह आदि में फोकट शान बनाने में अपना जीवन नष्ट करता है तो वह मृत्यु उपरांत बहुत कष्ट उठाता है। पुनः मानव शरीर (स्त्री तथा पुरूष) शीघ्र प्राप्त नहीं होता। सूक्ष्म वेद में लिखा है :-

फिर पीछे तू पशूवा कीजै, दीजै बैल बनाय।
चार पहर जंगल में डोलै, तो नहीं उदर भराय।।
सिर पर सींग दिए मन बोरे, दुम से मच्छर उडाय।
कांधै जूवा, जोतै कूवा, जौवों का भुस खाय।।
फिर पीछै तू खर (गधा) कीजैगा, कुरड़ी चरने जाय।
टूटी कमर पजावै चढ़ै, तेरा कागा मांस गिलाय।।

भावार्थ है कि जो भक्ति नहीं करता, वह पशु के शरीरों को प्राप्त करता है। बैल के शरीर को प्राप्त करके कितना कष्ट उठाता है। जंगल में हल चला रहा होगा, भूख लगी होगी। पास में भोजन (हरी-हरी घास) होगा परंतु खा नहीं सकेगा क्योंकि हाली अपना कार्य पूरा करवाकर ही शाम को घर लाकर ही चारा खिलाएगा। इसी तरह प्यास लगी होगी। बोलकर नहीं बता सकेगा। समय पर सुबह, दोपहर तथा शाम को ही पानी पीने को मिलेगा। मानुष शरीर में जब चाहे भोजन खा लेते हैं। प्यास लगते ही जल पी लेते हैं। गर्मी तथा मच्छरों से बचने के लिए पंखे, मच्छरदानी आदि का प्रयोग कर लेते हैं। परंतु बैल बनने के पश्चात् सिर पर सींग तथा एक दुम (पूंछ) होगी। उसका पंखा बनाओ, चाहे ऑल आऊट बनाओ, यह दुर्गति होगी। इसके पश्चात् गधे का शरीर मिलेगा। उसमें कितने कष्ट उठाएगा।

★ एक प्रश्न उठता है कि कुछ भोले व्यक्ति कहते हैं कि भविष्य में क्या होगा, किसने देखा है? उनसे निवेदन है कि जिन महापुरूषों ने देखा है, उन्होंने ही बताया है। उदाहरण के लिए जैसे बच्चों को माता-पिता, बुद्धिमान व्यक्ति या कोई रिश्तेदार बताए कि बेटा चोरी मत करना, चोर को पुलिस पकड़ ले जाती है। पुलिस पहले पिटाई करती है, फिर न्यायालय में पेश कर देती है

और फिर जेल में कष्ट उठाता है। यदि कोई बच्चा यह कहे कि किसने देखा है, क्या पता क्या होता है? उसी प्रकार जिन महापुरूषों ने परमात्मा को प्राप्त किया, उसका विधान जाना। उन्होंने बताया कि जो सत्य है, उस पर अमल करके कष्ट से बचना चाहिए। जो कहते हैं कि किसने देखा है कि गधा बन जाता है? वह तो बच्चा है। फिर यह भी कहते हैं कि देखा जाएगा। उनसे प्रार्थना है कि गधा-बैल बनने के पश्चात् आप क्या देखोगे? फिर तो कुम्हार या हाली देखेगा, कमर पर मिट्टी का 40 कि.ग्रा. का थैला या हल में जोतकर सांटे (डंडे) मारेगा। देखना है तो पहले देख। छोड़ बुराई, भज भगवान, आजा बरवाला जिला. हिसार (प्रांत-हरियाणा) में अपना तथा अपने परिवार का कल्याण करा। यह मानव जन्म का स्वर्ण अवसर बार-बार हाथ नहीं आता।

★ एक भक्त ने बताया कि मैंने अपनी बुआ के लड़के को बहुत समझाया कि नाम ले लो। वह 20 वर्ष की आयु का था। उसने कहा बूढ़ा होकर नाम लूँगा। अभी तो खेलने-खाने के दिन हैं। एक महीने के पश्चात् वह अपने खेत में ट्यूबवैल के कुऐं में डूबकर मर गया।

★ एक P.P. Goyal नाम का चीफ इंजीनियर सिंचाई विभाग का बहुत ही क्रूर तथा भ्रष्ट व्यक्ति था। सड़क दुर्घटना में कुत्ते वाली मौत मरा। रात्रि के 12 बजे दुर्घटना हुई थी। कार ऐसे गड्ढ़े में गिरी किसी को पता नहीं चला कि कोई दुर्घटना हुई भी है कि नहीं। उसकी गर्दन टूट गई, पेट फट गया। ड्राईवर तथा वह दोनों ही सारी रात चिल्ला-चिल्लाकर मरे, कोई संभालने वाला नहीं था।

★ रोहतक का रहने वाला एक जज मीगलानी तथा उसका भाई फाइनेंस का कार्य करता था। दोनों ही कार में बैठकर कुछ बची हुई हवन सामग्री तथा राख को नहर में जल प्रवाह करने गए थे जो हवन एक नकली गुरू द्वारा घर में सुख-शांति बनाए रखने के लिए किया गया था। ड्राईवर ने बताया कि हवन की राख को जल प्रवाह के उद्देश्य से ज्यों ही J.L.N. कैनाल में डाला, वह राख नहर की ढ़लान में गिर गई। जल में नहीं गिरी। उसको जल में डालने के लिए नहर की ढ़लान से सरकाने के लिए एक भाई पटरी पर खड़ा होकर दूसरे ने उसका हाथ पकड़कर ढ़लान (Slope) पर पैर रखा। उसी समय उसका संतुलन बिगड़ गया। दोनों भाई नहर में गिर गए। अपनी जीवन की रक्षा के लिए दोनों चिल्ला रहे थे। ड्राईवर ने बताया कि उनकी वह जीवन रक्षा की चीख जब कभी याद आती है तो दिल बैठने लगता है।

विचार करें:- कहां गई वह शान तथा धन। हे मानव! विचार कर, नकली गुरूओं से कुछ भी लाभ होने वाला नहीं है। संत रामपाल दास जी के पास वह शास्त्रानुकूल भक्ति है जिससे जीवन रक्षा तथा पूर्ण मोक्ष दोनों ही होते हैं। कृपया पढ़ें इसी पुस्तक के पृष्ठ 47 पर। (शास्त्रानुकूल साधना से हुए भक्तों

को लाभ) फाईनेंसर (ब्याज लेकर रूपये देने वाला) तथा अधिकारी या जज जो भ्रष्टाचार करने वाला तथा शास्त्रविरूद्ध साधना करने वाला व्यक्ति अपना अनमोल मानव जन्म नष्ट करके पशु के शरीर को प्राप्त होता है। अपनी जान कितनी प्यारी लगती है? जब रिश्वत लेकर अन्य को सजा सुनाते हैं, उस समय भगवान का डर नहीं रहता। हमारा उद्देश्य किसी का अपमान करना नहीं है अपितु मानव को परमात्मा के विधान से परिचित कराना है ताकि वह अपने कर्म खराब न करे। स्वयं भी अच्छा जीवन जीए तथा दुर्बलों को भी न्याय दे तथा दुःखी करके पाप का भागी न बने।

★ हिसार शहर (हरियाणा प्रांत) में दोनों पति-पत्नी डॉक्टर थे। मंहगी फीस तथा दवाईयों के कारण धन अनाप सनाप इकट्ठा कर लिया था। एक लड़का-एक लड़की थी, उनके दोनों बच्चे अमेरिका में डॉक्टर लगे थे। दोनों ने एक शर्मनाक कार्य कर दिया। जिस कारण से दोनों माता-पिता ने आत्महत्या कर ली।

★ पुलिस महकमें का D.I.G. सड़क दुर्घटना में मारा गया। प्रत्यक्ष दृष्टाओं ने बताया कि उस समय की चिल्लाहट हृदय विदारक थी। कुछ समय पहले वह एक गरीब परिवार को धमका रहा था जो उसको उसके कार्यालय में अपना दुःख बताने गए थे कि नीचे के अधिकारी हमारी नहीं सुन रहे। वह उल्टा उन दीन-दुखियों को कह रहा था, तुम्हारी यहां आने की हिम्मत कैसे पड़ गई? थाने में जाओ।

विचार करें :- यदि थाने वाले न्याय कर देते तो D.I.G. के पास कौन जाए? अहंकार में तथा भ्रष्टाचार के कारण इंसान इतना अंधा हो चुका है कि यह भगवान का विधान ही भूल गया। उसी को याद दिलाने के लिए संत रामपाल दास जी महाराज को परमात्मा ने भेजा है। (पढ़ें इसी पुस्तक के पृष्ठ 72 से 124 तक) वहीं D.I.G. दुर्घटना होने पर भगवान से जीवन की भीख मांग रहा था। परंतु व्यर्थ रही क्योंकि परमात्मा का विधान है कि :-

कबीर, दुख में सुमिरन सब करें, सुख में करे नहीं कोय।
जे सुख में सुमिरन करें, तो दुख काहे को होय।।
कबीर, सुख में सुमिरन किया नहीं, दुख में करते याद।
कहैं कबीर ता दास की, कौन सुने फरियाद।।

भावार्थ है कि आपत्ति आने पर तो इंसान परमात्मा को याद करता है, सुख में परमात्मा की भक्ति सुमिरन नहीं करता। यदि सुख समय में भी परमात्मा की भक्ति करे तो उस भक्त को दुख नहीं होता क्योंकि भक्तों को संतजन परमात्मा के विधान से परिचित कराते हैं, जिस कारण से भक्त पाप का भागी नहीं बनता। दुःख पाप के कारण होता है। जब तक पूर्व जन्म के

किए पुण्य प्राणी के साथ रहते हैं, तब तक वह दुःखी नहीं होता चाहे कितने ही पापकर्म करता रहे। वे पाप कर्म संग्रह होते रहते हैं। जब पुण्य समाप्त हो जाते हैं, फिर पाप कर्म भोगने का दौर चलता है। तब वह व्यक्ति परमात्मा को पुकारता है। परमात्मा उसी की पुकार सुनता है जो सुख के समय में परमात्मा से डर कर कार्य करता हो तथा भक्ति शास्त्रानुकूल करता हो। शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचरण (मनमानी भक्ति) करने वाले को भी लाभ परमात्मा से नहीं मिलता। (प्रमाणः- श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में) उपरोक्त वाणी का यही सारांश है कि यदि सुख में भक्ति-सुमिरन करेंगे तो परमात्मा भक्त को दुःखी नहीं होने देता। जो केवल दुःख में परमात्मा को याद करते हैं, सुख में भक्ति नहीं करते, उनकी अर्जी परमात्मा नहीं सुनता।

उस व्यक्ति के लिए रास्ता है कि वह पूर्ण संत की शरण में जाये। दीक्षा लेकर आजीवन मर्यादा में रहकर भक्ति करे। यहां पर यह भी स्पष्ट कर देना अनिवार्य समझते हैं कि एक भक्त ने उपरोक्त बातों से प्रेरणा पाकर विचार किया कि पूर्ण संत तो वह हो सकता है जिस के अधिक शिष्य हों। यह सोचकर सन् 1998 में राधास्वामी पंथ ब्यास (पंजाब) से नाम-दीक्षा ले ली। उसके पश्चात् उसको बहुत हानि हुई। एक लड़का था, वह भी मृत्यु को प्राप्त हुआ। व्यवसाय में घना घाटा हो गया। रोड़ पर आ गया, नास्तिक बन गया। कुछेक भक्तों ने बताया कि आप गलत संत से दीक्षा लिए हैं। आप संत रामपाल दास जी महाराज से दीक्षा लें, सर्व सुख होगा। फिर उसने यहां सतलोक आश्रम बरवाला में आकर संत रामपाल दास जी महाराज से दीक्षा ली। अब उसको पूर्ण संत की पहचान हुई और अपनी बेवकूफी पर पछता रहा है कि मैंने किस आधार से एक अज्ञानी संत को पूर्ण गुरू माना था।

★ एक धनी व्यक्ति आयु 55 वर्ष एक मॉर्केट का निमार्ण कर रहा था। कह रहा था कि इसमें 200 दुकानें बन रहीं हैं, इतनी ही ऊपर बनाऊंगा। मुझे महीने के 30 लाख रूपये मिला करेंगे, यह बात सन् 1998 की है। निर्माण के दौरान मजदूरों को पेमैंट करके वहीं निर्माण स्थल पर नहाने लग गया। गर्मी का मौसम था। मजदूर अपने पैसे गिन रहे थे। उसी समय उस माया के पुजारी को दिल का दौरा पड़ा। उसी समय मृत्यु को प्राप्त हुआ। सिर पर रख ले जा 30 लाख रूपये की महीने की कमाई (Income)। आगे क्या होगा? परमात्मा का विधान पूर्व में बता आए हैं कि इस माया के पुजारी को एक भक्त समझाया करता कि सेठ जी भक्ति भी किया करो। वह कहता था कि भक्ति बहुत करता हूँ। माता का पुजारी हूँ। सर्व सुख प्राप्त हैं। भक्त ने समझाया कि पूर्ण परमात्मा की भक्ति से आवश्यक धन तथा पूर्ण मोक्ष दोनों मिलते हैं। वह भक्ति संत रामपाल दास जी महाराज के पास है। आप दीक्षा ले लो।

परंतु वह अपनी ही साधना को अच्छी मानकर माया की धुन में बेसब्रा होकर लगा था। माया तथा काया (मानव शरीर) दोनों ही छोड़कर चला गया। आगे क्या बनेगा? = गधा, कुत्ता, सूअर, गधी, कुत्ती, सुअरी तथा भैंस-बैल आदि-२ के शरीर में कष्ट उठाएगा। गधा-बैल बनकर अपने गोबर तथा पेशाब पर बैठा-लेटा करेगा। कहां गए वे संगमरमर के फर्श तथा कुर्सी, सोफे? संत रामपाल दास जी महाराज अपने प्रवचनों में रह-रहकर यही याद दिलाते हैं कि हे भोले मानव! इस अनमोल मानव जन्म को व्यर्थ न कर अन्यथा महा कष्ट उठाएगा।

★ एक भक्त ने बताया कि मेरा रिश्तेदार बहुत धनी था। एक दिन हमारे घर पर आया था। उसको बहुत देर तक परमात्मा का ज्ञान सुनाया। उससे निवेदन किया कि कल हमारे यहां आश्रम में संत रामपाल दास जी महाराज का सत्संग है, आप कल सत्संग सुनना। रिश्तेदार ने बताया कि कल चण्डीगढ़ में मेरा एक अनुबंध (Agreement) होना है। पार्टी से कल दिन में दो बजे मिलना है। भक्त ने बहुत समझाया कि आप 9 से 11 बजे सुबह सत्संग सुनकर चले जाना। परंतु माया का पुजारी नहीं माना। कहने लगा कि मुझे 5 लाख रूपये का लाभ होगा। आप को क्या पता? भक्ति तो वृद्धावस्था में किया करते हैं। मारूति कार से चण्डीगढ़ की ओर चल दिया। परिवार में दो बच्चे तथा दो पति-पत्नी कुल चार सदस्य थे जो उसी कार में चण्डीगढ़ जा रहे थे। चण्डीगढ़ से 40 कि.मी पहले ही एक बजरी के भरे ट्रक के नीचे कार घुस गई। ट्रक के पिछले पहिए निकाल कर जैक लगा रखा था। चारों सदस्य उस स्थान पर मौत को प्राप्त हुए। अब सिर पर रख ले जा 5 लाख के लाभ को। आगे क्या होगा पूर्व में बता दिया है।

कबीर परमात्मा ने बताया है कि :-

कबीर, राम नाम कड़वा लागै, मीठे लागैं दाम।
दुविधा में दोनों गए, माया मिली ना राम।।

उपरोक्त दर्द भरी घटनाओं से हमारे को महादुःख हुआ है। हमारी सहानुभुति भी उनके साथ है, परंतु अज्ञान के कारण जीवन इतना कष्ट उठा रहा है। यदि जरा-सा भी समय परमात्मा के लिए निकाल ले तो सारा जीवन सुखी तथा परलोक भी सुखी हो जाता है।

इसलिए विश्व के सर्व मानव समाज से निवेदन है कि आप अपना वास्तविक कार्य भी जानें और अपना जीवन धन्य करें। उसके लिए पुस्तक ''ज्ञान गंगा'' निःशुल्क मंगवाऐं। अपना पूरा पता निम्न संपर्क सूत्रों पर SMS करें, आपके घर पुस्तक पहुंच जाएगी। इसके साथ-साथ संत रामपाल दास जी महाराज के धार्मिक सत्संग सुनें साधना टी.वी. पर शाम 07:45 PM बजे। पुस्तक मंगवाने के लिए संपर्क सूत्रः- 09992600804, 09992600806, 09992600855

''हरियाणा की जनता से विशेष निवेदन''

राष्ट्रीय समाज सेवा समिति के सर्व सदस्य विश्व के मानव समाज के साथ-साथ विशेषकर हरियाणा प्रान्त की जनता से निवेदन करना चाहते हैं कि आप संत रामपाल दास जी महाराज को न पहचान कर एक भारी भूल कर रहे हो। संत रामपाल दास जी को सामान्य व्यक्ति न जाने। आप जी कुछ स्वार्थी हठधर्मी व्यक्तियों के बहकावे में आकर अपने कर्म खराब न करें। मनुष्य जीवन अनमोल है इसका सदुपयोग करें। आज मानव बुद्धिमान है विवेक से काम लेना चाहिए।

संत रामपाल दास जी का उद्देश्य विश्व कल्याण करना है। केवल गुरूकुल बनाने से विश्व कल्याण नही हो जाता। इसके साथ-साथ बहुत सारे कार्य हैं जिनको करके ही विश्व कल्याण हो सकता हैं, जिन कार्यों को करने का तथा मानव समाज पर बोझ बनी कुप्रथाओं को समाप्त करने का बीड़ा संत रामपाल दास जी ने उठाया है तथा सफलता भी मिली है। मानव समाज से बुराईयां छुड़ाई जा रही हैं। शराब, मांस, तम्बाकू तथा अन्य नशीली वस्तुओं का परित्याग कराया जा रहा है। एक स्वच्छ समाज तैयार हो रहा है। दहेज लेना व देना पूर्ण रूप से भक्तों को मना किया गया है, जिसका सर्व भक्त पालन कर रहे हैं। सुखी जीवन जी रहे हैं। दहेज रूपी राक्षस बेटियों को गर्भ में ही मरवाने लगा था, अब सर्व सुखी होंगे।

★ श्री कृष्ण जी (विष्णु अवतार तीन लोक के प्रभु) जिस समय मथुरा में थे उस समय उनका विरोध वंहा की जनता ने किया। कोई न कोई सिर फिरा उनसे लड़ने के लिए सेना लेकर पहुंच जाता था। (शिशुपाल, जरासिंघ, काल्यवन आदि..) श्री कृष्ण सतोगुण थे वे जनता को मारने के लिए नही जन्मे थे। वे जनता के हित के लिए अवतार रूप में जन्मे थे। इसलिए लड़ाई-झगड़े से बचने के लिए तथा जीवोद्धार करने के लिए मथुरा-वृंदावन को त्यागकर वहां से लगभग 1500 कि.मी. दूर समुन्द्र में एक द्वार वाले बहुत बड़े टापू में अपने परिवार तथा सेना सहित जा कर रहने लगे। उस समय मथुरा वृंदावन के दुष्ट व्यक्तियों ने बड़ा गर्व माना होगा कि एक महात्मा को निकाल कर हमने बहुत महान कार्य किया है, परंतु कालान्तर में श्री कृष्ण पूज्य हुए तथा उन दुष्टों का काला इतिहास बना और विनाश हुआ। वर्तमान में श्री कृष्ण से लाभ प्राप्ति के लिए मथुरा-वृंदावन तथा द्वारिका में भटक रहे हैं। जब श्री कृष्ण जी वर्तमान थे उस समय उनको न पहचान कर पाप के भागी बने। इसी प्रकार संत रामपाल दास जी महाराज का विरोध कर रहे लोग काला इतिहास बना रहे हैं तथा पाप के भागी बनकर अपने कर्म खराब करके अपने किए पाप कर्म का दण्ड भोग रहे हैं। संत रामपाल दास जी

महाराज वर्तमान में पूर्ण परमात्मा के भेजे अवतार हैं,उनका उद्देश्य केवल जन कल्याण है। (पढ़ें प्रमाण इसी पुस्तक के पृष्ठ 72 से 124 पर भविष्याणी) इसी प्रकार संत रामपाल जी महाराज जीवोद्धार के लिए जन्मे हैं, जे.ई. (Junior Engineer) की नौकरी से त्याग पत्र देकर इस विश्व कल्याण के कार्य में जुटे हैं। दिन-रात परिश्रम करके जनता का हित कर रहे हैं। एक स्वच्छ मानव समाज तथा स्वच्छ सामराज्य का स्वपन साकार करने जा रहे हैं। सर्व मानव समाज को सुखी देखना चाहते हैं तथा जन्म-मरण के चक्र को सदा के लिए समाप्त करके सदा सुखी रहने के लिए पूर्ण मोक्ष मार्ग बता रहे हैं। सर्व धर्मो के सदग्रन्थों को ठीक से समझ कर निष्कर्ष निकाल कर दिया है कि :-

''जीव हमारी जाति है मानव धर्म हमारा,
हिन्दु, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई धर्म नही कोई न्यारा''

★ गांव करौंथा जिला रोहतक में भक्तों द्वारा दान की गई जमीन पर सतलोक आश्रम का निर्माण भक्तों ने मिल कर किया। कुछ स्वार्थी हठधर्मी आर्यसमाज के आचार्यो ने अपने अज्ञान को छुपाने के लिए संत जी को बदनाम किया। जनता व सरकार को भ्रमित करके संत जी तथा भक्तों पर अत्याचार किया। उस पाप कर्म का भोग अब उस क्षेत्र के वे लोग भोग रहे हैं जिन्होने संत की निंदा की तथा आक्रमण करके आश्रम खाली कराया। (कृप्या पढ़ें पृष्ठ 6 से 39 पर ''भोगेगा अपना किया रे'')

★ विचारणीय विषय है कि मुख्यमंत्री जी के पास C.I.D. नाम का पुलिस विभाग है जो हरियाणा के चप्पे-चप्पे की खबर रखता है। मुख्यमंत्री जी को सर्व ज्ञान होता है कि कौन क्या कर रहा है? फिर भी अपने ग्रुप (आर्यसमाजियों) के अपराध में सहयोग देते रहे, यह निंदा की बात है। यदि यह भी मानें कि मुख्यमंत्री जी को पहले नहीं पता था, परंतु जब आश्रम को सरकार ने कब्जे में ले लिया, सारी तलाशी ले ली, कुछ भी नहीं मिला। आश्रम की तलाशी लेकर तो संतोष होना चाहिए था तथा खुलकर कहना चाहिए था कि सतलोक आश्रम करौंथा में कुछ भी अवैध वस्तु नहीं मिली और न ही कोई गलत कार्य होता था। परंतु ऐसा न करके फिर भी एक ही पक्ष में खड़े रहे। जिस कारण से 12 मई 2013 को मुख्यमंत्री जी की सांस फूल गई थी। संत रामपाल दास जी महाराज से ही प्रार्थना करके सरकार बचाई। सत्य पर अडिग संत-भक्त शिखर की ओर जा रहे हैं। सतलोक आश्रम 12 एकड़ जमीन में छाया हुआ है। हर महीने लगभग 25-30 हजार नए भक्त बन रहे हैं और विरोधियों का पतन हो रहा है।

★ रामायण में एक प्रसंग आता है कि एक समय ऋषि विश्वामित्र जी जंगल में अपना धार्मिक अनुष्ठान किया करता था। जंगली व्यक्ति ऋषियों को तंग

करते थे, उनके अनुष्ठान में बाधा डालते थे। ऋषि विश्वामित्र ने अयोध्या के राजा दशरथ जी से अपनी सुरक्षा की प्रार्थना की। न्यायकारी, प्रजा पोषक राजा दशरथ ने अपने दो पुत्रों (श्री रामचंद्र तथा लक्ष्मण) को ऋषि के धार्मिक कार्यों की सुरक्षा के लिए भेजा। तब वहां जंगल में शांति हुई। ऋषियों ने अपने अनुष्ठान पूरे किए। राजा दशरथ पुण्य का भागी हुआ।

वर्तमान में कलयुगी राजा (हरियाणा के मुख्यमंत्री जी भूपेन्द्र सिंह हुड्डा) ने 12 जुलाई सन् 2006 तथा 9 अप्रैल 2013 और 12 मई 2013 को अपनी पुलिस तथा अपने ग्रुप के आर्यसमाजियों को संत रामपाल दास जी महाराज तथा भक्तों को मारने के लिए सतलोक आश्रम करौंथा पर आक्रमण करने के लिए खुली छूट दे दी। भूपेन्द्र सिंह हुड्डा मुख्यमंत्री जी अपना राजा वाला कर्तव्य न करके, विरोध करके पाप का भागी बना।

परमात्मा की कृपया से संत तथा भक्त अपना कल्याण करा रहे हैं। परमार्थ में लगे हैं। दिनों-दिन उन्नति कर रहे हैं तथा विरोधियों का सर्वनाश हो रहा है।

इंसान को नेक नीति से रहते-रहते भी बहुत से दुःखों को सामना करना पड़ जाता है। जो व्यक्ति जानबूझ कर बल का प्रयोग करके भक्तों तथा साधु-संतों को सताता है तो उस पर तो परमात्मा जाने क्या कहर टूटेगा? जिसका जीवित प्रमाण आप इसी पुस्तक में आगे पढ़ें? ''भोगेगा अपना किया रे''।

मुख्यमंत्रियों, प्रधानमंत्रियों की क्या दशा होती है, आप जी पढ़ें पुस्तक ''हरि आए हरियाणे नूं'' या ''मानवता का ह्रास तथा विकास'' में, ये दोनों पुस्तकें भी राष्ट्रीय समाज सेवा समिति की धरोहर हैं।

विश्व के मानव समाज से हम यही अनुरोध करना चाहते हैं कि आप जी समय रहते संत जी को पहचाने तथा मनुष्य जीवन सफल करें। यदि दीक्षा लेना आपके भाग्य में नही है तो विरोध तथा निंदा करके पाप इक्कठा न करें। हो सके तो दीक्षा लेकर अपना तथा अपने परिवार का कल्याण कराऐं।

पूर्व–पश्चिम, उतर–दक्षिण फिरदा दाणे–दाणे नूं।
सर्व कला सतगुरू साहेब की हरि आए हरियाणे नूं।।

परमात्मा के भेजे हरि अवतार संत रामपाल दास जी महाराज हरियाणा प्रांत में आए हुए हैं। परमात्मा की सत्य भक्ति का ज्ञान बताकर जनता को सर्व सुख प्राप्त करवा रहे हैं। जो सुख परमात्मा जीव को दे सकता है, देश का राजा भी नहीं दे सकता। जीवात्मा प्रत्येक दिशा में भटक रही है, परमात्मा को खोज रही है। संकट निवार्ण के लिए पूर्व दिशा, कभी पश्चिम दिशा, कभी उत्तर दिशा तथा दक्षिण में फिर रहे हैं। परमात्मा के भेजे प्रतिनिधि परमात्मा का परम कृपया पात्र हरि का अवतार हरियाणा प्रांत जिला हिसार के बरवाला

शहर में आए हुए हैं।

★ कुछ व्यक्ति कहते हैं कि करके खाओ, लेकर दे दो। किसी की आत्मा न दुखाओ, बुराई न करो, यही राम का नाम है। उन भद्रपुरूषों से नम्र निवेदन है कि यह तो एक नेक इंसान का कर्तव्य है। यह तो करना ही चाहिए परंतु राम का नाम भी अनिवार्य है। जैसे एक एकड़ जमीन को बाह-संवार रखा है। दूसरी एक एकड़ जमीन में झाड़-बोझड़े, अड़ंगा खड़ा है। यदि संवारे गए खेत में बीज नहीं बोया तो क्या लाभ? फिर तो दोनों खेत (संवारा हुआ तथा बिना संवारा हुआ) ही व्यर्थ हैं। जो अज्ञानतावश पाप कर रहे हैं, वो भी सत्संग सुनकर पाप करना छोड़कर अच्छी आत्मा बन जाते हैं। एक सदन नाम का कसाई था, ज्ञान हुआ। बुराई छोड़कर भक्त बना, अपना कल्याण कराया। इसलिए अच्छी आत्माओं को तथा जो पाप कर रहे हैं, दोनों को चाहिए कि परमात्मा का नाम रूपी बीज अपने जीवन में बोऐं तथा रामनाम के धनी बनें। जैसा कि पूर्व में लिख आए हैं कि मनुष्य शरीर मिला ही राम भजने के लिए है। परमेश्वर कबीर जी ने कहा है :-

कबीर, सब जग निर्धना, धनवंता ना कोय।
धनवान सो जानियों, जिसपे राम नाम धन होय।।

राम का नाम भी शास्त्र प्रमाणित होना चाहिए। प्रमाणित शास्त्र कौन-कौन से हैं? 1. सुक्ष्म वेद 2. श्रीमद्भगवत गीता 3. चारों वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद)। इन सद्ग्रन्थों में परमात्मा का दिया ज्ञान है। इसके अतिरिक्त 18 पुराण, उपनिषद् आदि-आदि ये ऋषियों का अपना अनुभव तथा श्री ब्रह्मा जी का दिया ज्ञान है। यदि इनका ज्ञान उपरोक्त सद्ग्रन्थों से नहीं मिला तो वह हमारे काम का नहीं है। ज्ञान को समझने के लिए पुराणों का सहयोग लिया जाता है क्योंकि अधिकतर हिन्दू पुराणों को सत्य मानते हैं। इसलिए पुराणों के प्रमाण देखकर सुक्ष्मवेद को आसानी से समझा जा सकता है। {भक्त समाज को ''सुक्ष्म वेद'' नया नाम होने से आश्चर्यजनक तो लगेगा क्योंकि यह वेद हमने सुना ही नहीं था। परन्तु यह प्रमाणित तथा सम्पूर्ण सद्ग्रन्थ है जो स्वयं परमात्मा ने पृथ्वी पर प्रकट होकर बताया तथा लिखवाया है। जिसका प्रमाण गीता तथा वेदों में है कि पूर्ण परमात्मा अपने निज स्थान जो आकाश में है, वहां से गति करके आता है। यहां अच्छी आत्माओं को मिलता है। उनको अपने मुख कमल से बाणी बोलकर वाणी द्वारा आध्यात्मिक ज्ञान सुनाता है। कवियों की तरह आचरण करता हुआ पृथ्वी पर विचरण करता है। भक्ति के गुप्त मंत्रों का आविष्कार करके भक्तों को बताता है। वह ''सुक्ष्म वेद'' है। उसे तत्वज्ञान भी कहते हैं। उस ज्ञान को तत्वदर्शी सन्त ही जानता है, उससे जानों। प्रमाण के लिए ऋग्वेद मण्डल 9

सुक्त 86 मंत्र 26-27, ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 82 मंत्र 1-2, ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 94 मंत्र 1, ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 95 मंत्र 2, ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 96 मंत्र 17 से 20, ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 20 मंत्र 1, ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 54 मंत्र 3, यजुर्वेद अध्याय 29 मंत्र 25, अध्याय 5 मंत्र 32, गीता अध्याय 4 मंत्र 32, 34, यजुर्वेद अध्याय 40 मंत्र 10 तथा अन्य वेदों में अनेकों स्थानों पर प्रमाण हैं कि पूर्ण परमात्मा स्वयं पृथ्वी पर प्रकट होकर तत्वज्ञान (सुक्ष्म वेद) अपने मुख से कविताओं, लोकोक्तियों, दोहों तथा चौपाईयों द्वारा बोलता है। वास्तविक भक्ति के नाम (राम का नाम) बताता है। जिससे मोक्ष संभव है। परंतु हम परमात्मा न पहचानकर सत्य ज्ञान व भक्ति से वंचित रह जाते हैं।} जो राम का नाम अर्थात् भक्ति का मंत्र वेदों (चारों वेदों) में, श्रीमद्भगवत् गीता में लिखा है, वही राम का नाम जाप करने का है। इनसे आगे संपूर्ण भक्ति विधि सुक्ष्म वेद में वर्णित है। वह भक्ति विधि चारों वेद तथा श्रीमद्भगवत् गीता वाली तो है ही जो गीता और वेदों में नहीं है, उसके लिए तत्वदर्शी संतों से जानने के लिए गीता अध्याय 4 श्लोक 32 तथा 34 में कहा है।

''परमात्मा के कौन-से नाम से मोक्ष संभव है?''

कुछ गुरूओं तथा ऋषियों का अपना मत है कि नाम के जाप से कोई लाभ नहीं होता। केवल उस परमात्मा के गुणों का चिंतन अपने मन-मन में करें। उदाहरण देते हैं कि जैसे ''मिश्री'' कहने से मुख मीठा नहीं होता।

यह तर्क वेद विरूद्ध है। यजुर्वेद अध्याय 40 मंत्र 15 में स्पष्ट किया है कि ॐ (ओम्) नाम का जाप करना चाहिए। श्रीमदभगवत् गीता के भी विरूद्ध है क्योंकि गीता अध्याय 8 श्लोक 13 में स्पष्ट है कि ॐ (ओम्) नाम का स्मरण (जाप) अंतिम श्वांस तक करना चाहिए।

सुक्ष्मवेद में भी कहा है कि :-

राम नाम जपते रहो, जब तक घट (शरीर) में प्राण।
कबहु तो दीन दयाल के, भिनक पड़ेगी कान।।

इससे सिद्ध हुआ कि परमात्मा का नाम जाप करना शास्त्रसमन्त है। जो तर्क दिया है कि ''मिश्री'' कहने से मुख मीठा नहीं हो सकता। मिश्री खाने से मुख मीठा होगा। उसके लिए उदाहरण है कि जिस पदार्थ (मिश्री) से मुख मीठा होता है, उसकी प्राप्ति कैसे होगी? जैसे हम बाजार में गए और मिश्री लेना चाहते हैं तो हमने मिश्री का नाम जाप (उच्चारण) करना पड़ेगा, तभी वह मुख मीठा करने वाली मिश्री मिलेगी। यदि बाजार में खड़ा होकर मिश्री के गुणों का चिंतन मन-मन में करेगा तो मिश्री नहीं मिलेगी। मिश्री को प्राप्त करने के लिए मिश्री का नाम उच्चारण करना पड़ेगा।

ठीक इसी प्रकार परमात्मा को प्राप्त करने के लिए परमात्मा का नाम

उच्चारण करना पड़ेगा। राम का नाम भी वास्तविक होना अनिवार्य है जो शास्त्रों में वर्णित है। जैसे मिश्री प्राप्ति के लिए मिश्री के स्थान पर मटर का नाम लोगे तो मटर ही मिलेगी।

उदाहरण :- एक ग्रामीण व्यक्ति का लड़का दिल्ली की कॉलोनी ''दरियागंज'' में नौकरी करता था। वहां मकान किराए पर लेकर परिवार सहित रह रहा था। एक दिन उसके पिताजी ने उसके पास मिलने के लिए जाना चाहा। उसका पता था ''दरियागंज, हनुमान मंदिर के सामने म.नं. क ख''। पिताजी ने दिल्ली में जाकर पूछा कि गसागंज कहां पर है? वहां के व्यक्तियों ने कहा कि गसागंज नाम की कोई कॉलोनी नहीं है। सारा दिन भटक कर पिता जी वापिस घर लौट आया। लड़के ने घर जाकर पूछा कि पिताजी आप आए नहीं। मैं आपका इंतजार करता रहा। पिता ने उत्तर दिया कि बेटा मैं सारी दिल्ली में पूछता रहा किसी ने गसागंज नहीं बताया। लड़के ने कहा पिता जी आप ने दरियागंज पूछना था, तब मिलता। पिताजी ने कहा कि भाई दरियागंज और गसागंज एक ही तो पदार्थ का नाम है।

विशेष :- हरियाणा प्रान्त के फरीदाबाद जिले के व्यक्ति दलिए (खिचड़ी) को दरिया तथा गसा कहते हैं। इसलिए उस ग्रामीण ने दरियागंज के स्थान पर गसागंज नाम से लड़के का मकान खोजना चाहा, नहीं मिला। इसलिए वह मकान दरियागंज वास्तविक नाम से पुकारने से ही मिलना था। ठीक इसी प्रकार परमात्मा को भी उसके वास्तविक शास्त्रसमन्त नाम से पुकारेंगे, तभी मिलेगा। अधिक जानकारी के लिए पुस्तक ''ज्ञान गंगा'' निशुल्क प्राप्त करें। अपना पूरा पता निम्न संपर्क सूत्रों पर S.M.S. करें। पुस्तक आपके घर पहुँच जाएगी।

सम्पर्क सूत्र :- 09992600804, 09992600806, 09992600855

★ एक शुकदेव नाम के ऋषि थे। उनको भी सुक्ष्मवेद वाली भक्ति विधि नहीं मिली। जिस कारण से वे भी मोक्ष प्राप्त नहीं कर सके। शुकदेव ऋषि ने गधे तक की योनि को प्राप्त करके कुम्हार के पजावे (मैदानी ईटों के भट्ठे) पर ईंटें ढ़ोई। जब तक पूर्ण मंत्र अर्थात् पूर्ण राम का नाम प्राप्त नहीं होता तब तक जीव का कल्याण संभव नहीं है।

सुक्ष्मवेद में कहा है कि:-

शुकदेव ने चौरासी भुगती, बना पजावै खर वो।
तेरी क्या बुनियाद प्राणी तूं पैंडा पंथ पकड़ वो।।

भावार्थ है कि शास्त्रानुकूल सत्य साधना प्राप्त न होने के कारण शुकदेव जैसे महर्षि को भी चौरासी लाख प्रकार के प्राणियों के शरीर में कष्ट उठाना पड़ा है तो हे भोले इंसान! आप तो भक्ति नहीं कर रहे। अगर कर रहे हो तो अज्ञानी गुरूओं से शास्त्र विधि विरूद्ध साधना भी कर रहे हो तो आपको भी

हानि होगी। इसलिए आप वह मार्ग (पैंडा) ग्रहण करो जो सुक्ष्मवेद में सत्य-संपूर्ण भक्ति मार्ग (पंथ) है। उसी से आपका कल्याण होगा। वह पूर्ण मंत्र अर्थात् राम का नाम संत रामपाल दास जी महाराज के पास है।

यहां आकर पहले सत्य-असत्य को समझो, फिर मन संतुष्ट हो तो दीक्षा लेकर मनुष्य जीवन सफल करें। जो भक्त संकट मुक्त होकर सुखी हुए हैं। उनकी कहानी उन्हीं की जुबानी पढ़ें इसी पुस्तक के पृष्ठ 47 पर। आपको स्वयं विश्वास हो जाएगा कि सच्चाई क्या है? हमारी सर्व मानव समाज से पुनः विनती है कि आप अविलंब सतलोक आश्रम बरवाला जिला-हिसार (हरियाणा) में आऐं, दीक्षा लेकर अपना तथा अपने परिवार का कल्याण कराऐं। यहां पर खाना, ठहरना तथा मंत्र-दीक्षा निःशुल्क है। जो कुछ दुष्ट व्यक्तियों ने भ्रम फैलाया था कि सतलोक आश्रम में इन्ट्री फीस 5 हजार रूपये है, वे बेबुनियाद है। वे यही चाहते थे कि हरियाणा की जनता या कोई भी यह सुनकर कि इन्ट्री फीस 5 हजार रूपये है, सतलोक आश्रम बरवाला जिला (हरियाणा) में न जाए। कहीं उन स्वार्थी गुरूओं का पर्दाफाश न हो जाए और जनता का कल्याण न हो जाए। इसलिए आप स्वयं अपनी आँखों देखें, कानों सुनी पर विश्वास बुद्धिमान व्यक्ति नहीं किया करते।

आप जी को पुनः याद दिला दें कि इस पुस्तक में दिए विवरण को लिखकर हम किसी का अपमान नहीं करना चाहते। हमें भी दुःख है कि कुछ व्यक्तियों को पाप का दण्ड भोगना पड़ रहा है। हम चाहते हैं कि अन्य मानव ऐसी गलतियों से बचें और सुखमय जीवन जीऐं। हम आप जी को परमात्मा से मिलने वाला सुख प्राप्त करने की राय दे रहे हैं जो लाभ भारत के कोने-कोने से आकर भक्त प्राप्त कर रहे हैं। हरियाणा की जनता पीछे क्यों रहे? आप भी परमात्मा के बच्चे हो। आप जी को भी परमात्मा की आवश्यकता है। परंतु आप जी को सत्य न बताकर असत्य का अभद्र प्रचार करके परमात्मा से दूर कर दिया है। साधना टी.वी. पर शाम 07:45 P.M. पर संत रामपाल दास जी महाराज का एक घण्टा सत्संग चलता है। वह सुनो, सत्य को जानो और अपना मानुष जीवन सफल करो, हमारा मानव समाज से यही करबद्ध निवेदन है।

धन्यवाद।

प्रार्थी

राष्ट्रीय समाज सेवा समीति के

सर्व 10 लाख सदस्य

(यह समीति पूर्ण रूप से धार्मिक तथा गैर-राजनीतिक संस्था है।)

पुस्तक संबंधी किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए :-

सम्पर्क सूत्र :- 09992373237, 09416296541, 09416296397, 09813844747

''भोगेगा अपना किया रे''

कबीर, मन नेकी कर ले, दो दिन का मेहमान।
आखिर तुझको कौन कहेगा, गुरू बिन आत्म ज्ञान।।
कबीर, राम नाम रटते रहो, जब तक घट में प्राण।
कबहु तो दीन दयाल के, भिनक पड़ेगी कान।।
कबीर, मानुष जन्म दुर्लभ है, मिले न बारम्बार।
तरवर से पत्ता टूट गिरे, बहुर न लगता डार।।

मानव को परमात्मा का अमर संदेश है कि हे मानव! यह शरीर बहुत मुश्किल से प्राप्त होता है। इसको प्राप्त करके शुभ कर्म कर, भक्ति कर, किसी की आत्मा को न दुःखा :-

कबीर, गरीब को ना सताईये, जाकि मोटि हाय।
बिना जीव की श्वांस से लोह भस्म हो जाये।।

भावार्थ है कि ''जैसे पुराने समय में लोहार कारीगर अपने औजार बनाने के लिए लोहा गर्म करने के लिए पशु के चर्म की धौंकनी बनवाते थे। उस निर्जीव खाल से अग्नि पर हवा मारते थे। जैसे वर्तमान में पंखे का प्रयोग करते हैं। उस निर्जीव खाल से हवा निकलती थी तथा फिर हवा भरती थी। वह ऐसे हवा लेती और छोड़ती थी जैसे महादुःखी मनुष्य दुःख में आहें भरता है।

परमात्मा कबीर जी सर्तक करते हैं कि यदि कोई किसी प्रकार की भी शक्ति का दुरूपयोग करके गरीब (निर्बल-निर्धन) को परेशान करता है तो उस का सर्वनाश हो जाता है। जैसे बिना जीव की खाल से निकली श्वांस लोहे तक को भस्म (जलाकर नष्ट) कर देती है तो जीवित प्राणी से निकली हाय रूपी श्वांस (बद्दुवा) तेरा सर्वनाश कर देगी। अगले जन्म में वह व्यक्ति कुत्ता बनता है, सिर में कीड़े पड़ते हैं।

संत सताना कोटि पाप है, अनगिन हत्या अपराधम्।
संत सताय साहिब दुःख पावै कर देत बरबादम्।।
राम कबीर कह मेरे संत को दुःख ना दीजो कोए।
संत दुःखाए मैं दुःखी मेरा आपा भी दुःखी होए।।
हिरणाकुश उदर विदारिया मैं ही मारा कंस।
जो मेरे संत को दुःखी करे उसका खो दूं वंश।।

सतलोक आश्रम रोहतक-झज्जर रोड़ पर करौंथा गाँव से 2 कि.मी. तथा डीघल गाँव से 4 कि.मी. की दूरी पर सड़क पर गांव करौंथा की सीमा में स्थित है। करौंथा जि. रोहतक (हरियाणा) का गांव है।

अप्रैल सन् 1999 में करौंथा के भक्तों ने स्वईच्छा से कुछ एकड़ जमीन

दान की जो ट्रस्ट के नाम कराई गई।

संत रामपाल दास जी महाराज से वहाँ सत्संग करने की प्रार्थना की गई। महीने में एक बार प्रत्येक पूर्णमासी को सत्संग होने लगा। बहुत संख्या में भक्तजन सत्संग सुनने के लिए आने लगे। सत्संग प्रवचनों से प्रभावित होकर भक्त बुराईयाँ त्यागने लगे। शराब, तम्बाकू, अफीम आदि नशीली वस्तुओं को त्यागकर सभ्य और निर्विकार जीवन जीने लगे।

संत रामपाल दास जी महाराज ने सर्व धर्मों के सद्ग्रन्थों को पढ़ा तथा प्रत्येक धर्म तथा पंथ व समाज में की जा रही भक्ति को भी जाना। उसमें पाया कि जो भी धर्म, पंथ या समाज जिस भी ग्रन्थ का नाम लेकर अपना धार्मिक प्रचार कर रहा है वह स्वयं नहीं जानता कि आप जिस ग्रन्थ को सत्य मानते हैं, उसके विपरीत ज्ञान तथा भक्ति विधि बता रहे हैं।

उदाहरण के लिए :- ''आर्य समाज'' एक ''धार्मिक समाज'' होने का दावा करता है। वह महर्षि दयानंद सरस्वती का अनुयाई है। महर्षि दयानंद ने अपने 59 वर्ष के जीवन काल में जैसा वेदों को समझा तथा परमात्मा को जैसा जाना वह ''सत्यार्थ प्रकाश'' नामक पुस्तक में लिख गए।

इसके साथ-2 समाज सुधार के जो नियम महर्षि दयानंद जी ने बताए कि मेरे अनुयाई इन नियमों का पालन करें, वह भी ''सत्यार्थ प्रकाश'' के चौथे अध्याय में हैं।

महर्षि दयानंद सरस्वती तथा उनके अनुयाई आर्यसमाजियों का मानना है कि चारों वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद) सत्य ज्ञान युक्त पुस्तक हैं। वे यहाँ तक कहते हैं कि हम वेद के अतिरिक्त किसी आध्यात्मिक पुस्तकों को सत्य नहीं मानते, जिनका ज्ञान वेदों से नहीं मिलता हो।

संत रामपाल दास जी महाराज ने ''सत्यार्थ प्रकाश'' के ज्ञान की तुलना वेदों से ही करके सिद्ध कर दिया कि महर्षि दयानंद जी को वेद ज्ञान कतई नहीं था, न ही उनको समाज सुधार का ज्ञान था क्योंकि वे स्वयं तम्बाकू सूंघते थे, तम्बाकू खाते थे, हुक्का पीते थे। सन् 1875 में आर्यसमाज की स्थापना हुई। सन् 1877 में स्वयं हुक्का पीते थे। पढ़ें इसी पुस्तक के पृष्ठ 148 पर।

''महर्षि दयानंद का वेद विरूद्ध आध्यात्मिक ज्ञान''

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने ''सत्यार्थ प्रकाश'' जिसके प्रकाशक हैं:- वैदिक यतिमण्डल, दयानन्द मठ दीनानगर पंजाब तथा मुद्रकः- आचार्य प्रिंटिंग प्रैस दयानंद मठ गोहाना मार्ग, रोहतक। इसके समु. 12 पृष्ठ 342 पर अनुभुमिका (2) में लिखा है कि आपस में वाद-प्रतिवाद करने से सत्य-असत्य का निर्णय होता है, अवश्य करनी चाहिए। इसी आधार से संत रामपाल दास

जी महाराज ने समाचार पत्रों के माध्यम से लेख लिखकर ज्ञान चर्चा की थी। जिस के प्रतिवाद में आर्यसमाजियों ने भी लेख लिखे थे जो कोरी झूठ थी। विद्वान जनता उन से दूर होने लगी। ज्ञान चर्चा का अंश निम्न पढ़ें :-

1. महर्षि दयानन्द जी सत्यार्थ प्रकाश नामक पुस्तक के समु. 7 पृष्ठ 154 पर लिखते हैं कि परमात्मा निराकार है। जबकि ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 86 मंत्र 26-27, ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 82 मंत्र 1 से 3, ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 96 मंत्र 18 से 20 ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 94 मंत्र 1 तथा सुक्त 95 मन्त्र 2 तथा यजुर्वेद अ. 7 मंत्र 39 (नृवत् महान् इन्द्रः लिखा है) तथा ऋग्वेद मण्डल 1 सुक्त 31 मंत्र 17 (मनुष्यवत् अग्ने लिखा है) में परमात्मा साकार है, राजा के समान दर्शनीय है अर्थात् परमात्मा नराकार है, साकार है वह द्यूलोक के तीसरे पृष्ठ (भाग) पर विराजमान है, इन वेद मन्त्रों के अनुवाद कर्ता भी आर्य समाजी हैं तथा प्रकाशक भी सार्वदेशीक आर्य प्रतिनिधी सभा दिल्ली है। महर्षि दयानन्द जी का सत्यार्थ प्रकाश वाला सिद्धांत गलत सिद्ध हुआ।

पुस्तक = ''जीवन चरित्र महर्षि दयानन्द सरस्वती'' पृष्ठ 294 पर महर्षि दयानंद ने कहा है कि जो संसार में दिखाई देता है यह सब उसी का रूप है।

2. महर्षि दयानन्द जी कहते हैं कि परमात्मा किसी एक स्थान पर किसी लोक में नहीं रहता। सत्यार्थ प्रकाश के समु. 7 पृष्ठ 153 समु. 14 पृष्ठ 480-481 पर जबकि ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 86 मंत्र 27, ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 54 मंत्र 3 तथा ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 96 मंत्र 18 से 20 में स्पष्ट है कि परमात्मा द्यूलोक के तीसरे पृष्ठ अर्थात् स्थान पर विराजमान है। ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 54 मंत्र 3 में स्पष्ट है कि परमात्मा (भूवनोपरि तिष्ठति) लोकों में ऊपर बैठा है विराजमान है। महर्षि दयानन्द जी का सत्यार्थ प्रकाश वाला सिद्धांत गलत सिद्ध हुआ।

3. सत्यार्थ प्रकाश समु. 7 पृष्ठ 155 तथा 163 पर महर्षि दयानन्द जी ने कहा है कि परमात्मा भक्त के पाप क्षमा (नाश) नहीं करता। यजुर्वेद अ. 8 मंत्र 13, ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 97 मंत्र 16, ऋग्वेद मण्डल 1 सुक्त 24 मंत्र 13-14 तथा यजुर्वेद अध्याय 5 मंत्र 32 में ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 82 मंत्र 1 में पाप नाश व साकार परमात्मा का प्रमाण। शेष पृष्ठ 39 पर।

उपरोक्त सच्चाई को आँखों प्रोजैक्टर पर देखकर श्रोताओं ने घर जाकर सर्व पुस्तकों का फिर से मिलान करके जांचा। पाया कि महर्षि दयानंद पूर्ण रूप से अज्ञानी था। श्रोताओं में आर्य समाज से सम्बन्धित व्यक्ति भी थे। उन्होंने तथा अन्य ने मिलकर आर्यसमाज के आचार्यों से सवाल किए कि आप आज तक इस अज्ञान को समाज में फैला रहे हो, आपका उद्देश्य क्या है? एक-दो आचार्यों को सर्व प्रमाण दिखाए। उन्होंने कहा कि यह ''सत्यार्थ

प्रकाश'' नकली है। श्रोताओं ने कहा कि क्यों पढ़े-लिखों को मूर्ख बनाते हो, अब नहीं चलेगा। देखो आपके ''झज्जर गुरूकुल'' से खरीदा गया है, यह रसीद है। आचार्य प्रिंटिंग प्रैस, दयानंद मठ गोहाना मार्ग रोहतक से छपा है।

आर्य समाज के आचार्यों का कर्तव्य तो यह बनता था कि सत्य को आँखों देखकर आप भी सावधान होते तथा अपने अनुयाईयों को भी बताते कि यह ''सत्यार्थ प्रकाश'' पूर्ण रूप से सत्य से परे है। अपना तथा अन्य भोली-भाली आर्य जनता का कल्याण करवाते। ऐसा न करके संत तथा भक्तों पर अत्याचार शुरू कर दिए। ये व्यक्ति नेक नहीं हैं। कबीर परमात्मा जी ने कहा है कि :-

जान बूझ साच्ची तजै, करैं झूठ से नेह।
ताकि संगति हे प्रभु, स्वपन में भी ना दे।।

उन आचार्यों ने अन्य आचार्यों को बताया। उन्होंने निणर्य लिया कि यदि जनता को महर्षि दयानंद के अज्ञान का पता चल गया तो इज्जत का नाश हो जाएगा। लोग हमें धिक्कारेंगे कि ऐसे बिना सिर-पैर के ज्ञान युक्त ''सत्यार्थ प्रकाश'' को बेच कर दयानंद की फोकट महिमा बनाए हो और दुनिया से आर्यसमाज के नाम से चंदा इकट्ठा करते रहते हो। हमारी दुकानें बंद हो जाएंगी। इसलिए सतलोक आश्रम को बंद कराओ। रामपाल को मार दो, तब बात बनेगी। इसी षड़यंत्र के तहत इन अपराधी आचार्यों ने सतलोक आश्रम करौंथा जिला-रोहतक के आसपास के गाँवों में (डीघल, करौंथा, बरहाणा, बाघपुर, आदि-आदि) पब्लिक मीटिंग करके झूठा प्रचार किया कि सतलोक आश्रम करौंथा में गलत काम होते हैं। उसको यहाँ से उठवाना है। यह कार्य सन् 2004 से प्रारम्भ किया। 2 जनवरी 2005 को आश्रम पर आक्रमण करने का षड़यंत्र रचा। गाँव करौंथा में एक सम्मेलन का बहाना करके वहाँ लोगों को इकट्ठा करके आश्रम पर आक्रमण करना था। समय रहते ट्रस्ट के ट्रस्टी ने माननीय न्यायालय से इस सम्मेलन का स्टे ले लिया, वे अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो सके।

★ दुर्भाग्यवश मार्च 2005 में हरियाणा का मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा (आर्यसमाजी) बन गया। उसके पश्चात् ये दुष्ट व्यक्ति अधिक सक्रिय हो गए। जनता तथा मुख्यमंत्री को सच्चाई न बातकर झूठ के आधार से आश्रम करौंथा को नष्ट करने तथा संत रामपाल दास जी महाराज को जान से मारने का षड़यंत्र रचकर 12 जुलाई 2006 को अपने घिनौने कार्य को अंजाम देने के लिए आश्रम करौंथा पर आक्रमण कर दिया। भक्तजन पूर्णमासी का सत्संग सुनने के लिए आश्रम में इकट्ठे हुए थे। 9 से 11 जुलाई 2006 को तीन दिन का सत्संग था।

8 जुलाई 2006 को सतलोक आश्रम में लगभग 5 हजार श्रद्धालु पहुँच गए। उसके पश्चात् आश्रम को पुलिस की उपस्थिति में चारों ओर से घेर लिया। न तो बाहर से कोई भक्त अंदर आने दिया तथा न ही आश्रम से बाहर जाने दिया।

9 जुलाई 2006 से 12 जुलाई 2006 तक 4 दिन लगभग 5 हजार श्रद्धालुओं को बंधक बनाकर रखा। रोगी, वृद्ध, बच्चे, स्त्रियां बहुत संख्या में थे। उपद्रवियों ने आश्रम की पानी लाईन काट दी, बिजली की सप्लाई काट दी। आश्रम में हाहाकार मचा रहा। रोहतक के डी.सी., एस.पी. तथा मुख्यमंत्री आदि बड़े अधिकारियों के पास टैलीग्राम किए गए। सर्व स्थिति बताई गई। परंतु बेरहमों को कोई असर नहीं हुआ क्योंकि ये तो यह अत्याचार करा ही रहे थे।

12 जुलाई 2006 को लगभग दिन के 12 बजे 8 से 10 हजार उपद्रवियों ने सतलोक आश्रम पर चारों ओर से आक्रमण कर दिया। पुलिस ने पहले तो रोकने के लिए गोलियां चलाई जिसमें लगभग 56-57 उपद्रवी घायल हो गए तथा एक गाँव बाघपुर का सोनू नामक युवक मारा गया। फिर पुलिस दूर खड़ी होकर देखती रही।

हरियाणा सरकार ने घायलों को 50-50 हजार रूपये इनाम दिए। मृतक के पिता को 5 लाख रूपये तथा घर के एक सदस्य को नौकरी दी।

सतलोक आश्रम करौंथा को नाजायज तरीके से धारा 145 लगाकर सरकार ने कब्जे में कर लिया तथा झूठा मुकदमा संत रामपाल दास जी महाराज तथा भक्तों पर बना दिया।

परमात्मा का विधान है कि ''पावैगा अपना किया रे, भोगैगा अपना किया रे।'' परमात्मा के घर देर है, अंधेर नहीं है।

आर्यसमाजियों की साजिश के शिकार होकर इस पाप में सबसे ज्यादा भूमिका गाँव डीघल, करौंथा, बरहाना तथा बाघपुर की थी। जिसके परिणाम स्वरूप इन गाँवों को कितना कहर सहना पड़ रहा है। अब भी इनकी आँखें नहीं खुल रही हैं। एक व्यक्ति मांगेराम पुत्र पृथी गांव डीघल में अन्य गांव से आकर बसा है। उसका गौत्र भी अहलावत नहीं है। यह चापलूस तथा अपराधी किस्म का व्यक्ति है। डीघल गांव के लोगों को बहका कर अपराध कराता है। वे इसके अपराधी जाल को समझ नहीं पा रहे हैं। इसके अपराधों के कारण तीन मुकदमें आश्रम के भक्तों ने कर रखे हैं। जिनमें से दो में यह भगौड़ा हो चुका है। एक दिन समय आएगा इसका तथा इसके पुत्रों को जो इसके साथ अपराध में शामिल थे। वे भी भगौड़े हो चुके हैं। पुलिस पकड़ेगी तथा छः महीने जमानत भी नहीं होगी और सजा भी होगी। मांगेराम का एक लड़का अपहरण

करके फिरौती रूप में रूपये मांगने के मुकदमे में सजा प्राप्त है। दिल्ली की तिहाड़ जेल में पड़ा है। यही अपराध मांगेराम तथा मांगेराम के इसी पुत्र तथा अन्य पुत्रों व अन्य कई अपराधियों को साथ लेकर आश्रम के भक्त के साथ किया था। जिसमें यह भगौड़ा है। इस व्यक्ति ने आर्य समाजियों से रूपये लेकर स्वयं खा लिए, गांव के भोले युवकों को बहका कर शराब पिलाकर आश्रम के भक्तों के साथ जुल्म कराए। उनका कहर अब गांव डीघल भोग रहा है। इसका अधिक सहयोग जयसिंह जो 27 गांवों का प्रधान है, दे रहा है। इसका भी नाश करा दिया। पढ़ें नीचे लिखे प्रमाण।

''डीघल गाँव में मौत का कहर''

हम बड़े दुःख के साथ लिख रहे हैं कि कुछ दुष्ट लोगों के बहकावे में आकर सन् 2006 में करौंथा काण्ड करके संत तथा भक्तों को सताकर कैसा कष्ट उठा रहे हैं करौंथा आश्रम के आसपास के गांव। हम किसी का अपमान करने का उद्देश्य नहीं रखते। अपितु सतर्क करना चाहते हैं कि अब तो आँखें खोल लो। और कितना नाश करना चाहते हो? संत तथा भक्त कभी बद्दुवा नहीं देते। वे परमात्मा के सामने रोते हैं। परमात्मा ही उन अपराधियों को दण्ड देता है।

1. गाँव डीघल का एक अभय (अभे) नाम का आदमी का लड़का भुंडू आश्रम में घुसा और भक्तों के साथ झगड़ा किया। उस लड़के की छाती में कैंसर हो गई, मौत को प्राप्त हुआ। अभे ने गुरू जी तथा भक्तों पर झूठा मुकदमा किया था जो न्यायालय में निराधार साबित हुआ। कुछ दिन के बाद के उसकी जीभ में कैंसर हो गई। तीन महीने तक भूखा मरता रहा और अंत में तड़फ-तड़फ कर मर गया। फिर उसी आदमी अभय का बड़ा बेटा रोहतास जिसके पूरे शरीर पर फोड़े निकल आए और कोढ़ की तरह चौने लगा और एक महीने तक कपड़े नहीं डाले। सिर्फ चादर ढ़के रहता और अंत में तड़फ-तड़फ कर मर गया। उसी अभय का तीसरा बेटा गोली खाकर मर गया। इस प्रकार उसके तीनों बेटे तथा स्वयं तड़फ-तड़फ कर मरे।

2. अन्य गाँव से आया हुआ वर्तमान में डीघल गाँव में रह रहा एक आदमी मांगेराम पुत्र पृथी ने आश्रम वालों के साथ बेवजह झगड़ा किया और आश्रम वालों के खिलाफ आर्यसमाजियों के साथ मिलकर कई साजिशें रची। वह कहता था कि गुरूजी को जेल भेजकर रहेगा। कुछ दिन के बाद उसका बेटा ही एक धनी के बच्चे के अपहरण केस में जेल चला गया और उसे उम्रकैद की सजा हो गई।

3. डीघल गांव का जयसिंह नामक एक आदमी जो 27 गाँवों का प्रधान

है, उसने आश्रम से पानी की मोटरें उठवाई, पानी के पाइपों को तुड़वाया और आश्रम की बिजली के तार कटवाए। कुछ दिन के पश्चात् उसके छोटे बेटे ने किसी औरत के साथ दुर्व्यवहार किया और जहर निगल कर मर गया। जयसिंह का दूसरा बेटा हॉर्ट अटैक के कारण मर गया।

4. डीघल गांव का रणबीर नामक एक आदमी आश्रम पर आक्रमण करने गया, पुलिस की गोलियों से घायल हुआ। सरकार से इनाम में 50 हजार रूपये लाया। उसी दिन से उसका बेटा पागल हो गया।

5. डीघल गांव का महीपाल नामक एक आदमी आश्रम पर आक्रमण करने गया। पुलिस की गोलियों से घायल हो गया। सरकार से इनाम में 50 हजार रूपये लाया। उसके कुछ समय बाद उसे एड्स की बीमारी हो गई और मर गया।

6. डीघल गांव का एक आदमी जग्गा आश्रम पर आक्रमण करने गया। पुलिस की गोलियों से घायल हो गया। सरकार से इनाम में 50 हजार रूपये लाया। कुछ समय बाद वह बहुत ज्यादा शराब पीने लगा। पत्नी व बच्चों को परेशान करने लगा। उसके घर में झगड़ा रहने लगा और उसकी पत्नी ने उसकी पिटाई कर दी जिससे वह मर गया।

7. डीघल गांव का एक लीलू नामक आदमी का बेटा आश्रम पर आक्रमण करने गया। पुलिस की गोलियों से घायल हो गया। सरकार से इनाम में 50 हजार रूपये लाया। कुछ दिन के बाद गन्ने की ट्राली के नीचे दब कर मर गया।

8. डीघल गांव का अनिल नामक एक आदमी जो आश्रम के पास वाले बाग में रहता था। उसका खुद का लड़का नहीं था। इसलिए उसके पास उसकी बेटी का लड़का रहता था। अनिल गुरूदेव जी को गालियां देता था। कुछ दिन के बाद उसका दोहता (दोहित्र) एक्सीडेंट में मर गया।

9. डीघल गांव की एक भक्तमति दर्शना ने सन् 2006 के बाद गुरूदेव जी का नाम छोड़ दिया और गुरूदेव जी को गालियां देने लगी। कुछ दिनों के बाद उसके बेटे की पत्नी, उसका पति, दोनों बेटे मर गए। उसने अपनी बेटी की चार बार शादी की जिसमें से तीन बार उसकी लड़की छोड़ दी गई और चौथी बार उसका पति मर गया। फिर दर्शना ने अपनी दूसरी बेटी की शादी की, वह लड़की अपने ससुराल से भाग गई। कुछ ही दिनों में दर्शना भी गाँव छोड़कर भाग गई।

10. डीघल गांव का भूप नामक एक आदमी की पत्नी ने गुरूदेव जी का नाम ले रखा था। मांगेराम नामक आदमी के कहने पर उसने अपनी पत्नी का नाम तुड़वा दिया और अपनी पत्नी को जबरदस्ती हुक्का पिला दिया। कुछ समय बाद भूप के गले में कैंसर हो गई और तड़फ-तड़फ कर मर गया।

11. डीघल गांव का राजेन्द्र नामक एक आदमी गुरूदेव जी को हर रोज गालियां देता था। कुछ समय बाद उसकी जीभ में कैंसर हो गई। एक-एक लाख रूपये के टीके लगवाने के बाद भी मौत तड़फ-तड़फ कर हुई।

12. डीघल गांव का उमेद नामक एक आदमी गुरूदेव जी को बहुत गालियां देता था। पहले उसका हाथ कटा और अब डॉक्टरों ने उसके गले में कैंसर की बीमारी बताई है। कई लाख रूपये के टीके लग चुके हैं। फिर भी कोई आराम नहीं है। सारी जमीन बिक चुकी है और मरने के लिए तड़फ रहा है।

13. डीघल गांव का सोनू नामक एक आदमी करौंथा काण्ड के पश्चात् आश्रम में घुसा और गुरूदेव जी के फोटो पर लात मारी। कुछ दिन के बाद किसी औरत के साथ दुर्व्यवहार करने के आरोप से जहर खाकर मर गया। उसकी पत्नी चली गई, कुल नाश हुआ।

14. डीघल गांव का रामफल नामक एक व्यक्ति जिसके बेटे का नाम सोनू था। सोनू की चार बहनें थी। आश्रम पर आक्रमण करने गया था। वहां पर बहुत हंगामा किया और कुछ दिनों के बाद जहर खाकर मर गया।

15. डीघल गांव का जयकिशन नाम का एक व्यक्ति जिसने गुरूदेव जी का पुतला फुंका था। कुछ समय बाद उसके सिर में कैंसर का फोड़ा हो गया। कई महीनों तक खाना नहीं खाया और अंत में तड़फ-तड़फ कर मर गया।

16. डीघल गांव का एक आदमी ईश्वर जिसने गुरूदेव जी के पुतले को कपड़े पहनाए और पुतला फूंका। कुछ ही दिन बाद झज्जर चुंगी के पास ट्रक के नीचे कुचला गया और उसकी मौत हो गई।

17. डीघल गांव का एक आदमी ज्ञानेन्द्र गुरूदेव जी को हर समय बेटी की गालियां देता था। एक महीने के बाद उसकी बेटी का पति आश्रम के पास ट्रक के नीचे कुचला गया। उसकी हड्डियों को गठरी में बाँधकर लाए थे।

18. डीघल गांव का एक आदमी जिसका नाम भोडू था। उसने गुरूदेव जी का पुतला फूंका और गुरूदेव जी के बारे में अश्लील बातें की। (जिन्हें लिखा नहीं जा सकता) सुनारियां गाँव में उसकी लाश मिली और उसके गुदा द्वार में बांस का टुकड़ा मिला। उसके पूरे शरीर को बोतलों से फोड़ा गया था और उसके शरीर में काँच के टुकड़े मिले थे। उसकी लाश भी दो दिन बाद मिली थी। उसकी दो बेटियों का जन्म पेट काटकर हुआ था। उसका बेटा पैदा होने के एक महीने बाद उसके पेट में फोड़ा पाया गया था जिससे उसकी मृत्यु हो गई। इस तरह भोडू की वंश बेल समाप्त हो गई।

19. डीघल गांव का एक आदमी जिसका नाम गगना है, उसने आश्रम के अनुयाइयों के घरों को जलाने की बात की थी। कुछ दिन के बाद उसके

भतीजे ने किसी महिला के साथ दुर्व्यवहार करने की कोशिश की। दूसरे कुछ लोगों ने तेजाब से जला दिया जोकि सुसाना गांव में जला हुआ मरा मिला। उसकी माँ लकवाग्रस्त हो गई और एक महीने बाद तड़फ-तड़फ कर मर गई।

20. डीघल गांव का प्रताप नामक एक आदमी जिसने गुरूदेव जी को बहुत गालियां दी थी। कुछ दिनों के बाद उसके दोनों गुर्दे खत्म हो गए और अब मरने के लिए तड़फ रहा है।

21. डीघल गांव का शुशु नामक एक व्यक्ति आश्रम में काला तेल लगाकर घुस गया। कुछ दिनों बाद उसके दिमाग की नस फट गई और एक महीने तक तड़फ-तड़फ कर मर गया। उसके मरने के बाद उसकी पत्नी अपने बेटे को लेकर घर से चली गई और हमेशा-हमेशा के लिए घर पर ताला लग गया। मरने से पहले हस्पताल में हर रोज एक लाख रूपये का खर्चा हुआ। ★ उसकी पत्नी के मायके वालों ने कहा कि उसके बड़े भाई की शादी उसकी पत्नी से करेंगे। उसके भाई की शादी जबरदस्ती शुशु की पत्नी के साथ की। शुशु की भाभी ने पुलिस थाने में रिपोर्ट दे दी कि उसके पति की जबरदस्ती दोबारा शादी करवाई है। कुछ समय बाद शुशु की पत्नी ने अपने जेठ की रिपोर्ट दे दी। शुशु के मरने के कुछ समय पहले कोतरी नामक एक पक्षी उनके ऊपर झपटती थी। वे लोग अपने बाहर वाले घर पर जाते तो कोतरी उनके सिर पर चोंच मारती। वे लोग जोहड़ पर जाते तो भी वह कोतरी उनके सिर पर चोंच मारती थी। पूरे एक साल तक उसने घरवालों को परेशान रखा। शुशु के मरते ही वह कोतरी अचानक न जाने कहां चली गई? शुशु की पत्नी के रिपोर्ट देने के बाद आज उसका भाई जेल में बंद है।

22. डीघल गांव की एक औरत मुकेश जिसने गुरूदेव जी को बहुत गालियां दी और कहा कि अगर मेरा परिवार खत्म हो जाए तो भी आश्रम में न जाऊँ। कुछ दिन के बाद उसका पति मर गया, उसकी बहन मर गई। उसके ससुर की भी मौत हो गई। उसने रोते हुए कहा कि मैंने गुरूदेव जी के बारे में भला-बुरा कहा जिससे हमारे घर में एकदम से चार मौतें हो गई। फिर उसने गुरूदेव जी से माफी मांगी। उस दिन से उसके दोनों बच्चे स्वस्थ हैं और उसका कहना है कि वह भविष्य में कभी ऐसा नहीं करेगी।

23. काले पुत्र आजाद गांव डीघल पान्ना-मिठान। इसका पिता आजाद गुरूदेव जी को बहुत गलत बोलता था। उसका उसके बेटे से झगड़ा हो गया। उसका 22 साल का लड़का जहर की गोली खाकर मर गया। 6 महीने बाद उसकी मां की मौत हो गई और आजाद का बड़ा बेटा शराब पीकर मर गया।

24. राजा पुत्र अमर सिंह चंडा गांव डीघल पान्ना-डालान। इसने गुरूदेव जी को बहुत गलत कहा। तभी से उसके घर में कष्ट रहने लगे। पति-पत्नी

में झगड़ा रहने लगा। उसने गोली खाकर आत्म हत्या कर ली।

25. डीघल गांव का एक काले नामक व्यक्ति ने एक भगत को हॉकी मार दी। काले के भाई का कुछ दिनों बाद किसी के साथ झगड़ा हो रहा था, उसे छत से धक्का देकर गिरा दिया जिससे उसकी गर्दन की हड्डियां टूट गईं और मर गया।

26. डीघल गांव का एक व्यक्ति जिसका नाम पप्पू है। उसने आश्रम से बहुत सामान उठाया था और आर्य समाज का सेवक था। इस काम की वजह से वह अब पागल हो चुका है।

27. डीघल गांव का बिंदू नामक एक व्यक्ति भी जो आश्रम में दंगा करवाने में शामिल था। उसकी पत्नी का देहांत हो चुका है तथा उसके परिवार में क्लेश है। वह भी पूरी तरह से दूसरों के अधीन हो चुका है। खुद वह शौच भी नहीं कर सकता।

28. डीघल गांव की कमला नाम की एक औरत है जिसने सतगुरू रामपाल जी महाराज को गाली दी थी और भला-बुरा भी कहा था। आज वह चल भी नहीं सकती। उसके दोनों पैर खराब हो चुके हैं।

29. डीघल गांव का निहाली नाम की एक औरत जिसके बेटे ने गुरूदेव जी से नाम ले रखा है। वह हमेशा गुरूदेव जी को गालियां देती थी और उसने अपने बेटे का नाम तुड़वा दिया। उसने अपने लड़को को बाबा बनवा दिया। अब तक उसका पता नहीं चल पाया कि वो जिंदा है या मर गया। निहाली का दूसरा बेटा एक्सीडेंट में मर गया और उसके तीसरे बेटे का एक्सीडेंट हो गया और उसके पैरों में रॉड डाली गई। उसका सारा शरीर बेकार हो गया। वह खुद कुछ भी नहीं कर सकता। निहाली का पति भी तड़फ-तड़फ कर मर गया।

30. डीघल गांव का एक आदमी जिसका नाम चेतराम था। उसकी पत्नी ने गुरूदेव जी से नाम ले रखा था। कुछ समय बाद उसकी पत्नी ने नाम तोड़ दिया। दोनों मिलकर गुरूदेव जी को गाली देने लगे। चेतराम के शरीर में भयंकर बीमारी हो गई। वह बेचैन रहने लगा। कभी बिजली की तारें पकड़ता, कभी घर से भाग जाता। अंत में जोहड़ में डूबकर मर गया।

31. डीघल गांव का आजाद नामक एक आदमी जिसकी पत्नी ने गुरूदेव जी से नाम ले रखा था। वह अपनी पत्नी से कहता कि तुम्हारे गुरूदेव जी तो पैर दबवाते हैं, तुम नाम छोड़ दो और अपनी पत्नी से गलत बातें कहता। उसे खुजली की बीमारी लग गई। मैडिकल में भी ईलाज नहीं हो पाया और तीन साल बाद तड़फ-तड़फ कर मर गया।

32. डीघल गांव का सोनू नामक लड़का अपने माँ-बाप का इकतौला

लड़का था। उसके माता-पिता भी गुरूदेव जी को गालियां देते थे। सोनू शराब के ठेके पर रहता था। जब आश्रम पर आक्रमण हुआ तो वह अपने दोस्तों के साथ बंदूक लेकर आया था। वह स्वयं भी गुरूदेव जी को गालियां देता था। कुछ समय बाद उसी के दोस्तों ने जो उसके साथ आक्रमण करने आए थे, उन्होंने आपसी झगड़े में सोनू की गोली मारकर हत्या कर दी।

33. डीघल गांव का कर्णे नामक एक आदमी जिसकी पत्नी ने गुरूदेव जी से नाम ले रखा था। इस कारण से वह अपनी पत्नी व बेटियों को गंदी गालियां देता था। उसके आधे शरीर को लकवा मार गया। चार साल तक तड़फ-तड़फ कर मरा परंतु फिर भी गुरूदेव जी को गालियां देता रहा। उसकी पत्नी व बेटियों ने आज भी नाम ले रखा है।

34. डीघल गांव का रामफल नामक एक आदमी आश्रम पर आक्रमण करने में ट्रैक्टर लेकर गया था। आश्रम के भक्त उसके ट्रैक्टर में बैठने लगे तो उसने उन्हें नीचे उतार दिया और कहा कि तुम तो आश्रम में जाते हो। तुम मेरे ट्रैक्टर में मत बैठो। यह बात करौंथा काण्ड के कुछ दिनों बाद की है। उसकी पत्नी जलकर मर गई, उसका लड़का डूबकर मर गया। उसकी माँ के कुल्हे की हड्डी टूट गई। अब उसके खुद के पैर में कैंसर हो गई, भुगत रहा है।

35. डीघल गांव का बाले नामक एक आदमी जोकि आश्रम पर आक्रमण करने में शामिल था। वह कहता था कि आश्रम वालों के घर पर आग लगा दो और उसने भक्तों के तूड़े में आग लगवा भी दी थी, परंतु आग बुझ गई। तूड़े में कोई नुक्सान नहीं हुआ। कुछ समय बाद उसके बेटे को हार्ट अटैक आ गया। दो लाख रूपये खर्च भी हुए, परंतु एक महीने बाद ही वह मर गया। फिर स्वयं बाले को ही लकवा लग गया। बाले के दूसरे बेटे को भी हार्ट अटैक आ गया। साठ हजार रूपये लग गए। बाले की पत्नी अपनी लड़की के घर आँख बनवाने गई थी। गाँव के मोड़ पर एक बुग्गी आ रही थी, बैल तेजी से भागने लगा। उसने पलट कर देखा तो वह बुग्गी के टॉयर के नीचे आ गई और मर गई।

36. डीघल गांव को साहब नामक एक आदमी ने करौंथा काण्ड में कहा कि आश्रम वालों के खेतों से चारा ले आओ। वह भक्तों के खेतों से चारा लाता और उनके पेड़ों की डालियों को तोड़ देता। कुछ ही समय बाद वह फाँसी लगाकर मर गया।

37. एक व्यक्ति राजबीर (राजू) पुत्र चंद्रभान गांव डीघल का स्थाई निवासी था जिसने सतगुरूदेव जी के भक्तों के साथ गाली-गलौच किया था। थोड़े दिन के बाद उसकी बुरी दशा हुई। आखिरी में स्वयं को आग लगा ली।

38. एक गूगन पुत्र सुबे गांव डीघल ने आश्रम से कपड़े, घी, बर्तन आदि की चोरी की थी। वह सर्दियों में दीपक से रजाई में आग लगने से जलकर रोहतक मैडिकल में 15 दिन भुगत कर मरा।

39. राजेश पुत्र करतार गांव डीघल :- जो गांव की बहनें सत्संग में जाती थी। वह उनको चिढ़ाया करता था। कहां जा रही हो, संत रामपाल की तो दुर्घटना में मौत हो गई है। हर बार ऐसे ही बकवास करता था। कुछ दिन के पश्चात् वह सड़क दुर्घटना में मारा गया। सड़क पर मृत मिला।

इसी गांव में अनेकों व्यक्ति और हैं जिनको अपने किए का दण्ड मिला है। पुस्तक विस्तार को मध्यनजर रखते हुए नहीं लिख रहे हैं। समझदार को संकेत ही पर्याप्त होता है। परमात्मा ने संत तथा भक्तों को सताने वालों का सूड़-सा काट दिया (सूड़-सा काटना = खेत को संवारने के लिए किसान एक के बाद एक झाड़-बोझड़े को अंधाधुंध काटकर फैंकता है और खेत को कांटे रहित करता है, सूड़ काटना हरियाणा की भाषा में कहा जाता है।)

''बाघपुर गांव में मौत का ताण्डव''

''बाघपुर में 13 वीं क्रिया से पहले दूसरी जवान मौत''

दिनांक 12-07-2006 को करौंथा आश्रम पर आक्रमण करने वालों में गाँव बाघपुर जिला-झज्जर के कई व्यक्ति पहुंचे थे।

एक सोनू नाम का लड़का आर्यसमाजी जो पुलिस के साथ मुठभेड़ में मारा गया था। सरकार ने एक सदस्य को सरकारी नौकरी दी तथा 5 लाख रूपये सोनू के पिता को इनाम दिये।

आर्यसमाजी मुख्यमंत्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा ने झूठा मुकदमा सतलोक आश्रम के संचालक संत रामपाल दास जी महाराज तथा उनके भक्तों पर बनाकर जेल में डाल दिया। रोहतक पेशी पर संत रामपाल दास जी महाराज के दर्शन करने आने वाले भक्तों को गाँव डीघल, करौंथा तथा गाँव बाघपुर के व्यक्तियों द्वारा बेरहमी से पीटा जाता था।

युवक की पिटाई करते ग्रामीण।

कोर्ट परिसर के बाहर पिटाई के बाद लहू-लुहान हुआ युवक

हरिभूमि रोहतक, मंगलवार 1 अगस्त, 2006

रामपाल के अनुयायियों को धुना

पेशी के दौरान हुआ हंगामा ● कई भक्त जूते छोड़कर भागे ● पुलिस बनी रही मूकदर्शक

फिर हुई रामपाल के समर्थक की धुनाई

अदालत में रामपाल को देखने आए आना उसके समर्थक को उस समय महंगा पड़ा गया, जब रामपाल के विरोधियों ने कोर्ट परिसर के बाहर उसको जमकर धुनाई कर दी। मौके पर पुलिस पुलिस जवान तमाशा देखते रहे। इतना ही नहीं जब रामपाल को पुलिस पेशी के बाद लेकर जा रही थी तो कोर्ट परिसर के बाहर विरोधी नारे लगा रहे थे। पुलिस मूकदर्शक बनी रही।

इस पाप कर्म का फल इन गाँव वालों को मिला जो इस प्रकार है:-

दिनांक 04-11-2010 के दैनिक भास्कर समाचार पत्र में समाचार छपा कि गाँव बाघपुर में एक वर्ष में 100 से ज्यादा जवान मौत हो चुकी हैं। किसी साधु संत तथा झाड़फूक वाले के बताए अनुसार 7 दिन की भी 13 वीं करके देख ली। फिर भी सात दिन के अंदर अन्य युवक की मौत हो गई। पाप बढ़ जाने के कारण सर्व जंत्र-मंत्र असफल हो जाते हैं।

कृपया पढ़ें दैनिक भास्कर समाचार पत्र की फोटोकापी दिनांक 04-11-2010 की।

पानीपत - 4-11-2010-

दैनिक भास्कर

बुरी बलाओं को टालने के लिए हवन करते ग्रामीण।

मौत के डर से बाघरपुर में नहीं मनेगी दिवाली

हवन करके टालना चाहते हैं बुरी बलाएं

भारत भूषण सोनू | बेरी

मरना तो हमें चाहिए था, पर मर रहे हैं गांव के जवान। गांव बाघपुर के 92 वर्षीय वयोवृद्ध हरिसिंह की आंखों से छलकते आंसू और उनकी रूआंसी जुबान से निकलती यह बात पूरे गांव का दर्द बयां कर रही है। गांव के बुजुर्ग भी अपनी मौत की कामना करने लगे हैं।

बीते एक साल में 100 से ज्यादा चिताओं को अग्नि दे चुके ग्रामीण अब इस बात से खौफजदा होते जा रहे हैं कि एक मृतक के संस्कार के तेरह दिन तक पूरे हो नहीं पाते कि अगले जवान व्यक्ति की मौत हो जाती है और फिर उसकी संस्कार के दिन गिनने शुरू कर देते हैं। बेरी उपमंडल के गांव बाघपुर में यह सिलसिला लंबे समय से चल रहा है। इसी डर से गांव बाघपुर में दीपावली का उत्साह भी नहीं है।

ग्रामीणों ने दीपावली न मनाने का फैसला किया है। कुछ हादसों को तो बुजुर्ग असंभव मानते हुए हैरानी भी करते हैं। सप्ताहभर पहले एक हादसे में संजय (30) नाम के युवक की समालखा के पास सड़क हादसे में मौत हुई थी, जिसके दो बच्चे भी हैं।

एक हादसे के बारे में बताते हुए संजय के दादा हरिसिंह कहते हैं कि दो युवक बाइक पर गांव से निकले ही थे कि सामने से गाय आ गई और दोनों सड़क पर गिर गए, इसमें एक युवक का तो हाथ टूट गया, जबकि दूसरा युवक प्रकाश अभी भी अस्पताल में आईसीयू में भर्ती है, और जिंदगी व मौत के बीच जूझ रहा है। पश्चिम बंगाल में गांव का एक जवान मंजीत पेट्रोलिंग के दौरान अकेला ही शहीद हुआ था। वहीं राजू की बस हादसे में मौत हो गई, जबकि बस की एक भी सवारी को खरोंच तक नहीं आई।

7 दिन की तेरहवीं

गांव के बुजुर्गों का कहना है कि पंचायत कर और सिद्ध महात्माओं से सलाह लेकर मृत्यु संस्कार के बाद 13 दिन की तेरहवीं को 7 दिन का भी कर देख चुके हैं, लेकिन कोई फायदा नहीं हो पा रहा है।

चंदे से कराया हवन

गांव बाघपुर में बुधवार को ग्रामीणों ने इस मौत के सिलसिले को रोकने के लिए 50हजार रुपए का चंदा कर गांव में 5 घंटे तक का हवन भी कराया है। ताकि गांव पर मंडरा रही बुरी बलाओं का टाला जा सके। गांव की महिला सुनीता ने बताया कि गांव में इतनी मौतें होने के कारण इस बार दीपावली के त्योहार में उत्साह न के बराबर ही होगा।

गांव बाघपुर के कुछ मुख्य पापियों पर कहर इस प्रकार टूटा :-

1. पंडित बिजेन्द्र पुत्र प्रताप सिंह
2. पंडित राजबीर पुत्र मन्शा राम
3. पंडित कृष्ण पुत्र सुखलाल

ऊपर लिखित तीनों व्यक्तियों ने आर्यसमाजियों द्वारा भ्रमित होकर पूर्ण परमात्मा के अवतार संत रामपाल दास जी के खिलाफ अभद्र शब्दों का प्रयोग करके भजन तथा रागनी बनाई तथा जगह-जगह खड़े होकर लोगों को गा-गाकर सुनाई तथा दुष्प्रचार किया। इन दुष्ट व्यक्तियों के लिए तो यह मनोरंजन था। लेकिन भक्तों की आत्मा इन्हें सुनकर बहुत रोती थी। इन अत्याचारियों पर काल का कहर इस प्रकार टूटा :-

1. पंडित बिजेन्द्र पुत्र प्रताप सिंह :-

इस व्यक्ति के दो पुत्र मृत्यु को प्राप्त हुए। बड़ा लड़का उम्र 12 साल रोड़ दुर्घटना में तथा छोटा लड़का उम्र 9 साल बीमारी से तड़फ-तड़फकर मृत्यु को प्राप्त हुआ।

2. पंडित राजबीर पुत्र मन्शा राम :-

इस व्यक्ति से काल ने अपनी ही चाची की हत्या करवाई। जिस कारण आपसी रंजिश भी हो गई तथा 302 का मुकदमा बना और जेल जाना पड़ा। इस कारण घर की आर्थिक स्थिति खराब हो गई और इसी कारण अपनी जमीन बेचनी पड़ी।

3. कृष्ण पुत्र सुखलाल :-

यह व्यक्ति Ex-Service Man था। अपना घर-परिवार ठीक-ठाक चला रहा था। लेकिन इसने आर्यसमाजियों द्वारा भ्रमित होकर पूर्ण परमात्मा के अवतार परम कृपया पात्र संत रामपाल दास जी महाराज तथा भक्तों के खिलाफ दुष्प्रचार करके अपने कर्म बिगाड़ लिए। इस कारण घर में कलह होने लगी। परेशान होकर इस व्यक्ति ने जहर खाकर आत्म हत्या कर ली। घर में एक ही सदस्य कमाने वाला हो और वही ना रहे तो उस घर पर क्या बीतती है? यह सभी जानते हैं।

4. सोनू पुत्र बलवान सिंह :-

प्रत्यक्ष दृष्टाओं का यह भी कहना है कि सोनू सन् 2006 के करौंथा काण्ड में आर्यसमाजियों का हितैषी था तथा उन्हीं की गोली का शिकार हुआ ब्रह्मानंद अपराधिक प्रवृत्ति का इंसान है और आचार्य बलदेव का शिष्य है। इन दुष्ट व्यक्तियों का उद्देश्य भी किसी की मौत से पूरा होना था। आर्यसमाजी मारना तो आश्रम के भक्तों को चाहते थे। लेकिन पूर्ण परमात्मा की शक्ति के आगे ये सफल नहीं हो पाऐ। अंततः ब्रह्मानंद ने अपने ही सहयोगी सोनू को

मारना पड़ा ताकि संत रामपाल दास जी महाराज पर 302 का मुकदमा बनवा सकें जो सरकार के साथ पहले से तय प्रोग्राम था। इसके बाद सरकार की मिलीभगत से सोनू के पिता बलवान सिंह को पाँच लाख रूपये आर्थिक सहायता तथा मुंह बंद रखने के लिए सोनू के बड़े भाई को सरकारी नौकरी दी और साथ में धमकी दी कि सोनू की मौत का अगर जिक्र भी किया तो हम नौकरी दिलवा सकते हैं तो इसे छुटवा भी सकते हैं। सरकार का नौकरी देने का उद्देश्य था कि कत्ल की जांच न हो। सरकार द्वारा जो आर्थिक मदद हुई थी। वह आर्यसमाजियों ने यह कहकर कि बाद में इस गेट का सारा खर्च आर्य प्रतिनिधि सभा दे देगी, बलवान द्वारा गांव बाघपुर के मुख्य रास्ते पर सोनू द्वार बनवा दिया। इस मध्यस्था में गांव का ही एक और आर्यसमाजी मेहर सिंह भी था। लेकिन आर्यसमाजियों ने बाद में पैसा देने से इंकार कर दिया। इस कारण मेहर सिंह का भी सामाजिक शोषण आर्यसमाजियों ने किया। मेहर सिंह तथा तेजबीर पर पहले भी गांव वालों ने आरोप लगाया था कि तुमने सोनू को मरवा दिया। इस कारण मेहर सिंह परेशान रहने लगा और आखिर हृदय गति रूकने से उसकी मौत हो गई। इसके बाद आर्यसमाजियों का सारा दबाव बलवान पर आ पड़ा जिसके लड़के की मौत हुई थी। 5 लाख रूपये मिले थे, कुछ पैसा गेट निर्माण पर लग गया। ऊपर से आर्यसमाजियों का दबाव कि यहां आदमियों की गाड़ियां भरकर लाओ, कल वहां लाओ। 12 मई सन् 2013 वाले काण्ड में भी आर्यसमाजियों ने बलवान पर दबाव बनाया कि यहां हथियारों तथा गुण्डों पर बहुत खर्च हो रहा है, इसमें सहयोग करो। तात्पर्य है कि जो 5 लाख रूपये प्राप्त हुए थे, आचार्यों ने सर्व खर्च करा दिए। इसी दबाव में बलवान भी परेशान रहने लगा। अंततः अप्रैल 2014 में उसका भी हृदय गति रूकने से देहांत हो गया।

5. चांद सिंह पुत्र दीपचंद :-

यह व्यक्ति बलवान का छोटा भाई तथा सोनू का सगा चाचा था जिसकी बीमारी से बहुत परेशान होकर मौत हुई तथा चांद का एक लड़का भी कैंसर से पीड़ित होकर काल का ग्रास बना।

मेहर सिंह पुत्र बलवंत और जयपाल पुत्र लालचंद।

इन व्यक्तियों ने आर्यसमाजियों की भीड़ जुटाने में पूरी मदद की थी। लोगों को बहला-फुसलाकर गाड़ियों में बैठाना इनका मुख्य कार्य था। इसी सहयोग के कारण इन्होंने अपने पाप कर्म बढ़ा लिये।

6. मेहर सिंह पुत्र बलवंत सिंह :-

यह व्यक्ति अपने छोटे लड़के के पास रहता था। जिसका नाम बिजेन्द्र है। उसका Accident में पैर टूटा तथा उसके पास एक ही लड़का था। वो भी काल का ग्रास बन गया और खुद मेहर सिंह की भी हृदय गति रूकने

से मौत हो गई।

7. जयपाल पुत्र लालचंद :-

यह व्यक्ति आर्यसमाजियों का पूर्ण रूप से सहयोगी है। इसके लड़के को सन् 2006 के करौंथा काण्ड में गोली भी लगी थी। इसकी पत्नी को कैंसर का रोग हो गया तथा इसी में इसके पिता जी की भी मौत हो गई और यह खुद नशे का आदी हो गया। इन्हीं की एक छोटी बहन है जो उस समय गांव बाघपुर में इसी के पास रहती थी।

8. उस लड़की का नाम काले है जो इसी माहौल में रहकर गुरूदेव के खिलाफ गलत ब्यानबाजी करने लगी। इस लड़की पर ऐसा कहर टूटा जो बहुत दिल दहलाने वाला है। इसके दो बच्चे एक लड़का तथा एक लड़की थी। लड़का हरियाणा पुलिस में लगा हुआ था। दोनों की ही रोड़ दुर्घटना में मृत्यु हो गई। इस लड़की का घरवाला पहले काल का ही ग्रास बन चुका था। अब यह लड़की परिवार के चार सदस्यों में अकेले बची हुई थी।

9. नसीब पुत्र सतबीर सिंह :-

यह लड़का भी विरोध करने में अग्रणी था। यह भी पूर्ण परमात्मा के खिलाफ बोलता था। इस पर भी काल का कहर टूटा तथा 302 के मुकदमे के विरोध में जेल जाना पड़ा।

आर्यसमाजी आचार्य बलदेव, विजयपाल, सतबीर शास्त्री तथा अन्य 12 मई 2013 को पुनः सतलोक आश्रम पर आक्रमण करने में सहयोग लेने के लिए गांव बाघपुर में गए तथा गांव इकट्ठा किया और अपना घटिया मनसुबा बताया तो बाघपुर की पंचायत ने कहा कि हम तो उसी दिन को पछता रहे हैं, जब 12 जुलाई 2006 को तुम्हें सच्चा व्यक्ति जानकर गांव से कई गाड़ियां भरकर आदमी लड़ाई के लिए भेजे थे। अब हम आपकी कोई मदद नहीं करेंगे। गांव बाघपुर के व्यक्तियों से भी कह दिया कि यदि कोई इनकी मदद करेगा और मारा गया तो गांव उसका साथ नहीं देगा। वहां से ये आर्यसमाजी दुष्ट आचार्य अपना-सा मुंह लेकर लौटे।

इस गांव बाघपुर में हो रहे कहर का सर्व हाल लिखें तो एक अलग से पुस्तक बन जाए। इसलिए बुद्धिमान व्यक्ति को संकेत ही पर्याप्त होता है।

सतलोक आश्रम करौंथा के आसपास गांव के सभी व्यक्ति बुरे नहीं

★ इस पुस्तक में यह जानकारी देकर हम किसी का अपमान नहीं करना चाहते। हम सतर्क करना चाहते हैं कि आप परमात्मा से डरो, शुभ कर्म करो। हम मानते हैं कि डीघल, करौंथा तथा बाघपुर तथा आसपास के गांव के सर्व व्यक्ति बुरे नहीं हैं। कुछ व्यक्ति ही दुष्ट हैं जो अन्य को गुमराह करके अपराध करा देते हैं। गांव डीघल का मांगेराम पुत्र पृथी एक **Bad Element**

है। यह औरों को भिड़ाकर स्वयं पीछे खिसक जाता है। करौंथा आश्रम पर आक्रमण कराने तथा गांव डीघल के भोले-भालों को शराब पिलाकर झगड़े के लिए उकसाने में इस व्यक्ति की अहम भूमिका रही। परंतु इसको और इसके परिवार के किसी सदस्य को कहीं खंरोच तक नहीं आई। कारण यह है कि यह औरों को आगे करके स्वयं भाग जाता है।

प्रत्येक गांव से आश्रम की दूरी लगभग दो कि.मी. से अधिक है। डीघल गांव से 4 कि.मी. दूर है। आप जी को आश्रम के संत तथा भक्तों से क्या परेशानी थी? किसी सिरफिरे व्यक्ति की बातों में आकर आप जी ने जुल्म किया। उसकी हानि उठा रहे हो। विवेक से कार्य करना चाहिए। जिन भाग्यवानों ने सन्त रामपाल दास जी के बताए भक्ति मार्ग को स्वीकार किया, उनको कितना लाभ हुआ। पढ़ें इसी पुस्तक के पृष्ठ 47 पर।

''डीघल गाँव के तथा अन्य सर्व भक्त सुखी''

★ गाँव डीघल में जितने भी आश्रम के भक्त हैं, सर्व सुख से बसे हैं। भक्त सुरेश दास पान्ना-गंजा गांव डीघल का उदाहरण भी प्रत्यक्ष है। यह स्वयं शराब पीता था, नालियों में गिरा रहता था। इसकी धर्मपत्नी यशवंती को दौरे पड़ते थे। सुरेश ने शराब त्याग दी, वह देवता बन गया। बहन यशवंती पत्नी सुरेश उसी समय से स्वस्थ हो गई। परमात्मा का कमाल देखें कि भक्त सुरेश के दोनों लड़के दिल्ली पुलिस में एक ही समय की भर्ती में नौकरी लग गए। एक पैसा नहीं लगा, गाँव वालों ने कहा कितने रूपये दिए रिश्वत के? भक्त ने कहा मेरे पास पैसा देने को कहां है? हमारे सतगुरू रामपाल दास जी महाराज की कृपया से परमात्मा कबीर जी ने दया की है। यह बात गाँव वालों के गले नहीं उतरी। डीघल गाँव के भक्त निर्विकार तथा अन्य सर्व भक्त सुखी जीवन जी रहे हैं। संत रामपाल दास जी महाराज को विश्व के उद्धार के लिए परमात्मा ने भेजा है। जो विरोध कर रहे हैं, वे बाद में रोया करेंगे। संत रामपाल दास जी महाराज सामान्य व्यक्ति नहीं हैं, ये परमात्मा के भेजे अवतार हैं। देखें प्रमाण इसी पुस्तक के पृष्ठ 72 से 124 पर भविष्यवाणियाँ जो सत्य सिद्ध हो रही हैं।

''करौंथा गांव में किए का फल मिला''

करौंथा गांव के व्यक्ति अधिकतर अपने काम तक सीमित हैं। उनको आर्यसमाज के लोगों ने भ्रमित किया। अधिकतर व्यक्ति फिर भी निष्पक्ष रहे। कुछ दुष्ट टाइप के व्यक्ति शराबी-कवाबी, अपराधी किस्म के व्यक्तियों ने ही दुष्ट आचार्यों का साथ दिया और सतलोक आश्रम करौंथा पर आक्रमण करने के लिए आर्यसमाजियों के साथ गए। जो पुलिस के साथ मुठभेड़ में घायल

हुए, उनको हरियाणा सरकार ने 50-50 हजार रूपये इनाम दिया।

12 जुलाई 2006 के करौंथा काण्ड के दो-तीन महीनों के पश्चात् पप्पू पुत्र सुबे के परिवार के 7 सदस्य दुर्घटना में मरे। उस जीप दुर्घटना में करौंथा गांव के 16 व्यक्ति आश्रम के पास मर गए। मरने वालों में 7 तो एक ही परिवार के थे, जो घायल जीवित बचे थे, वे रोहतक के P.G.I.M.S. हस्पताल में दाखिल कराए गए। वहां पर एक भक्त अपने रिश्तेदार से मिलने गया था। जो घायल हुए थे वे बता रहे थे कि जीप जब आश्रम से आधा कि.मी. थी। नहर से पार होते ही आश्रम स्पष्ट दिखाई देता है। किसी यात्री ने पूछा कि यह सामने क्या है? उसी समय मरने वाले संत रामपाल दास जी महाराज को गालियां देने लगे। 20 सैकिण्ड के पश्चात् धमाका हुआ। केवल वही व्यक्ति मरे जो बुरी-बुरी गालियां संत जी को दे रहे थे। गांव के भक्तों ने बताया कि ये सर्व मरने वाले आश्रम की बहन-बेटियों को बहुत बुरा कहते थे। संत रामपाल जी महाराज को भी गालियां दिया करते थे। उनकी मुहकान (शोक व्यक्त करने) हरियाणा का मुख्यमंत्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा गया। इससे स्पष्ट है कि सर्व अपराधिक कर्म इसी का कराया हुआ था। नहीं तो हरियाणा में एक-एक परिवार के 10-10 सदस्य दुर्घटना में मरे हैं। किसी का शोक व्यक्त करने मुख्यमंत्री नहीं गया। जो उस दुर्घटना में घायल हुए थे, उनमें से एक भोगल नाम का अपराधी तो पागल हो गया। पैर खराब हो गए, 2½ वर्ष तक भुगत कर मरा।

★ करौंथा गांव का एक नसीन नाम का नाई भी आश्रम के संत तथा भक्तों को बहुत गालियां देता था, उसी दुर्घटना में टांग के चोट लगी, 2½ वर्ष भुगत कर मरा।

★ गांव करौंथा का एक हरिचंद पुत्र लालचंद जो छुड़ानी आश्रम के महन्त का विशेष चेला था, भक्तों तथा संतों को बहुत गालियां देता था। उसका सतीश नाम का बेटा उसी दुर्घटना में घायल हुआ। कोमा (Coma) में चला गया। एक हाथ, एक पैर काम छोड़ गया। फिर भुगत कर मरा। इस व्यक्ति ने आश्रम के प्रति बहुत गलत आरोप लगाए थे तथा लोगों को जैली-गंडासे लेकर आश्रम पर आक्रमण करने के लिए लाऊड स्पीकर लगाकर प्रेरित किया था। इसको छुड़ानी के अवधूत आश्रम के महन्त से पैसे तथा प्रोत्साहन मिला था। इसने कढ़ाही चढ़ाकर बदमासों को लड्डू-जलेबी खिलाई थी।

इसके पश्चात् गांव करौंथा में कहर का सिलसिला शुरू है।

1. राजेश उर्फ कचरा पुत्र सुबे नाम का करौंथा गांव का व्यक्ति 12 जुलाई 2006 के करौंथा काण्ड में आक्रमणकारी था। इस दुष्ट व्यक्ति ने दिल खोलकर पाप किया। आर्यसमाजियों से रूपयों में बिक गया। गांव के भोले-भाले नौजवानों को बहकाकर आश्रम पर आक्रमण करने गया था।

आश्रम के भक्तों के घरों को आग लगाने के लिए करौंथा के व्यक्तियों को उकसाया था। और भी घने भक्तों को पेशी के दौरान रोहतक पीटा करता था। संत रामपाल दास जी महाराज तथा भक्तों पर सन् 2006 में बनाए गए झूठे मुकदमों में झूठा गवाह भी था। इस अपराधी ने अपने साथ अपने बाप को बेमौत मरवाया तथा स्वयं भी बेमौत मारा गया। इसने किसी की बहन-बेटी को बुरा-भला कहा था। उसी के प्रतिशोध में कुछ हथियारबंद लोगों ने कचरे के घर पर आकर ही गोली मारी। इसके पिता की तो वहीं पर मौत हो गई। यह अपराधी 10 दिन तक रोहतक P.G.I.M.S. में भुगत कर मरा। अपने किए का फल भोगा।

2. करौंथा गांव का सोनू पुत्र अशोक अनुसूचित जाति का जिसने करौंथा आश्रम पर 12 जुलाई 2006 को आक्रमण किया। पुलिस मुठभेड़ में घायल हुआ। हरियाणा सरकार से 50 हजार रूपये इनाम प्राप्त हुआ। वह दोषी बाद में फांसी पर लटक कर मरा। अपने किए पाप कर्म को भोगा।

3. करौंथा गांव का देवेन्द्र उर्फ कालु पुत्र ईश्वर 12 जुलाई 2006 को आश्रम पर आक्रमण करने गया। पुलिस मुठभेड़ में घायल हुआ। सरकार से 50 हजार रूपये इनाम पाया। कर्जे से दुखी होकर घर छोड़कर भाग गया। पता नहीं मरा है या जीवित है, पांच वर्ष से लापता है। वह भक्तों और संत रामपाल जी महाराज को बहुत गालियां देता था।

4. करौंथा गांव का जयभगवान पुत्र गरीबा नाम का आदमी पहले संत रामपाल दास जी महाराज का शिष्य था। उसकी बेटी 10 वर्ष से तड़फ रही थी। संत रामपाल जी महाराज से नाम लेने के पश्चात् स्वस्थ हो गई। बाद में यह अपराधी गुरू द्रोही होकर भक्तों को रोहतक पेशी पर पहचान बताता था कि यह उनका शिष्य है। अन्य इसी गांव तथा आसपास के गांव के आदमी भक्तों को पीटा करते थे, जिनके घरों में वर्तमान में कहर हो रहा है। अधिकतर भुगत कर मर चुके हैं। स्वयं जयभगवान जहर खा कर मरा।

5. करौंथा गांव का जसबीर उर्फ जस्सड़ पुत्र टेका इतना दुष्ट था कि जब भगवान के घर करौंथा के भक्तों व संत के साथ किए अत्याचार का लेखा होगा तो यह पहली लाईन में पहला व्यक्ति होगा जो इतना जालिम और दुष्ट था। इसने पेशी पर आने वाले भक्तों को बहुत तंग किया। उनके सिर फोड़े, घायलों को भी पीटता था, अभद्र गालियां देता था। इसने आर्य समाजियों से रूपये लेकर उनका गुलाम बनकर शराब पिलाकर जवान बच्चों को लाकर आश्रम के भक्तों पर जुल्म करता तथा कराता था। इस दुष्ट का जब अंत आया तो इसने गांव करौंथा के ही एक परिवार की लड़की पर गलत नजर की। जिस कारण से लड़की के परिवार वालों ने अपने घर बुलाकर उस दुष्ट जसबीर की गुदा में डण्डा ठोक दिया। जिस कारण से उस अपराधी की मौत

कई दिन भुगतकर रोहतक मैडिकल में हुई।

6. करौंथा गांव के सुंदर पुत्र सहजु ने करौंथा के एक भक्त के ट्रैक्टर पर तेल डालकर आग लगाई थी। भक्त को तो परमात्मा ने नया ट्रैक्टर दे दिया। सुंदर अपराधी भक्तों के साथ बहुत दुर्व्यवहार करता था। इस जालिम दुष्ट के ढ़ाबे पर भूखी कुतिया आ गई। उसको रोटी डालना तो दूर, तेल डालकर जिंदा जला दिया। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि वह अपराधी भक्तों को कितना सताता होगा? इसने अपने किए का दण्ड भोगा।

इसकी दिमाग की नस फट गई। 4 वर्ष बेहोश (Coma में) रहा, तब इस अपराधी का अंत हुआ।

7. करौंथा गांव का आदमी करतार पुत्र रूपचंद आश्रम पर आक्रमण करने गया। पुलिस मुठभेड़ में घायल हुआ, सरकार से 50 हजार रूपये इनाम प्राप्त किया। भक्तों को गाली देता, दुर्व्यवहार करता था। भक्तों के घरों को आग लगाने की कोशिश की थी। वह 1½ वर्ष भुगत कर मरा।

8. करौंथा गांव का पाले पुत्र ओमल भक्तों को तंग करता था। आश्रम जाने से रोकता था, आर्यसमाजियों से रूपये लेकर जुल्म कर रहा था। दो वर्ष पश्चात् जहर की गोलियां खाकर मरा।

9. नरेश पुत्र धर्म सिंह काठमंडी रोहतक - इसकी पत्नी पागल थी, रोहतक पागल वार्ड में दाखिल थी। लड़की के मामाजी ने संत रामपाल दास जी महाराज से उपदेश ले रखा था। वे उस लड़की को संत रामपाल दास जी महाराज के पास लेकर गए। वह तुरंत स्वस्थ हो गई। नरेश तथा उसकी पत्नी ने नाम लिया, सुख का जीवन जीने लगे। करौंथा काण्ड के पश्चात् गुरू द्रोही हो गया। गुरू जी को गालियां देने लगा। पाखंडी मधु परमहंस रांजड़ी जम्मू वाले नकली संत से नाम ले लिया। दो वर्ष पश्चात् किसी के घर चिनाई का कार्य करने गया था, छत से गिरकर मर गया।

★ करौंथा गांव जि. रोहतक में 10-15 दिन में मौत हो जाना आम बात है। जिला रोहतक के करौंथा गांव में मौत का कहर शेष पढ़ें पृष्ठ 166 पर।

''गाँव बरहाणा में मौत का कहर''

आर्यसमाजी आचार्यों का बोया बीज कहाँ तक हानि कर रहा है, भोले व्यक्ति अब भी नहीं समझ पा रहे हैं कि किस कारण से गांव में कहर टूट रहा है। जवान-जवान व्यक्ति कोई जहर (Poison) खाकर मर रहा है, कोई दुर्घटना के कारण मर रहा है। कोई फांसी लगाकर मर रहा है। इन्होंने भी आर्य समाजियों के बहकावे में आकर दिल खोलकर संत रामपाल दास जी महाराज की निंदा की थी, गालियां दी थी। यह कहर तब ही समाप्त होगा जब ये लोग परमात्मा के ज्ञान को समझेंगे और संत रामपाल दास जी महाराज

से दीक्षा लेकर भक्ति करेंगे। जिस कारण से इस जीवन में सुखी होंगे और अगले जीवन में भी सुखी या अच्छी भक्ति करके पूर्ण मोक्ष प्राप्त करेंगे। गांव बरहाणा जिला झज्जर (हरियाणा) में मौत के कहर के शिकार हुए नौजवानों की सूची पढ़ें इसी पुस्तक के पृष्ठ 165 पर।

विशेष :- यही दशा करौंथा आश्रम के इर्द-गिर्द के अन्य गांवों की है। यहां पुस्तक विस्तार के कारण नहीं लिख रहे।

''उस क्षेत्र को किसने क्या दिया?''

इन दुःखदाई घटनाओं को याद करके हमारी आत्मा रो रही है क्योंकि ये भी इंसान थे। परंतु दुष्ट व्यक्तियों ने अपने स्वार्थ के कारण यह हाल करा दिया। यदि सत्य को जान लेते तो पाप से बच जाते और ये दिन न देखने पड़ते।

इन आर्यसमाजी आचार्यों ने क्या दिया इन गांवों को - जो आप पढ़ चुके हैं। संत रामपाल दास जी महाराज ने क्या दिया है इन गांवों को?

★ संत रामपाल दास जी के ज्ञान को सुनकर भक्तों ने सर्व बुराई त्याग दी, स्वच्छ जीवन जी रहे हैं। प्रत्येक गांव में प्रमाण है। इसलिए हम बार-बार निवेदन करते हैं कि आप सत्य-असत्य को स्वयं जानें और भक्ति करके मनुष्य जीवन सफल करें।

★ आर्यसमाजियों ने शराब पिलाकर अपराध कराए और मासूम लोग मरवाए।

★ मृत्यु तो भक्तों की भी होगी। परंतु इस मृत्यु में और जो व्यक्ति पाप कर्म करके मरे हैं, उस मृत्यु में बहुत अंतर है। भक्तों ने मनुष्य जीवन का उद्देश्य पूरा किया, मृत्यु के समय परमात्मा के विमान में बैठ कर जाऐंगे, मोक्ष प्राप्त करेंगे। जो पाप कर्म करके जीवन व्यर्थ करके मरे या मरेंगे, उनको यम के दूत अपराधी की तरह बांध कर ले जाऐंगे। कबीर परमेश्वर ने कहा है :-

कबीर, आए हैं सो जाऐंगे, राजा रंक फकीर।
एक विमान में चढ़ चले, एक बंधे जात जंजीर।।

''आश्रम से चोरी करने वाले पुलिस वालों का सर्वनाश''

★ सतलोक आश्रम करौंथा को सरकार ने अपने कब्जे में लेकर सुरक्षा के लिए पुलिस छोड़ दी। एक रणधीर नाम का पुलिस वाला गांव हथवाला जिला-जीन्द का रहने वाला D.S.P. का गनमैन था। D.S.P. आश्रम के सर्व A.C. तथा अन्य कीमती सामान ले गया। उस कार्य में रणधीर ने पूरा सहयोग दिया था तथा रणधीर स्वयं एक ट्रक लोहे के सामान का भरकर ले गया। उसका एक मित्र पुलिसवाला था। जिसके परिवार ने संत रामपाल दास जी महाराज से उपदेश ले रखा था।

रणधीर गनमैन ने अपने मित्र से एक दिन के लिए ट्रैक्टर मांगा। कारण बताया कि आश्रम से माल ले जाऊंगा। उसने अपने पुत्र से कहा कि तेरे

अंकल को ट्रैक्टर दे देना। लड़का संत रामपाल दास जी महाराज का शिष्य था। जब उस भक्त बच्चे को पता चला तो कहा कि आप हमारे पिता के मित्र हैं। हम आपकी सर्व मदद कर सकते हैं। परंतु इस महापाप में सहयोग नहीं दे सकते और अंकल कान खोलकर सुन ले, तुम उस आश्रम से एक पेचकस भी मत ले जाना, नहीं तो सर्वनाश को प्राप्त हो जाओगे। परंतु उसको काल उठा रहा था। उसने किराए पर ट्रक किया। एक ट्रक सामान आश्रम से चोरी करके ले गया।

उसने करौंथा आश्रम से एक ट्रक सामान के भरकर बेच कर रूपये लिये। छः महीने पश्चात् वह अपराधी पुलिस वाला रणधीर जहर की गोली खाकर मौत को प्राप्त हुआ तथा D.S.P. का इकलौता पुत्र विष खाकर मर गया। उसकी लड़की का पति मर गया। दूसरी जगह विवाह किया, फिर वह लड़की मर गई। स्वयं शुगर का मरीज है। पैर का अंगुठा तथा ऊंगली गलकर कट गई। गरीबदास जी ने अपनी अमृतवाणी में कहा है कि परमात्मा उन दुष्ट लोगों को चुन-चुनकर मारता है जो भक्तों तथा संतों को दुःखी करते हैं। अन्य और भी बहुत सारे प्रमाण हैं। यहां पुस्तक विस्तार को देखते हुए नहीं लिख रहे। समझदार को संकेत पर्याप्त होता है।

''श्री कृष्ण जी मथुरा त्याग कर द्वारिका में बसे''

श्री कृष्ण जी का जन्म मथुरा के राजा कंस की जेल में हुआ। जन्म से ही दुश्मनों की लाईन लग गई थी। मामा कंस, चाणूर, शिशुपाल, जरासिंध, कालयवन आदि ने श्री कृष्ण जी के साथ अनेकों जुल्म किए। जिस कारण से महात्मा कृष्ण जी और नर संहार न हो, इस उद्देश्य से मथुरा त्यागकर रातों-रात अपने सर्व परिवार तथा सेना लेकर मथुरा से लगभग 1500 कि.मी. दूर द्वारिका में बसे। द्वारिका समुद्र में एक बहुत बड़ा टापु था। श्री कृष्ण जी किसी को मारने के लिए नहीं जन्मे थे। वे जीव का उद्धार करना चाहते थे। परंतु जनता के दुश्मन महापुरूष के साथ ही जन्म लेते हैं। वे दुष्ट व्यक्ति महापुरूष के साथ झगड़ा कर अपने कर्म खराब करते हैं। अपना इतिहास खराब करते हैं। जिसके परिणाम स्वरूप भविष्य में निंदा के पात्र बनते हैं तथा घोर पाप के भागी भी बनते हैं।

श्री कृष्ण भगवान के मथुरा से चले जाने के पश्चात् वहां के जालिम लोगों ने अपनी विजय मानी तथा लड्डू बांटे थे। आज इतिहास गवाह है कि श्री कृष्ण तो पूज्य हुए तथा विरोधियों का नाम कितनी नफरत से लिया जाता है।

ठीक यह इतिहास करौंथा काण्ड करके कुछ दुष्ट लोगों ने दोहरा दिया। कलयुग में इन दुष्ट व्यक्तियों के नाम कंस, रावण की श्रेणी में आऐंगे जिन्होंने संत रामपाल दास जी महाराज के साथ जुल्म करके करौंथा आश्रम खाली

करा कर मिठाई बांटी थी। हरियाणा के मुख्यमंत्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा का भी काला इतिहास बनेगा।

''भूपेन्द्र नाम से हुई घृणा''

एक 12 वर्षीय लड़के ने 15 अगस्त 2013 को संत रामपाल दास जी महाराज से कहा कि गुरूदेव जी मेरा नाम बदल दो। संत जी ने पूछा कि वर्तमान में क्या नाम है? लड़के ने कहा ''भूपेन्द्र'', मैं इस कलंकित नाम को रखना नहीं चाहता जिस नाम के व्यक्ति ने कंस से भी बढ़कर अत्याचार किया है। यह कहकर बच्चे की आँखों में आंसू आ गए क्योंकि 10 जुलाई 2006 को वह सत्संग सुनने के लिए अपनी माता तथा पिताजी के साथ करौंथा आश्रम में जा रहा था। डीघल गांव के कुछ दुष्ट लोगों ने उन तीनों को बुरी तरह से पीटा। बच्चे को छीनकर जमीन पर पटक दिया। वहीं पर पुलिस भी बहुत संख्या में खड़ी थी। जब पुलिस वालों से उसके पिता ने शिकायत की तो पुलिस वाले हंसने लगे। एक नेक पुलिस वाले ने कहा कि भक्त वापिस चला जा, यह सारा जुल्म मुख्यमंत्री भूपेन्द्र करा रहा है। नहीं तो इनकी क्या मजाल ये मुठ्ठीभर लोग उधमस उतार रहे हैं (जुल्म कर रहे हैं), हमारी आत्मा भी रो रही है। आप से पहले तो इन्होंने बहुत-सी बहन-बेटियों के साथ सरेआम अभद्र बर्ताव किया है। उनके आभूषण भी छीन लिए। किराए के पैसे भी नहीं छोड़े। रोते हुए जान बचाकर भागे हैं। उस दिन से उस बच्चे को यह बात घर कर गई थी। उस दिन वो रोते हुए घर चले आए थे। संत जी के जेल से आने के पश्चात् ही मिल पाए थे। संत रामपाल दास जी महाराज ने कहा बेटा! नाम बुरा नहीं होता। काम (कर्म) बुरा होता है। अपराधी से नफरत नहीं करनी चाहिए, अपराध से नफरत करनी चाहिए। जो जैसा करेगा, उसका फल परमात्मा अवश्य देगा। अपना किया भोगना पड़ता है। ऐसे अत्याचार की कथा सुनकर कलेजा मुंह को आता है। क्या भूपेन्द्र सिंह हुड्डा तथा ऐसे जालिम व्यक्ति सुखी रह सकेंगे? कभी नहीं। भगवान के घर देर है, अंधेर नहीं।

''आर्यसमाजियों का हथियार उन्हीं पर चला''

★ 12 मई 2013 को फिर से जुल्म किया गया। परमात्मा ने ऐसी माया फेरी जो मुख्यमंत्री भूपेन्द्र सिंह आर्यसमाजी अपने ग्रुप के व्यक्तियों, आचार्यों को पूरा सहयोग देकर आश्रम के अनुयाईयों को परेशान किया करता था। उसी का सुदर्शन चक्र उसी पर चल गया। 18-02-2013 को श्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा मुख्यमंत्री हरियाणा को पता चला कि सर्वोच्च न्यायालय ने करौंथा आश्रम ट्रस्ट को सौंपने के आदेश दे दिए। उस के पश्चात् अपने साजन्दों, आचार्यों को फिर से तैयार किया। गऊशाला घड़ौली जिला-जीन्द के नाम 2½ करोड़

रूपये की ग्रांट दी। उस ग्रांट को देने का उद्देश्य था कि किराए पर बदमाश लाए जाऐं क्योंकि आसपास के व्यक्ति समझ गए थे कि संत रामपाल दास जी महाराज व उनके भक्त बुरे नहीं हैं। इसलिए इनको आसपास की जनता का सहयोग नहीं मिल रहा था। अपने षड़यंत्र के अनुसार 12 मई 2013 को करौंथा आश्रम पर आक्रमण करने की योजना बनाई। 7 अप्रैल 2013 को आश्रम ट्रस्ट को मिला। 9 अप्रैल 2013 को आर्यसमाजियों ने आक्रमण कर दिया। स्थानीय जनता ने उनका कोई सहयोग उस पाप में नहीं दिया। उस दिन अगली योजना बनाकर आने का कहकर चले गए। (जिस कारण से बदमाशों को किराए पर लाए 12 मई 2013 को करौंथा आश्रम में उपस्थित भक्तों को मारने के लिए करौंथा गांव में इकट्ठे हुए बदमाश भी उनके साथ थे।) दूसरी ओर आश्रम करौंथा के ट्रस्टी ने माननीय हाई कोर्ट चण्डीगढ़ में सुरक्षा की अर्जी लगाई। समय की आवश्यकता को समझकर न्यायालय ने आश्रम की सुरक्षा के सख्त आदेश दिए। जिस कारण से करौंथा आश्रम के चारों ओर पुलिस तैनात कर दी गई। पहले 12 जुलाई 2006 तथा 9 अप्रैल 2013 के आक्रमणों में स्थानीय पुलिस आर्यसमाज के व्यक्तियों की खुलकर मदद करती रही थी। परंतु 12 मई 2013 को पुलिस बल बाहर से आया था।

स्थानीय पुलिस अधिकारियों ने आर्य समाजियों को कह रखा था कि आप पहले पुलिस पर आक्रमण करना, पुलिस भाग जाएगी। परंतु कोर्ट के आदेश 10 मई 2013 को हुए थे। जिस कारण से उन उपद्रवियों को पता नहीं चला कि अब पुलिस भाग नहीं सकती। जिस कारण से अपनी पूर्व योजना अनुसार गांव करौंथा के बस स्टैंड के पास रोहतक-झज्जर रोड़ पर आश्रम से लगभग 1½ कि.मी. दूर स्कूल में आक्रमणकारियों को रोकने के लिए तैनात पुलिस पर आक्रमण कर दिया। पुलिस ने भी जवाब में कार्यवाही की जिसमें एक करौंथा गांव की औरत प्रोमिला सहित तीन उपद्रवियों की जानें गई, बहुत सारे घायल हुए। पुलिस वाले भी बहुत संख्या में घायल हुए।

कमाल की बात है कि जैसे झूठे मुकदमें जुलाई 2006 में संत रामपाल जी महाराज व भक्तों पर बनाए थे। उसी तर्ज पर 12 मई 2013 को भी प्रोमिला नाम की औरत की हत्या का झूठा मुकदमा संत रामपाल दास जी महाराज तथा भक्तों पर बना दिया। जबकि सारा भारत टी.वी. पर देख रहा था, Live देख रहा था कि एक प्रोमिला नाम की औरत जो करौंथा गांव की है, उस समेत तीन की मौत पुलिस मुठभेड़ में हुई। विडियो में वह प्रोमिला लाठी लेकर पुलिस से लड़ रही है। वह करौंथा आश्रम से 1½ कि.मी. दूर मरी थी।

जबकि संत रामपाल दास जी महाराज सतलोक आश्रम बरवाला में 10-11-12 मई 2013 का पूर्व निर्धारित सत्संग कर रहे थे। बरवाला जिला हिसार

में हैं, करौंथा गांव से लगभग 100 कि.मी. दूर है। अब जांच में संत रामपाल जी महाराज को निर्दोष पाया गया है।

दोनों प्रशासन तथा आर्यसमाजी जो संत रामपाल दास जी महाराज तथा उनके भक्तों पर कहर ढ़ाया करते, 12 मई 2013 को आपस में कट मरे। मुख्यमंत्री हरियाणा श्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा ने संत रामपाल दास जी महाराज से प्रार्थना की, अपनी सरकार बचाने की गुहार लगाई। बिना शर्त सतलोक आश्रम करौंथा खाली कर दिया गया। परंतु आश्रम पर हमारा कब्जा रहेगा। ऐसा ही हुआ, आश्रम पर ट्रस्ट का ताला लगाया गया। भक्त समय-समय पर आश्रम की सफाई करके आते हैं। सुरक्षा सरकार के जिम्मे है। यदि संत रामपाल दास जी महाराज यह परोपकार नहीं करते तो आश्रम को किसी कीमत पर सरकार खाली नहीं करा सकती थी क्योंकि सर्वोच्च न्यायालय के आदेशानुसार करौंथा आश्रम प्राप्त हुआ था। मिल्ट्री भी आश्रम की सुरक्षा के लिए पहुंच गई थी। परंतु संत मान-बड़ाई नहीं चाहते, जनता की भलाई चाहते हैं। यह अनमोल कार्य महान संत ही कर सकते हैं।

आश्चर्य की बात है कि मुख्यमंत्री जी श्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा ने इतने बड़े परोपकार का भक्तों तथा संत को क्या प्रतिफल दिया? कभी यह भी नहीं पूछा कि आप दुःखी हो या सुखी? धन्यवाद करने का भी काम नहीं। परंतु हम तो उस विधान का पालन करते हैं :- ''नेकी कर कुऐं में डाल'', ''जो बुरा करेगा, उसका होगा बुरा हाल''।

''मुख्यमंत्री भूपेन्द्र सिंह का सुदर्शन चक्र उसी पर चला''

★ एक बार दुर्वासा ऋषि ने निर्दोष भक्त अम्ब्रीस को मारने के लिए सुदर्शन चक्र छोड़ा था। भक्त अम्ब्रीस के चरण छूकर सुदर्शन चक्र दुर्वाशा ऋषि को मारने के लिए चल पड़ा। दुर्वाशा ऋषि भागकर भगवान विष्णु जी के पास गया। परंतु विष्णु जी ने कहा कि तेरी जान अम्ब्रीस ही बख्स सकता है। उसी से क्षमा याचना कर। दुर्वासा ऋषि ने वापिस आकर भक्त अम्ब्रीस के चरण पकड़ कर अपनी गलती का एहसास किया, क्षमा याचना की। तब वह सुदर्शन चक्र शान्त हुआ तथा दुर्वासा ऋषि की जान बची।

इसी प्रकार 12 मई 2013 को मुख्यमंत्री भूपेन्द्र सिंह अपनी देख-रेख में सर्व आप्रेशन करा रहा था। जब देखा कि मेरे ही दोनों दांया-बांया हाथ (आर्यसमाजी तथा पुलिस) आपस में लड़ मरे तथा विरोधी पार्टियों के व्यक्तियों ने आर्यसमाजियों का साथ दे दिया। भूपेन्द्र की सरकार एक टांग पर खड़ी हो गई। तब मुख्यमंत्री हैलिकॉप्टर में बैठकर युद्ध को देखता हुआ UPA अध्यक्ष सोनिया के पास दिल्ली गया। सोनिया जी ने उसे गृह मंत्री भारत सरकार के पास भेज दिया। गृहमंत्री ने कहा कि संत रामपाल जी से

क्षमा याचना कर, तभी तेरी सरकार बच सकती है। तब 13 मई 2013 को मध्यस्थ के माध्यम से यह सर्व कार्य सरल हुआ। मुख्यमंत्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा की 1½ वर्ष की ताजपोशी भी महान संत सतगुरू रामपाल दास जी महाराज ने प्रदान की।

विरोधी तो वही भूमिका कर रहे हैं जो मथुरा के दुष्ट लोग श्री कृष्ण के साथ किया करते थे। श्री कृष्ण जी की पूजा विश्व में हुई और विरोधी निंदा के पात्र बने तथा महापाप के भागी बने। जैसे मथुरा के व्यक्तियों ने श्री कृष्ण जी के मथुरा से चले जाने के पश्चात् खुशी से मिठाई बांटी थी। वे श्री कृष्ण जी के अवतार धर्म में कोई बाधा नहीं बन सके अपितु पाप के भागी बने। आज तक उनकी निंदा की जाती है। इसी प्रकार संत रामपाल दास जी महाराज को पूर्ण परमात्मा कबीर जी ने अवतार रूप में भेज रखा है। (पढ़ें प्रमाण इसी पुस्तक के पृष्ठ 72 पर।) दुष्ट व्यक्तियों ने मीडिया के माध्यम से संत रामपाल दास जी महाराज को कितना बदनाम किया, जनता तथा सरकार को विरोधी बना दिया। परंतु परमात्मा सदा सत्य का साथ देता है। संत रामपाल जी के कई लाख नए भक्त बन गए। विरोधियों का विनाश हो रहा है।

हरियाणा की जनता के साथ आर्यसमाज के आचार्यों ने अपने स्वार्थवश बहुत बड़ा धोखा किया है। सतलोक आश्रम करौंथा में सत्संग सुनकर हरियाणा के व्यक्ति संत रामपाल दास जी महाराज से दीक्षा लेकर सर्व बुराई त्याग कर निर्मल तथा सुखी जीवन जी रहे थे।

झूठी अफवाहें फैला कर संत जी को बदनाम करके हरियाणा की जनता में घृणा का विष घोल दिया। जिस कारण से हरियाणा की जनता संत रामपाल जी महाराज से घृणा करने लगी और आश्रम में जाना बंद कर दिया। अनमोल अवसर चूक रहे हैं। ये आचार्य यही चाहते थे कि किसी तरह जनता संत रामपाल जी महाराज का सत्संग सुनना बंद कर दे। जिससे महर्षि दयानंद के अज्ञान का पर्दाफाश न हो सके। परंतु दुष्ट आचार्यों ने 12 मई 2013 को जो पुनः आश्रम पर आक्रमण करके जनता के सामने स्पष्ट कर दिया कि कौन अच्छा है, कौन बुरा? अब हरियाणा के व्यक्ति भी दीक्षा लेकर अपना कल्याण करा रहे हैं। दूर देश से आने वाले श्रद्धालुओं की तो गिनती ही नहीं है।

11 से 13 जून 2014 को कबीर परमेश्वर जी के प्रकट दिवस पर लगभग 1½ लाख भक्त सत्संग सुनने पहुंचे। 12 एकड़ जमीन में सतलोक आश्रम बरवाला बना है। इसके अतिरिक्त 6 एकड़ जमीन चार दिन के लिए उधार ली गई। तब संगत को बैठाया। दूसरी ओर विरोधियों का नाश हो रहा है।

''आर्यसमाजी आचार्यों के पाप का घड़ा भर गया''

★ दयानंद मठ रोहतक पर नाजायज कब्जा किए बैठे आर्यसमाजी आचार्यों

के दो गुट बन गए हैं। एक दूसरे से लड़ रहे हैं। पुलिस ने बलदेव गुट की दयानंद मठ के अंदर ही अच्छी पिटाई की क्योंकि 12 मई 2013 को इन्होंने पुलिस को बेरहमी से मारा था। इसी कारण से पुलिस पहले से ही खफा थी। उस दिन भी इन्होंने पुलिस पर पत्थर मारे थे। आर्यसमाजी डर के मारे वृक्षों पर चढ़ गए। वहां से उतार कर पीटे। प्रत्यक्षदृष्टा ने यह भी बताया कि आचार्य ब्रह्मानंद गाड़ी में घुस गया। वहां से डण्डे की खोद मार-मारकर पुलिस ने गाड़ी से निकाल कर पीटा। इस प्रकार इन दुष्ट व्यक्तियों पर परमात्मा का चक्र चल पड़ा है। इनकी उल्टी गिनती शुरू हो गई है।

80-85 वर्ष के बूढ़े आर्यसमाजी आचार्य तथा शास्त्री की उपाधि वाले जनता को मरने-मारने का पाठ पढ़ाते हैं। जबकि ऐसे वृद्ध तो बच्चों को झगड़ा करने से रोकते हैं। ये झगड़ा करने के लिए उकसाते हैं तो ये जनता के नाशक हैं। ये सिमटते जा रहे हैं क्योंकि ये झूठे तथा उपद्रवी व्यक्ति हैं। संत रामपाल दास जी महाराज विश्व कल्याणार्थ परिश्रम कर रहे हैं। जो सत्य पर डटे हैं वे विश्व में फैलते जा रहे हैं। प्रत्येक महीने लगभग 25 हजार नए भक्त उपदेश लेकर हमारे साथ जुड़ रहे हैं।

मुख्यमंत्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा का तो बहुत बुरा हाल होगा, समय आने पर दिखाऐंगे। इसने तो पाप की मालगाड़ी भर ली है।

''भ्रष्ट जजों का बुरा इतिहास''

यदि पुलिस ने गलत धारा लगाकर मुकदमा बनाकर न्यायालय में पेश कर दिया तो जज का प्रथम कर्त्तव्य है कि पहले धारा ठीक की जाऐं। फिर मुकदमें की कार्यवाही शुरू की जाए। ऐसा न करके अन्याय किया है। आगे क्या आशा है, ये न्याय करेंगे? अधिक जानकारी के लिए पढ़ें पृष्ठ 125 पर।

कुछ भ्रष्ट जज भी निजी स्वार्थ के लिए न्याय नहीं कर रहे हैं। उनका भी बुरा हाल होगा। समय आने पर फिर से नई किताब-नया इतिहास बनाया जाएगा।

''महर्षि दयानंद के पाप का घड़ा भरा, भुगत कर मरा''

महर्षि दयानंद जी ने परमेश्वर कबीर जी की अभद्र अप्रमाणित आलोचना (निंदा) की। जिसके कारण उनकी मृत्यु एक महीने तक तड़फ-तड़फकर हुई। पढ़ें इसी पुस्तक के पृष्ठ 154 पर।

''आर्य समाजियों ने माना परमात्मा के अवतार हैं''

आर्यसमाज के कुछ गऊशाला के प्रधान तथा सदस्य वर्तमान में आजीवन कारावास की सजा भोग रहे हैं। वे रोहतक जेल में थे। वहां एक संत रामपाल दास जी महाराज के भक्त से उनकी मुलाकात हुई जो उसी जेल में वार्डन की नौकरी करता था। जब उन व्यक्तियों को सच्चाई का पता चला कि संत

रामपाल दास जी महाराज को गलत बदनाम किया गया है। उन्होंने भी माना कि हमारे से गलती हुई थी। हमने सच्चाई को जाने बिना ही संत जी का विरोध किया। उन आर्यसमाजी जो गऊशाला के सदस्य थे, ने स्वयं भी प्रार्थना की, हम दुलीना काण्ड में झूठे फंसा दिए हैं। हम गऊशाला के सदस्य अवश्य थे लेकिन हमारा उस हत्या में कोई दोष नहीं था।

सेवा में,

पूर्ण महात्मा/परमात्मा कबीर साहब
संत रामपाल महाराज जी,

विषय: जेल (आजीवन कारावास) से मुक्त कराने हेतु

श्रीमान जी,

निवेदन है कि हम सात प्राणी जो कि झूठे 302 के मुकदमे में जेल सोहलक में बंद है व आजीवन कारावास की सजा काट रहे हैं। हम सातों आदमी बिना कसूर के जेल में बंद है हमें दुलीना हादसा 2002 में फंसाया गया है। उसमें भीड़ ने चौकी में बंद पांच आदमी जो कि जिंदा गाय की खाल उतार रहे थे, उनको जान से मार दिया था। हम सातों आदमी कज्जर गौशाला के मेम्बर है इसलिए पुलिस ने हमें फंसा दिया। केस में केवल पुलिस ही गवाह है। कोई भी अन्य कोई EYE WITNESS नहीं है।

यहां सोहलक जेल में आपके भक्त संजय मंगोला ने आपके बारे में बताया कि आप पूर्ण परमात्मा है और आपका नाम लेने से हमारे सारे कष्ट, दुःख दूर होंगे। हम सातों आदमी संजय मंगोला की बात पर विश्वास करके आपसे प्रार्थना करते हैं कि आप हमारी इस प्रार्थना को स्वीकार कर इस दुःख की घड़ी में अपने चरणों में लेना। हमें भी पूर्ण विश्वास है कि आप परमात्मा रूप हो और हमें अवश्य कारागार से मुक्त कराओगे।

हम सभी परिवार आजीवन आपके आजीवन ऋणी रहेंगे।

हमारी सातों आदमियों की सजा कज्जर ADSJ. A.K. JAIN की कोर्ट में

इसलिए हे संत रामपाल जी! आप परमात्मा स्वरूप हैं, हमें इस झूठे मुकदमे से बरी कराओ। भक्त ने उनको राय दी थी कि आप जी स्वयं दीक्षा लो। जब तक आप जेल से बाहर नहीं आते हो तो अपने परिवार के सदस्यों से मुलाकात पर कहो कि वे दीक्षा लेकर भक्ति करें। तब आप की मदद परमात्मा करेगा तथा आपका छुटकारा हो जाएगा। परंतु किसी कारण से वे ऐसा नहीं कर पाए। जिस कारण से उनको कोई लाभ नहीं मिल सका। उनके द्वारा की गई लिखित प्रार्थना पढ़ें। जजों के न्याय को देखें, कोई गवाह नहीं। पुलिस ने झूठा केस बनाया, जज ने सजा कर दी।

सुनाई गई थी 7-8-2010 को। उसके बाद हमने माननीय उच्चन्यायालय में अपील दायर की हुई है। हमारी अपील नं. CRIMINAL APPEL No 864 DB 2010, 844 DB-2010, हमारा केस माननीय न्यायाधीश S.K. MITTAL व M.J. PAUL की खंडपीठ में विचाराधीन है। जमानत / BAIL की भी हमने कोशिश की है लेकिन निराशा ही हाथ लगी।

आपसे पुनः करबद्ध प्रार्थना है कि आप हमें इस संकट से मुक्त कराओ। हम सातों गांवों के आदमी हमारे प्रिय, रिश्तेदार आपके आजीवन आभारी रहेंगे।

धन्यवाद

प्रार्थी

ओमप्रकाश पुत्र बालाराम
गांव रूबलाना गुज्जर

सतवीर राठी पुत्र वीरभानसिंह
वार्ड न 4 गुज्जर

रमेश कुमार पुत्र कलीराम
गांव सुरहा (कलोई)
गुज्जर

सुबेसिंह सरपंच गांव
कलोई (गुज्जर)

जगवीर मल्हान पुत्र
श्री बलजीत मल्हान
गांव सुबाना गुज्जर

शिशुपाल पुत्र श्री बलबीरसिंह
हाल / पार्षद वार्ड 4
गुज्जर

डा० रणवीर मल्हान
पुत्र श्री अत्तरसिंह मल्हान
सिलानी जाट गुज्जर

★ ''संत घीसा दास जी को सताने की कथा''

गांव खेखड़ा जिला बागपत (उत्तर प्रदेश) में एक घीसा दास नाम के संत रहते थे। उनको परमेश्वर कबीर जी मिले थे। उसके पश्चात् घीसा दास जी सत्संग करने लगे तथा नामदान करने लगे।

घीसा संत देवी-देवताओं की भक्ति बंद करा कर शास्त्रानुकूल सत्य भक्ति बताते थे। जिन पाखण्डी आचार्यों-गुरूओं की दुकानें बंद होने लगी, उन्होंने गांव के व्यक्तियों को भ्रमाया कि घीसा के पास रात्रि में सत्संग के बहाने स्त्रियां जाती हैं। वहां पर गलत कार्य होता है। भोले लोगों ने उन दुष्ट स्वार्थी लोगों की बातों पर विश्वास कर लिया तथा घीसा जी को गांव से निकाल दिया। संत घीसा दास जी खेखड़ा से 100 मील की दूरी पर एक गांव में रहने लगे। वहां के व्यक्तियों को बहुत लाभ होने लगे। गांव खेखड़ा में जवान मौतें होने लगी, हाहाकार मच गया। लोगों ने इकट्ठा होकर विचार किया कि यह कहर गांव में किस कारण से हो रहा है? कुछेक नेक व्यक्तियों ने कहा कि कबीर जी की वाणी है :-

जिस मण्डल साधु नहीं, जैसे बिन नदी नहीं गुंजार।
तज हंसा वह देशड़ा, जम की मोटी मार।।

भावार्थ :- जैसे जिस क्षेत्र में नदी-नहरें नहीं होती। वहां का क्षेत्र खुशहाल नहीं हो सकता। वहां बाग-बगीचे न होने से भंवरों की गुंजार नहीं होती अर्थात् वह क्षेत्र उज्जड़ होता है। इसी प्रकार जिस क्षेत्र में संत नहीं होता। वहां पर यम अर्थात् बुरी शक्तियों का उपद्रव होता रहता है। उस क्षेत्र के व्यक्ति बहुत कष्ट झेलते रहते हैं। इसलिए ही भक्त का उस देश अर्थात् क्षेत्र को त्याग देने में ही हित होता है।

भगवान से डरने वाले खेखड़ा गांव के व्यक्ति कह रहे थे कि हमने घीसा भक्त को गांव से निकाल दिया। शायद इसी कारण से यह सब दुःख गांव पर पड़ा है। परंतु उस बात पर कोई ध्यान नहीं दिया गया। कई वर्ष तक घनी जनहानि होने के पश्चात् किसी जंत्र-मंत्र करने वाले ने बताया कि उस भक्त (घीसा जी) को वापिस लाओ, तभी बसोगे। संत घीसा दास जी को प्रार्थना करके वापिस लाया गया। उस समय भी कुछ सिरफिरे विरोध कर रहे थे। परंतु धार्मिक व्यक्तियों तथा सभ्य समाज ने उन दुष्टों की बात नहीं मानी। संत घीसा दास जी को वापिस गांव खेखड़ा में लाया गया। उसके पश्चात् वह गांव सुख से बसा। गांव का नंबरदार जो बहुत बड़ा किसान जाट था। जिसके पास 9 सौ बीघा अर्थात् पांच सौ एकड़ जमीन थी। वह ज्ञान को समझकर संत घीसा जी का शिष्य बना जिसका नाम था जीता जाट नंबरदार। पूरा गांव संत श्री घीसा दास जी का भक्त बनकर सुख से बसा। संत घीसा दास जी का

जन्म सन् 1803 में खेखड़ा गांव में हुआ था। तीस वर्ष की आयु में सन् 1833 में गांव से निकाले गये था। फिर कई वर्ष के पश्चात् वापिस लाए गए। तब से आज तक उस खेखड़ा गांव में संत घीसा दास जी के नाम का मेला भरता है। उनकी अमृतवाणी का पाठ तथा सत्संग होता है।

इसी प्रकार संत को सताने के कारण उस क्षेत्र (करौंथा आश्रम के आसपास का क्षेत्र) की यह हालत हो रही है। एक गांव में एक वर्ष में 100 जवान मौत हो जाना, इससे बड़ा कहर क्या होगा? अब भी आँखें बंद करके कष्ट झेल रहे हैं। अहंकार जीव का शत्रु होता है। नम्र व्यक्ति ही सफल होता है।

★ उपरोक्त कथा का यह अर्थ न लगाना कि हम संत रामपाल दास जी महाराज को वापिस करौंथा आश्रम लाने के लिए आप जी को प्रेरित कर रहे हैं। परमात्मा के भेजे अवतार संत रामपाल दास जी महाराज ने ऐसा ज्ञान करा दिया। जिस कारण से हमारे लिए करौंथा आश्रम और बरवाला आश्रम कोई मायने नहीं रखता। हमारे लिए तो पूरी पृथ्वी अपनी-सी हो गई है। विश्व के भाई-बहन, बेटे-बेटी तथा वरिष्ठ नागरिक अपने से लगते हैं। जहां भी हमारे भी हमारे मालिक (गुरूदेव) रहेंगे। हमारे लिए अमर लोक हैं। वहीं से हम मानव हित का कार्य करते रहेंगे। वहीं से हमारे गुरूदेव जी दीक्षा देकर जीव कल्याण करते रहेंगे। परंतु वे व्यक्ति रोया करेंगे जो दुष्ट आर्यसमाजियों के आचार्यों-शास्त्रियों से भ्रमित होकर संत तथा भक्तों को सताकर महापाप के भागी बने हैं।

''आम आर्यसमाजी बुरे नहीं''

आर्यसमाज के सामान्य व्यक्ति बुरे नहीं हैं। वे हमारे लिए पराये नहीं हैं। वे हमारे ही भाई-बहन, मामा-फूफा, चाचे-ताऊ हैं। हमारे आपस में गहरे रिश्ते हैं। परंतु वे इन दुष्ट, जनतानाशक आचार्यों को नेक तथा सच्चे व्यक्ति मानते हैं। ये वास्तव में दुष्ट, एक नंबर के झूठे तथा पाखण्डी हैं। उस दिन का हम इंतजार कर रहे हैं जिस दिन ये जनता के सामने निवस्त्र होंगे। प्रत्येक व्यक्ति इनके घिनौने षड़यंत्र को जानेगा। पता चलेगा कि इन्होंने हरियाणा की जनता के साथ कितना बड़ा धोखा किया है। केवल निजी स्वार्थ की पूर्ति के लिए अपने पद को बरकरार रखने के लिए हठ धर्म को आधार बनाकर कई मासूमों को मरवा दिया। गुरूकुलों के विघार्थियों को झगड़ा करने के लिए ले जाते हैं। ये व्यक्ति जनता का कभी हित नहीं कर सकते। हमारा निवेदन यह है कि आप संत रामपाल दास जी महाराज के ज्ञान तथा उद्देश्य से परिचित होकर दीक्षा लेकर अपना तथा अपने परिवार का कल्याण कराऐं। रोहतक, सोनीपत, झज्जर के कुछ व्यक्ति सच्चाई को जानकर कहते हैं कि जब आपके गुरूदेव जी करौंथा आऐंगे, तब उपदेश लेंगे। आपसे प्रार्थना है कि जैसे

डाक्टर कहीं पर भी है, उससे औषधी लेकर स्वस्थ होना चाहिए। हम आप जी को परमात्मा से मिलने वाला सुख प्राप्त करने की राय दे रहे हैं जो लाभ भारत के कोने-कोने से आकर भक्त प्राप्त कर रहे हैं। हरियाणा की जनता पीछे क्यों रहे? आप भी परमात्मा के बच्चे हो। आप जी को भी परमात्मा की आवश्यकता है। परंतु आप जी को सत्य न बताकर असत्य का अभद्र प्रचार करके परमात्मा से दूर कर दिया है। साधना टी.वी. पर शाम 07:45 P.M. पर संत रामपाल दास जी महाराज का एक घण्टा सत्संग चलता है। वह सुनो, सत्य को जानो और अपना मानुष जीवन सफल करो, यही निवेदन है।

''संत गरीब दास जी को सताने का फल''

संत गरीब दास जी गांव छुड़ानी जिला-झज्जर (प्रांत-हरियाणा) में हुए हैं। (इनका मूल गांव करौंथा था। इनके पिताजी का विवाह छुड़ानी गांव में हुआ था। इनके नाना जी को पुत्र नहीं था। इस कारण से गरीबदास जी के पिता बलराम जी छुड़ानी रहा करते थे। वहीं गरीबदास जी को जन्म हुआ था।) गांव बाजीदपुर का एक तोखराम नाम का भक्त संत गरीबदास जी का शिष्य था। भक्त तोखराम की प्रार्थना पर आपजी गांव बाजीदपुर (दिल्ली) में कुछ दिन रहे। उस भक्त की बहुत जमीन थी, बाजरा बो रखा था। टिड्डी (छोटे-छोटे पक्षियों जैसी होती हैं) ने गांव बाजीदपुर तथा आसपास के गांव की बाजरे की फसल नष्ट कर दी। केवल उस तोखराम भक्त की बाजरे की फसल सुरक्षित रही। गांव के व्यक्तियों को पता चला कि संत गरीबदास जी के कारण ही इस भक्त को हानि नहीं हुई। पूरे गांव के व्यक्ति संत गरीबदास जी के शिष्य बन गए। आज भी गांव बाजीदपुर (दिल्ली) में संत गरीबदास जी के नाम से आश्रम बना है। जब बाजरे की फसल पकी तो संत गरीबदास जी ने आदेश दिया कि सारे गांव को बाजरा बांट दे। उस समय कुल 40-50 घर ही एक गांव में होते थे। ऐसा ही किया गया। कुछ बाजरा 10-12 बोरी बैलगाड़ी में डालकर गांव छुड़ानी के लिए भक्त तोखराम लेकर चला गया। संत गरीबदास जी भी 2500 बीघा (1400 एकड़) जमीन के वारिस थे। संत जी ने मना किया था कि परमात्मा की कृपा से वहां कोई कमी नहीं है। फिर भी भक्त ने आग्रह किया कि दूर देश से भक्त सत्संग सुनने आते हैं। मुझ दास का भी पुण्य लग लाएगा। वैसे भी यह बाजरा आप जी की कृपया से ही तो आपके दास को मिला है। भक्त की अटूट श्रद्धा के आगे संत गरीबदास जी निरूत्तर हो गए तथा ऐसा करने की अनुमति दे दी।

साधु भूखा भाव का, धन का भूखा नाहीं।
जो धन का भूखा है, वह व्यर्था साधु कहाहीं।।

बैलगाड़ी में 10-12 क्विंटल बाजरा भरकर उसी में गरीबदास जी को

बैठाकर भक्त गांव छुड़ानी की तरफ शाम को चल पड़ा। रास्ते में गांव काणोंदा वर्तमान जिला-झज्जर (प्रान्त-हरियाणा) पड़ता था। गांव काणोंदा में भी टिड्डी दल ने सर्व बाजरे की फसल नष्ट कर दी थी। काणोंदा गांव के व्यक्तियों ने बाजरे की गाड़ी को जबरदस्ती लूट लिया। भक्त ने विरोध किया तो उसको भी मारने-पीटने लगे। तब गरीबदास जी ने कहा आप ऐसा न करो। किसी के धन को लूटना पाप है। गांव में आए व्यक्तियों का अतिथि सत्कार करना चाहिए। भोजन-पानी की बात पूछनी चाहिए, आप यह अच्छा नहीं कर रहे हो। काणोंदा गांव के व्यक्तियों ने कहा कि यह बड़ी शिक्षा दे रहा है, इसको बांध लो। सारा बाजरा लूट लिया। भक्त खाली बैलगाड़ी लेकर बाजीदपुर लौट गया। जब सर्व घटना का गांव के व्यक्तियों को पता चला तो कुछ वृद्ध व्यक्ति गांव काणोंदा को चल पड़े। दूसरी ओर बाजरा लूटने वाले गरीब दास को हाथों से बांध कर गांव ले गए। गांव काणोंदा में एक साहबराय उर्फ छाजू नाम का बड़ा चौधरी व्यक्ति था। सरकार की ओर से उसे जैलदार का पद भी प्राप्त था। वह अपराधियों को दण्ड भी देता था। गांव के व्यक्तियों ने उस चौधरी से कहा कि यह चोर है। किसी का बाजरा चुराकर ले जा रहा था। हम पकड़ लाए हैं। उस चौधरी ने अपने हाथों से गरीबदास जी को काठ लगाया (काठ लगाना एक बहुत पीड़ा देने का यंत्र बना था जिसमें व्यक्ति को काष्ठ की बल्लियों के बीच में बांध दिया जाता था। उसमें व्यक्ति न बैठ सकता था न पूरा खड़ा हो सकता था।) कुछ देर के पश्चात् गांव बाजीदपुर के व्यक्ति गांव काणोंदा में पहुंच गए। जब उनको पता चला कि संत जी को काठ में बांध रखा है तब वे उस साहबराय उर्फ छाजू चौधरी से मिले तथा बताया कि यह महात्मा है, कोई चोर नहीं है। इनकी कृपया से उस भक्त के बाजरे को टिड्डियों ने भी हानि नहीं की थी। यही बाजरा लेकर इनका भक्त गांव छुड़ानी जा रहा था। यह कोई चोर नहीं है। आप जी को भ्रमित किया गया है। आप जी क्षमा याचना करें अन्यथा आप जी को बहुत हानि हो जाएगी। उस साहब राय उर्फ छाजू चौधरी ने संत जी को काष्ठ मुक्त कर दिया और हाथ जोड़कर क्षमा याचना नहीं की। केवल सिर झुकाकर औपचारिकता करके अहंकारवश चला गया। इसी साहबराय चौधरी (छिकारा गौत्र) ने एक मुसलमान को किसी के कहने से बेकसूर सजा दी थी। गरीबदास जी की घटना के 20 दिन पश्चात् चौधरी साहबराय छिकारा प्रतिदिन की तरह प्रातः सूर्योदय से पहले गांव से बाहर टट्टी फिरने गया। तालाब पर हाथ साफ करके वापिस चला। उसी समय दो घोड़ों पर सवार दो बिल्लोचों ने उस साहबराय चौधरी का एक-एक हाथ पकड़ा तथा तलवार से दोनों हाथ काट कर चले गए। चिल्लाता-बिलखता चौधरी साहबराय गांव

पहुंचा। वैद्य बुलाकर उपचार राया। न तो रक्त बहना बंद हुआ और न ही पीड़ा बंद हुई। सारा दिन सारी रात चिल्लाता रहता था। बड़े-बड़े वैद्य आए परंतु व्यर्थ। तब किसी भक्त का उस गांव में आना हुआ। सर्व घटना को जानकर उसने कहा कि आप संत गरीबदास जी के पास जाओं, उनसे हृदय से क्षमा याचना करो, तब बात बन सकती है। मरता क्या नहीं करता। तीन-चार घोड़े तैयार किए गए। एक घोड़े पर उस चौधरी साहबराय को बैठाया तथा उसी घोड़े पर एक व्यक्ति और बैठा। सब के सब गांव छुड़ानी में संत गरीबदास जी के पास गए। चौधरी साहबराय उर्फ छाजू ने नाक रगड़कर क्षमा मांगी। तुरंत पीड़ा तथा रक्त का स्राव बंद हो गया। सर्व व्यक्तियों को बड़ा आश्चर्य हुआ।

तब गरीबदास जी ने कहा भाई! आपको पद प्राप्त है, उसका सदुपयोग करना चाहिए। दण्ड देने से पहले स्वयं जांच करनी चाहिए, गलती हो भी जाए तो हृदय से क्षमा याचना करनी चाहिए। मैंने आपको कोई बद्दुवा नहीं दी। आपजी ने अपना किया ही भोगा है। यहां पर यह बताना अनिवार्य है कि जब संत गरीबदास जी 10 वर्ष के बालक थे (सन् 1727 सवंत् 1784) तब वे प्रतिदिन की तरह अन्य बड़े-जवान साथियों के साथ अपने ही खेतों में गऊ चराने गए थे। उस दिन फाल्गुन मास की द्वादशी (दुवास) थी। दिन के 10 बजे परमात्मा कबीर बन्दी छोड़ जी अपने अमर लोक से आए (जो अमर लोक आकाश में सर्वोपरी है) संत गरीब दास जी को कंवारी गाय का दूध पिलाया। अन्य पालियों (ग्वालों) ने नहीं पीया। उसके पश्चात् संत गरीबदास जी को परमात्मा कबीर जी ऊपर ले गए। ऊपर विष्णु जी का लोक, शिव जी का लोक, ब्रह्मा जी का लोक तथा सर्व लोक दिखाकर अपने अमर लोक ले गए। इस प्रक्रिया में 8-10 घण्टे लग गए। दूसरी ओर बालक गरीबदास जी को मृत जानकर अंतिम संस्कार के लिए चिता पर रख दिया था। उसी समय परमात्मा ने वह आत्मा पुनः शरीर में प्रवेश कर दी। बालक जीवित हो गया। गांव में खुशी की लहर दौड़ गई। उस दिन के पश्चात् बालक गरीबदास जी सामान्य बच्चा नहीं रहा। कहावत है कि आप क्या भगवान से मिलकर आए हो। संत गरीबदास जी भगवान से मिलकर आए थे। इसलिए संत गरीबदास जी ने उपस्थित काणोंधा निवासियों को मनुष्य जीवन का उद्देश्य बताया, सर्व ने दीक्षा ली। उस साहबराय छिकारा चौधरी के वंशज आज भी संत गरीबदास जी की पूजा करते हैं। लगभग आधा काणोंदा गांव उन्हीं की संतान है, उसको छाजूवाड़ा कहते हैं क्योंकि उस चौधरी का उर्फ नाम छाजू था। जिन व्यक्तियों ने बाजरा लूटा था। उन्होंने क्षमा याचना करने से इंकार कर दिया था। वे फिर भी गरीबदास जी के विषय में भला-बुरा कहा करते थे। उन सर्व का कुल नाश हो गया। एक-एक करके सर्व संतान नष्ट हो गई तथा स्वयं भी

तड़फ-तड़फ कर मरे।

कबीर, साकट सण का जेवड़ा, भीगे ते करड़ावै।
राम नाम जाने नहीं, तड़फ–तड़फ मर जावै।।
कबीर, राम नाम से खिज मरैं, कुष्टी हो गल जावै।
शुकर होकर जन्म ले, नाक डूबता खावै।।

नीच व्यक्ति का स्वभाव बताया है कि वह उस सण के रस्से के समान है जो जल में भीगकर अधिक सख्त हो जाता है जबकि जल में भीगने से पदार्थ नर्म हो जाते हैं। इसी प्रकार सत्संग के वचन रूपी जल में भी जो अहंकार करता है, नम्र होकर दीक्षा नहीं लेता है और परमात्मा की चर्चा करने से चिड़ता है। वह व्यक्ति कुष्ट रोग से पीड़ित होकर गलकर मर जाता है। फिर सूअर का जन्म प्राप्त करके नाक डूबो कर गंद खाता है।

ऐसे व्यक्तियों को सतर्क किया जा रहा है कि समय रहते संत रामपाल दास जी महाराज से दीक्षा लेकर अपना मानव जीवन सुधार लो नहीं तो बहुत पछताना पड़ेगा।

गरीबदास जी ने कहा है कि :-

यह संसार समझदा नाहीं, कहंदा शाम दोपहरे नूं।
गरीबदास यह वक्त जात है, रोवोगे इस पहरे नूं।।

''शेखतकी पीर ने अपना किया भोगा''

दिल्ली का सम्राट सिकंदर लोधी था। उसको जलन का असाध्य रोग हो गया। उस राजा का धार्मिक गुरू (पीर) शेखतकी था जो भारत के मुसलमानों का प्रधान था। सिकंदर राजा का जलन का रोग किसी भी औषधि से ठीक नहीं हुआ। न किसी हिन्दू-मुसलमान धर्म की साधनाओं से ठीक हुआ।

किसी भक्त के बताने पर सिकंदर लौधी राजा परमात्मा कबीर जी के पास काशी नगर (बनारस) गया। परमात्मा कबीर जी के आशीर्वाद मात्र से स्वस्थ हो गया। किसी बात से क्षुब्ध होकर सिकंदर लोधी दिल्ली के सम्राट ने स्वामी रामानंद जी की तलवार से गर्दन काट दी थी। उसी समय परमेश्वर कबीर जी वहाँ स्वामी रामानंद जी के आश्रम में प्रतिदिन की तरह आरती करने चले गए। स्वामी रामानंद जी पण्डित थे। परमेश्वर कबीर जी ने उनको गुरू धारण कर रखा था। सिकंदर लोधी तथा काशी के नरेश बीर देव सिंह बघेल की उपस्थिति में स्वामी रामानंद जी को परमेश्वर कबीर जी ने जीवित कर दिया। सिंकदर लोधी का अधिक रूझान परमात्मा कबीर जी की ओर हो गया जो पूर्व गुरू (शेख तकी) को रास नहीं आया। जिस कारण से ईर्ष्या वश कबीर जी को नीचा दिखाने की योजना बनाने लगा कहीं राजा मुझे त्याग न दे।

★ इसी योजनावश किसी मुर्दे बालक को जीवित करने की शर्त रखी जो स्वजनों द्वारा अंतिम संस्कार करके दरिया में प्रवाह कर दिया गया था जो 12-13 वर्ष की आयु का था। परमात्मा कबीर जी ने हजारों सैनिकों तथा राजा सिकंदर की उपस्थिति में उस बालक को जीवित कर दिया। फिर भी शेखतकी साकट नहीं माना। परमात्मा कबीर जी को मारने की योजना शेखतकी ने बनाई तथा अपनी झोंपड़ी में सोए कबीर जी को गुण्डों द्वारा तलवार से टुकड़े-टुकड़े शेखतकी ने अपनी उपस्थिति में करवा दिये। जब चलने लगे तो परमात्मा कबीर जी खड़े हो गए तथा कहा हे शेखतकी! आप दास के मेहमान बनकर आए हो। कुछ जलपान करके जाना। यह लीला देखकर कई गुण्डों को ज्वर हो गया। परंतु शेखतकी साकट नहीं माना।

★ कबीर परमेश्वर जी को शेखतकी ने गहरे झेरे-कुऐं में डालकर अपने हजारों साथियों से उसमें ऊपर से मिट्टी भरा दी। फिर सिकंदर लोधी ने राजा से जाकर कहा कि हे राजन्! जिसे आप अल्लाह का अवतार कहते थे, उसको जनता ने सुखे कुऐं में मिट्टी में दबा दिया, वह मर गया। सिकंदर लोधी ने कहा हे पीर जी! अपने कर्म ना खराब कर तथा न ही भोली जनता के कर्म बिगड़वा। देख मेरे दूसरे कमरे में बैठे हैं अल्लाह कबीर। शेखतकी ने अपने साथियों सहित जाकर उस कमरे में देखा तो कबीर जी वहां बैठे माला फेर रहे थे लेकिन शेखतकी साकट फिर भी बाज नहीं आया।

★ सरसों के तेल को कड़ाहे में उबाला, कबीर जी को उसमें प्रवेश होने के लिए विवश किया। कबीर जी उस उबलते तेल के कड़ाहे में बैठ गए। कुछ भी नहीं हुआ, आराम से बैठे हैं। शेखतकी ने कहा कि यह जादू-जंत्र जानता है। इसने तेल की तासीर ठण्डी कर दी है। सिकंदर लोधी राजा ने तेल की जांच करने के लिए हाथ की ऊंगली तेल में डाली तो ऊंगली जल कर कहाड़े में गिरकर भुन गई। सिकंदर लोधी दर्द के मारे अचेत हो गया। परमेश्वर कबीर जी कड़ाहे से बाहर आए। हाथ की ऊंगली साबत कर दी। तब सिकंदर लोधी को होश आया। उस दिन हजारों की संख्या में हिन्दू तथा मुसलमान दर्शक परमेश्वर कबीर जी के शिष्य बने। परंतु नहीं माना साकट शेखतकी।

★ शेखतकी की लड़की की मृत्यु के पश्चात् जमीन में कब्र बनाकर दबा रखी थी। शेखतकी की शर्त पर परमात्मा कबीर जी ने उस लड़की को कब्र से निकलवा कर जीवित कर दिया। उस लड़की ने 1½ घण्टे तक उपस्थित दर्शकों को बताया कि यह अल्लाह कबीर है। पूर्ण ब्रह्म परमात्मा है। उपस्थित हजारों दर्शकों ने कबीर जी से दीक्षा ली। परंतु नहीं माना साकट शेखतकी।

★ परमेश्वर कबीर जी दोनों धर्मों के व्यक्तियों को समझाया करते कि आपके धर्मगुरू परमात्मा प्राप्ति के यथार्थ ज्ञान से खाली हैं। मेरे पास वह

सत्य भक्ति है जिससे आप यहां भी सुखी तथा परलोक में भी सुखी हो जाओगे। आप एक परमात्मा के बच्चे हो। जिस कारण से दोनों धर्मों (हिन्दू तथा मुसलमान) के धर्मगुरू अपने धर्म की जनता को भ्रमित करते थे तथा परमात्मा कबीर जी में बहुत सारे दोष निकाल कर जनता को दूर रखते थे।

जब देखा कि परमेश्वर कबीर जी न मारे से मर रहे हैं, ना ज्ञान में हार रहे हैं तो एक योजना बनाई। भारत वर्ष में जितने भी हिन्दू तथा मुसलमान गुरूओं के आश्रम थे, सर्व को झूठी चिट्ठी लिखकर भेज दी कि कबीर पुत्र नीरू शहर काशी में तीन दिन का भण्डारा करेगा। प्रति भोजन के पश्चात् प्रत्येक को एक सोने की मोहर (10 ग्राम सोना) एक दोहर (उस समय का सर्वश्रेष्ठ खेस=कम्बल की तरह) भी देगा। 18 लाख महात्मा-भक्त भोजन-भण्डारा करने काशी नगर में आए। परमेश्वर कबीर जी तथा अन्य रूप में एक केशव नाम का बनजारा (व्यापारी) बनकर अपने सत्यलोक स्थान आकाश से 9 लाख बैलों के ऊपर आए भक्तों ने बोरों (थैलों) में खाने का कुछ पका-पकाया, कुछ कच्चा सामान लेकर काशी शहर में टैण्ट लगाकर उनमें सारा सामान रख दिया। सत्यलोक स्थान आकाश से ही लाखों भक्त सेवा करने के लिए आए थे। भण्डारा शुरू हुआ।

★ यहां पर स्पष्ट करना अनिवार्य समझते हैं कि ''परमेश्वर कबीर जी का जन्म किसी माँ से नहीं हुआ था। वि.सं. 1455 (सन् 1398) ज्येष्ठ मास की पूर्णमासी को सुबह (सूर्योदय होने से 1½ घण्टा पूर्व) परमात्मा कबीर जी आकाश से सत्यलोक स्थान से सशरीर चलकर आए थे। एक शिशु रूप में काशी शहर के बाहर जंगल में लहरतारा नामक तालाब में कमल के फूल पर प्रकट हुए थे। इसके प्रत्यक्ष दृष्टा एक अष्टानंद ऋषि थे जो प्रतिदिन उसी तालाब पर स्नान करने जाया करते थे। कमल के फूल से नीरू नामक निसंतान जुलाहा शिशु रूप धारी परमेश्वर को अपनी पत्नी सहित घर ले गए। बालक का नाम कबीर रखा। इसलिए यहां पर नीरू पुत्र लिखा है।

शेखतकी राजा सिकंदर को भी चिट्ठी देकर साथ ले आया। उसने सोचा था कि कबीर शहर छोड़कर भाग गया होगा। परंतु वहां जाकर देखा तो कुछ और ही कमाल था। सिकंदर लोधी बड़ा खुश हुआ। परमात्मा कबीर जी दूसरे रूप में अपनी झोंपड़ी में रविदास संत जी के साथ बैठे थे। राजा सिकंदर जी परमेश्वर कबीर जी को झोंपड़ी से स्वयं हाथी पर बैठाकर उस भोजन-भण्डारे के स्थान पर लाए जहां पर आए अतिथि मनवांछित भोजन तथा मोहर-दोहर लेकर कबीर जी के गुणगान कर रहे थे। तीन दिन तक भण्डारा चला। परमात्मा कबीर जी ने अपने ही दूसरे रूप (Double Role) में केशव के साथ ज्ञान चर्चा की लीला करके लगातार 24 घण्टे (आठ पहर) तक सत्संग किया।

ज्ञान को सुनकर लगभग 15-16 लाख भक्तों तथा अन्य साधुओं ने नाम दीक्षा ली। परमेश्वर कबीर जी के शिष्य बने। इस प्रकार परमेश्वर कबीर जी के हिंदू तथा मुसलमान कुल 64 लाख शिष्य बने थे। कबीर जी सन् 1398 से सन् 1518 तक 120 वर्ष पृथ्वी पर लीला करके सशरीर स्वधाम चले गए थे। अंत में सिकंदर लोधी तथा शेखतकी की उपस्थिति में सर्व बैल तथा बनजारे अंतर्ध्यान हो गए तथा परमात्मा कबीर जी का दूसरा स्वरूप केशव कबीर जी के शरीर में समा गया।

शेखतकी साकट फिर भी नहीं माना। निंदा ही करता रहा, कहा कि इस कबीर ने यह क्या भण्डारा (लंगर) किया है, हम अनेकों कर दें। इसने तो महोछा किया है। महोछा कहते हैं जवान मौत होने पर किसी गुरू के आदेशानुसार क्रिया कराने को जिसमें घरवाले दुःखी मन से मजबूरी जानकर कुछ भोजन की व्यवस्था करते हैं। जग जौनार उसे कहते हैं, जैसे किसी के घर विवाह के घने वर्षों उपरांत पुत्र प्राप्त होता था तो वे जग (यज्ञ) अनुष्ठान करते थे तो दिल खोलकर पैसा खर्च करते थे। परमेश्वर कबीर जी के उस भण्डारे (लंगर) के विषय में अच्छी आत्माऐं तो कह रही थी कि जग-जौनार (जीमनवार) की है। ऐसी व्यवस्था, ऐसा मनभावन भोजन, मोहर-दोहर का दान न कभी देखा न सुना, जय हो कबीर परमेश्वर की! दूसरी ओर हिन्दू तथा मुसलमानों के धर्मगुरू जले-भुने कह रहे थे कि कबीर जी ने तो महोछा-सा किया है। खाक भण्डारा है यह! इसके विषय में संत गरीबदास जी ने अपनी अमृतवाणी में कहा है कि :-

गरीब, कोई कहै जग जौनार की है, कोई कहै महोछा।
बड़े बड़ाई कर्‌या करैं, गाली काढ़ै ओच्छा (घटिया)।।

शेखतकी ने परमात्मा को नहीं पहचाना, काल का पक्का दूत साबित हुआ तथा अंत में ओछा शेखतकी गुंगा-बहरा होकर टक्कर मार-मारकर मौत को प्राप्त हुआ। अपना किया भोगा तथा नरक का भागी बना।

''महर्षि दयानंद का अज्ञान''

''महर्षि दयानंद का वेद विरूद्ध ज्ञान'' शेष पृष्ठ 3 से लगातार।

4. महर्षि दयानन्द जी ''सत्यार्थ प्रकाश'' के समु 7 पृष्ठ 162, समु. 8 पृष्ठ 178-179 समु. 8 पृष्ठ 191 तथा समु. 7 पृष्ठ 164 पर लिखते हैं कि परमात्मा, जीव तथा प्रकृति (रज+सत्+तम्) अनादि हैं भावार्थ है कि परमात्मा ने जीव तथा प्रकृति (जो तीन गुणों रज, सत तथा तमगुण से मिलकर बनती है) को उत्पन्न नहीं किया। ये भी परमात्मा की तरह स्वयंभू हैं अर्थात् भाई-बहन सिद्ध कर दिए।

★ पुस्तक ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका नामक पुस्तक के पृष्ठ 117-118 में वेद मन्त्र का अनुवाद करते समय खण्डन किया है कि सृष्टि रचना से पूर्व केवल एक परमात्मा था उस समय रज, सत, तम अर्थात् तीनों गुण नहीं थे जिसको महर्षि दयानन्द ने प्रकृति कहा है उसी को प्रधान भी कहा जाता है वे भी नहीं थे। इससे भी स्वसिद्ध हुआ कि पहले केवल परमात्मा थे, बाद में सृष्टि रचना के समय प्रकृति तथा जीव परमात्मा ने ही उत्पन्न किए।

★ वेदों में प्रमाण है कि परमात्मा ने प्रकृति तथा जीव को भी उत्पन्न किया:- ऋग्वेद मण्डल 10 सुक्त 72 मंत्र 1-9 बड़े आकार वाले ऋग्वेद द्वितीय भाग सुक्त 72 के मंत्र 9 में ''अदिति'' का अर्थ ''प्रकृति'' किया है मंत्र 4-5 में लिखा है कि ''हे दक्ष'' = ईश्वर से अदिति अर्थात् प्रकृति उत्पन्न हुई, छोटे ऋग्वेद के ऋग्वेद मण्डल 10 सुक्त 72 मंत्र 8 से प्रकृति का अर्थ अदिति किया है। जिस रजगुण, सतगुण तथा तमगुण को महर्षि जी ने प्रकृति कहा है सृष्टि से पूर्व नहीं था। इससे सिद्ध हुआ कि प्रकृति को भी परमात्मा ने उत्पन्न किया।

★ सामवेद मंत्र संख्या 527 में तथा ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 9 मंत्र 1 में स्पष्ट है कि परमात्मा ने जीवात्मा को तथा प्रकृति को उत्पन्न किया। लिखा है ''जब यह सृष्टि उत्पन्न नहीं हुई थी।''----- इससे यह भी सिद्ध है कि सृष्टि उत्पन्न हुई है तथा प्रारम्भ हुई है। महर्षि दयानन्द का ''सत्यार्थ प्रकाश'' वाला ज्ञान गलत सिद्ध हुआ। जिसमें कहा है कि जीव की उत्पत्ति नहीं हुई, सृष्टि का प्रारम्भ नहीं हुआ। यह तो अनादि काल से चली आ रही है।

★ प्रकृति भी उत्पन्न नहीं हुई। जीव, प्रकृति तथा परमात्मा अनादि हैं। महर्षि दयानंद ने यह भी कहा है कि जीव की उत्पत्ति परमात्मा ने नहीं की। यह भी गलत सिद्ध हुआ क्योंकि ऊपर वर्णित वेद मंत्रों में सिद्ध हो चुका है कि परमात्मा ने जीव तथा प्रकृति की भी उत्पत्ति की थी।

5. ''सत्यार्थ प्रकाश'' के पृष्ठ 191 समु. 8 में महर्षि दयानन्द जी ने कहा है कि सृष्टि का कभी आरम्भ ही नहीं होता है न अन्त होता है, प्रवाह रूप से अनादि है। फिर ''सत्यार्थ प्रकाश'' समु. 8 पृष्ठ 190-191, 177 तथा समु. 4 पृष्ठ 76, के समु. 7 पृष्ठ 152 पर यजुर्वेद अध्याय 13 मंत्र 4 का अनुवाद करके खण्डन किया है कि सृष्टि से पूर्व केवल एक परमात्मा था। इससे सिद्ध है कि सृष्टि प्रारम्भ हुई है तथा उसके पश्चात् परमात्मा के विद्यानानुसार उत्पति तथा प्रलय का क्रम प्रारम्भ हुआ।

6. ''सत्यार्थ प्रकाश'' के समु. 9 पृष्ठ 203 पर महर्षि दयानन्द जी ने कहा है कि कहा है कि मोक्ष प्राप्त प्राणी किसी लोक में स्थिति होकर मोक्ष सुख को नहीं भोगता अपितु विचरण करता है। फिर यजुर्वेद अ. 15 मंत्र 13-14 में खण्डन तथा ''सत्यार्थ प्रकाश'' के पृष्ठ 205-206 समु. 9 में खण्डन किया है।

ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका पृष्ठ 195-257 पर खण्डन किया है, लिखा है कि मोक्ष प्राप्त प्राणी स्वर्ग लोक में स्थित होकर मोक्ष सुख का भोगता है।)

7. महर्षि दयानन्द जी कहते हैं कि सर्व प्रथम ब्रह्म ने चार ऋषियों को वेदों का ज्ञान कराया। उससे पहले कोई वेदों को नहीं जानता था। यह भी कहा है कि सर्व प्रथम इन चार ऋषियों को वेद ज्ञान इसलिए दिया क्योंकि ये ही सब से पवित्र थे। सत्यार्थ प्रकाश के समुल्लास 7 पृष्ठ 172 से 176 (जबकि यजुर्वेद अ. 12 मंत्र 4 में महर्षि दयानंद ने अनुवाद में लिखा है कि यजुर्वेद के मंत्रों को वामदेव ऋषि ने वेदों को पढ़ा तथा यथार्थ ज्ञान कराया। यदि वेद ज्ञान सर्व प्रथम चार ऋषियों को प्राप्त हुए होते तो वेद में वामदेव ऋषि का नाम नहीं आता। इससे महर्षि दयानन्द जी का सत्यार्थ प्रकाश वाला ज्ञान गलत सिद्ध हुआ।

8. महर्षि दयानन्द नहीं मानते की शरीर में कमल चक्र हैं।

जीवन चरित्र ''श्रीमद् दयानन्द प्रकाश'' पृष्ठ 33-34 जबकि ''ऋग्वेद आदि भाष्य भूमिका'' पुस्तक के पृष्ठ 183, 185, 186 में उपनिष्दों के वाक्यों से स्वयं सिद्ध कर रहा है कि कमल चक्र हैं शरीर में, ऋग्वेद मण्डल 1 सुक्त 164 मंत्र 3 में प्रमाण है कि कमल चक्र हैं।

9. महर्षि दयानंद का वह सिद्धांत भी गलत सिद्ध हुआ कि परमात्मा ने सर्वप्रथम चार ऋषियों को वेद उनके हृदय में दिए क्योंकि ''ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका'' पुस्तक के पृष्ठ 10-11 पर स्पष्ट है कि ब्रह्म ने अपनी स्वासों से वेद उत्पन्न किए। वास्तविकता भी यही है।

10. महर्षि दयानन्द जी कहते हैं कि ईश्वर अर्थात् ब्रह्म एक है अनेक नहीं

सत्यार्थ प्रकाश समु. 1 पृष्ठ 15 पर कहा है कि सबसे बड़ा होने से ईश्वर का नाम ब्रह्म है फिर 20 पर कहा है ईश्वरेषु समर्थेषु परमः श्रेष्ठ सः परमेश्वरः (ईश्वरों शब्द से ही स्पष्ट है कि ईश्वर अनेक हैं। अन्यथा ईश्वरों जो बहुवचन है, प्रयोग ही नहीं करना था।)

सत्यार्थ प्रकाश समु. 7 पृष्ठ 155 पर परब्रह्म से मेल कहा है, पृष्ठ 151 पर कहा है वेदों में कहीं भी अनेक ईश्वर नहीं लिखा है, यजुर्वेद अ. 40 मंत्र 17 में दो परमात्मा सिद्ध हैं। ऋग्वेद मण्डल 1 सुक्त 149 मंत्र 1 = (इनस्य) ईश्वर का (इनः) ईश्वर है अर्थात् ईश्वर का भी प्रभु अर्थात् दो ईश्वर सिद्ध हुए।

11. महर्षि दयानन्द नहीं मानते कि नरक तथा स्वर्ग स्थान है (सत्यार्थ प्रकाश पृष्ठ 512 पर)। (ऋग्वेद मण्डल 7 सुक्त 86 मंत्र 1 में लिखा है कि परमात्मा नरक तथा स्वर्ग को दो प्रकार से रचता है।)

12. महर्षि दयानन्द नहीं मानते कि भूत प्रेत होते हैं (गीता अध्याय 9 श्लोक 25 में प्रमाण है कि भूत पूजने वाले भूतों को प्राप्त होते हैं)

13. महर्षि दयानन्द जी नहीं मानते की देव भी हैं। उनका मानना है कि वेदों में देवता शब्द से वायु, अग्नि, जल आदि का बोध मानते हैं। (ऋग्वेद मण्डल 10 सुक्त 66 मंत्र 14-15 में प्रमाण है कि देवों की स्तुति करने से वे धन देते हैं)

14. महर्षि दयानन्द जी का मानना है कि जन्म मृत्यु सदा बनी रहेगी। (समु. 9 पृष्ठ 205-206-207-208) ऋग्वेद सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली से प्रकाशित के मण्डल 1 सुक्त 72 मंत्र 10 में स्वयं जन्म-मरण रहित को प्राप्त विद्वान् सत्यार्थ प्रकाश के समु. 4 पृष्ठ 105 पर ''अक्षय मोक्ष का समर्थन है''

विचार करें कोई रोगी स्वस्थ होकर रोगी होना चाहेगा।

श्री मद्भगवत गीता अ.15 मंत्र 4, अ. 8 मंत्र 20 से 22 में भी स्पष्ट है कि पूर्ण मोक्ष प्राप्त प्राणी का कभी जन्म नहीं होता।

''महर्षि दयानन्द जी का भूगोल-खगोल का ज्ञान''

15. महर्षि दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश समु. 7 पृष्ठ 174 पर लिखा है कि जब तक इंग्लैण्ड का कोलम्बस नामक व्यक्ति अमेरिका में नहीं गया था तब तक वे भी करोड़ों वर्षों से मूर्ख थे। अब शिक्षा पाने से विद्वान् हो गए। (समुल्लास 10 पृष्ठ 226, समुल्लास 11 पृष्ठ 235 पर खण्डन है लिखा है कि व्यास जी अपने पुत्र तथा शिष्य शुक सहित अमेरिका में निवास करते थे। वे सर्व शिक्षित थे फिर सत्यार्थ प्रकाश समु. 11 पृष्ठ 235 पर लिखा है कि सृष्टि प्रारम्भ हुई तब से लेके पांच हजार वर्ष पूर्व तक आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य रहा है। अमेरिका का बब्रुवाहन नामक राजा महाभारत युद्ध में आया था। दूसरी ओर कहा है कि जब तक कोलम्बस अमेरिका नहीं गया वे मूर्ख थे, करोड़ों वर्षों से। महाभारत युद्ध को तो 5600 वर्ष ही हुए हैं तथा व्यास जी भी महाभारत से पहले ही हुए हैं। कोलम्बस तो 400 वर्ष पहले ही अमेरिका गया था। अमेरिका वाले पहले ही शिक्षित थे।) ऐसा विरोधाभास अज्ञानियों के विचारों में ही होता है। इससे महर्षि दयानन्द जी का सत्यार्थ प्रकाश वाला ज्ञान गलत सिद्ध हुआ।

16. सत्यार्थ प्रकाश प्रमाण समु. 8 पृष्ठ 197-198 पर लिखा है कि सूर्य, चन्द्र व तारों तथा नक्षत्रों में मनुष्य तथा अन्य प्राणी पृथ्वी की तरह रहते हैं। वहां पर इसी प्रकार सुख विशेष पदार्थ अर्थात् जल, अन्न, मेवा (काजु-किशमिस) तथा फल हैं। सूर्य आदि लोकों में रहने वाले व्यक्ति इन्हीं वेदों को पढ़ते हैं।

17. महर्षि दयानन्द का अपना मत था कि परमात्मा की भक्ति से पाप नाश नहीं होते। इसलिए सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास 7 पृष्ठ 155 पर कहा है कि

जिस पुस्तक में पापों को क्षमा (नाश) करने की बात है वह न ईश्वर और न किसी विद्वान का बनाया है। समुल्लास 14 पृष्ठ 473 (यजुर्वेद अध्याय 8 मंत्र 13 में ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 82 मंत्र 1 में परमात्मा पाप नाश करता है, का प्रमाण है)। महर्षि दयानंद जी के विधान अनुसार तो वेद भी मूर्ख के बनाए सिद्ध हुए जबकि महर्षि दयानंद कहते हैं कि वे वेद के अतिरिक्त किसी भी बात को सत्य नहीं मानते।

18. सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास 13 पृष्ठ 426-430 में महर्षि दयानन्द जी ने तर्क दिया है कि ''ईसा ने अपने माता-पिता की सेवा नहीं की जिस कारण से लम्बी आयु नहीं पा सका। महर्षि दयानन्द का कहना है कि ईसा को क्रश किया गया कितने कष्ट से प्राणानन्त हुआ इससे अच्छा तो फन्द (फांसी) लगाकर मर जाना चाहिए था।

विचार करें :- महर्षि दयानन्द की ''आत्मकथा'' नामक पुस्तक पृष्ठ 8 पर महर्षि दयानन्द ने स्वयं लिखा है कि वे अपने माता-पिता की सेवा करने के विरोधी थे। उन्होंने भी अपने माता-पिता की सेवा नहीं की शायद इस पाप के परिणाम स्वरूप महर्षि दयानन्द 59 वर्ष की आयु में असाध्य रोग से एक महिने तक तड़फ कर मरे, उनके माथे पर छाले, मुंह में छाले, जीभ पर छाले, सारे शरीर पर छाले तथा ट्टी-पेशाब भी वस्त्रों में ही निकल जाता था। प्रमाण पुस्तक ''श्रीमद् दयानन्द प्रकाश'' पृष्ठ 437, 437, 443, 444, 445, 446, 447 से। महर्षि दयानन्द जी ने समु. 3 पृष्ठ 44 पर कहा है कि जो व्यक्ति 48 वर्ष तक ब्रह्मचर्य का सेवन करता है वह 400 वर्षों तक जीवित रहता है। (महर्षि दयानन्द तो आमरण ब्रह्मचर्य का दावा करते थे स्वयं अश्वनि (आसौंज) बदी चतुर्दशी संवत् 1940 से कार्तिक अमावस्या सम्वत् 1940 तक एक महिना रोग की महा पीड़ा को झेलकर 59 वर्ष की आयु में मर गये। प्रमाण पुस्तक = श्रीमद्दयानन्द प्रकाश पृष्ठ 437 तथा 451 तथा पृष्ठ 437, 438, 443 से 447 पर)

19. सत्यार्थ प्रकाश समु. 13 पृष्ठ 444 पर समीक्षा सं. 125 में ईसाईयों की आलोचना में कहा है कि एक स्त्री सूर्य पहने है, चांद उसके पांव तले है। (महर्षि दयानंद स्वयं कह रहा है कि सूर्य पर मनुष्य व अन्य प्राणी रहते हैं वहां सर्व सुख पदार्थ जैसे गेहूं, चना, काजू आदि मेवा व फल हैं, सत्यार्थ प्रकाश के समुल्लास 8 पृष्ठ 197-198 में)

20. महर्षि दयानन्द का वेद ज्ञान :-

एक मंत्र का दो वेदों में अर्थ किया है। दोनों में एक दूसरे के विपरीत अर्थ है यजुर्वेद अध्याय 5 मंत्र 20 = ऋग्वेद मण्डल 1 सुक्त 154 मंत्र 2

गायत्री मंत्र :- यजुर्वेद अध्याय 36 मंत्र 3 में अन्य अर्थ है तथा सत्यार्थ प्रकाश समु. 3 पृष्ठ 38-39 पर अन्य अर्थ है।

''महर्षि दयानन्द व्यसन करता था''

21. महर्षि दयानन्द भांग पीते थे।

प्रमाण :- पुस्तक, ''श्री मद् दयानन्नद प्रकाश'' प्रकाशक :- सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली के पृष्ठ 34-35

पुस्तक ''आत्मकथा'' पृष्ठ = 22

22. महर्षि दयानन्द हुलांस सूंघता था पृष्ठ 129

हुक्का पीते थे :- पृष्ठ = 302, पान खाते थे :- पृष्ठ 911, तम्बाकू खाते, सूंघते थे :- पृष्ठ = 208

उपरोक्त प्रमाण पुस्तक ''महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित्र'' प्रकाशकः- आर्य समाज नया बास, दिल्ली।

23. महर्षि दयानन्द चाय पीता था, पुस्तक ''नव जागरण के पुरोधा दयानन्द सरस्वती'' पृष्ठ 381

24. महर्षि दयानन्द को विष नहीं दिया गया। उनकी मृत्यु रोग के कारण हुई थी।

प्रमाण :- पुस्तक = ''दयानन्द चरित'' पृष्ठ =216 तथा पुस्तक ''श्रीमद् दयानन्द प्रकाश'' पृष्ठ = 437

पुस्तक = ''नवजागरण के पुरोधा दयानन्द सरस्वती'' प्रकाशकः- परोपकारिणी सभा केसरगंज अजमेर (राजस्थान) पृष्ठ = 529, 530, 531, 536

25. महर्षि दयानन्द का सन् 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम में कोई योगदान नहीं था :- प्रमाण पुस्तक ''नवजागरण के पुरोधा : दयानन्द सरस्वती'' = 38,41,42,43,44,45

महर्षि दयानन्द द्वारा० अन्य महापुरूषों तथा धर्मों की मिथ्या आलोचना :-

26. बन्दी छोड़ कबीर परमेश्वर जी के विषय में अज्ञान विचार :-

सत्यार्थ प्रकाश के समुल्लास 11 पृष्ठ 306-307

27. (क) सिख धर्म के प्रवर्तक नानक देव साहेब जी की मिथ्या आलोचना तथा नानकदेव जी को मूर्ख कहा है।

(ख) श्री गुरु ग्रन्थ साहेब जी को पुराणों तुल्य मिथ्या ज्ञान कहा है। सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास 11 पृष्ठ 307 से 309

28. महर्षि दयानन्द जी कहते हैं कि एक रामदास नाम के सन्त अनुसुचित जाति से सम्बन्ध रखते थे। महर्षि दयानन्द ने उसको ''जाति का ढेड'' कह के सम्बोधित किया है। सत्यार्थ प्रकाश के समु. 11 पृष्ठ 311 पर

29. महर्षि दयानन्द जी ने ईसाइयों को मूर्ख, जंगली, दंभी कहा है = सत्यार्थ प्रकाश समु. 13 पृष्ठ 407, 410, 414, 417, 425, 419, 428, 437

30. मुसलमान धर्म के ऊपर अभद्र कटाक्ष :-

सत्यार्थ प्रकाश के समु. 14 पृष्ठ 450, 451, 506, 507, 476, 477, 480,

483, 485, 486, 489, 494, 499

31. महर्षि दयानन्द जी कहते थे कि परमात्मा रोग नाश नहीं करता सत्यार्थ प्रकाश समु. 14 पृष्ठ 488 (जबकि ऋग्वेद मण्डल 10 सुक्त 161 मंत्र 2 में लिखा है परमात्मा अपने साधक का असाध्य रोग नाश करके सौ वर्ष की आयु प्रदान कर देता है)

32. महर्षि दयानन्द जी को यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान नहीं था। वे किसी मंत्र (ओउम्=ॐ) नाम के जाप के पक्ष में नहीं थे।

प्रमाण :- सत्यार्थ प्रकाश के समुल्लास 11 पृष्ठ = 263-264, यजुर्वेद अध्याय 40 मंत्र 15 के अनुवाद में महर्षि दयानन्द ने स्पष्ट किया है कि जिस परमात्मा का नाम ''ओम्'' है उसका स्मरण करें न कि ओम् मंत्र का।

पुस्तक = ''महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित्र'' प्रकाशकः- आर्य समाज नया बास, दिल्ली के पृष्ठ 62 पर एक पुजारी के द्वारा यह पूछने पर कि परमात्मा का कौन सा नाम जाप करें? उत्तर में महर्षि दयानन्द ने कहा ''सच्चिदानन्द'' यही नाम जाप किया करो और नहीं'' तथा पुस्तक ''नवजागरण के पुरोधा दयानन्द सरस्ती'' के पृष्ठ 93 तथा 83 पर ''गायत्री मंत्र का जाप करने को कहता था।''

33. ''महर्षि दयानन्द को वेद ज्ञान नहीं था''

(क) = सत्यार्थ प्रकाश के समु. 3 पृष्ठ 38 पर गायत्री मंत्र के विषय में कहा है कि ''भू भवः स्वः'' ये तीन वचन तैतिरीय आरण्यक के हैं, यदि वेद ज्ञान होता तो कहते कि यह पूरा मंत्र यजुर्वेद अध्याय 36 मंत्र 3 का है। यजुर्वेद अध्याय 36 मंत्र 3 का अनुवाद भी महर्षि दयानन्द ने ही किया है। जो सत्यार्थ प्रकाश वाले अनुवाद से भिन्न है। कारण यह है कि महर्षि दयानन्द भांग का सेवन करता था, (प्रमाणः- महर्षि दयानन्द की आत्मकथा पुस्तक के पृष्ठ 8 पर, पुस्तक = ''नवजागरण के पुरोधा दयानन्द सरस्वती'' पृष्ठ = 36 पर, पुस्तक ''महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित्र'' पृष्ठ 50 पर) इसलिए सत्यार्थ प्रकाश में किए अनुवाद से भिन्न अर्थ यजुर्वेद के अनुवाद करते समय याद नहीं रहा कि मैं क्या अनुवाद कर रहा हूँ, वास्तविक्ता यह है कि गायत्री मंत्र की व्याख्या जो सत्यार्थ प्रकाश में की है वह किसी की नकल उतारी है। यजुर्वेद अध्याय 36 मंत्र 3 का अनुवाद महर्षि दयानन्द का है। यदि भांग का सेवन छोड़ दिया होता तो याद रहता कि सत्यार्थ प्रकाश के समु. 3 पृष्ठ 38 पर क्या अनुवाद किया है। क्योंकि सत्यार्थ प्रकाश को दूसरी बार ''भाद्रपद सम्वत् 1939 को शुद्ध करके लिखा गया (प्रमाण = सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका'' पृष्ठ 8 तथा 12 पर) सम्वत् 1940 में महर्षि दयानन्द जी की मृत्यु हो गयी थी।

यजुर्वेद का पूरा ऋग्वेद का 1 से 6 मण्डल का अनुवाद सम्वत् 1934 से

सम्वत् 1939 तक किया, 5 वर्षों में किया तथा 1940 सम्वत् में महर्षि दयानन्द जी की मृत्यु हो गई। इससे यह सिद्ध हुआ कि सत्यार्थ प्रकाश का संशोधन व यजुर्वेद का अनुवाद साथ-2 किया गया तथा महर्षि दयानन्द को यह ज्ञान नहीं कि जिसे गायत्री मंत्र कहा है उसका सत्यार्थ प्रकाश में क्या अर्थ है तथा वेद भाष्य में क्या किया है। इससे स्वसिद्ध है कि महर्षि दयानन्द ने भांग पीना त्यागा नहीं। एक और प्रमाण है कि सत्यार्थ प्रकाश प्रमाण समु. 8 पृष्ठ 197-198 पर लिखा है कि सूर्य पर मनुष्य रहते हैं वहां पर सर्व सुख विशेष पदार्थ हैं (काजू-किशमिश, ज्वार, बाजरा, गेहूं तथा फल, बाग-बगीचे पृथ्वी की तरह सूर्य पर भी हैं) वहां अर्थात् सूर्य पर रहने वाले व्यक्तियों द्वारा इन्हीं वेदों को पढ़ा जाता है। विचार करें सम्वत् 1940 (सन् 1883) में महर्षि दयानन्द जी की मृत्यु हुई तथा सम्वत् 1939 (सन् 1882) तक सत्यार्थ प्रकाश का संशोधन किया। यदि भांग का नशा नहीं करता होता तो उपरोक्त गलती नहीं करता। इससे सिद्ध है कि महर्षि दयानन्द भांग सेवन के साथ-2 हुक्का पीता था (प्रमाण = पुस्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित्र'' पृष्ठ=302, तम्बाकू खाता, हुलांस भी सूंघता था। इसी पुस्तक ''महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित्र'' पृष्ठ 208 पर) चाय पीता था = प्रमाण :- पुस्तक ''नव जागरण के पुरोधा दयानन्द सरस्वती'' पृष्ठ 381 पर।

34. महर्षि दयानन्द ने कहा है कि ''परमात्मा की संध्या अर्थात् प्रार्थना व स्तुति आदि उपासना केवल दो समय (प्रातः-सांय) करनी चाहिए। जप तथा पुरश्चरण करना आवश्यक नहीं। (प्रमाण=जीवन चरित्र महर्षि दयानन्द सरस्वती पृष्ठ 294) जो वेद विरूद्ध ज्ञान है।

उत्तर=वेदों में लिखा है कि परमात्मा की प्रार्थना-संध्या तीन समय (प्रातः, दोपहर तथा शाम) को करनी चाहिए। प्रमाणः- ऋग्वेद मण्डल 8 सुक्त 1 मंत्र 29 व ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 13 मंत्र 13 में तथा यजुर्वेद अध्याय 19 मंत्र 26 में प्रमाण है कि परमात्मा की उपासना स्तुति तीन समय करने को कहा है।

35. महर्षि दयानंद हवन यज्ञ की विधि लकड़ियों को जलाकर घी डालकर करने को बताते हैं। जबकि ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 86 मंत्र 10 में (ज्योतिर्यज्ञस्य) ज्योति यज्ञ का महत्व कहा है (अर्थात् वेदों में ज्योति यज्ञ का प्रावधान है)। संत रामपाल दास जी महाराज ज्योति यज्ञ को कराते हैं।

36. विवाह के सम्बन्ध में :- सत्यार्थ प्रकाश समु. 4 पृष्ठ 69-70, 71, 96-97, 102, 103 जो कतई संभव नहीं।

37. माता बच्चे को केवल छः दिन दूध पिलाए, छः दिन के पश्चात् दाई अपना दूध उस नवजात बच्चे को पिलाये। समु. 4 पृष्ठ 82 पर जो बिल्कुल भी संभव नहीं।

अधिक प्रमाणों के लिए कृपया पढ़ें पुस्तक ''कड़वा सत्य'' तथा ''ज्ञान गंगा''।

''शास्त्रानुकूल साधना से हुए भक्तों को लाभ''

सज्जन पुरूषों से निवेदन है कि वर्तमान में मानव विज्ञान को बहुत महत्व दे रहा है। मान बैठा है कि परमात्मा-भगवान कुछ नहीं है। विज्ञान (Science) ने कितनी तरक्की कर ली है। ऐसे समय में जो परमात्मा मानता है, वह रूढ़ीवादी ही कहा जाएगा। ऐसा मानना है वर्तमान में अधिक पढ़े-लिखों का, परंतु उनकी यह बहुत बड़ी भूल है। जब तक पूर्व जन्म के पुण्य हैं, तब तक तो किसी को मत मानो। परंतु जिस समय पूर्व के पुण्यों की चार्ज बैटरी डाऊन होगी तब पता चलेगा भगवान है कि नहीं। कोई भी औषधी व उसमें जो गुण है वह परमात्मा का दिया हुआ है। औषधी या वैद्य परमात्मा से अधिक शक्तिमान नहीं हैं। वर्तमान में M.B.B.S. M.S. फिर ऊपर C.M.O. जो विज्ञान की चर्म सीमा है। उन्होंने क्या अनुभव किया? यहां विज्ञान असफल है तथा भगवान सफल है। कृपया पढ़ें विज्ञानिकों के श्री मुख कमल से भगवान की महिमा।

''डा. ओमप्रकाश C.M.O. को जीवन दान''

''पूर्ण परमात्मा साधक को भयंकर रोग से मुक्त करके आयु बढ़ा देता है''

भक्त डा. ओम प्रकाश हुड्डा (C.M.O.) का प्रमाण

प्रमाण ऋग्वेद मंडल 10 सूक्त 161 मंत्र 1, 2 तथा 5 जिसमें परमेश्वर कहता है कि यदि किसी को प्रत्यक्ष या गुप्त रोग हो चाहे क्षय रोग तपेदिक हो उसे भी मैं ठीक करता हूँ तथा यदि किसी रोगी व्यक्ति की प्राण शक्ति क्षीण हो चुकी हो। जिसकी आयु शेष न रही हो उसके जीवन प्राणों की रक्षा करूं तथा उसकी आयु सौ वर्ष प्रदान कर दूं, सर्व सुख प्रदान करूं। मंत्र 5 में कहा है कि हे पुनर्जीवन प्राप्त प्राणी! तू सर्व भाव से मेरी शरण ग्रहण कर। यदि पाप कर्म दण्ड के कारण तेरी आँखें भी समाप्त होनी हों तो मैं तुझे पुनर् आजीवन आँखें दान कर दूं। तुझे रोग मुक्त करके सर्व अंग प्रदान करूं तथा तुझे प्राप्त होऊं अर्थात् मिलूं।

जम जौरा जासे डरें, मिटें कर्म के लेख।
अदली अदल कबीर हैं, कुल के सतगुरु एक।।

उपरोक्त पंक्तियाँ मेरे जीवन में पूर्ण रूप से सत्य घटित हुई।

मैं भक्त डॉ. ओमप्रकाश हुड्डा (C.M.O. - M.B.B.S., M.S. Eye specialist), 18 A, सरकुलर रोड़ रोहतक में रहता हूँ। मेरा मोबाईल नं. 9813045050 है। मेरा जन्म 12 अप्रैल 1953 को गाँव किलोई जिला-रोहतक में हुआ। मेरी पाँचवी से बारहवीं कक्षा तक की पढ़ाई D.A.V. स्कूल व D.A.V. कॉलेज अमृतसर में

हुई। अमृतसर में मेरे बड़े भाई Librarian के पद पर D.A.V. स्कूल में कार्यरत थे। वहाँ के जानकार लोग उन्हें मास्टर जी तथा मुझे प्यार से छोटे मास्टर जी कहते थे। जब मैं छठी कक्षा में पढ़ता था तो मुझे एक महात्मा ने जो कि दुरग्याना मन्दिर अमृतसर में सेवक था, ने मेरी हस्तरेखा देखकर बताया कि छोटे मास्टर जी आप डॉक्टर बनोगे तथा तुम्हारी आयु केवल पचास वर्ष है। यह कहते हुए यह भय हुआ कि बच्चे को यह सच्चाई बताकर गलत कर दिया, लेकिन मैंने महात्मा की बातों को एक बच्चे की भांति सुना अनसुना कर दिया। मैं बड़ा होकर डॉक्टर बना तथा मैंने M.B.B.S. तथा M.S. (Eye specialist) भी P.G.I. M.S. रोहतक से की है।

ठीक पचासवां वर्ष जब पूरा होना था यानी 10/11 अप्रैल 2003 की रात बारह बजे के करीब उस दिन मैं सपरिवार रोहतक में ही था तो मुझे दोनों हाथों में दर्द तथा सीने में भारीपन शुरु हुआ और हम उपचार के लिए P.G.I. M.S. में चले गए। इससे पहले मुझे न ही ब्लड प्रेशर रहता था और न ही मुझे शुगर की बीमारी थी। मैंने नाम लेने से पहले पच्चीस वर्ष लगातार धूम्रपान अवश्य किया था।

वहाँ ड्यूटी पर तैनात डॉक्टर को मैंने परिचय दिया कि H.C.M.S.I. (Group A) श्रेणी में मैं एस.एम.ओ. के पद पर तैनात हूँ। (उस समय S.M.O वर्तमान में C.M.O.) परिचय देने के बाद डॉक्टर ने तुरन्त उचित निरिक्षण के बाद मेरा ईलाज शुरु कर दिया और Intensive Care Unit में शिफ्ट करने तक मुझे सभी गतिविधियाँ पता रही। लेकिन I.C.U. में शिफ्ट करने के कुछ समय बाद से मुझे कुछ मालूम नहीं कि आगे क्या हुआ ? लगभग डेढ़ दो घण्टे के पश्चात मुझे ऐसा महसूस हुआ कि मुझे काल के दूत चारों तरफ से घेर कर खडे हैं और मुझे कह रहे हैं कि चलो तुम्हारा समय पूरा हो चुका है, हम तुम्हें लेने आए हैं। मैं उनको कुछ भी नहीं कह पाया था कि तभी पूर्ण परमेश्वर कबीर साहेब मेरे सतगुरु तत्वदर्शी संत रामपाल जी महाराज के रूप में मेरे बैड के पास प्रकट हुए तो वे काल के दूत जिनका चेहरा डरावना तथा शरीर डील-डोल था, महाराज जी को देखते ही अदृश्य हो गए।

मेरे सतगुरु देव ने मुझे आशीर्वाद दिया तथा कहा कि कबीर परमेश्वर ने आपकी आयु अपने कोटे से (अपनी शक्ति) से बढ़ा दी है ताकि आप अपनी भक्ति पूरी कर सके और सतलोक जा सकें। मैंने रोकर कहा कि मालिक आप ही स्वयं परमेश्वर हो, आपने इस चोले में अपने आपको छुपा रखा है, परमेश्वर भक्ति भी आप ही करवाने वाले हो। मैं भक्ति करने वाला कौन होता हूँ ? इतना कहकर मेरी आँखें खुल गई और मेरी आँखों में आसुंओं के सिवाए कुछ भी नहीं था। तीन दिन बाद जब I.C.U से मुझे वार्ड में लाया जा रहा था

तो मैं उठकर पैदल चलने लगा तो एक डॉक्टर ने भाग कर मुझे पकड़ लिया तथा कहा कि क्या कर रहे हो ? आपने पैदल बिल्कुल नहीं चलना, आपको हार्ट अटैक हुआ है।

स्पेशल वार्ड में शिफ्ट करने के बाद डॉक्टर ने मुझे बताया कि हम हैरान हैं कि 10/11 तारीख की रात को आपकी E.C.G./B.P. इत्यादि रिपोर्ट बता रही थी कि आप बचने वाले नहीं हो, लेकिन सुबह आपकी E.C.G. आदि फिर सामान्य शुरु हो गई।

मैंने 25-12-1999 को तत्वदर्शी संत रामपाल जी महाराज से नामदान लिया था। इससे पहले मैं ब्रह्मा कुमारी, जैनी, राधास्वामी का शिष्य रहा तथा D.A.V. School/College का छात्र होने की वजह से आर्य समाज की अमिट छाप मुझ पर थी। गायत्री मंत्र का जाप कई लाख बार किया होगा। घर में लगभग सैकड़ों फोटो सभी देवी-देवताओं की थी। नामदान के बाद सभी देवी-देवताओं की फोटो जल प्रवाह कर दी तथा सभी प्रकार की आन उपासना बंद कर दी तथा सतगुरु रामपाल जी महाराज के आदेशानुसार पूर्ण परमात्मा कबीर परमेश्वर (कविर्देव) की भक्ति शुरु कर दी। क्योंकि सतगुरु ने कहा है कि :-

एकै साधै सब सधै, सब साधै सब जाए।
माली सींचैं मूल को, फले–फूले अघाए।।

एक कबीर परमेश्वर की भक्ति में आरूढ़ होने से वह भी केवल तत्वदर्शी संत से नाम लेने के बाद लाभ यह हुआ कि संत रामपाल जी महाराज ने अपने कोटे से मेरी उम्र बढ़ा दी। यह बातें मैंने तथा मेरे परिवार के सदस्यों ने P.G.I.M.S. में कार्यरत डॉक्टर तथा दूसरे स्टॉफ के सदस्यों को बताई, लेकिन उनके समझ में एक न आई। क्योंकि ये बातें समझ में उसी को आयेंगी जिनका चैनल परमेश्वर ऑन करेंगे, अन्यथा संभव नहीं कि कोई इस ज्ञान को समझ सके।

मैंने 25-12-1999 को तत्वदर्शी संत रामपाल जी महाराज से नामदान लिया तो मुझे मालूम नहीं था कि यही पूर्ण ब्रह्म कबीर साहेब ज्यों के त्यों अवतार आए हुए हैं। लेकिन जब मेरे साथ उपरोक्त घटना घटित हुई तब मुझे यह विश्वास हो गया कि :-

माँसा घटे न तिल बढ़े, विधना लिखे जो लेख।
साचा सतगुरु मेट कर ऊपर मारें मेख।

कबीर परमेश्वर सशरीर संत रामपाल जी महाराज के रूप में आए हुए हैं जो सच्चे सतगुरु हैं और विधना (भाग्य) के पाप कर्मों रूपी लेख को मिटा कर अपनी शक्ति से नये लेख लिख देते हैं।

"डा. भक्तमति सुशीला की आँख ठीक करना"

इसी प्रकार मेरी धर्मपत्नी श्रीमती सुशीला हुड्डा को 6-12-2004 को दाईं आँख से दो-दो वस्तुएं नजर आनी शुरु हो गई थी। P.G.I.M.S. रोहतक में सभी टेस्ट M.R.I. तथा M.R.I. Angio graphy इत्यादि करवाने तथा सभी वरिष्ठ डॉक्टरों को दिखाया तथा ईलाज भी किया लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ। प्राइवेट डॉक्टर ईश्वर सिंह इत्यादि को भी दिखाया परन्तु कोई लाभ नहीं हुआ। यह सभी हमने सतगुरु से आज्ञा लेने के बाद किया था लेकिन जब दवाईयों से कोई लाभ नहीं हुआ तो हमने सतगुरु से प्रार्थना की कि परमेश्वर आप आयु तक बढ़ा देते हो तो आपके लिए यह क्या कठिन है ? कृप्या आप अपने बच्चों पर यह कृपा भी कर दो। सतगुरुदेव ने कृपा की और सिर पर हाथ रखते ही दाई आँख बिल्कुल सीधी हो गई और दो-दो वस्तु नजर आनी बंद हो गई। जैसे पहले थी बिल्कुल ज्यों की त्यों हो गई। अब इनको पूर्ण परमात्मा पाप कर्मों को जलाकर नष्ट करने वाले भगवान नहीं कहे तो और क्या कहें ? कृप्या पाठक स्वयं पढ़कर विचार कर निर्णय लें और अति शीघ्र आप भी अपनी मान-बड़ाई व शास्त्रविधि रहित साधना को त्याग कर सतलोक आश्रम करौंथा में आकर परम पूज्य सतगुरु रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश लेकर अपना व अपने परिवार का कल्याण करवाऐं।

''सत साहेब''

प्रार्थी

भक्त डॉ. ओमप्रकाश हुड्डा

''डा. जयनारायण चौधरी की बेटी को जीवनदान''

मैं बिहार राज्य के जिला मधुबनी से डा० जयनारायण चौधरी B.A.M.S. (M.D.) अपनी आप बीती बताता हूँ। मैंने 14 नवम्बर 1984 में बालयोगेश्वर हंसादेश से दीक्षा भी ले रखी थी। मैं सन् 2012 तक 28 वर्ष वही भक्ति करता रहा। एक केन्द्र का उप प्रधान भी था, सत्संग भी करता था। उसके पश्चात् भी मेरे ऊपर दुःख बराबर बना रहा।

★ मेरी लड़की रागिनी जिसका विवाह बंगाल में कर रखा है। उसको भयंकर रोग था। उसकी ससुराल वालों ने भी बहुत इलाज कराया। सर्व झाड़फूक वालों से भी इलाज करवाया। मैं स्वयं डॉक्टर हूँ, स्वयं इलाज किया। दिल्ली के प्रसिद्ध हस्पताल सर गंगाराम में इलाज करवाया। कोई लाभ नहीं हुआ। उसको ऐसा दर्द होता था कि चिल्लाया करती थी जैसे उसे कोई अंदर से काट रहा हो, मांस उठ जाता था। अपैंडक्स का आप्रेशन भी करवाया, गाल ब्लेडर

का आप्रेशन भी करवाया, कोई आराम नहीं हुआ। जब उसको दर्द होता था तो 7-8 तक इन्जैक्शन लगाए जाते थे। जो इंजैक्शन कैंसर के दर्द के रोगी को भी 7-8 घण्टे नींद में सुला देता था। परन्तु मेरी लड़की 7-8 इन्जैक्शन लगातार लगाने से पलक तक नहीं झपकती थी, चिल्लाती रहती थी। मेरी बेटी को ऐसे 1500 इन्जैक्शन लग चुके थे। उसका जीवन नरक बन गया था। साथ में मेरा जीवन भी दुःखमय था क्योंकि जिसकी संतान दुःखी हो तो वह इंसान कैसे सुखी हो सकता है? एक झाड़फूक वाले ने 1 लाख रूपये की मांग की तथा कहा कि मैं ठीक कर दूंगा। मैंने कहा कि तुम ठीक कर दो, मैं चैक काट देता हूँ। ठीक नहीं हुआ तो पैसे नहीं मिलेंगे, वह भी जंत्र-मंत्र करके थककर चला गया। मेरी बेटी के इलाज में लगभग 8 लाख रूपये खर्च हो गए थे, कुछ भी लाभ नहीं हो रहा था।

मैंने पुस्तक ''भक्ति सौदागर को संदेश'' (वर्तमान नाम ज्ञान गंगा) में भक्तों की कथा पढ़ी थी कि बहुत से भक्त परमात्मा की कृपया से स्वस्थ हो गए। परंतु यकीन नहीं हो रहा था। मेरे किसी रिश्तेदार ने कहा कि इसे बालाजी राजस्थान में ले चलो, वहां जाते ही अवश्य ठीक हो जाएगी। वहां भी ले गए परंतु व्यर्थ रहा। अंत में सर्व जगह थककर सतलोक आश्रम बरवाला जिला हिसार (हरियाणा) में संत रामपाल दास जी महाराज के आशीर्वाद मात्र से ही मेरी बेटी स्वस्थ हो गई। आज (सन् 2014 में) दो वर्ष हो चुके हैं। वह पूर्ण रूप से स्वस्थ है। हम अन्य स्थानों पर जहां भी जाते थे, पैसा पहले काम बाद में, यहां सतलोक आश्रम बरवाला जिला हिसार (हरियाणा) में पैसा न पहले और न ही बाद में। हमारा एक नया पैसा नहीं लगा। खाना फ्री, रहने की मुफ्त व्यवस्था, चाय फ्री जितनी बार पीओ। वह सत्य भक्ति जो विश्व में किसी संत के पास नहीं है जिसका मूल्य तो कहा ही नहीं जा सकता, वह भी फ्री मिलती है। मैं संत रामपाल दास जी महाराज का आभारी हूँ, लाख-लाख धन्यवाद करता हूँ। मेरा जीवन धन्य हुआ। मेरी बेटी को जीवन दान दिया। मानव समाज से प्रार्थना करता हूँ कि सतलोक आश्रम बरवाला जिला-हिसार (हरियाणा) में आकर सत्य भक्ति प्राप्त करके अपना कल्याण कराऐं। सर्व रोगों से मुक्ति पाओ।

सत साहेब।

डा. जयनारायण दास (B.A.M.S. M.D.)
जिला-मधुबनी
प्रान्त-बिहार (भारत)

भक्त रामकुमार (Ex.Headmaster M.A.B.ED.) के परिवार को जीवन दान

'' तीन ताप को पूर्ण परमात्मा ही समाप्त कर सकता है''

भक्त रामकुमार ढाका (Ex.Headmaster M.A.B.ED.) का प्रमाण

मैं रामकुमार ढाका 'रिटायर हैडमास्टर दिल्ली' (M.A.B.ED.), गाँव सुंडाना, जिला-रोहतक, वर्तमान पता - आजाद नगर, रोहतक (मोब. नं. - 9813844747) में रहता हूँ। सन् 1996 से मेरी पत्नी और दोनों लड़कों को एक बहुत भयंकर बीमारी थी। इस बीमारी से इतने तंग हो गये कि दोनों लड़के कहने लगे कि नौकरी नहीं हो सकती क्योंकि इस बीमारी से गला रूकता था और सांस आना बंद हो जाता था, तभी डाक्टर लेकर आते और नशे का टीका देते, परन्तु रात को ड्यूटी पर होते तब कहां ले जायें, बहुत ही परेशानी हो जाती थी, अफसर भी मुझे बुला लेते थे, मैं उनको बताता तब कहते की ईलाज करवाओ, जब घर पर होते तो डॉ. को रात को दो-दो बार भी आना पड़ता था, क्योंकि कभी किसी घर के सदस्य को तो कभी किसी को। अगर किसी को शक हो तो डबल फाटक पर डॉ. सचदेवा की दुकान है, सचदेवा साहब से पूछ लो कि मास्टर जी के घर पर क्या हाल हो रहा था ?

जिसने भी जहाँ पर बताया मैं वहीं पर गया - उत्तर प्रदेश में कराना शामली के पास, उत्तर प्रदेश में खेखड़ा, राजस्थान में बाला जी कई बार, खाटूश्याम जी व कई जगह जन्त्र-मन्त्र वालों के पास, हरियाणा में तो मैंने कोई जगह नहीं छोड़ी, परन्तु कोई फर्क नहीं लगा, करेला के पास खेड़ा कंचनी, बोहतावाला, गोहाना के पास नगर, समचाना, सिकन्दरपुर, खिड़वाली आदि अनेक जगह गया और लगभग तीन लाख रूपये लग गये कोई काम नहीं आये।

मैं थक गया और मेरा परिवार बर्बाद हो गया। मेरी पत्नी ने मेरे से कहा कि मेरा जीवन समाप्त होने वाला है तथा भक्त सुभाष पुत्र महेन्द्र पुलिस वाला जिस संत रामपाल की महिमा सुनाता है मुझे उसी संत से नाम दिला दे। पहले मैं किसी बात पर विश्वास नहीं करता था तथा गुरु बनाना तो बहुत ही हेय समझता था। कहा करता था कि तेरा गुरु तो मैं ही हूँ, मैं एम.ए.बी.एड मेरे से ज्यादा कौन गुरु होगा? परन्तु परिस्थितियों ने मुझे विवश कर दिया तथा मैंने यह भी स्वीकृति अपनी पत्नी को दे दी कि आप नाम ले लो। आप का जीवन शेष नहीं है। क्योंकि उस समय मेरी पत्नी का वजन 50 कि.ग्रा. रह गया था, पहले 80 कि.ग्रा. वजन था। उठने-बैठने से भी रह गई थी, चलना फिरना तो बहुत दूर की बात थी।

मैंने कहा मर तो ली, नाम और लेकर देखले, अपने मन की यह और

करके देखले, अब मैं तेरे को नहीं रोकूंगा, नाम ले ले, ठीक है, क्योंकि संत रामपाल जी से नाम लेने के लिए कहने दूसरे तीसरे महीने सुभाष हमारा भतीजा आता था, कहता था ताई नाम ले लो नहीं तो मरोगे। मैं कहता था कि कोई डॉ. छोडा नहीं, हम बाला जी आदि सभी तान्त्रिकों के पास सिर मार लिया तो आपका संत क्या ले रहा है ?

परन्तु तंग आकर, कहीं बात नहीं बनी तब नाम लेने भेज दी। क्योंकि मैं भी अपने परिवार के आश्रम में जाने के सख्त विरुद्ध था। 16 जनवरी 2003 में नाम लिया और 'गहरी नजर गीता में' नामक पुस्तक साथ लेकर आई। एक महीने में जैसे दीपक में तेल डाल दिया इस प्रकार रोशनी हो गई, हर महीने तीन किलो वजन बढ़ने लगा।

तब बड़े लड़के को भी बगैर नाम लिये ही इसकी माँ के नाम लेने से ही अच्छी नींद आने लगी, तभी उसने अपनी पत्नी को नाम दिलवाया, फिर मैंने 'गहरी नजर गीता में' पुस्तक पढ़ी, तब मैं भी गहराई में गया तो पाया कि ऐसा ज्ञान कभी नहीं पढ़ा व सुना था और मैंने भी अप्रैल 2003 में नाम लिया। आज मेरे घर में सभी बड़े से बच्चे तक ने नाम ले लिया है।

जब वह बीमारी होती थी तब सारा घर कांप उठता था, लड़ाई-झगड़ा, नौकरी में विवाद, डॉ. का आना जाना या मैडीकल में इमरजैंसी में लेकर पहुँचते थे। आज हमारा घर स्वर्ग के समान है और सतलोक जाने की इच्छा है। एक महीना पहले स्वपन में परमेश्वर कबीर साहेब जी गुड़गाँव सैक्टर 57 में प्लॉट बुक कर गये, जब ड्रा निकला तो वही प्लॉट नंबर मिला जो स्वपन में कबीर परमेश्वर ने बताया था, सुबह समाचार पत्र पढ़ा तो वही प्लॉट नं. अलोट था।

हमारे यहाँ ऐसी बीमारी थी कि कोई भी इतना दुःखी नहीं होगा जो हम थे अब संत रामपाल दास जी महाराज से उपदेश प्राप्त करने के पश्चात् बहुत थोड़े दिनों में हम बहुत सुखी हैं।

मेरे घर पर 'जिन्न' (जिन्द) प्रकट हुआ, उसने कहा मैं आपके आश्रम में जाता हूँ, सब कुछ देखकर आता हूँ, परन्तु मैं शीशों में नहीं जाता जहाँ संत जी बैठ कर सत्संग करते हैं, क्योंकि मैंने सब बातों का पता है, अगर वहाँ जाउंगा तो मेरी पिटाई बनेगी इसलिए मैं वापिस बाहर आ जाता हूँ और तुम कहीं तान्त्रिकों के पास क्या, चाहे बाला जी गये, मैं अंदर जाया ही नहीं करता, बाहर रह जाता हूँ, मेरे को कोई बांधने वाला नहीं है। मेरे साथी डरपोक थे वह भाग गये मैं नहीं जाउंगा, मेरे को पढ़ कर छोड़ रखा है, मैंने तेरे घर व तेरी लड़की के घर की ईंट से ईंट बजानी है। मैं इस प्रकार पढ़कर छोड़ रखा हूँ कि एक के बाद एक सभी के विनाश का नम्बर आयेगा, चाहे कहीं भी भाग लो।

कुछ दिन के बाद वही प्रेत घर में फिर प्रकट हुआ और जोर-जोर से बोलने लगा कहां है तेरा गुरु रामपाल ? कहां है तेरा मालिक कविर्देव (कबीर परमेश्वर) जब भी वह प्रकट होता था मनुष्य की तरह बातचीत करता था। तभी मेरी पत्नी हमारे घर पर बने पूजा स्थल पर चली गई और डण्डौतं प्रणाम किया, तभी जिन्द(प्रेत) की पिटाई आरम्भ हो गयी और कहने लगा क्या पिटाई करते हो, इन दीवारों को अब गिरा दूंगा। उसकी अच्छी पिटाई हुई वो कहने लगा हाय ये तो दीवार नहीं लोहे का जाल है, सरिये हैं। ये मालिक रामपाल जी कहां से आ गये ये तो बरवाला सत्संग करने गये हुए थे (उस दिन संत रामपाल जी महाराज बरवाला जि. हिसार में सत्संग करने गए हुए थे) मैं तो इसलिये आया था कि मालिक यहाँ पर है ही नहीं।

जिन्द ने कहा कि मैं आया था तुम्हारी ईंट से ईंट बजाने परन्तु मेरी ईंट से ईंट बज गई। मेरे को नरक में डालेंगे, मैं चला जाउंगा, मुझे छुड़वा दो। करौंथा आश्रम में संत रामपाल जी बैठे हैं इनको आदमी मत समझना पूर्ण परमात्मा आये हुए हैं। इनको मत छोड़ देना, नहीं तो खता खा जाओगे। ऐसे ही खेड़ा कचनी वाला पण्डित भी इलाज करता था।

जब मैं खेड़ा कंचनी में गया तो उस पंडित ने बताया कि आपका परिवार एक के बाद एक करके खत्म हो जायेगा। मैंने नहीं मानी, परन्तु शाहपुर में ही भाई की लड़कियों की शादी कर रखी है तथा वह पण्डित भी शाहपुर का ही है। फिर पण्डित जी ने हमारे चौधरी को बताया कि रोहतक वाले चौधरी रामकुमार के यहाँ बहुत खतरनाक बीमारी है और सारा परिवार नष्ट हो जायेगा। उनको बुलाकर लाओ। तब हमारे चौधरी साहब ने बटेऊ को मेरे पास भेजा। हमारे बटेऊ जिले सिंह ने बताया और वह साथ लेकर गया। बुलाना तो आसान था परन्तु फिर ईलाज बहुत मुश्किल हो गया। उसके काबू में नहीं आया। मंगल व शनिवार को रात के समय पाँच-पाँच चौकियां आती थी। उन्हें उतारता और साथ में तालाब में डाल देता। यह कार्यक्रम चार साल तक चलता रहा परन्तु बाद में हाथ खड़े कर दिए।

मैं बोहतावाला (जीन्द) एक स्याने के पास पहुँचा। उसने कहा कि तेरी बीमारी मैं काट दूंगा। आपकी बीमारी का मुझे पता है। वह हमें कई बार बाला जी भी ले गया, न उस स्याने के काबू में आया और न उसके मन्दिर में। क्योंकि मंगल व शनिवार को चौकियों के आने ने उसको इतना तंग कर दिया कि वह भी हाथ खड़े कर गया, क्योंकि चौकियां जब आती थी तो मेरे पास भी संदेश आ जाता था कि रात 9 से 2 बजे तक आग जला कर, पानी का लोटा लेकर और लाठी लेकर जागते रहना है। यह कार्यक्रम सन् 1996 से 2002 तक चलता रहा। बोतावाले के पास जब चौकी आई तो उसमें एक पर्ची मिली थी

बोहतावाले स्याने को कहा था कि बीच से हट जा तेरे को पचास हजार रूपये दे देंगे, नहीं तो तेरी भी खैर नहीं है। उसने डर के कारण मुझे इन्कार कर दिया। मैं दिन में दिल्ली नौकरी करने जाता और रात को पहरा देता। कभी रात को डॉ. को बुला कर लाता। मेरी बहुत ही दुर्दशा थी। मैं ऊपर के काम से तथा सारा परिवार बीमारी से बहुत तंग था। किसी को कहते तो मजाक करते थे, किसी ने भी साथ नहीं दिया। बहुत पैसे (लगभग 3 लाख) खर्च हो गये।

मेरी पत्नी चांदकौर को थाईराइड हो गई थी। जनवरी 2003 में डॉ. ओ. पी. गुप्ता ने थाईराईड के लिए तिमारपुर, दिल्ली हस्पताल में दाखिल करवाने के लिए मार्क कर दिया। परन्तु वहाँ न जाकर मैं मैडिकल में डॉ. चुग इसका स्पेशलिस्ट था उनसे ईलाज करवाया, उसने कहा सारी उम्र दवा खानी पड़ेगी, परन्तु अब 2003 में नाम लेने के बाद दवाई बिल्कुल समाप्त हो गई। मैंने डॉ. चुग को भी चैक करवाया, तो हैरान होगये, ये कैसे हुआ, सारी बातें बताई।

अब मेरे लड़के व मेरी पत्नी की सभी बिमारियाँ बन्दी छोड़ ने ठीक कर दी। बड़े लड़के का नाम सुरेन्द्र कुमार तथा छोटे लड़के का नाम मनोज कुमार है। दोनों हरियाणा पुलिस में नौकरी करते हैं। जब वे दोनों ही उस जिन्द भूत से ग्रस्त थे व घाल ने भी उन पर कई बार अटैक किया, लेकिन नाम उपदेश ले रखा था। इसलिए उनको परमात्मा कबीर साहिब ने बचा लिया। तत्वदर्शी जगतगुरु संत रामपाल महाराज हमारे लिये ही अवतरित हुऐ हैं क्योंकि जिस परिवार में दो लड़के नौकरी पर दोनों में ही जिन्द हो तो उस घर में क्या होगा। जिस औरत के दोनों लड़कों के साथ ऐसा खिलवाड़ हो और खुद में भी जिन्द हो तो क्या जिन्दगी है? जो लोग करौंथा आश्रम के बारे में ज्ञान अर्जित नहीं करते वे लोग अंधेरे में हैं। क्योंकि पढ़ने के लिए दिमाग दिया है, पढ़िये और सोचिये कि वास्तविकता क्या है?

हमारा परिवार बर्बाद हो गया था। मेरे बच्चे और मेरी पत्नी जब ठीक हो गई तभी मैंने अपने आपको सतगुरु रामपाल जी के चरणों में समर्पण कर दिया। मेरा कुछ नहीं है। ये तन-मन-धन सभी गुरु जी के चरणों में समर्पित करता हूँ। मेरी लड़की ने व दामाद ने भी नाम ले लिया। आज मेरी बेटी का घर भी स्वर्ग हो गया है। मेरा दामाद शराब पीता था, उसने शराब भी त्याग दी। मेरी लड़की की प्रमोसन, प्लॉट, मकान आदि चन्द दिनों में ही प्राप्त हो गए तथा सबकी मौज हो रही है।

सन् 2003 में बन्दी छोड़ गुरु रामपाल जी महाराज ने हमारे पाप कर्मों रूपी सूखे घास के ढेर को सतनाम रूपी अग्नि से जलाकर नष्ट कर दिया। न कोई गंडा, न कोई डोरी, न राख, न ताबिज आदि कुछ नहीं, बस केवल बन्दी छोड के मंत्र (नाम उपदेश) मात्र से सर्व रोग नष्ट हो गए। मंत्र तो मोक्ष

प्राप्ति के लिए सभी बन्धनों से छुटकारा पाकर सतलोक ले जाने का है, ये सभी बिमारियां तो रूंगे में कविर्देव की कृपा से ही समाप्त हो जाती हैं। यदि ऐसा न हो तो भक्ति से विश्वास उठ जाता है। अब हम बहुत सुखी हैं। अब चाहे कोई कुछ भी करे, हमारे घर पर कुछ नहीं हो सकता, क्योंकि हम बन्दी छोड़ कबीर साहेब के हंस हैं, उनके चरणों में हैं। मैं भी नहीं मानता था, इन बातों को पाखण्ड कहता था, परन्तु जब एक के बाद एक को डॉ. के पास ले जाता था तथा बीमारी में पैसे भी लगे, तंग भी हुए, तब आँखें खुली वास्तव में ही जाल में फंसा रखा है। इसलिए अपने इस भ्रम को भुला देना कि भूत-प्रेत कुछ नहीं है। मैं कहता हूँ कि बकवास नहीं ये बातें वास्तव में हैं, क्योंकि मरोड़ में मैंने अपने घर को बरबाद कर दिया होता। इसलिए मैं सभी पाठकों से प्रार्थना करता हूँ कि आप भी अपने समस्त दुःखों से छुटकारा पाने व सत्यभक्ति करने के लिए सतलोक आश्रम करौंथा में परम पूज्य संत रामपाल जी महाराज से मुफ्त उपदेश प्राप्त करके अपने मनुष्य जीवन को सफल बनाए।

प्रार्थी

हैडमास्टर रामकुमार (एम.ए.बी.एड.)

''भक्त बहीद् खाँ की आत्मकथा''

बन्दी छोड़ सतगुरु रामपाल जी महाराज के चरणों में कोटी-कोटी दण्डवत् प्रणाम, मैं बहीद् खाँ पुत्र मुन्शी खाँ गाँव व तहसील-मेहगाँव जिला भिण्ड (मध्यप्रदेश) का रहने वाला हूँ। मैं 3 साल से सख्त बीमार था। मेरी दोनों किडनी खराब थी। मैनें 2 साल ग्वालियर में बड़े-बड़े M.B.B.S. डाक्टरों से इलाज करवाया परन्तु कोई राहत नहीं मिली। उसके बाद ग्वालियर के डाक्टरों ने मुझे दिल्ली A.I.M.S. (ऑल इण्डिया मेडिकल) के लिए रैफर कर दिया। वहां डाक्टरों ने सभी जाचों के बाद बताया कि 3 बोतल खून चाहिए पहले आपका खून फिल्टर होगा फिर आपके परिवार से किसी सदस्य की किडनी निकालकर आपको आपरेशन द्वारा लगाई जाएगी आपरेशन का खर्च 4 लाख लगेगा। मैं रूपये देने में असमर्थ था। इसलिए दिल्ली से अपने घर वापिस आ गया तथा असहाय होकर मृत्यु का इन्तजार करने लगा। क्योंकि में खाने-पीने, चलने-फिरने व उठने-बैठने में असमर्थ हो चुका था।

फिर किसी व्यक्ति द्वारा पता चला कि हरियाणा में बरवाला जि. हिसार के अन्दर परमात्मा आए हुए हैं। जो असाध्य रोगों को परमात्मा की भक्ति से ठीक करते हैं। ये शब्द सुनकर 24-7-09 को आपके चरणों में पहुँच कर नाम दान ले लिया। नाम दान लेने के बाद मुझे आराम होना शुरू हो गया और धीरे-धीरे एक महीना भी नहीं लगा। मैं आपकी कृप्या से बिल्कुल ठीक हो गया। मेरे सतगुरु! प्रमाण के लिए मेरी बीमारी के सभी टैस्ट व कागजात मेरे

पास मौजूद हैं। हे परम पिता परमेश्वर आपने जो जीवन मेरे को दिया उसका अहसान मैं कभी नहीं उतार पाऊँगा। मेरे सतगुरु ''अपने दास पर कृप्या करके ऐसे ही अपने चरणों में लगाए रखना।''

आपका दास
भक्त बहीद् खाँ पुत्र मुन्शी खाँ
गाँव, डाकखाना व तहसील-मेहगाँव,
जिला-भिण्ड (मध्य प्रदेश)

''भक्त दीपक दास के परिवार की आत्म कथा''

।। बन्दी छोड़ सतगुरू रामपाल जी महाराज जी की दया ।।

मुझ दास का नाम दीपक दास पुत्र श्री बलजीत सिंह, गांव महलाना जिला सोनीपत है। हम तीन पीढ़ियों से राधास्वामी पंथ डेरा बाबा जैमल सिंह से नाम उपदेशी थे। सबसे पहले मेरी दादी जी की माता जी यानि मेरे पिता जी की नानी जी ने राधास्वामी पंथ से नाम उपदेश ले रखा था। उसके बाद मेरे दादा-दादी जी और फिर मेरे माता-पिता जी ने भी राधास्वामी पंथ के संत गुरविन्द्र सिंह जी से नाम लिया हुआ था। हम भी गुरविन्द्र जी महाराज को पूर्ण पुरूष मानते थे तथा इस पंथ में पूर्ण श्रद्धा यह सोच कर रखते थे कि यह संसार में प्रभु प्राप्ति का श्रेष्ट पंथ है और उनके विशाल डेरे और विशाल संगत समूह को देखकर विशेष आकर्षित थे और सेवा करने के लिए डेरा बाबा जैमल सिंह व्यास (पंजाब) में तथा छत्तरपुर पूसा रोड़ दिल्ली भी जाते रहते थे। लेकिन इस पंथ में उम्र विशेष में नाम दिया जाता है इसलिए अभी मैं इस पात्रता के लिए अयोग्य था।

मेरे माता-पिता जिस दिन छत्तरपुर से नाम लेने के लिए गये हुए थे उसी दिन मेरे छोटे भाई (उम्र 5) के हाथ से पड़ोस के एक बच्चे की आँख में कोई वस्तु अनजाने में लग गई। जब शाम को नाम उपदेश लेकर मेरे माता-पिता वापिस आए। उसी दिन से हमारा व हमारे पड़ोसियों का वैर हो गया कि आपके बेटे ने हमारे बेटे की आँख में जानबूझ कर चोट मारी है और उसी दिन से हमारे ऊपर दुःखों का पहाड़ टूट पड़ा।

उसी दौरान मेरे दादा जी का बीमारी के कारण देहांत हो गया जब मेरे दादा जी का पार्थिक शरीर दूसरे कमरे में रखा हुआ था तो उस समय मेरी दादी जी, जिनका देहांत हुए 12 वर्ष हो चुके थे, मेरी बुआ प्रेमवती में प्रेत की तरह प्रवेश करके बोली। (मेरी दादी ने भी राधास्वामी पंथ से प्राप्त पाँच नामों की बहुत ज्यादा साधना कर रखी थी। वे नियमित रूप से तीन बजे ही व दिन में भी भजन व सुमरन करने के लिए बैठ जाती थी और घण्टों राधास्वामी पंथ

के बताये नामों का जाप व अभ्यास किया करती थी।) कि आज तुम्हारे दादा जी का जीवन संस्कार समाप्त हो गया इसलिए मैं तुम्हें संभालने आई हूँ। मेरी दादी जी को जीवित अवस्था में सांस की बीमारी के कारण खांसी रहती थी वे बारह साल के बाद भी ज्यों की त्यों ही खांस रही थी। तब हमने पूछा कि ''दादी जी आप तो बहुत दुःखी दिखाई दे रही हो, क्या आप सतलोक नहीं गई''। तब मेरी दादी ने कहा कि ''बेटा मैंने गलत साधना के कारण अपना अनमोल मनुष्य जीवन व्यर्थ कर दिया और अब मृत्यु के पश्चात् भूत योनि में कष्ट उठा रही हूँ। मैं कहीं सतलोक में नहीं गई'' मेरी माता जी ने घोर आश्चर्य के साथ पूछा कि ''माँ ! क्या आपको आपके गुरू चरण सिंह जी महाराज ने नहीं संभाला? तब मेरी दादी जी ने अत्यंत दुःख के साथ कहा कि ''उन्होंने मेरी कोई संभाल नहीं कि और मैं आज भी ऐसे ही दुःखी हो रही हूँ''।

उस घटना के दो साल बाद एक दिन मेरी दूसरी बुआ कमला देवी के अंदर मेरे दादा जी प्रेतवत् प्रवेश करके बोले और कहा कि ''मैं तो बहुत दुःखी हूँ तथा मेरी कोई गति नहीं हुई, मैं नहाना चाहता हूँ''। यह सुनकर मेरी माता जी ने दुःख व आश्चर्य से कहा कि ''आप तो सतलोक में गए थे, क्या वहाँ पर नहाने के लिए पानी भी नहीं है''? लेकिन दादा जी ने कोई जवाब नहीं दिया। फिर मेरी माता जी मेरे दादा जी (यानि जो कि मेरी बुआ कमला देवी में प्रेतवत् प्रवेश थे) को नहलाने लगी तो वह कहने लगे कि ''बेटी मैं अपने आप नहा लूंगा'' तो मेरी माता जी ने दादा जी को हालांकि वह मेरी बुआ जी में प्रवेश थे, इसलिए बुआ वाले कपड़े ही पहना दिये, तो मेरा दादा जी बोले ''बस बेटी मेरी धोती ले आओ, मैं बांध लूंगा''। मेरी माता जी ने ऐसे ही एक चद्दर पकड़ा दी, जो उन्होंने कपड़ों के ऊपर से ही लपेट ली। फिर कहा कि ''मेरे लिए चाय बनाओ और जल्दी-२ में ही चाय पी ली''। मैंने पूछा कि दादा जी! आप सतलोक नहीं गए तो उन्होंने कहा कि ''बेटा मैं तो बहुत कष्ट में हूँ''। मेरी माता जी ने फिर पूछा कि आप तो राधास्वामी हजूर चरण सिंह जी महाराज से नाम उपदेशी थे, भक्ति भी करते थे, क्या उन्होंने आपकी कोई संभाल नहीं की? तब मेरे दादा जी (जो मेरी बुआ कमला देवी में प्रेतवत् प्रवेश थे) ने कहा कि ''उन्होंने मेरी कोई संभाल नहीं की, मैं तो ऐसे ही धक्के खाता फिर रहा हूँ।''

उसी दौरान मेरी आँखें भी इतनी कमजोर हो गई थी कि मुझे कम दिखाई देने लग गया था और चश्मा बार-बार बदलवाना पड़ा था। मैं एक दोस्त के साथ पढ़ने के लिए उसके पास जाता था। वहाँ पर भक्त संतराम जी ने मुझे पूर्ण ब्रह्म के अवतार सतगुरू रामपाल जी महाराज की महिमा सुनाई तथा कहा कि आप सतगुरू रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश लो आपकी

आँखें ठीक हो जाएगी तथा कहा कि इन्हीं कष्टों और दुःखों से हम जीवों को निकालने के लिए परमेश्वर कबीर साहेब संत का रूप धारण करके आते हैं। मैंने कहा कि ''मेरे माता पिता जी ने राधास्वामी पंथ से नाम उपदेश ले रखा है।'' भक्त संतराम जी ने कहा कि ''वह पंथ पूर्ण नहीं है, उनकी भक्ति साधना से न तो सतलोक प्राप्ति होगी और न ही जीवन में कभी कर्म की मार टल सकेगी, उसे तो सिर्फ कबीर साहेब का नुमाईदा पूर्ण संत ही टाल सकता है।''

मेरे पिता जी को साँस की बिमारी थी, दस कदम चलने पर ही वे बेहाल हो जाते थे और सांस की बीमारी के कारण दम फूलने लगता था, हाई और लो ब्लड प्रैशर की भी बीमारी थी। मेरे पिता जी को इलैक्शन डयूटी के दौरान हार्ट अटैक हुआ पर कर्म संस्कार वश वे बच गये, लेकिन तब हम यह सोचते रहे कि राधास्वामी पंथी संत गुरविन्द्र सिंह जी महाराज ने हार्ट अटैक से बचा लिया, बड़ी रजा की।

लेकिन उसके बाद तो हमने सर्दियों की एक-एक रात में अपने पिता जी का एक-एक साँस टूटते देखा है, बिल्कुल मृत प्राय हो जाते थे और सिवाय बैठ कर रोने के हम कुछ नहीं कर पाते थे, क्योंकि दवाईयों का भी आखिर आ चुका था, डाक्टर जितनी ज्यादा से ज्यादा डोज दवाई की बढ़ा सकते थे, बढ़ा चुके थे। इससे ज्यादा वे खुराक को नहीं बढ़ा सकते थे। मेरी माता जी डेरे बाबा जैमल सिंह से लाया हुआ प्रशाद उन्हें खिलाती और राधास्वामी पंथी गुरूविन्द्र सिंह जी महाराज की मूर्ति के सामने बैठ कर प्रार्थना करती और रोती। उसी समय मेरे छोटे भाई को ओपरे (प्रेत प्रकोप) की शिकायत रहने लगी। वह रात को चमक कर उठ जाता था तथा कहता था कि ''कोई मेरा पैर पकड़ कर खींच रहा है और मुझे सोने नहीं दे रहा है'' वह भी बहुत बीमार रहने लगा। पूर्ण परमात्मा कबीर परमेश्वर जी की दया से मुझ दास को 8 अक्तूबर 1998 को सतगुरू रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश प्राप्त हुआ। सतगुरु रामपाल जी महाराज जी की असीम कृपा से बीस दिन के अंदर ही मेरा चश्मा उतर गया तथा मैंने दवाई खाना भी छोड़ दिया। मुझे सतगुरू रामपाल जी महाराज पर पूरा विश्वास हो गया था। भक्त संतराम जी ने घर पर आकर मेरे माता पिता जी को भी समझाया कि आप पूर्ण परमात्मा कबीर साहेब के नुमाईदे पूर्ण संत रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश लो, आपके सर्व कष्टों का निवारण हो जाएगा।

उसके बाद मैंने भी अपने माता पिता को समझाया तो वे बोले ''हम पहले तो राधास्वामी थे, अब सन्त रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश लेगें, दुनिया क्या कहेगी''? तब मैंने कहा कि ''पिता जी, यदि एक डाक्टर से इलाज नहीं हो रहा तो क्या दूसरा डाक्टर नहीं बदलते?'' परन्तु दुःखी बहुत

थे, कुछ समय बाद कबीर परमेश्वर जी की शरण में आ गये और राधास्वामी पंथ के उन पांच नामों का त्याग करके, पूर्ण संत सतगुरु रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश ले लिया।

सतगुरू कबीर साहेब जी कहते हैं ''शरण पड़े को गुरू संभाले जान के बालक भोला रे'' सारे परिवार के नाम लेने के साथ ही हमारे अच्छे दिन शुरू हो गये। मेरे भाई का ओपरा (प्रेतबाधा) ठीक हो गया, पिता जी का स्वास्थ्य बिल्कुल ठीक हो गया, पहले वे दस कदम भी नहीं चल सकते थे, अब एक आदमी के साथ लग कर चीनी की बोरी को उठा देते हैं। आज हमारा परिवार पूर्ण परमात्मा के अवतार सतगुरू रामपाल जी महाराज जी की शरण में उनकी दया से पूर्ण सुखी है। परन्तु हमारे दादा-दादी व पिता जी की नानी जी के मनुष्य जीवन का जो नुकसान हुआ उसकी भरपाई किसी भी प्रकार से नहीं हो सकती। यदि किसी आदमी की जान बचाने के लिए लाखों और करोड़ों रूपये खर्च कर दिए जाए और उसकी जान बच जाए तो उसे उस खर्च हुए पैसे का कोई मलाल नहीं होता, और सोचता है कि चलो जान तो बची। लेकिन आज चाहे कितनी भी कीमत चुकाने पर भी मेरे दादा-दादी का जीवन जो कि शास्त्रविरूद्ध साधना (राधास्वामी पंथ द्वारा बताए पांच नामों की साधना) करने से बिल्कुल व्यर्थ चला गया (वे भूत और पितर की योनियों में कष्ट भोग रहे हैं), वापिस नहीं आ सकता। जो घिनौना मजाक ये नकली सन्त और पंथ सर्व समाज के साथ कर रहे हैं, क्योंकि चौरासी लाख योनियाँ भोगने के पश्चात् मिलने वाले अनमोल मनुष्य जीवन को, जो पूर्ण परमात्मा को प्राप्त करने का एकमात्र साधन है उसे बरबाद कर रहे हैं। इस महाक्षति की आपूर्ति किसी भी कीमत से नहीं की जा सकती।

हे बंदी छोड़ सतपुरूष रूप सतगुरू रामपाल जी महाराज आपने बड़ी दया कि हम तुच्छ जीवों पर जो अपना सत्य ज्ञान देकर अपनी शरण में बुला लिया अन्यथा हम भी पीढ़ी दर पीढ़ी से प्राप्त इस शास्त्रविरूद्ध साधना में अपने मनुष्य जन्म को समाप्त करके कहीं भूत और पितरों की योनियों में चले जाते और इस शास्त्रविधियुक्त सत्भक्ति से वंचित रह जाते।

सर्व बुद्धिजीवी समाज से प्रार्थना है कि अभी भी समय है। इस सत्य ज्ञान को समझे तथा निष्पक्ष होकर निर्णय करें। बन्दी छोड़ सतगुरू रामपाल जी महाराज के चरणों में आकर सत्भक्ति प्राप्त करके अपने मनुष्य जीवन का कल्याण करवाएं। ।।सत साहेब।।

सतगुरु चरणों का दास
भक्त दीपक दास
मोब. +919992600853

"अनहोनी की परमेश्वर ने"

मैं भक्त सुरेन्द्र दास गाँव गांधरा, त. सांपला, जिला-रोहतक का निवासी हूँ। मेरी आयु 31 वर्ष है तथा बचपन से ही परमात्मा की खोज में लगा हुआ था तथा मनमुखी पूजा (मन्दिरों में जाना, व्रत आदि करना, श्राद्ध निकालना आदि) भी करता था। परन्तु शारीरिक कष्ट व मानसिक अशान्ति लगातार बनी हुई थी। फिर भी परमात्मा में विश्वास तथा परमात्मा पाने की तड़फ बरकरार थी। यही तड़फ मुझे सन् 1995 में संत आसाराम बापू के पास ले गई। मैंने उनसे नाम उपदेश लिया व जैसा भक्ति मार्ग बापू जी ने बताया डट कर साधना की। परन्तु न तो कोई शारीरिक कष्ट दूर हुआ और न ही कोई आध्यात्मिक उपलब्धि हुई, अपितु कष्ट बढ़ता ही चला गया। मैं आसाराम बापू के बताए अनुसार साधना करता था। जैसे 250 ग्राम दूध सुबह पीता था और 250 ग्राम दूध शाम को पीता था और मेरे मंत्र में जितने अक्षर थे उतने लाख मंत्र जाप करना और समाधि लगाना। चालीस दिन की यह क्रिया थी, जो कि यह एक अनुष्ठान होता था। ऐसे-ऐसे मैंने चौदह अनुष्ठान किए।

एक बार मैंने बापूजी के सत्संग में सुना कि सात दिन तक निराहार रहकर मंत्र जाप करने, समाधि लगाने तथा प्राणायाम करने से ईश्वर प्राप्ति होगी। फिर मैंने इन वचनों को सत्य मान कर ऐसा ही किया। परन्तु परमात्मा प्राप्ति की बजाए भूखा रहने के कारण मृत्यु के निकट पहुँच गया तथा प्राणायाम करने से दिमागी संतुलन बिगड़ गया और मैं पागल-सा हो गया।

उसी दौरान मेरे ऊपर सतगुरु पूर्ण संत रामपाल जी महाराज की कृपा दृष्टि हुई तथा मुझे सितम्बर 2000 में पूज्य गुरुदेव संत रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश प्राप्त हुआ। उपदेश मिलते ही मुझे ऐसा लगा जैसे किसी ने दीपक में घी डाल दिया हो तथा मेरा जीवन शांत व्यवस्थित रहने लगा।

पूर्ण संत पाप कर्मों को समाप्त कर सकता है इसका प्रमाण मेरे जीवन में स्पष्ट रूप से तब घटित हुआ जब मैं मई 2004 में औरंगाबाद महाराष्ट्र में संत रामपाल जी महाराज के सतसंग के लिए टैंट की सेवा करते हुए 25 फुट ऊपर से नीचे पथरीली जमीन पर गिर गया। यहाँ काल को कुछ और ही मंजूर था तथा मेरी रीढ़ की हड्डी टूट गई और मेरे शरीर के नीचे के हिस्से में अधर्गं मार गया। उसी समय मैंने अपने सतगुरु देव जी संत रामपाल जी महाराज को याद किया। मेरे गुरुदेव की दया से उसी समय दोनों पैर ठीक काम करने लग गए।

गरीब, काल डरै करतार से, जै जै जगदीश।
जौरा जौरी झाड़ती, पग रज डारै शीश।।

उसके बाद मुझे औरंगाबाद के निजी हस्पताल (पटवर्धन हॉस्पिटल) में ले जाया गया। वहाँ पर डॉ. डी.जी. पटवर्धन ने मेरे शरीर की जाँच की तथा मेरी रीढ़ की हड्डी के एक्स-रे लिए। रिपोर्ट से पता चला कि रीढ़ की हड्डी टूटी हुई है। रिपोर्ट देखकर डॉ. बहुत हैरान होकर कहने लगा कि आपकी रीढ़ की हड्डी टूट गई है और उसका एक टूकड़ा टूट कर अलग हो गया है। डॉ. बार-बार मेरे पैरों को हाथ लगाकर देखता रहा और कहा कि आप पर परमात्मा की विशेष कृपा है कि आपके पाँव ठीक काम कर रहे हैं। क्योंकि इस रिपोर्ट के अनुसार आपको अधर्गं होना जरूरी था। वहाँ उस हॉस्पीटल में मैं तीन दिन तक दाखिल रहा। उसके बाद मैं छूट्टी लेकर वापिस अपने घर हरियाणा आ गया। यहाँ रोहतक में मैंने अपना ईलाज हड्डियों के प्रसिद्ध डॉ. चड्ढा से करवाया। डॉ. चड्डा भी मेरी रिपोर्ट देखकर हैरान रह गया तथा कहा कि आप चल-फिर कैसे रहे हो। आपको तो रिपोर्ट के अनुसार अधर्गं होना चाहिए था। डॉ. चड्डा ने फिर से रंगीन एक्स-रे करवाया तथा कहा कि इसका ईलाज संभव नहीं है तथा ऑप्रेशन के द्वारा इसको जिस स्थिति में है वहीं रोका जा सकता है, ताकि हड्डी और न टूट सके। उसने हड्डियों को ताकत देने के लिए इंजेक्शन शुरु किए और तीन महीने में पूरे इंजेक्शन लग गए। फिर उसने कहा कि ऑप्रेशन जरूर करवाना पड़ेगा, नहीं तो बाकी बची हुई हड्डी भी टूट सकती है और कहा कि ऑप्रेशन का खर्च दो लाख रूपये आयेगा। फिर उसी समय डॉ. ने बताया कि रिपोर्ट के अनुसार आपको तीन महीने के अंदर मृत्यु को प्राप्त हो जाना था। आज आप परमात्मा की कृपा से ही जीवित हो। ऑप्रेशन का खर्च दो लाख रूपये देने में मैं असमर्थ था, इसलिए मैं दूसरे डॉ. के पास ईलाज के लिए गया। वह भी मेरी रिपोर्ट देखकर आश्चर्य में पड़ गया और कहा कि यदि ऑप्रेशन में देर हो गई तो हड्डी और भी टूट सकती है। उसने भी बताया कि रिपोर्ट के अनुसार आपको अधर्गं होना चाहिए था, आप चल-फिर कैसे रहे हो ?

आखिर हारकर मैंने अपने गुरुदेव संत रामपाल जी महाराज के चरणों में प्रार्थना की। तब मेरे पूज्य गुरुदेव ने मुझ पर दया की और सिर पर हाथ रखकर कहा 'बेटा आप बिल्कुल ठीक हो जाओगे, यदि आज परमेश्वर कबीर साहेब जी की शरण में नहीं होते तो आपको भुगत कर मरना था। आपकी आयु शेष नहीं थी। आप एक बार फिर डॉ. को दिखा लो'। मैंने गुरु जी के आदेशानुसार अगले ही दिन डॉ. को दिखाया, जिसने मेरा एक्स-रे किया और एक्स-रे देखकर डॉक्टर आश्चर्य चकित रह गया और बोला 'जो हड्डी टूट कर अलग हो गई थी, वह अपने आप ऊपर को उठकर कैसे जुड़ गई। डॉक्टर जी ने बताया कि इस हड्डी की ऐसी स्थिति थी कि जैसे कोई गाड़ी

बहुत ज्यादा ढलान वाली चढ़ाई में चढ़ रही हो। उसके इंजन में खराबी हो जाऐं, वह वापिस ही आ सकती है या प्रथम गियर में डाल कर पत्थर आदि पहियों के पीछे लगाकर वहीं रोकी जा सकती है, आगे को नहीं चढ़ सकती। आपकी हड्डी ऐसे ऊपर को चढ़ कर जुड़ गई जो डॉक्टरी इतिहास से बाहर की बात है। इससे मुझे भी महसूस होता है कि कोई शक्ति है जो असम्भव को सम्भव कर सकती है। यह तो ऑप्रेशन से भी नहीं हो सकता था। आप्रेशन करके इसमें कोई पदार्थ भरकर वह गैप भरा जा सकता था। फिर भी यदि आप कोई वजन उठाने का कार्य करते तो फिर से हड्डी खिसक कर आप चारपाई पर भुगत कर मरते। डॉक्टर के समझ में भी नहीं आ रहा था। मैंने कहा कि पूर्णब्रह्म कबीर साहेब के स्वरूप मेरे पूज्य गुरुदेव संत रामपाल जी महाराज ने मेरे पाप कर्म काटकर तथा मेरी मृत्यु को टालकर अपने कोटे से मुझे नई जिंदगी दी है। परमेश्वर कबीर साहेब की वाणी है -

"जो मेरी भक्ति पीछोड़ी होई, तो हमरा नाम न लेवे कोई।"

अब मैं बिल्कुल स्वस्थ हूँ तथा सतगुरु के चरणों में आत्म कल्याण हेतु निःस्वार्थ सेवा कर रहा हूँ। 50 कि.ग्रा. वजन अपने आप ही उठा कर चलता हूँ। हमारे गुरुदेव का वास्तविक उद्देश्य तो भक्ति करवाकर जीव को विकार रहित करवा कर अपने परम धाम सतलोक में ले जाना है, यहाँ के छोटे-मोटे सुख तो हमारे गुरुदेव अपने खजाने से दे देते हैं, ताकि जीव भक्ति मार्ग में लगा रहे। अतः सर्व समाज से प्रार्थना है कि हमारे गुरुदेव के चरणों में आकर सत्यभक्ति करें तथा सांसारिक सुखों के साथ-साथ आत्म कल्याण का मार्ग भी प्राप्त करें। सत् साहिब!!

विशेषः- ऋग्वेद मण्डल 10 सुक्त 161 मन्त्र 2 में पूर्ण परमात्मा ने कहा है कि हे शास्त्रानुकूल साधना करने वाले साधक तू सम्पूर्ण भाव से मेरी शरण ग्रहण कर अर्थात् संस्यरहित होकर मेरी भक्ति कर मैं तेरे असाध्य रोग को भी समाप्त कर दूगां, यदि तेरी आयु भी शेष नहीं है तो तेरी आयु के स्वांस बढ़ाकर सौ वर्ष कर दूगां। उपरोक्त कथा प्रभु की समर्थता को प्रमाणित करती है।

भक्त सुरेन्द्र दास
मोब. नं. 9992600826

''जीवन दाता अवतार''

मैं भक्त सुरेश दास पुत्र श्री चाँद राम निवासी गांव धनाना, जिला सोनीपत जो कि फिलहाल शास्त्री नगर रोहतक (हरियाणा) का निवासी हूँ। सतगुरु जी से नाम उपदेश लेने से पहले मेरे घर की आर्थिक स्थिति बहुत कमजोर थी, परिवार का कोई भी ऐसा सदस्य नहीं था जो कि कभी बीमार न

रहता हो, मेरी पत्नी को भूत-प्रेत बहुत ही ज्यादा परेशान करते थे। इतना कष्ट रहने के बावजूद हम देवी देवताओं की बहुत पूजा करते थे तथा मेरी हनुमान जी में बहुत ज्यादा आस्था थी। लेकिन घर में संकट पर संकट आते जा रहे थे। किसी भी काम में बरकत नहीं हो रही थी। पूर्ण परमात्मा सतगुरु रामपाल जी महाराज जी मेरे परिवार के होने के कारण हम उनको पूर्ण परमात्मा नहीं मान पाये जिसका खामियाजा हमें कई वर्षों तक झेलना पड़ा। तभी गांव सिंहपुरा निवासी भक्त विकास ने मुझे बताया कि आपके घर में पूर्ण परमात्मा जगत् गुरु रामपाल जी महाराज आये हुए हैं और आप कहां सोये पड़े हो, तो मैंने कहा कि काल ने हमें कष्ट ही इतना दे रखा है कि हमें वहां के बारे में जानने का टाईम ही नहीं मिला। सारा समय डाक्टरों के चक्कर काटने में चला जाता है। ऊपर से आर्थिक तंगी भी बहुत रहती है। उस भक्त ने मुझे काफी समझाया, पूर्ण परमात्मा की ऐसी दया हुई कि मैं संत रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश लेने के लिए अक्तूबर 2010 में सतलोक आश्रम बरवाला में पहुँचा। नाम उपदेश लेने के बाद सतगुरु जी ने अपना दया का पिटारा खोल दिया और मुझे वो सुख अनुभव होने लगे जिनका वर्णन इस जुबान से कर पाना बहुत मुश्किल है।

मेरी पत्नी को भूत-प्रेत सता रहे थे। सतगुरु देव जी की दया से अब वह पूर्ण रूप से ठीक है। 7 सितम्बर 2011 को मेरा लड़का मोहित उम्र 12 साल जो कि मेरे कहने पर मिस्त्री को बुलाने के लिए गया था। मेरा लड़का मिस्त्री के मकान की छत पर चढ़ गया तथा छज्जे पर चला गया। छज्जे के साथ ऊपर 11000 (ग्यारह हजार) वोलटेज के बिजली के तार थे। लड़के तथा तारों के बीच में केवल एक फीट की दूरी थी। जब वह उनके नजदीक गया तो तारों ने लड़के को खेंच लिया और लड़के के सिर पर तार चिपक गया तथा एक इन्च गहरा घुस गया व मुंह जल गया और बिजली सारे शरीर में प्रवेश करके पैर के अंगूठे की हड्डी को तोड़ कर निकलने लगी। उसी समय सतगुरु रामपाल जी महाराज आकाश मार्ग से आए तथा मेरे लड़के को बहुत ही चमकदार (तेजोमय) शरीर सहित दिखाई दिये जैसे हजारों ट्यूबों का प्रकाश हो रहा हो। उन्होंने लड़के का हाथ पकड़ कर बिजली से छुड़ाकर छज्जे पर लिटा दिया। फिर लड़के की सतगुरु जी से बहुत बातें हुई तथा जब सतगुरु जी जाने लगे तो लड़के ने पूछा कि गुरु जी कहां जा रहे हो तो गुरु जी ने कहा कि बेटा मैं तेरे साथ हूँ तू घबरा मत। उस समय मेरे लड़के मोहित की माता जी भी वहीं पर थी। उसने यह दृश्य अपनी आँखों देखा तथा वह बहुत घबरा गई। क्योंकि लड़के के शरीर से बिजली के लपटें निकल रही थी।

उसके बाद हम लड़के को पी. जी. आई. रोहतक हॉस्पिटल में लेकर

गये। वहां पर भी लड़के को गुरु जी दिखाई दिये व मेरे लड़के ने कहा कि गुरु जी मेरे साथ हैं। आप घबराओ मत। यदि आज हम गुरु जी की शरण में नहीं होते तो हमारा लड़का आज जिंदा नहीं होता तथा मेरी पत्नी को भी प्रेत मार डालते, हम उजड़ने से बच गये। यह सतगुरु रामपाल जी महाराज जी की ही दया है।

सर्व पाठकों से प्रार्थना है कि मेरी सत्यकथा को पढ़कर आप जी भी सतगुरु रामपाल जी महाराज जी की शरण में आकर अपना समय रहते कल्याण कराऐं तथा प्रारब्ध में लिखे कर्मों के कारण जो घटनाऐं घटनी होती हैं उन से पूर्ण रूप से बचोगे। सतगुरु रामपाल जी महाराज के सतसंग वचनों में मैंने सुना था कि पूर्ण परमात्मा कबीर जी बन्दी छोड़ हमारे सर्व पापों को नाश कर देते हैं। ऐसा ही प्रमाण ऋग्वेद मण्डल 10 सुक्त 161 मंत्र 2 में तथा मण्डल 9 सुक्त 80 मंत्र 2 में भी लिखा है कि यदि किसी रोगी की प्राण शक्ति क्षीण हो चुकी है तथा उसकी आयु भी शेष न रही हो तो उसके प्राणों की रक्षा करूं तथा उसे सौ वर्ष आयु प्रदान करके अर्थात् उसकी आयु बढ़ा कर साधक को सर्व सुख प्रदान करता हूँ।

सज्जनों सतगुरु रामपाल जी महाराज ने अपने अमृत वचनों में यह भी बताया है कि प्रत्येक प्राणी अपने किए कर्मों के अनुसार ही सुख व दुःख प्राप्त करता है। दुःख तो पाप कर्मों का फल है तथा सुख पुण्य कर्मों का फल है। अभी तक सर्व सन्त, आचार्य, गुरु यही कहते रहे हैं कि जो प्रारब्ध कर्म का भोग है वह तो प्राणी को भोग कर ही समाप्त करना होगा। हे सभ्य पाठकों ! सतगुरु रामपाल जी महाराज कहते हैं कि पाप कर्म से दुःख होता है। यदि पाप कर्मों का नाश हो जाए तो दुःख का स्वतः अन्त हो जाता है। यदि भक्ति करते-२ भी पाप कर्म का फल (दुःख) भोगना ही पड़े तो भक्ति की आवश्यकता ही समाप्त हो जाती है। 7 सितम्बर 2011 को हमारे प्रारब्ध कर्म के पाप के कारण मेरे पुत्र मोहित की मृत्यु होनी थी। हमारे सतगुरु रामपाल जी महाराज जी की कृपा से परम पुज्य कबीर परमेश्वर जी ने हमारे पाप का नाश कर दिया तथा मेरे बच्चे की जीवन रक्षा करके आयु बढ़ा दी। यदि 7 सितम्बर 2011 को प्रारब्ध कर्म के फलस्वरूप मेरा बेटा मर जाता तो हम सर्व परिवार के सदस्य भक्ति त्याग देते तथा नास्तिक हो जाते। क्योंकि हमें उस समय परमात्मा का पूर्ण ज्ञान नहीं था। अब भगवान पर अत्यधिक विश्वास हो गया है। यह भी विश्वास हो गया कि परम पूज्य कबीर जी ही परमेश्वर हैं। ये पाप नाशक सर्व सुखदायक व पूर्ण मोक्षदायक हैं तथा सतगुरु रामपाल जी महाराज उन्हीं के भेजे उनके अवतार आए हैं। अतः आप जी से पुनः प्रार्थना है कि अविलम्ब सतलोक आश्रम बरवाला में पहुँचे तथा उपदेश लेकर कल्याण कराऐं। आप

जी से प्रार्थना करने का मेरा उद्देश्य यह है कि मेरे जैसे दुःखीया बहुत हैं। मेरी उपरोक्त आत्मकथा को पढ़कर विचार करके वे भी मेरे की तरह संकटों का निवारण करा सकेंगे तथा सुखी हो सकेंगे।

यह संसार समझदा नाहीं, कहंदा शाम दोपहरे नूं।
गरीबदास यह वक्त जात है, रोवोगे इस पहरे (समय) नूं।।

प्रार्थी

भक्त सुरेश दास पुत्र श्री चाँद राम, शास्त्री नगर,
हिसार बाई पास, रोहतक, मोब. नं. 09829588628

"प्रभु प्यासे भक्त बसंत सिंह सैनी को मार्ग मिलना"

मैं बसंत सिंह सैनी गाँव गांधरा जिला-रोहतक हरियाणा का रहने वाला हूँ तथा पुराना पता म.नं. एस 161 पाण्डव नगर, नजदीक मदर डेयरी, यमुनापार, दिल्ली-92 में रहता था। हमारे परिवार पर मानों दुःखों का पहाड़ टूटा हुआ था। फिर भी परमात्मा को पाने की चाहत व दुःखों की निवर्ति के लिए संतों व महंतों के पास आते जाते रहते थे। परन्तु कहीं भी दुःखों का निवारण नहीं हुआ। आखिरकार एक जाने-माने संत श्री आसाराम बापू से मिले। उस समय बापू जी की संगत दिल्ली में लगभग एक हजार थी। जिसके कारण बहुत नजदीक से मिलने का मौका मिला। हमने अपने दुःख व परमात्मा पाने की जिज्ञासा उनके सामने रखी। उन्होंने हमें 7 मंत्र (ॐ गुरु, हरि ॐ, ॐ ऐं नमः, ॐ नमः शिवाय, ॐ नमो भगवते वासुदेवाय, ह्रीं रामाय नमः व गायत्री मंत्र इत्यादि) बताए। जिनमें से एक छांटने के लिए कहा गया और एक 'सोहं' मंत्र जो स्वांस के द्वारा 'सो' अंदर व 'हं' बाहर निकाल कर जाप के लिए कहा गया। एकादशी व पूर्णिमा का व्रत, सोमवार का व्रत व अष्टमी का व्रत करने को कहा, ज्यादा से ज्यादा त्रिबंध प्राणायाम व सिद्धासन में बैठकर ध्यान लगाना व अनुष्ठान करना बताया। हमने मंत्र लिया तथा अपने दुःख उनके सामने रोए तथा बताया कि हमारे ताऊ जी जो चालीस वर्ष पहले मर गए थे वह बहुत बड़ा प्रेत बना हुआ है। उसने हमारे दो भाईयों को मार दिया, आठ-दस भैंसों को मार दिया, पाँच-छः गायों को मार दिया, पशुओं का कोई भी बच्चा जीवित नहीं रहता। घर के सभी सदस्य बीमार रहते हैं। दुःख के कारण बेहाल हैं तथा किसी भी काम धंधे को नहीं चलने देता। अब कह रहा है कि आपके पिता जी को लेकर जाऊंगा। हमने बापू जी से प्रार्थना की कि हमें बचाओ। परन्तु छः महीने बाद वह प्रेत हमारे पिताजी को भी ले गया। बापू जी ने कहा कि जो हुआ वह तो होना ही था, पशु आदि व धन की हानि तथा शारीरिक बीमारी तो पाप का भोग है जो जीव के प्रारब्ध में लिखा

होता है, वह तो भोगना ही पड़ता है। आप भक्ति करो। हम परमात्मा प्राप्ति के लिए लगे रहे। बापू जी के समझाने के बाद हम परमात्मा प्राप्ति के लिए पूरी श्रद्धा से लग गये तथा मैंने (बसंत दास) सबसे पहले श्री आसाराम बापू आश्रम दिल्ली में चालीस दिन का अनुष्ठान महन्त नरेन्द्र ब्रह्मचारी की सलाह से किया। इसके बाद चालीस दिन के छः अनुष्ठान आसाराम बापू आश्रम पंचेड़ रतलाम, मध्यप्रदेश में महन्त काका जी की देखरेख में किए। उसके बाद दो अनुष्ठान आसाराम आश्रम साबरमती अहमदाबाद गुजरात के मौन मन्दिर में किए। जहाँ पर श्री आसाराम बापू जी से अच्छी तरह बात करने का मौका मिला। तब मैंने बापू जी से पूछा कि बापू जी जिस परमात्मा को पाने के लिए मैं तथा सारा भक्त समाज लगा हुआ है वह परमात्मा कौन है ? कैसा है ? तथा कहां रहता है? बताने की कृप्या करें।

यह सुनकर बापू जी ने कहा कि आप लगे रहो सब पता चल जायेगा और बताया कि गीता जी के एक अध्याय का पाठ प्रतिदिन करना है और कभी मेरे दर्शनों की इच्छा हो तो एक क्रिया बताता हूँ कि तीन दिन तक एक कमरे में बंद हो जाओ। कमरे में बंद होने से पहले दिन खाना पीना छोड़ दो ताकि शाम तक लैटरिंग व बाथरूम से निवर्ति हो जाये। उसके तीन दिन तक कुछ भी खाना पीना नहीं है, न बाहर निकलना है। कमरे में रहो, त्राटक करो। घर जाकर मैंने यह तीन बार किया, परन्तु बापू के दर्शन नहीं हुए। अनुष्ठान के समय जीवन मृत्यु से जूझ कर बीमारी का सामना करना पड़ा। परन्तु फिर भी परमात्मा पाने के लिए लगा रहा।

सितम्बर 2000 में संत रामपाल दास जी महाराज का सत्संग काठमण्डी रोहतक में सुना, जिन्होंने तत्वज्ञान के आधार पर गीता जी को समझाया उसके बाद गीता जी का पाठ करने से मन में आने लगा कि गीता जी में भगवान क्या कह रहे हैं और बापू जी क्या बता रहे हैं। कहीं सचमुच हम भगवान के विरुद्ध तो साधना नहीं कर रहे हैं। संत रामपाल जी के द्वारा बताए गीता जी के अनुवाद को समझा तो अंतरात्मा रोने लगी तथा बापू जी से मिलकर यह सब शंकाऐं पूछनी चाही। मैं बापू जी के पास गीता लेकर गया तथा गीता जी को दिखाकर सब शंकाऐं पूछी। परन्तु बापू जी ने किसी भी शंका का समाधान नहीं किया। मैंने बापू जी से कहा कि बापू जी आपको परमात्मा के बारे में नहीं पता तो आप भक्त समाज को अपने पास क्यों उलझा रहे हो, इस पर बाबू जी मेरी तरफ घूर कर बोले कि तू क्या जाने भक्ति के विषय में। मैं उठकर रोता हुआ अपने घर आ गया।

परमात्मा की प्राप्ति न होने से तथा उलझे हुए जीवन को देखते हुए तथा हठ रूपी अनुष्ठान व व्रतों के करने से शरीर काफी कमजोर हो गया और मृत्यु

नजदीक दिखाई देने लगी। फिर अन्य संतों (राधास्वामी पंथ, धन-धन सतगुरु, श्री सतपाल जी महाराज, श्री बालयोगेश्वर जी महाराज, दिव्य ज्योति, ब्रह्मकुमारी, निरंकारी मिशन, जय गुरुदेव मथुरा वाले आदि) के पास भटका, परन्तु जो निर्णायक ज्ञान संत रामपाल जी महाराज ने बताया वह उपरोक्त किसी भी संत व पंथ के पास नहीं है। मैं पश्चाताप करने लगा कि इस समय शायद पृथ्वी पर कोई भी संत ऐसा नहीं है जिसको परमात्मा प्राप्ति हुई है और जो यह बता सके कि वह परमात्मा कौन है ? कैसा है ? और कहां रहता है ? यह विचार कर मैं फूट फूट कर रातों रोता रहा, संतों से विश्वास उठ गया। मन में आने लगा कि जब श्री आसाराम जी जैसे सुप्रसिद्ध संत ही शास्त्र विधि त्याग कर मनमाना आचरण कर तथा करवा रहे हैं तो किस संत पर विश्वास किया जाए। संत रामपाल जी ज्ञान तो श्रेष्ठ बता रहे हैं परन्तु इनके पास जन समूह कुछ भी नहीं है। ये पूर्ण संत कैसे हो सकते हैं ? यह शंका मन में आई। कुछ दिनों के बाद संत रामपाल जी महाराज का एक शिष्य हमारे गाँव का मिला तथा मेरी कहानी सुनकर उसने मुझे फिर से परमात्मा स्वरूप पूर्ण संत रामपाल जी महाराज के सत्संग में दोबारा लाकर बैठा दिया। मैंने एक घंटे का सत्संग सुना और सत्संग के बाद रोता हुआ महाराज जी से मिला। महाराज जी ने मुझे सीने से लगाकर कहा कि जिस संत के पास आप जाते हो वे शास्त्र विधि त्याग कर मनमाना आचरण कर तथा करवा रहे हैं। जैसा यह सब वे पहले ही जानते थे कि मुझे क्या चाहिए और मेरी शंकाओं का समाधान संत रामपाल जी महाराज ने अपने चरणों में बैठाकर इस तरह से किया।

तत्वदर्शी संत रामपाल जी महाराज ने बताया कि पवित्र गीता जी अध्याय 9 मंत्र 25 में पित्तर पूजना अर्थात् श्राद्ध निकालना मना किया है। अन्य देवी-देवताओं की पूजा करने वालों को मन्द बुद्धि वाले लिखा है (गीता अध्याय 7 मन्त्र 12 से 15 तथा 20 से 23 तक)। परन्तु श्री आसाराम जी ''श्राद्ध महिमा'' नामक पुस्तक में श्राद्ध निकालने की श्रेष्ठ विधि बताते हैं। संत श्री आसाराम जी के साबरमति अहमदाबाद आश्रम से प्रकाशित पत्रिका ऋषि प्रसाद अंक-135 मार्च 2004 में लिखा है कि भूत पूजने वाले तथा पित्तरों को पूजने वाले तथा अन्य देवी देवताओं को पूजने वाले क्या बनेंगे, पढ़िए पत्रिका के अगले अंक में ....। अगले अंक की पत्रिका ऋषि प्रसाद अंक 136 अप्रैल 2004 पृष्ठ 19 में लिखा था कि भूत पूजने वाले भूत लोकों को प्राप्त होंगे तथा पित्तर पूजने वाले पित्तर लोकों को प्राप्त होंगे तथा श्री कृष्ण के पूजारी भगवान श्री कृष्ण जी के बैकुण्ठ लोक को प्राप्त होंगे।

विचारें - श्री आसाराम जी द्वारा प्रकाशित 'श्राद्ध महिमा' नामक पुस्तक में पित्तर पूजने की अच्छी विधि भी लिखी है।

कृप्या सोचें - कोई व्यक्ति यह भी कह रहा हो कि कूएँ में गिरने वाले मृत्यु को प्राप्त होते हैं। फिर स्वयं ही कूएँ में गिरने का परामर्श भी कर रहा है तथा कह रहा है कि कूएँ में गिरने की अच्छी विधि बताता हूँ कि दोनों कदम उठा कर एक दम छलांग लगाऐं। यह कूएँ में गिर कर मरने की श्रेष्ठ विधि है। जो ऐसा नहीं करता वह दोषी है।

क्या वह व्यक्ति नेक है ? यह भूमिका श्री आसाराम जी संत कर रहे हैं कि एक तरफ तो कह रहे हैं कि पित्तर व भूत पूजने वाले भूत व पित्तर बनकर भूतलोक व पित्तरलोक में जायेंगे, जहाँ पर वे भूखे प्यासे रहते हैं। फिर उनको श्राद्धों द्वारा तृप्त किया जाता है। एक और विचारणीय विषय है कि जब अपने माता-पिता जीवित थे तो वे प्रतिदिन कम से कम दो बार भोजन करते थे। अब मृत्यु के पश्चात् वे श्री गीता जी विरुद्ध साधना करके दुःखदाई भूत व पित्तर जूनी को प्राप्त कर चुके हैं। अब एक दिन के श्राद्ध से वे कैसे तृप्त हो सकते हैं। 364 दिन क्या खाऐंगें? जिसके लिए संत व गुरुजन दोषी हैं जो भोली-भाली आत्माओं को गुमराह कर रहे हैं। शास्त्र ज्ञान से अपरिचित संत ही इस जीव को शास्त्र विधि रहित साधना करवा कर दुःखदाई योनियों में डलवाते हैं।

श्री आसाराम जी श्री शिवजी की उपासना का मन्त्र (ॐ नमो शिवाय) व श्री विष्णु जी का मन्त्र (ॐ नमो भगवते वासुदेवाय) बताते हैं। इसी के अतिरिक्त हरि ॐ, ॐ गुरु आदि नामों में से कोई एक मंत्र अपनी इच्छा अनुसार चुन लेने को कहते हैं तथा सोहं को दो हिस्से करके स्वांस द्वारा स्मरण करना आदि मन्त्र देते हैं जो किसी शास्त्र में प्रमाण नहीं है।

विचार करें – कोई रोगी जिसके पेट में दर्द हो किसी वैद्य के पास ईलाज के लिए प्रार्थना करे। वैद्य उसके आगे छः प्रकार की गोलियां डाल कर कहे की जो तुझे अच्छी लगे, इनमें से एक उठा ले। क्या वह वैद्य हो सकता है ?

पवित्र गीता जी अध्याय 8 मन्त्र 13 में कहा है कि :–

ओम् इति एकाक्षरम् ब्रह्म, व्याहरन् माम् अनुस्मरन्,
यः प्रयाति त्यजन् देहम् सः याति परमाम् गतिम् ।।13।।

इसका शब्दार्थ है कि गीता बोलने वाला ब्रह्म अर्थात् काल कह रहा है कि (माम् ब्रह्म) मुझ ब्रह्म का तो (इति) यह एक (ओम् एकाक्षरम्) ओम् एक अक्षर है (व्याहरन्) उच्चारण करके (अनुस्मरन्) स्मरण करने का (यः) जो साधक (त्यजन् देहम्) शरीर त्यागने तक अर्थात् अन्तिम स्वांस तक (प्रयाति) स्मरण साधना करता है (सः) वह साधक ही मेरे वाली (परमाम् गतिम्) परमगति को (याति) प्राप्त होता है।

भावार्थ है कि श्री कृष्ण जी के शरीर में प्रेतवत् प्रवेश करके ब्रह्म अर्थात् हजार भुजा वाला ज्योति निरंजन काल कह रहा है कि मुझ ब्रह्म की साधना केवल एक

ओम् (ॐ) नाम से मृत्यु पर्यन्त करने वाले साधक को मुझ से मिलने वाला लाभ प्राप्त होता है, अन्य कोई मन्त्र मेरी भक्ति का नहीं है तथा अपनी गति को भी गीता अध्याय 7 मन्त्र 18 में अनुत्तमाम् अर्थात् अति घटिया बताया है। इसी का प्रमाण गीता अध्याय 9 मन्त्र 20 से 25 में कहा है कि जो तीनों वेदों (ऋग्वेद, यजुर्वेद तथा सामवेद) में वर्णित विधि द्वारा मेरी साधना करते हैं तथा अन्य देवताओं की पूजा करते हैं उनकी जन्म–मृत्यु तथा स्वर्ग–नरक बना रहता है तथा पित्तर पूजने वाले (श्राद्ध करने वाले) पित्तर बनकर पित्तरों को प्राप्त होते हैं। भूत पूजने वाले (तेरहवीं, सतरहवीं, बर्षी, अस्थियां उठा कर गंगा आदि में क्रिया करवा कर प्रवाह करवाना, पिण्ड भरवाना आदि भूत पूजा है) भूत बन कर भूतलोक में चले जायेंगे, फिर पृथ्वी पर भी भटकते रहेंगे। यह पूजा अविधि पूर्वक अज्ञान पूवर्क मन माना आचरण है। इसलिए व्यर्थ है। प्रमाण गीता अध्याय 16 मन्त्र 23–24 । विशेष : यहाँ चौथे अथर्ववेद का विवरण इसलिए नहीं है कि इसमें पूजा विधि कम तथा सृष्टी रचना अधिक है। इसलिए गीता अध्याय 18 मन्त्र 62 में कहा है कि उस परमात्मा की शरण में जा जिससे तेरी पूर्ण मुक्ति होगी तथा परम शान्ति तथा शाश्वत् स्थान अर्थात् सत्यलोक को प्राप्त होगा तथा गीता अध्याय 15 मंत्र 4 में कहा है कि तत्वदर्शी संत मिलने पर उसके बताए अनुसार शास्त्र विधि अनुसार साधना करनी चाहिए। फिर उस परमपद परमेश्वर की खोज करनी चाहिए जहाँ जाने के पश्चात् साधक का कभी जन्म–मृत्यु नहीं होता अर्थात् अनादि मोक्ष प्राप्त हो जाता है।(गीता बोलने वाला काल अर्थात् क्षर पुरुष–ब्रह्म कह रहा है कि) मैं भी उसी आदि पुरुष परमेश्वर की शरण में हूँ।

संत रामपाल महाराज जी ने बताया कि अन्य सर्व संत कहते हैं कि पाप का भोग तो प्रारब्ध में लिखा होने के कारण जीव को भोगना ही पड़ता है। भक्ति करते रहना चाहिए, आने वाला दूसरा जीवन सुखमय हो जायेगा।

कृप्या विचार करें - किसी के पैर में कांटा लगा हो जिस कारण से उसे बहुत पीड़ा हो रही हो। उस कांटे के कष्ट के निवारण के लिए किसी से प्रार्थना करे तो उतर मिलें कि कांटा तो लगा रहने दे, जूता पहन ले, भविष्य में कांटा नहीं लगेगा। क्या वह व्यक्ति ठीक सलाह दे रहा है ? क्योंकि कांटा लगे पैर में जूता पहना ही नहीं जा सकता। पहले कांटा निकले फिर इस डर से जूता पहनेगा कि कहीं दोबारा कांटा न लग जाए। ठीक इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा के पूर्ण संत की शरण में आने से पाप रूपी कांटे का कष्ट समाप्त होता है। फिर साधक पूर्ण प्रभु की शास्त्र विधि अनुसार साधना रूपी जूता इस डर से पहनेगा कि कहीं फिर से कोई पाप रूपी कांटा कष्टदायक न हो जाए।

सभी संतों ने पवित्र गीता जी के अनुवाद में अर्थों का अनर्थ किया है। गीता अध्याय 7 मन्त्र 18 व 24 में अनुत्तमाम् का अर्थ अति उत्तम किया है तथा

अध्याय 18 मन्त्र 66 में व्रज का अर्थ आना किया है। जबकि अनुत्तम का अर्थ अति घटिया होता है तथा व्रज का अर्थ जाना होता है। तत्वज्ञान के अभाव से तथा ज्ञान हीन गुरुओं के कारण ही सर्व भक्त समाज शास्त्र विधि रहित साधना करके मनुष्य जीवन व्यर्थ कर रहा है (पवित्र गीता अध्याय 16 मन्त्र 23-24)। सर्व पवित्र धर्मों की पवित्रात्माऐं तत्व ज्ञान से अपरिचित हैं। जिस कारण नकली गुरुओं, सन्तों, महन्तों तथा ऋषियों का दाव लगा हुआ है। जिस समय पवित्र भक्त समाज आध्यात्मिक तत्वज्ञान से परिचित हो जाएगा उस समय इन नकली सन्तों, गुरुओं व आचार्यों को छुपने का स्थान नहीं मिलेगा।

उपरोक्त सच्चाई को आँखों देखकर मैं तथा अन्य परिवार के सदस्य संत रामपाल महाराज जी के चरणों में लगे हैं। पूरे परिवार में कोई बीमारी नहीं रही और जो भूत कभी परिवार के किसी सदस्य को मार देते थे, किसी पशु को मार देते थे, काम धंधे को नहीं चलने देते थे वे घर से ही नहीं गाँव से भी भाग गये हैं तथा दूसरे रिश्तेदारों के घर चले गए हैं, जो अब भी श्री आसाराम जी के पूजारी हैं। वहाँ जाकर भूत कहते हैं कि उनके बसंत आदि के घर तो परमात्मा का निवास हो गया है, उनको परमात्मा स्वरूप पूर्ण संत मिल गये हैं, हम उनके पास नहीं जा सकते। संत रामपाल जी से उपदेश के पश्चात् हम पूरी तरह से स्वस्थ व सुखी जीवन जी रहे हैं। हमारे परिवार व रिश्तेदारों के लगभग दो सौ सदस्यों ने संत रामपाल जी महाराज का उपदेश प्राप्त कर लिया है जो पहले श्री आसाराम जी महाराज के शिष्य थे। संत रामपाल जी के द्वारा बताए तत्वज्ञान को समझ कर लगभग दस हजार श्री आसाराम जी के शिष्य भी सतगुरु रामपाल जी महाराज की शरण में आ चुके हैं। वे भी मेरे की तरह पश्चाताप कर रहे हैं। मेरी भक्त समाज से प्रार्थना है कि जिनको भी परमात्मा पाने की तड़फ है, तलाश है, कृप्या परमात्मा स्वरूप पूर्ण संत रामपाल जी महाराज के चरणों में आकर अपने जीवन को सुखी बनाए तथा परमात्मा को प्राप्त करें।

भक्त बसंत दास
मोब. नं. 09812151088

उपरोक्त कुछ भक्तात्माओं की आत्म कथाएं आपने पढी। ऐसे-२ भक्त हजारों-लाखों हैं जो अपनी आत्म कथा पुस्तकों में लिखवाना चाहते हैं। लेकिन यहां पर स्थान के अभाव के कारण हम कुछेक भक्तों की आत्म कथा दे पाए। यदि सभी भक्तों की आत्म कथा हम लिखने बैठ जांए तो शायद सैकड़ों पुस्तकें छप जाएंगी। इसलिए समझदार व्यक्ति को इशारा (संकेत) ही काफी होता है।

भक्ति में भेद : भक्ति भक्ति में बहुत भेद होता है। आप चाहें किसी देव/देवी की भक्ति करें उसका फल अवश्य मिलेगा जो कि नाशवान होगा

लेकिन मुक्ति नहीं हो पाएगी और पाप कर्म भी समाप्त नहीं होंगे जिन्हें भोगने के लिए बार-२ जन्म लेते रहना पड़ेगा। मुक्ति तो केवल पूर्ण संत की शरण में जाकर अर्थात् उनसे नाम उपदेश लेकर पूर्ण परमात्मा की भक्ति करने से ही हो पाएगी अन्यथा नहीं।

ये संसार समझदा नांही, कहंदा श्याम दुपहरे नूं।
गरीबदास ये वक्त जात है, रोवोगे इस पहरे नूं।।

''परमात्मा का अवतार''

संत रामपाल दास जी महाराज सामान्य व्यक्ति नहीं हैं। ये विश्व कल्याण के लिए परमात्मा ने भेजे हैं। संत रामपाल दास जी महाराज के विषय में भविष्यवक्ता क्या कहते थे? परमात्मा ने स्वयं बताया है कि जिस समय कलयुग 5505 वर्ष बीत जाएगा तब मैं अपना अंश अर्थात् कृपा पात्र महापुरूष भेजूंगा। कृपया पढ़ें तथा जानें संत रामपाल दास जी महाराज कौन हैं?

अमेरिका की भविष्यवक्ता फ्लोरेंस की महत्वपूर्ण भविष्यवाणी।

संत रामपाल दास जी महाराज के विषय में की गई भविष्यवक्ता फ्लोरेंस की सटीक भविष्यवाणी :-

अमेरिका की विश्व विख्यात भविष्यवक्ता फ्लोरेंस ने अपनी भविष्यवाणीयों में कई बार भारत का जिक्र किया है। 'द फाल ऑफ सेंशेसनल कल्चर' नाम की अपनी पुस्तक में उन्होंने लिखा है कि सन् 2000 आते-आते प्राकृतिक संतुलन भयावह रूप से बिगड़ेगा। लोगों में आक्रोश की प्रबल भावना होगा। दुराचार पराकाष्ठा पर होगा। पश्चिमी देशों के विलासितापूर्ण जीवन जीने वालों में निराशा, बैचेनी और अशांति होगी। अतृप्त अभिलाषाएं और जोर पकड़ेगी। जिससे उनमें आपसी कटुता बढ़ेगी। चारों ओर हिंसा और बर्बरता का वातावरण होगा। ऐसा वातावरण होगा की चारों ओर हाहाकार मच जाएगा। लेकिन भारत से उठने वाली एक नई विचारधारा इस घातक वातावरण को समाप्त कर देगी। वह विचारधारा वैज्ञानिक दृष्टि से सामंजस्य और भाई चारे का महत्व समझाएगी, वह यह भी समझाएगी कि धर्म और विज्ञान में आपस में विरोध नहीं है। आध्यात्मिकता की उच्चता और भौतिकता का खोखलापन सबके सामने उजागर करेगी। मध्यमवर्ग उस विचारधारा से बहुत अधिक प्रभावित होगा। यह वर्ग समाज के सभी वर्गों को अच्छे समाज के निर्माण के लिए उत्प्रेरित करेगा। यह विचारधारा पूरे विश्व में चमत्कारी परिवर्तन लाएगी।

मुझे अपनी छठी अतींद्रिय शक्ति से यह एहसास हो रहा है कि इस विचारधारा को जन्म देने वाला वह महान संत भारत में जन्म ले चुका है। उस संत के ओजस्वी व्यक्तित्व का प्रभाव सब को चमत्कृत करेगा। उसकी विचारधारा अध्यात्म के कम होते जा रहे प्रभाव को फिर से नई स्फूर्ति देगी। चारों ओर आध्यात्मिक वातावरण होगा।

संत की विचारधारा से प्रभावित लोग विश्व के कल्याण के लिए पश्चिम की ओर चलेंगे। धीरे-धीरे एशिया, यूरोप और अमेरिका पर पूरी तरह छा जाएगें। उस संत की विचारधारा से पूरा विश्व प्रभावित होगा और उनके चरण चिन्हों पर चलेगा। पश्चिमी देश के लोग उन्हें ईसा, मुसलमान उन्हें एक सच्चा रहनुमा और एशिया के लोग उन्हें भगवान का अवतार मानेंगे।

उस महान संत की विचारधारा से बौद्धिक क्रांति होगी। बुद्धिजीवियों की मान्यताएं बदलेंगी। उनमें ईश्वर के प्रति श्रद्धा और विश्वास की कोंपले फूटेंगी।

फ्लोरेंस के अनुसार वह संत भारत में जन्म ले चुकें हैं। वह इस संत से काफी प्रभावित थी। अपनी एक दूसरी पुस्तक 'गोल्डन लाइट ऑफ न्यू एरा' में भी उन्होंने लिखा है। ''जब मैं ध्यान लगाती हूँ तो अक्सर एक संत को देखती हूँ। गौर वर्ण का है। सफेद बाल हैं। उसके मुख पर न दाढ़ी है, न मूछ है। उस संत के ललाट पर गजब का तेज होता है। उनके ललाट पर आकाश से एक नक्षत्र के प्रकाश की किरणें निरंतर बरसती रहती हैं। मैं देखती हूँ कि वह संत अपनी कल्याणकारी विचारधारा तथा अपने सत् चरित्र प्रबल अनुयायियों की शक्ति से सम्पूर्ण विश्व में नए ज्ञान का प्रकाश फैला रहे हैं।

वह संत अपनी शक्ति निरंतर बढ़ा रहे हैं। उनमें इतनी शक्ति है कि वह प्राकृतिक परिवर्तन भी कर सकते हैं। वह अपना कार्य वैज्ञानिक ढंग से करेंगे। उनकी कृपा और प्रयत्नों से मानवीय सभ्यता में नई जागृति आएगी। विश्व के समस्त जनसमूह में नई चेतना का संचार होगा। लोकशक्ति का एक नया रूप उभर कर सामने आएगा जो सत्ताधारियों की मनमानियों पर अंकुश लगा देगा।''

मनोचिकित्सक तथा सम्मोहन कला के विश्व प्रसिद्धज्ञाता डॉ. मोरे बर्सटीन की फ्लोरेंस से अच्छी दोस्ती थी। एक बार फ्लोरेंस ने उनसे भी कहा था। ''डॉक्टर वह समय बड़ी तेजी से नजदीक आ रहा है जब सत्ता लोलुप राजनेताओं की अपेक्षा आप जैसे समाजसेवकों की बातें समाज अधिक ध्यान से सुनेगा। 21 वीं सदी के आते आते एक नई विचारधारा पूरे विश्व को प्रभावित करेगी। हर राष्ट्र में सच्चरित्र धार्मिक लोगों का संगठन लोगों के दिमाग में बैठी गलत मान्यताओं को बदल देगा। यह विचारधारा भारत से

प्रस्फुटित होंगी। वहीं से पूरे विश्व में फैलेगी। मैं उस पवित्र स्थान पर एक प्रचंड तपस्वी को देख रही हूँ। जिसका तेज बड़ी तेजी से फैल रहा है। मनुष्य में सोए देवत्व को जगाने तथा धरती का स्वर्ग जैसा बनाने के लिए वह संत दिन रात प्रयत्न कर रहे हैं।

एक पत्रकार ने 1964 में फ्लोरेंस से पूछा था कि क्या वह दुनिया का भविष्य बता सकती है। फ्लोरेंस ने इसके जवाब में कहा था 1970 की शुरूवात व्यापक उथल-पुथल के साथ होगी। 1979-80 के बाद ऐसे-ऐसे भूकंप आऐंगे की न्यूजर्सी का कुछ हिस्सा तथा यूरोप का और एशिया के कई देशों के स्थान भूकंप से विदीर्ण हो जाएंगे। कुछ जलमग्न भी हो जाऐंगे। तृतीय विश्वयुद्ध का आतंक सबके दिमाग में बैठ जाएगा और वे इस युद्ध की तैयारी करेंगे, लेकिन भारतीय राजनेता अपने प्रभाव और बुद्धि से तीसरे विश्वयुद्ध को टालने में सफल हो जाऐंगे। तीसरे विश्वयुद्ध के शुरू होने तक भारत के शासन की बागडोर आध्यात्मिक प्रवृत्ति के लोगों के हाथ में होगी, इसलिए उनके प्रभाव से विश्वयुद्ध टलेगा। वे शासक एक महान संत के ओजस्वी तथा क्रांतिकारी विचारधारा से प्रभावित होंगे। वे उस संत के प्रति उसी तरह समर्पित होंगे जैसे वाशिंगटन स्वतंत्रता एवं मानवता के प्रति समर्पित थे।''

अमेरिका के शहर न्यूजर्सी की रहने वाली फ्लोरेंस सचमुच एक विलक्षण महिला थी। एक बार नेबेल नाम के व्यक्ति ने टी.वी. कार्यक्रम के दौरान उनसे बोला, ''आप भारत में जन्म ले चुके संत के बारे में तो अक्सर बताती रहती हैं। मैं अपने बारे में कुछ जानना चाहता हूँ बताइए।''

फ्लोरेंस ने उसके दाहिने हाथ को थाम लिया और बोली, ''आप बहुत जल्द किसी दूसरे राज्य से प्रसारण करेंगे।'' नेबेल एक प्रसारण सेवा के कर्मचारी थे। फ्लोरेंस की इस बात पर वह हंसने लगे। कुछ क्षण बाद बोले ''आपने मुझसे यह अच्छा मजाक किया। यदि हमारी कंपनी के अधिकारी इस कार्यक्रम को देख रहे होंगे तो मैं दूसरे राज्य में जाऊ या नहीं, फिलहाल अपनी कंपनी से तुरंत निकाल दिया जाऊंगा।''

कुछ ही मिनटों के बाद टी.वी. के कंट्रोल रूम का फोन घनघना उठा। फोन नेबेल के लिए था। उनकी कंपनी के जनरल मैनेजर उनसे बात करना चाहते थे। नेबेल ने जब फोन उठाया तो उन्होंने कहा हमने न्यूयार्क से प्रसारण करने का काम शुरू करने का निर्णय लिया है वहां तुम्हें ही भेजा जाएगा। अभी यह बात गुप्त रखना इसकी घोषणा कल की जाएगी। मैं टी. वी. पर फ्लोरेंस के साथ तुम्हारी बातचीत देख रहा था। फ्लोरेंस ने तुम्हारे विषय में जो बताया है वह पूरी तरह सच है। आश्चर्य है कि उन्हें यह बात कैसे मालूम हो गई ?'' नेबेल फ्लोरेंस का चेहरा देखता रह गया।

कुछ पत्रकारों ने उनसे एक बार पूछा था कि वह भविष्य को कैसे देख लेती हैं तथा गायब व्यक्ति या वस्तुओं का पता कैसे लगा लेती हैं, तो फ्लोरेंस ने बताया,''मुझे स्वयं नहीं मालूम कि ऐसा कैसे सम्भव हो जाता है। मैं भविष्य के विषय में एक बहुत महत्वपूर्ण बात बता रहीं हूँ। 20 वीं शताब्दी के अंत में भारतवर्ष से एक प्रकाश निकलेगा। यह प्रकाश पूरी दुनिया को उन दैवी शक्तियों के विषय में जानकारी देगा, जो अब तक हम सभी के लिए रहस्यमय बनी हुई हैं। (देवी शक्तियों की जानकारी जो सन्त रामपाल दास जी महाराज द्वारा बताई गई हैं। एक दिव्य महापुरूष द्वारा यह प्रकाश पूरे विश्व में फैलेगा। वह सभी को सत् मार्ग पर चलने की प्रेरणा देगा। समस्त दुनिया में एक नयी सोच की ज्योति फैलेगी। जब मैं ध्यानावस्था में होती हूँ तो अक्सर यह दिव्य महापुरूष मुझे दिखाई देते हैं।''

फ्लोरेंस ने बार-बार इस संत या दिव्य महापुरूष का जिक्र किया है। साथ ही यह भी बताया है कि उत्तरी भारतवर्ष के एक पवित्र स्थान पर वह मौजूद हैं।

सज्जनों उपरोक्त भविष्यवाणी तथा वर्तमान वाणी है जो परम सन्त रामपाल महाराज जी पर खरी उतरती है तथा इसी का समर्थन अन्य भविष्यवाणियाँ भी करती है। जो आगे लिखी हैं।

''भाई बाले वाली जन्म साखी में प्रमाण''

''एक महापुरूष के विषय में भाई बाले वाली जन्म साखी में प्रह्लाद भक्त की भविष्यवाणी''

सिक्ख समाज के लिए ''जन्म साखी भाई बाले वाली'' इतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी हिन्दू समाज के लिए ''श्रीमद्भगवत गीता'' ''श्री गुरू ग्रन्थ साहेब जी'' के पश्चात् इस ''जन्म साखी'' पुस्तक का दूसरा स्थान है।

भाई बाले वाली जन्म साखी में लिखा गया विवरण स्पष्ट करता है कि संत रामपाल दास जी महाराज ही वह अवतार है जिन्हें परमेश्वर कबीर जी तथा संत नानक जी के पश्चात् पंजाब की धरती पर अवतरित होना था। सन्त रामपाल दास जी महाराज 8 सितम्बर सन् 1951 को गांव धनाना, जिला सोनीपत, हरियाणा प्रान्त (उस समय पंजाब प्रान्त) भारत की पवित्र धरती पर श्री नन्द राम जाट के घर जाट वर्ण में श्रीमति इन्द्रा देवी की कोख से जन्में।

इस विषय में ''जन्म साखी भाई बाले वाली'' हिन्दी वाली में जिसके प्रकाशक हैं :- भाई जवाहर सिंह कृपाल सिंह एण्ड कम्पनी पुस्तकां वाले, बाजार माई सेवां, अमृतसर (पंजाब) तथा पंजाबी वाली के प्रकाशक है :- भाई जवाहर सिंह कृपाल सिंह पुस्तकां वाले गली-8 बाग रामानन्द अमृतसर (पंजाब)।

इसमें लिखा अमर लेख इस प्रकार है :- एक समय भाई बाला तथा मरदाना को साथ लेकर सतगुरु नानक देव जी भक्त प्रह्लाद जी के लोक में गए। जो पृथ्वी से कई लाख कोस दूर अन्तरिक्ष में है। प्रह्लाद ने कहा कि हे नानक जी! आप को परमात्मा ने दिव्य दृष्टि दी तथा कलयुग में बड़ा भक्त बनाया है। आप का कलयुग में बहुत प्रताप होगा। यहां पर (प्रह्लाद के लोक में) पहले कबीर जी आये थे या आज आप आये हो एक और आयेगा जो आप दोनों जैसा ही महापुरूष होगा। इन तीनों के अतिरिक्त यहां मेरे लोक में कोई नहीं आ सकता। भक्त बहुत हो चुके हैं आगे भी होगें परन्तु यहां मेरे लोक में वही पहुँच सकता है, जो इन जैसी महिमा वाला होगा और कोई नहीं। इसलिए इन तीनों के अतिरिक्त यहां कोई नहीं आ सकता। मरदाने ने पूछा कि हे प्रह्लाद जी! कबीर जी जुलाहा थे, नानक जी खत्री हैं, वह तीसरा किस वर्ण (जाति) से तथा किस धरती पर अवतरित होगा।

प्रह्लाद भक्त ने कहा भाई सुन :- नानक जी के सच्चखण्ड जाने के सैकड़ों वर्ष पश्चात् पंजाब की धरती पर जाट वर्ण में जन्म लेगा तथा उसका प्रचार क्षेत्र शहर बरवाला होगा। (लेख समाप्त)

विवेचन :- संत रामपाल दास जी महाराज वही अवतार हैं जो अन्य प्रमाणों के साथ-२ जन्म साखी में लिखे वर्णन पर खरे उतरते हैं। जन्म साखी में ''सौ वर्ष के पश्चात्'' लिखा है। यहां पर सैकड़ों वर्ष पश्चात् कहा गया था जिसको पंजाबी भाषा में लिखते समय सौ वर्ष ही लिख दिया। क्योंकि मर्दाना ने पूछा था कि वह कौन से युग में नजदीक ही आयेगा? तब भक्त प्रह्लाद ने कहा कि श्री नानक जी के सैकड़ों वर्ष पश्चात् कलयुग में ही वह संत जाट वर्ण में जन्म लेगा। इसी लिए यहां सौ वर्ष के स्थान पर सैकड़ों वर्षों ही न्यायोचित है तथा प्रचार क्षेत्र बरवाला के स्थान पर बटाला लिखा गया है। इसके दो कारण हो सकते हैं कि ''शहर बरवाला'' जिला हिसार हरियाणा (उस समय पंजाब) प्रान्त में सुप्रसिद्ध नहीं था तथा बटाला शहर पंजाब प्रान्त में प्रसिद्ध था। लेखनकर्ता ने इस कारण से ''बरवाला'' के स्थान पर ''बटाला'' लिख दिया दूसरा प्रिन्ट करते समय ''ੱਬਵਾਲੇ'' की जगह ''ਬਟਾਲੇ'' प्रिंट हो गया है। एक और विशेष विचारणीय पहलू है कि पंजाब के बटाला शहर में कोई भी जाट संत नहीं हुआ है। जो इन महापुरूषों (परमेश्वर कबीर देव जी व श्री नानक देव जी) के समान महिमावान तथा इनके समान ज्ञानवान हुआ हो। इस आधार से तथा अन्य प्रमाणों के आधार से तथा इस जन्म साखी के आधार से स्पष्ट है कि वह तीसरे महापुरूष संत रामपाल दास जी महाराज हैं तथा इनका आध्यात्मिक ज्ञान भी इन दोनों महापुरूषों (परमेश्वर कबीर जी तथा श्री नानक देव जी) से मेल खाता है। आप देखेंगे

दोनों फोटो कापी जो जन्म साखी भाई बाले वाली जो कि एक पंजाबी भाषा में है तथा दूसरी हिन्दी में है जो कि पंजाबी भाषा से ही अनुवादित है। इसमें कुछ प्रकरण ठीक नहीं लिखा है। जैसे पंजाबी भाषा में लिखा है कि ''जो इस जीहा कोई होवेगा तां एथे पहुँचेगा होर दा एथे पहुँचण दा कम नही'' **परन्तु हिन्दी वाली जन्म साखी में यह विवरण नहीं है जो बहुत महत्वपूर्ण है। इससे सिद्ध है कि लिखते समय कुछ प्रकरण बदल जाता है। फिर भी ढेर सारे प्रमाण जो इस पुस्तक में अन्य महापुरूषों के द्वारा सन्त रामपाल दास जी के विषय में कहे हैं वे भी इसी को प्रमाणित करते हैं।**

विशेष :- यदि कोई यह कहे कि जन्म साखी में लिखी व्याख्या सन्त गरीबदास जी गांव छुड़ानी वाले के लिए हैं। क्योंकि वे भी जाट जाति से थे तथा छुड़ानी गांव भी पहले पंजाब प्रांत के अन्तर्गत आता था। यह भी उचित नहीं लगती क्योंकि संत गरीबदास जी ने अपनी अमृतवाणी ''असुर निकंदन रमैणी'' में कहा है कि ''सतगुरु दिल्ली मण्डल आयसी, सूती धरनी सूम जगायसी'' भावार्थ है कि संत गरीबदास जी के सतगुरु पूज्य कबीर साहेब जी थे। पुराना रोहतक जिला (सोनीपत, रोहतक तथा झज्जर को मिला कर एक जिला रोहतक था) दिल्ली मण्डल में लगता था। यह किसी राजा के आधीन नहीं था। अग्रेंजो के शासन काल में दिल्ली के आधीन था। सन्त गरीबदास जी ने स्पष्ट किया है कि सतगुरु (परमेश्वर कबीर जी) दिल्ली मण्डल में आऐंगे भक्तिहीन प्राणियों को जगाऐंगे सत्यभक्ति कराऐंगे। (ध्यान रहे कबीर सागर में काल के दूतों ने मिलावट करके सत्य को न जानकर अपनी अटकल बाजी से असत्य प्रमाण दिए हैं। उसका नाश करने के लिए परमेश्वर कबीर जी ने अपने अंश अवतार सन्त गरीब दास जी द्वारा यथार्थ ज्ञान प्रचार करवाया है। जो सन्त गरीब दास जी की अमृतवाणी रूप में है। इसी बात की पुष्टि ''कबीर सागर के सम्पादक कबीर पंथी श्री युगलानन्द बिहारी जी की उस टिप्पणी से होती है जो उन्होंने अनुराग सागर तथा ज्ञान सागर की भूमिका में की है कहा है कि कबीर पंथियों ने ही कबीर पंथ के ग्रन्थों का नाश कर रखा है। अपने–२ मते अनुसार फेर बदल करके अपने मत को जोड़ा है। मेरे पास अनुराग सागर तथा ज्ञान सागर की कई–२ प्रतियाँ रखी हैं। जिनमें से एक दूसरे से मेल नहीं खा रही हैं।)

सन्त रामपाल दास जी महाराज का जन्म श्री नन्द राम जाट के घर 8 सितम्बर 1951 को गांव-धनाना जिला सोनीपत (उस समय जिला रोहतक) में हुआ था। जो वर्तमान हरियाणा तथा पंजाब प्रांत मिलकर, उस समय एक ही 'पंजाब' प्रांत था। परमेश्वर कबीर जी ने भी कहा था कि जिस समय कलयुग 5500 वर्ष बीत चुका होगा मैं गरीबदास वाले बारहवें पंथ में आगे स्वयं

आऊँगा। सन्त गरीबदास जी द्वारा मेरी (कबीर परमेश्वर की) महिमा की वाणी प्रकट होगी तथा गरीबदास वाले बारहवें पंथ तक के साधक मुझे आधार बनाकर वाणी को समझने की कोशिश करेंगे परन्तु वाणी को न समझ कर सतनाम तथा सारनाम से वंचित रहने के कारण असंख्य जन्म तक सत्यलोक प्राप्ति नहीं कर सकते। उसी बारहवें पंथ (गरीबदास जी वाले पंथ) में मैं (परमेश्वर कबीर जी) ही स्वयं चलकर आऊँगा। तब सन्त गरीबदास जी द्वारा प्रकट की गई वाणी को मैं (कबीर परमेश्वर) प्रकट होकर समझाऊँगा। प्रमाण के लिए कृप्या देखें इसी पुस्तक के पृष्ठ 91 पर पढ़ें 'कबीर परमेश्वर द्वारा स्वयं अवतार धारण करने की भविष्यवाणी''।

इस से सिद्ध हुआ कि जन्म साखी में जिस जाट सन्त के विषय में कहा है निरविवाद रूप से वह संत रामपाल दास जी महाराज जी ही हैं। फिर भी हम संत गरीबदास जी का विशेष आदर करते हैं। क्योंकि उन्होंने परमेश्वर कबीर जी का अमर संदेश सुनाया है।

यदि कोई भ्रम उत्पन्न करे की दस गुरु साहिबानों में से भी किसी की ओर संकेत हो सकता है। इसके लिए स्मरण रहे कि दस सिख गुरु साहिबानों में से कोई भी जाट वर्ण से नहीं थे। दूसरे सिख गुरु श्री अंगद देव जी खत्री थे। तीसरे गुरु जी श्री अमर दास जी भी खत्री थे। चौथे गुरु जी श्री रामदास जी खत्री थे तथा पांचवें गुरु जी श्री अर्जुन देव जी से लेकर दसवें तथा अन्तिम श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी तक श्री गुरु रामदास जी की सन्तान अर्थात् खत्री थे। फिर भी हम सभी सिख गुरु साहिबानों का विशेष आदर करते हैं।

संत रामपाल दास जी महाराज कहते हैं :-

जीव हमारी जाति है, मानव धर्म हमारा,
हिन्दु मुसलिम, सिख, ईसाई, धर्म नहीं कोई न्यारा।।

परमेश्वर कबीर जी ने कहा है :-

जाति ना पूछो संत की, पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पड़ी रहन दो म्यान।।

कृप्या प्रमाण के लिए देखें फोटो कापी जन्म साखी पंजाबी गुरुमुखी (पंजाबी भाषा) वाली तथा हिन्दी वाली दोनों में आप जी सहज में समझ सकते हो कि वास्तविक्ता क्या है। जन्म साखियों के प्रकाशक हैं :- भाई जवाहर सिंह कृपाल सिंह अमृतसर (पंजाब)।

कृप्या देखें फोटो कापी जन्म साखी भाई बाले वाली पंजाबी भाषा वाली के पृष्ठ 272 की।

(੨੭੨) ਸਾਖੀ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦ ਭਗਤ ਨਾਲ ਹੋਈ

ਕਾਜ ਸਵਾਰਿਆ ॥੪॥ ਤਾਂ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦ ਭਗਤ ਕਹਿਆ ਨਾਨਕ ਤਪਾ ਜੀ ਤੇਨੂੰ ਕਲਜੁਗ ਵਿਚ ਰਾਮ ਜੀ ਨੇ ਵਡਾ ਭਗਤ ਕੀਤਾ ਹੈ ਔਰ ਆਪਕੇ ਸੰਜੋਗ ਬਹੁਤਿਆਂ ਕਾ ਉਧਾਰ ਹੋਵੇਗਾ ਤੇਰੀ ਸ੍ਰੀ ਰਾਮ ਨੇ ਵਡੀ ਨਦਰ ਖੋਲੀ ਹੈ ਤੇਰਾ ਵਡਾ ਪ੍ਰਤਾਪ ਹੋਵੇਗਾ ਇਸ ਕਲਜੁਗ ਵਿਚ ਅਗੇ ਕਬੀਰ ਭਗਤ ਏਥੇ ਆਯਾ ਹੈ ਅਤੇ ਜਾਂ ਆਪਕੋ ਕਰਤਾ ਨੇ ਆਂਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਮਰਦਾਨੇ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦ ਭਗਤ ਨੂੰ ਪੁਛਿਆ ਹੇ ਭਗਤ ਜੀ ਤੁਸੀਂ ਭੀ ਵਡੇ ਭਗਤ ਹੋ ਅਤੇ ਤੁਸਾਡੇ ਪਿਛੇ ਰਾਮ ਜੀ ਵਡਾ ਚਲਤ ਦਿਖਾਇਆ ਹੈ ਤੇਰੀ ਰਾਮ ਜੀ ਨੇ ਵਡੀ ਨਦਰ ਖੋਲ੍ਹੀ ਹੈ ਭਗਤ ਜੀ ਏਥੇ ਹੋਰ ਕੋਈ ਵੀ ਪਹੁੰਚਿਆ ਹੈ ਕਿ ਕਬੀਰ ਅਤੇ ਨਾਨਕ ਤਪਾ ਹੀ ਪਹੁੰਚਿਆ ਹੈ ਤਾਂ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦ ਭਗਤ ਬੋਲਿਆ ਭਾਈ ਨਾਨਕ ਤਪੇ ਪਾਸੋਂ ਪੁਛ ਲੈ ਹੋਰ ਭੀ ਆਵਸੀ ਕਿ ਨਾ ਆਵਸੀ ਕੋਈ ਤਾਂ ਮਰਦਾਨੇ ਕਹਿਆ ਜੀ ਤੁਸੀਂ ਵਡੇ ਭਗਤ ਹੋ ਅਗਲੀ ਤੇ ਪਿਛਲੀ ਸਭ ਆਪ ਨੂੰ ਸਤਿ ਜੁਗ ਥੀਂ ਆਦਿ ਲੈਕੇ ਮਾਲੂਮ ਹੈ ਤਾਂ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦ ਭਗਤ ਨੇ ਕਹਿਆ ਸੁਣ ਭਾਈ ਇਸ ਜਿਹਾ ਕੋਈ ਹੋਵੇਗਾ ਤਾਂ ਏਥੇ ਪਹੁੰਚੇਗਾ ਹੋਰਸ ਦਾ ਏਥੇ ਪਹੁੰਚਣਾ ਕੰਮ ਨਾਹੀਂ ਹੋਰ ਅਗੇ ਵਡੇ ਵਡੇ ਭਗਤ ਹੋਏ ਹੈਨ ਅਤੇ ਹੋਵਨਗੇ ਪਰ ਪਹੁੰਚਿਆ ਕੋਈ ਨਾਹੀਂ ਤਾਂ ਫੇਰ ਮਰਦਾਨੇ ਪੁਛਿਆ ਜੀ ਓਹ ਕਦ ਹੋਸੀ ਕਿਤੇ ਨੈੜੇ ਜੁਗ ਵਿਚ ਹੋਸੀ ਤਾਂ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦ ਭਗਤ ਕਹਿਆ ਸੁਣ ਭਾਈ ਕਲਜੁਗ ਵਿਚ ਹੋਵੇਗਾ ਜਟ ਨਾਨਕ ਤਪਾ ਸਚਖੰਡ ਜਾਵੇਗਾ ਤਾਂ ਇਸ ਤੋਂ ਪਿਛੇ ਸਉ ਵਰ੍ਹੇ ਹੋਸੀ ਅਤੇ ਏਹਨਾਂ ਤੇਹਾਂ ਤੋਂ ਬਗੈਰ ਹੋਰ ਕੋਈ ਨਾ ਆਵਸੀ ਤਾਂ ਮਰਦਾਨੇ ਪੁਛਿਆ ਜੀ ਤਿੰਨ ਕੇਹੜੇ ਹੈਨ ਤਾਂ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦ ਭਗਤ ਕਹਿਆ ਭਾਈ ਅਗੇ ਕਬੀਰ ਹੋਇਆ ਹੈ ਤੇ ਹੁਣ

कृप्या देखें फोटो कापी जन्म साखी भाई बाले वाली पंजाबी भाषा वाली के पृष्ठ 273 की।

ਸਾਖੀ ਇਕ ਪਹਾੜ ਦੀ ਚਲੀ (੨੭੩)

ਨਾਨਕ ਤਪਾ ਹੂਆ ਹੈ ਅਤੇ ਫੇਰ ਉਹ ਹੋਸੀ ਤਾਂ ਮਰਦਾਨੇ ਪੁਛਿਆ ਜੀ ਕਬੀਰ ਜੁਲਾਹਾ ਹੋਯਾ ਤੇ ਨਾਨਕ ਖਤਰੀ ਹੋਏ ਅਤੇ ਜੀ ਉਹ ਕਿਸ ਵਰਨ ਹੋਵੇਗਾ ਜੀ ਤੇ ਕਿਸ ਧਰਤੀ ਤੇ ਹੋਸੀ ਕੇਹੜੇ ਸ਼ਹਿਰ ਤਾਂ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦ ਭਗਤ ਕਿਹਾ ਭਾਈ ਪੰਜਾਬ ਧਰਤੀ ਤੇ ਵਰਨ ਜਟ ਤੇ ਸ਼ਹਿਰ ਵਟਾਲੇ ਵਿਚ ਹੋਸੀ। ਤਾਂ ਮਰਦਾਨਾ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਜੀ ਦੇ ਚਰਨਾਂ ਤੇ ਢਹਿ ਪਿਆ ਗੁਰੂ

कृप्या देखें फोटो कापी जन्म साखी भाई बाले वाली हिन्दी वाली के पृष्ठ 305 की।

जन्म साखी (३०५) भाई बाले वाली

तब भक्त प्रहलाद ने कहा–हे नानक देव। आप को इस कलियुग में बड़ा भक्त बनाया है। आप की ही संगति से अनेकों प्राणियों का भला होगा। और आप का अनंत प्रताप होगा। तब मरदाने ने कहा–हे प्रहलाद जी! आप भी तो परम भक्त हैं तथा भगवान ने आप के लिये ही अवतार धारन किया था। प्रहलाद जी ने कहा–हे भाई मरदाना। इस स्थान पर या तो कबीर पहुंचा है, और या यह गुरू नानक आया है। यहां आना कोई सुगम कार्य नहीं है। एक और महा पुरुष होगा जो पहुंच सकेगा। मरदाने ने कहा–हे भक्त वर। वह पुरुष कौन और कब होगा। प्रहलाद ने उत्तर दिया, कि जब गुरू नानक देव यहां आयेंगे तो इन के सौ वर्ष पश्चात आयेगा। अर्थात यहां केवल तीन आदमी ही आने हैं। एक तो भक्त कबीर और दूसरे श्री गुरू नानक देव जी इन के पश्चात वह तीसरा आयेगा। तब मर्दाने ने कहा हे प्रहलाद जी। कबीर तो जुलाहा था, और नानक देव–खत्री हैं। परंतु वह तीसरा किस जाती का होगा, उत्तर में प्रहलाद जी ने कहा–हे मर्दाना! पंजाब की धरती और वहां उस का जाट होगा। तथा नगर कंधला में होगा। उस समय मर्दाना गुरू जी के चरणों

प्रश्न : एक संस्कृत के विद्वान शास्त्री ने कहा कि आप के गुरु संत रामपाल दास जी महाराज संस्कृत नहीं पढ़े हैं। आप कहते हो कि उन्होंने श्री मद्भगवत् गीता का यथार्थ अनुवाद करके भक्तों को बताते हैं। यह कभी नहीं हो सकता।

उत्तर : सन्त रामपाल दास जी महाराज के भक्त ने उत्तर दिया शास्त्री जी उसी को परमेश्वर का अवतार कहते हैं। जो भाषा का ज्ञान न होते हुए यथार्थ अनुवाद कर दें। क्योंकि परमेश्वर सर्वज्ञ है। उन्हीं गुणों से युक्त उसका भेजा हुआ अवतार होता है। वह अवतार सन्त रामपाल दास जी महाराज जी हैं। आप तो केवल वेदों और गीता के अनुवाद से अचम्भित हैं। सन्त रामपाल दास जी महाराज ने तो बाईबल तथा कुरान को यथार्थ रूप में बताया है। जिसे ईसाई धर्म के वर्तमान के फादर व पादरी तथा मुसलमान धर्म के मुल्ला व काजी भी नहीं समझ सके। कृप्या पढ़िए पुस्तक ''ज्ञान गंगा'' में।

''एक महापुरूष के विषय में जयगुरु देव की भविष्यवाणी''

''जयगुरुदेव पंथ के श्री तुलसी दास साहेब की विशेष भविष्यवाणी''

जयगुरू देव उर्फ राधास्वामी पंथ मथुरा के परम सन्त की भविष्यवाणी कृप्या पढ़ें पुस्तक ''जयगुरू देव की अमर वाणी भाग- 2'' के पृष्ठ 50 तथा 59 की फोटो कापी।

धर्माचार्यों, राजनीतिज्ञों को नेक सलाह

धर्म तब आऐगा जब सब धर्म के लोग लड़ना छोड़ें। राष्ट्र की उन्नति तभी होगी जब राजनैतिक लोग लड़ना, आंदोलन, हड़ताल, तोड़फोड़, रिश्वत अथवा स्वार्थ एवं दल बदल छोड़ दें। मांस, मछली, शराब, ताड़ी भी छोड़ दें। इसके पहले देश की खुशहाली की जो बात करता है वह भविष्य के आने वाले संकट से बदहोश है। वह यह नहीं जानता है कि देश की प्रजा दुराचारी, चरित्रहीन, लड़ने भिड़ने व कामचोर, हड़ताली, आन्दोलन, तोड़फोड़ करने वाली हो गई है। मांस, मछली, अण्डों का भक्षण करने लगी। शराब, ताड़ी व अन्य नशीली वस्तुओं के सेवन से प्रजा बदहोशी में आकर पागल बनकर कुत्तों की भांति लड़ने लगी। वह देश की जनता अपनी गरीबी को कदापि नहीं मिटा सकती है।

–(शाकाहारी पत्रिकाः 28 जुलाई 1971)

औतारी शक्तियों का जन्म हो गया है

भारतवर्ष में औतारी शक्तियों ने जन्म ले लिया है। अनेक स्थानों पर वे बच्चों के रूप में पल रहें है और समय आने पर प्रगट हो जाऐंगी। माता पिता अपना सुधार कर लें वरना यही बच्चे उनके विनाश का कारण बन जाएगें। इन बच्चों को गोश्त व अण्डा दिया जाता है तो वे मुंह फेर लेते है और उधर देखते तक नहीं। माँ बाप इस बात का ध्यान रखें कि जो बच्चे इन चीजों को खाना नहीं चाहते उन्हें जबरदस्ती न खिलाएँ। वह औतार जिसकी लोग प्रतीक्षा कर रहे है 20 वर्ष का हो चुका है यदि उसका पता बता दूँ तो लोग पीछे पड़ जाऐंगे। अभी उपर से आदेश बताने के लिए नही हो रहा है। मैं समय का इन्तजार कर रहा हूँ और सभी महात्माओं ने समय का इन्तजार किया है। समय आते ही सबको सब कुछ मालूम हो जाएगा।

(शाकाहारी पत्रिकाः 7 सितम्बर 1971)

परिवर्तन का कारण भारतवर्ष बनेगा

भारतवर्ष को विश्व में परिवर्तन का कारण अब बनना होगा। त्रेता में विश्व युद्ध का कारण भारतवर्ष था और द्वापर में भी विश्व युद्ध का कारण भारतवर्ष था और इस समय में भी भारतवर्ष को ही कारण बनना होगा।

मुस्लिम राष्ट्रों में भारी कलह होगी। सभी मुसलमान आपस में लड़कर समाप्त हो जाऐंगे। अधिकांश छोटे–छोटे देश टूटकर बड़े राष्ट्रों में मिल जाऐंगे। भारतवर्ष इन सबका अगुआ होगा। चीन के समस्त वैज्ञानिक प्रगति को चूर्ण करके चीन को नष्ट कर दिया जाऐगा। चीन में बचे–खुचे लोगों की सहायता भारत करेगा। इसी बीच तिब्बत भारत में मिल जाएगा। यदि सभी राष्ट्र आपस में मिल कर भारतवर्ष पर आक्रमण करें तो भी इसे कोई जीत नहीं सकता है। भारत में नए सिरे से संगठन होगा। यदि विश्व के सभी राष्ट्र जी जान से यह प्रयास करे कि सुरक्षा परिषद अमेरिका से हटकर भारतवर्ष मे न जाने पावे तो यह कदापि नहीं होगा। सुरक्षा परिषद भविष्य में भारत में चली आएगी।

महापुरूष का जन्म भारतवर्ष के एक छोटे से गांव में हो चुका है और वह व्यक्ति मानव इतिहास का सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति बनेगा। उसे जनता का इतना बडा सर्मथन प्राप्त होगा कि आज तक किसी को नहीं मिला है। वह महापुरूष नए सिरे से विधान को बनाएगा और वह विश्व के सम्पूर्ण देशों पर लागू होगा। उसका एक झंडा होगा। उसकी एक भाषा होगी।

(शाकाहारी पत्रिकाः 28 अगस्त 1971)

लड़ाई के समय में रक्षा होगी

स्वामी जी ने बताया कि युद्ध के समय में सत्संगियों की रक्षा की जाऐगी। जयगुरूदेव नाम को बराबर याद करते रहो। यह परमात्मा का नाम है और हर क्षण तुम्हारी रक्षा करेगा। **–(शाकाहारी पत्रिका : 14 नवम्बर 1971)**

59

उपरोक्त पुस्तक की फोटो कापियों में सन्त रामपाल जी महाराज के विषय में वर्णन इस प्रकार कहा हैं।

सन्त रामपाल जी महाराज का जन्म 8 सितम्बर 1951 को गाँव = धनाना, जिला = सोनीपत, प्रान्त = हरियाणा (भारत) में जाट किसान

परिवार में हुआ। विशेष जानकारी इस पुस्तक के कई स्थानों पर है। कृप्या वहां से पढ़ें ''जयगुरू देव की अमर वाणी'' भाग-2 पुस्तक के पृष्ट 50 पर संत तुलसी साहेब ने 7 सितम्बर 1971 को सत्संग में कहा था कि ''वह अवतार जिसकी लोग प्रतिक्षा कर रहे हैं 20 वर्ष का हो चुका है, सन्त रामपाल जी महाराज 7 सितम्बर 1971 को पूरे 20 वर्ष के हुए थे, 8 सितम्बर 1971 उनका इक्कीसवां वर्ष प्रारंम्भ हुआ था। पृष्ठ 59 पर लिखा है कि वह महापुरूष छोटे से गाँव में जन्म ले चुका है।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट हो गया है कि वह महापुरूष सन्त रामपाल जी महाराज जी ही हैं।

''भक्ति नाश का कारण''

सन्त रामपाल दास जी महाराज अपने अमृत वचनों में कहते हैं कि जो भी व्यक्ति स्वयंभु गुरू बन कर सुप्रसिद्ध हुए हैं। ये पूर्व जन्मों की पुण्यात्माऐं हैं। जिस कारण से उनके पुण्य धन से (पूर्व जन्म की भक्ति धन से) अनुयाईयों को कुछ भौतिक लाभ भी प्राप्त हो जाते हैं। लेकिन बाद में इन स्वयंभु गुरूओं की भक्ति क्षीण हो जाती हैं। जैसे इर्न्वटर की बैटरी चार्ज हैं। उससे पंखे भी चल रहे हैं, ट्यूब भी जग रहीं है, भले ही वर्तमान में चार्जर भी न लग हो। परन्तु संचित ऊर्जा के खर्च होने के बाद और आगे चार्जर न लगाने से एक दम बैट्री डिस्चार्ज हो जाती हैं तथा सर्व सुविधाऐं बन्द हो जाती हैं।

यही दशा वर्तमान के सर्व पुण्यात्माओं स्वयंभु गुरूओं की हैं। ये सर्व पूर्व जन्मों में की भक्ति से चार्जड थे। वर्तमान में शास्त्रानुकूल भक्ति (साधना) न होने के कारण अपना तथा अपने अनुयाईयों का जीवन नाश कर गए। कुछ वर्तमान में कर रहे हैं।

जयगुरू देव पंथ मथुरा का सन्त श्री तुलसी दास साहेब जी पूर्व जन्म के बहुत ही पुण्यकर्मी प्राणी हैं। ये श्री शिवदयाल सिंह जी से भी अधिक भक्ति धन युक्त हैं। परन्तु वर्तमान में साधना शास्त्रानुकूल न होने से अपनी पुण्यों का नाश कर लिया है। अब इनकी बैटरी पूर्ण रूप से डिस्चार्ज हो चुकि है।

जिस समय ''7 सिम्तबर 1971 में इन्होंने भविष्यवाणी की है। जो पुस्तक ''जय गुरुदेव की अमर वाणी'' के पृष्ठ 50 तथा 59 पर अंकित है।

➢जिसमें एक अवतार की जानकारी दी है कि पृष्ठ 59 पर दिनांक 28 अगस्त 1971 को की गई भविष्यवाणी का कुछ अंश इस प्रकार है। महापुरूष का जन्म भारतवर्ष के एक छोटे से गांव में हो चुका है और वह व्यक्ति मानव इतिहास का सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति बनेगा। उसे जनता का इतना बड़ा समर्थन प्राप्त होगा कि आज तक किसी को नहीं मिला है। वह महापुरूष नए

सिरे से विधान को बनाएगा और वह विश्व के सम्पूर्ण देशों पर लागू होगा। उसका एक झंडा होगा। उसकी एक भाषा होगी। कृप्या देखें फोटो कापी पुस्तक ''जयगुरुदेव की अमरवाणी'' भाग-2 के पृष्ठ 50-59 की इसी पुस्तक के पृष्ठ 81 से 82 पर।

➢पृष्ठ 50 पर दिनांक 7 सितम्बर 1971 की भविष्यवाणी का कुछ अंश इस प्रकार है। ''अवतारी शक्तियों का जन्म हो गया है''

..... वह अवतार जिसकी लोगों को प्रतिक्षा है 20 वर्ष का हो चुका है। यदि उसका पता बता दूं तो लोग पीछे पड़ जाऐंगे। अभी ऊपर से आदेश बताने के लिए नहीं हो रहा है। मैं समय का इन्तजार कर रहा हूँ। समय आते ही सबको सब कुछ मालूम हो जाएगा।

विवेचन :- संत रामपाल जी महाराज का जन्म 8 सितम्बर 1951 को गांव-धनाना, जिला-सोनीपत, प्रांत-हरियाणा (भारत) में किसान (जाट) परिवार में हुआ। दिनांक 7 सितम्बर 1971 को संत रामपाल जी महाराज की आयु ठीक 20 वर्ष की थी। 8 सितम्बर 1971 को ईक्कीसवां वर्ष प्रारम्भ होता है। श्री तुलसी दास जी जो जयगुरुदेव पंथ मथुरा के वर्तमान में गुरु पद पर विराजमान हैं, उन्होंने जो भविष्यवाणी की है। वह संत रामपाल जी महाराज पर खरी उतरती है। इसके साथ-2 संत रामपाल जी महाराज का आध्यात्मिक ज्ञान अद्वितीय है। इसलिए सर्व संसार में विख्यात होगा।

संत रामपाल जी महाराज ने सर्व संतों तथा पंथों की भक्ति विधी पर सवाल उठाए हैं कि इन सर्व की साधना व्यर्थ है। इनके द्वारा बताए भक्ति के नाम मोक्षदायक नहीं हैं। जिन संतों को परमेश्वर मिला उन्होंने जो साधना की, हम सर्व को वही साधना करनी पड़ेगी। परमेश्वर प्राप्त संतों ने जो नाम जाप किए, जिनसे उनका मोक्ष हुआ, वे मंत्र वर्तमान में संत रामपाल जी महाराज के अतिरिक्त किसी के पास नहीं हैं। यदि श्री तुलसी दास जी जयगुरूदेव पंथ मथुरा वाले की दिव्य दृष्टि काम करती है तो बताऐं कि वास्तव में वे महापुरूष संत रामपाल जी महाराज हैं या कोई अन्य है। हमें तो सत प्रतिशत विश्वास है कि संत रामपाल जी महाराज जी ही वह महापुरूष अवतार हैं। जिसके विषय में सर्व भविष्यवक्ताओं ने भविष्य वाणीयाँ की हैं। एकमात्र संत रामपाल जी महाराज ने ही अपने अनुयाईयों की शराब, तम्बाखू, मांस, चोरी, रिश्वत खोरी आदि-2 सर्व बुराईयाँ छुड़वाई हैं।

श्री तुलसी दास साहेब जी मथुरा में जयगुरुदेव पंथ के वर्तमान प्रमुख ने तथा अन्य भविष्यवक्ताओं ने केवल इतना कार्य किया है। जैसे खगोल-भूगोल का ज्ञाता यह बताए कि कल सूर्य 6 बजकर 45 मिनट पर उदय होगा। सूर्य को तो उदय होना ही था, चाहे कोई बताए या ना बताए। सूर्य उदय हो चुका

हो, सामने धुन्ध के बादल छाए हों। कोई व्यक्ति बच्चों को बताए कि सूर्य उदय हो चुका है। समय आने पर दिखाई देगा। सूर्य कहां पर है, यह बताने में असमर्थ व्यक्ति कहता है कि जब धुन्ध के बादल हट जाऐंगे, अपने आप सूर्य दिखाई देगा। सूर्य तो उदय है। वह दिखाई भी देगा, चाहे कोई बताए ना बताए। ऐसी भविष्यवाणी श्री तुलसी दास साहेब मथुरा में जयगुरुदेव पंथ के वर्तमान मुखिया की है। अब सूर्य उदय हो चुका है। यदि तुलसी दास की आखें (दिव्य दृष्टि) अब भी काम कर रही है तो बताए कि सूर्य अर्थात् वह अवतार महापुरूष कहाँ पर है। यदि श्री तुलसी साहेब यह बताने में असमर्थ है कि वह अवतारी पुरूष कौन है तो उनकी पूर्व जन्म की भक्ति शक्ति पूर्ण रूप से क्षीण हो चुकी है। क्योंकि 7 सितम्बर 1971 को उनकी दिव्य दृष्टि ने सही कार्य किया था। जिसमें उन्होंने कहा है (पुस्तक = ''जयगुरु देव की अमर वाणी'' भाग-2 पृष्ठ 50 तथा 59 पर) कि ''महापुरूष का जन्म भारत वर्ष के एक छोटे से गाँव में हो चुका है। वह व्यक्ति मानव इतिहास का सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति बनेगा। उसे जनता का इतना बड़ा समर्थन प्राप्त होगा कि आज तक किसी को नहीं मिला है। वह महापुरूष नए सिरे से विधान बनाएगा और वह विश्व के सम्पूर्ण देशों पर लागू होगा। उस का एक झण्डा होगा। उसकी एक भाषा होगी। यह विवरण पृष्ठ 59 पर है तथा पृष्ठ 50 पर कहा है कि वह अवतार जिस की लोग प्रतिक्षा कर रहे हैं 20 वर्ष का हो चुका है।'' (भविष्यवाणी समाप्त)

सन्त रामपाल जी महाराज का जन्म गाँव धनाना, जिला सोनीपत, हरियाणा, भारतवर्ष में 8 सितम्बर 1951 को एक जाट किसान परिवार में हुआ। जयगुरु देव पंथ मथुरा के मुखिया श्री तुलसी साहेब के अनुसार 7 सितम्बर 1971 को सन्त रामपाल जी महाराज ठीक 20 वर्ष के हुए थे तथा 8 सितम्बर से उनके शरीर की आयु का इक्कीसवां वर्ष प्रारम्भ हुआ था।

सन्त रामपाल जी महाराज अपने प्रवचनों में बार-बार प्रार्थना करते हैं कि वर्तमान के सर्व गुरु जन कृप्या ध्यान दें। आप जी शास्त्रविधी विरूध साधना कर तथा करवा रहे हो। आप बहुत बड़े मानव समाज के जीवन के नाशक बन रहे हो। आप भी तथा आप के अनुयाई, अपना अनमोल मानव जीवन नष्ट कर रहे हो। सर्व वर्तमान के गुरु जन महापाप के भागी बन रहे हो। आप जी को, पाप के भार से मुक्त होने का रास्ता भी सन्त रामपाल जी महाराज जी ही बताते हैं कि आप सन्त रामपाल जी महाराज जी के द्वारा बताए आध्यात्मिक ज्ञान को गहराई से जानों। फिर अपने शिष्यों से कह दो कि ''हमने आप जी को जो भक्ति दिशा दी है। वह अधुरी है। हमारा उद्देश्य तो था कि आपको मुक्ति दिलाऐं। परन्तु हमें तत्व ज्ञान नहीं था। अब सर्व

भक्त सन्त रामपाल दास जी महाराज के पास जाओ तथा दिक्षा ग्रहण करो।'' इस प्रकार कहने से गुरुजन पाप के भार से मुक्ति प्राप्त कर लेगें। फिर स्वयं भी अपना कल्याण कराऐं व सन्त रामपाल दास जी महाराज जी के पास आकर नाम दीक्षा ग्रहण करें।

सन्त रामपाल दास जी महाराज कहते है कि सर्व सन्त तथा भक्तजन जो दिशा भ्रष्ट है। मुझ दास के पास आओ, अभिमान-बड़ाई को त्यागो। मुझे अपना बच्चा जान कर अपने जन्म-मृत्यु के दीर्घ रोग का नाश कराओ। जैसे किसी का बच्चा डाक्टर बन जाता है। उसके पास उपचार के लिए जाने में संकोच कैसा? वह डाक्टर बच्चा तो अपने माता-पिता-भाई बहन तथा छोटे-बड़े सर्व समाज के व्यक्तियों का उपचार करता है। ठीक इसी प्रकार सन्त रामपाल जी महाराज के पास जन्म-मृत्यु के रोग को नाश करने की जड़ी 'सतनाम' (जो दो अक्षर का है) है तथा सारनाम (जिसे आदिनाम भी कहते हैं) डाक्टर के पास दूसरे डाक्टर भी तो अपना उपचार कराने आते हैं। इसमें मान-बड़ाई का प्रश्न नहीं है।

सन्त रामपाल जी महाराज अपने प्रवचनों में बताते हैं कि जब यह तत्वज्ञान वर्तमान गुरुओं को समझ आ जाएगा तो इन के सामने काल एक और बाधा खड़ी करेगा कि हमारा सर्व जीवन इस साधना में व्यतीत हो गया है। अब हमारा कल्याण कैसे होगा ? यदि गुरु बदल लिया तो हम घर के रहे ना घाट के, उन्हें इस शंका के समाधान के लिए एक उदाहरण है :- महर्षि रामानन्द पंडित जी जिस समय 104 वर्ष के हो चुके थे। उस समय परमेश्वर कबीर जी ने उनको तत्वज्ञान समझाया तथा सत्यलोक में अपनी समर्थता से परिचित कराया। उस समय स्वामी रामानन्द जी ने 1400 (चौदह सौ) ऋषि शिष्य बना रखे थे। जो अन्य स्थानों पर प्रचार किया करते थे। तब महर्षि रामानन्द जी ने यह प्रश्न परमेश्वर कबीर जी के समक्ष किया था कि ''हे परमेश्वर'' अब मेरा क्या होगा। यदि में आप से उपदेश ले लूं तो मेरी पूर्व साधना का क्या होगा। अब आयु बहुत ही कम शेष है। आप वाली भक्ति कैसे कर पाऊंगा? कहीं मैं घर का रहूं ना घाट का। परमेश्वर कबीर जी ने उस पुण्यात्मा की शंका का समाधान इस प्रकार किया था। (उस समय परमेश्वर कबीर जी की लीलामय आयु 5 वर्ष की थी।) परमेश्वर कबीर जी ने कहा स्वामी जी जैसे बच्चा दसवीं कक्षा में पढ़ रहा है। उसको आगे की शिक्षा का ज्ञान न हो और कोई उसे कहे कि आप आगे की उच्च कक्षा में प्रवेश पाओ। वह बच्चा कहे कि मेरी पीछे की पढ़ाई का क्या होगा? तो यह प्रश्न अबोध बच्चे ही किया करते है। फिर परमेश्वर कबीर जी ने कहा स्वामी जी ! (कबीर परमेश्वर जी ने मर्यादा बनाए रखने के लिए महर्षि रामानन्द जी को गुरु बना

लिया था। इसलिए ''स्वामी'' शब्द से संबोधित करते थे।) यह आध्यात्मिक मार्ग है। मर्यादा में रह कर भक्ति करने से आध्यात्मिक लाभ शीघ्र ही प्राप्त हो जाता है। मैं (कबीर परमेश्वर) आप को ''सत्यनाम'' (जो दो अक्षर का है। जिस में एक ओम् तथा दूसरा ''तत्'' जो सांकेतिक है) दूंगा। जिस के एक स्मरण से इतनी भक्ति धन प्राप्त होता है कि चौदह लोक की कीमत भी कम रह जाए।

सत्यनाम पालड़ै रंग होरी हो, चौदह लोक चढ़ावै राम रंग होरी हो।
तीन लोक पासंग धरै रंग होरी हो, तो ना तुलै तुलाया राम रंग होरी हो।।

कबीर परमेश्वर जी ने फिर कहा कि हे स्वामी जी :-

जीवन तो थोड़ा ही भला, जै सत सुमरण हो।
लाख वर्ष का जीवना, लेखै धरै ना कोय।।

इस सत्यनाम तथा सारनाम (आदि नाम) के जाप को श्रद्धा से करने से शीघ्र ही मोक्ष लाभ हो जाता है। इस मन्त्र के बिना चाहे लाख वर्ष भी गलत साधना करते रहो, कोई लाभ नहीं।

दूसरा उदाहरण :- यदि कोई व्यक्ति यात्रा कर रहा है। उस ने दिल्ली से बरवाला जिला हिसार हरियाणा में आना है। वह जा रहा है, दिल्ली से आगरा की ओर तथा जा चुका है 200 कि.मी.। वहां कोई उसे कहे कि आप की दिशा ठीक नहीं है। आप विपरीत मार्ग पर जा रहे हो। उस यात्री को विचार करना चाहिए कि सामने वाले व्यक्ति ने ऐसा क्यों कहा? यदि आप को विश्वास नहीं आया हो तो मानचित्र देखना चाहिए। सर्व जांच करने के पश्चात् यात्री को पता चला कि वास्तव में मेरा मार्ग गलत है। फिर वह यात्री यह कहे कि मैंने इतना रास्ता (200 कि.मी) तय कर लिया, इसको कैसे छोड़ूं.? इतना समय लगा दिया इसका क्या बनेगा? क्या बुद्धिमान व्यक्ति यह प्रश्न करेगा? नहीं। वह यात्री उस व्यक्ति का धन्यवाद करेगा, जिसने सावधान किया तथा सही मार्ग बताया।

उपरोक्त प्रथम उदाहरण में :- स्वामी रामानंद जी वेदों तथा श्री मदभगवत् गीता व पुराणों को आधार मान कर साधना कर रहे थे। वे दसवीं कक्षा तक की शिक्षा ग्रहण कर रहे थे तथा कई जन्मों से उसी कक्षा में ही पास-फेल हो रहे थे। उनके लिए कहा गया है कि उन्हें आगे की शिक्षा ग्रहण करने के लिए पूर्व विद्यालय तथा पूर्व गुरु त्यागने होंगे तथा आगे की शिक्षा परमेश्वर कबीर जी (सत्यपुरूष ने) स्वयं तत्वदर्शी संत के रूप में आकर बताई है। जो जन्म-मरण से पूर्ण मोक्ष दिलाती है। जो महर्षि रामानंद जी ने सहर्ष स्वीकार की।

दूसरा उदाहरण राधास्वामी पंथ तथा उसकी शाखाओं (जयगुरु देव पंथ

मथुरा, धन-धन सतगुरु सच्चा सौदा सिरसा, जगमाल वाली तथा गंगवा हिसार के पास, श्री ताराचंद जी दिनौंद भिवानी के पास, श्री कृपाल सिंह वाला राधास्वामी पंथ तथा ठाकुर सिंह वाला पंथ) तथा निरंकारी पंथ, हंसादेश पंथ आदि पर खरा उतरता है। इन पंथों का मार्ग न तो परमेश्वर कबीर जी अनुसार सत्यलोक प्राप्ति का है न ही ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव जी आदि देवताओं व ब्रह्म (क्षर पुरूष) वाला है, जो दसवीं तक की शिक्षा है। इसलिए इनका मार्ग विपरीत होने से लाभदायक नहीं है।

इन सर्व से निवेदन है कि कृप्या पुनर् विचार करें तथा सतलोक आश्रम बरवाला जिला हिसार, हरियाणा में पहुँच कर जगत् गुरु तत्वदर्शी संत रामपाल जी महाराज से दिक्षा स्वयं भी लें तथा अपने शिष्यों को भी आदेश दें कि आप सर्व भक्तजन सतलोक आश्रम बरवाला में जाकर यथार्थ भक्ति मार्ग ग्रहण करें। इस प्रकार करने से वे गुरुजन जो शास्त्रविरूद्ध साधना कर तथा करा रहे हैं। महापाप से बच जाऐंगे। मानव जीवन बहुत अनमोल है। इसको नष्ट करना तथा कराना महाअपराध है। कबीर परमेश्वर जी ने कहा है कि :- संखों गुरु गर्द में मिल गये, चेलों को कहां ठिकाना।

झूठे गुरुवों बात बिगाड़ी, काल जाल नहीं जाना।।
बात कहत हैं पार जान की, खड़े वार के वारै।
ना गुरुपुरा ना सतनाम उपासना, कैसे प्राण निस्तारै।

''शास्त्रों के आधार से पूर्ण संत तारणहार की पहचान''

श्री सावन सिंह, जो बाबा जयमल सिंह जी के शिष्य तथा डेरा ब्यास के दूसरे गद्दी नशीन हैं। बाबा जयमल सिंह आगरा के श्री शिवदयाल सिंह जी (राधास्वामी) के शिष्य थे। अधिक जानकारी के लिए कृप्या पढ़ें पुस्तक ''हरि आए हरियाणे नूं''।

श्री सावन सिंह जी ने अपने विचार तथा श्री शिवदयाल (राधास्वामी) के विचारों को पुष्ट करने के लिए ''सन्तमत प्रकाश'' पुस्तक 5 भागों में लिखी है। सन्तमत प्रकाश भाग-4 पृष्ठ 261-262 पर ''श्री गुरु ग्रंथ साहेब'' से श्री नानक जी की अमरवाणी तथा परमेश्वर कबीर जी की अमृतवाणी का हवाला देकर अपने मत को पुष्ट करने की कुचेष्टा की है। जो उनके विपरीत ही गई। जो इस प्रकार है :-

पुस्तक ''सन्तमत प्रकाश भाग-4'' के पृष्ठ 261 पर लिखा है कि ''गुरु ग्रन्थ साहेब'' में लिखा है :-

सोई गुरु पूरा कहावै, जो दो अख्खर का भेद बतावै।
एक छुड़ावै एक लखावै, तो प्राणी निज घर को पावै।।

जै तू पढ़या पंडित बिन, दोय अख्खर बिन दोय नावां।
प्रणवत नानक एक लंघाए, जे कर सच्च समावां।।

फिर परमेश्वर कबीर जी की वाणी का हवाला देकर लिखा है कि कबीर जी भी यही कहते हैं :-

कह कबीर अखर दोय भाख, होयगा खसम तो लेगा राख।

फिर पृष्ठ 262 पर (सन्तमत प्रकाश भाग-4) पर श्री नानक जी की वाणी का हवाला दिया है जो इस प्रकार है :-

बेद कतेब सिमृत सभ सासत, इन पढ़या मुकत न होई।
एक अक्खर जो गुरमुख जापै तिस की निरमल सोई।।

उपरोक्त वाणियाँ स्वयं परमेश्वर कबीर जी तथा परमात्मा प्राप्त सन्त नानक देव जी की है। इसका अनुवाद व भावार्थ श्री सावन सिंह जी ने गलत किया है कहा है कि वे दो अक्षर पारब्रह्म में आगे जाकर मिलेंगे। राधास्वामी पंथ के संत तथा शाखाओं के संत पांच नाम (ररंकार, औंकार, ज्योतिनिरंजन, सोंह तथा सतनाम) तथा अकाल मूर्ती, सतपुरूष, शब्द स्वरूपी राम व राधास्वामी नाम दान करते हैं। ढाई घण्टे सुबह व ढाई घण्टे शाम हठ योग करने से मोक्ष बताते हैं। जो साधना किसी भी परमात्मा प्राप्त संत तथा परमेश्वर कबीर जी की अमरवाणी से मेल नहीं खाती।

पूर्वोक्त अमृतवाणी में श्री नानक जी तथा परमेश्वर कबीर जी ने स्पष्ट किया है कि ''तारणहार परम संत'' वही है। जो दो अखर का भेद बताता है, क्योंकि दो अखर का जाप करने को कहा है। गुरु मुख होकर अर्थात् गुरु जी जिन दो अखर के नाम जाप करने को कहते हैं, वह सतनाम है। उस सतनाम में दो अखर इस प्रकार हैं, ओम् तथा दूसरा-तत् है। जो सांकेतिक है। उसको संत रामपाल जी महाराज के अतिरिक्त कोई नहीं जानता।

फिर ''एक नाम गुरु मुख जापै नानक होत निहाल'' **जिसका भी अर्थ स्पष्ट है कि दो अखरों अर्थात् सतनाम से भिन्न एक नाम और है। जिसे आदि नाम या सारनाम कहा है। वह भी जाप करने का है। उसको भी गुरु जी ही दान करेगा।**

एक श्री तुलसी दास हाथरस वाले संत हुए हैं। उन्होंने कबीर परमेश्वर जी की वाणी को पढ़कर स्वयंभू संत बनकर अपनी वाणी बनाकर ''घट रामायण''नामक पुस्तक-2 भागों में लिखी है। ''घट रामायण'' भाग-1 पृष्ठ 27 पर तुलसी दास जी हाथरस वाले स्पष्ट करते हैं कि ''पांचों नाम काल के जानों''**..... फिर कहा है ''सतनाम'' ले जीब उबारी। आदि नाम ले काल गिराऊँ।**

इससे भी स्पष्ट है कि पांच नाम काल के हैं। इनसे अन्य सतनाम तथा

आदि नाम जिसे सारनाम भी कहते हैं, अन्य है जो मोक्ष दायक हैं।

निष्कर्ष :- पूर्ण संत तारणहार (सायरन) संत रामपाल दास जी हैं। जिन्होंने दो अखर का भेद बताया है। राधास्वामी वाले, सच्चा सौदा वाले, परम संत तारणहार नहीं हैं। ये सर्व नकली हैं, इनसे बचें तथा सन्त रामपाल जी महाराज के पास आकर अपना कल्याण कराऐं।

''तारणहार परम सन्त'' की अन्य पहचान :-

परमेश्वर कबीर जी ने परम सन्त तारणहार जो परमेश्वर कबीर जी का कृपा पात्र होता है। उसकी पहचान बताते हुए कहा है :-

जो मम सन्त सत शब्द दृढ़ावै। वाकै संग सब राड़ बढ़ावै।
ऐसे सन्त महन्तन की करणी, धर्मदास मैं तोसे वरणी।।

इस अमर वाणी का भावार्थ है कि :- कबीर परमेश्वर जी ने कहा है कि जो मेरा सन्त, सच्चे ज्ञान व सच्चे नाम (सतनाम) के विषय में दृढ़ता से बताएगा। उस के साथ, उस समय के सन्त तथा महन्त झगड़ा करेगें। क्योंकि वह सच्चा ज्ञान उन नकलियों के नकली ज्ञान का पर्दा फाश करेगा। यह पहचान भी उस सन्त की होगी। वर्तमान में सन्त रामपाल जी महाराज के सच्चे ज्ञान से बौखला कर करौंथा काण्ड करा दिया। परन्तु परमेश्वर कबीर जी का पंजा सिर पर बाराबर बना रहा जिस कारण संत रामपाल जी महाराज तथा अनुयाई सुरक्षित रहे। परमेश्वर का प्रचार पहले से कई गुना बढ़ गया। परमेश्वर सत्य का साथ देते हैं।

विशेष :- पुस्तक ''जय गुरुदेव की अमरवाणी'' भाग-2 के पृष्ठ 43 पर लिखा है कि ''भारत जैसे राष्ट्र में हम प्रत्येक व्यक्ति का आदर करते हैं। इसलिए हमारे विधान में आलोचना करने की स्वत्रंता है और हमारा अनुरोध है कि आलोचना सत्य को सामने रखते हुए करनी चाहिए। जिससे जनहित हो।

स्वामी जी
शाकाहारी पत्रिका
14 जून 1971

प्रिय पाठकों इस पुस्तक ''जय गुरुदेव की विशेष भविष्यवाणी'' में सर्व विवेचन प्रमाणों सहित किया गया है। फिर भी कोई भूल हुई हो तो क्षमा करें।

धन्यवाद

''परमेश्वर कबीर जी द्वारा अवतार धारण करने की भविष्यवाणी''

कबीर सागर में कबीर बानी नामक अध्याय में पृष्ठ 136-137 पर बारह पंथों का विवरण देते हुए वाणी लिखी हैं जो निम्न हैं :-

द्वादश पंथ चलो सो भेद

द्वादश पंथ काल फुरमाना। भूले जीव न जाय ठिकाना।।
प्रथम आगम कहि हम राखा। वंश हमार चूरामणि शाखा।
दूसर जगमें जागू भ्रमावै। विना भेद ओ ग्रन्थ चुरावै।।
तीसरा सुरति गोपालहि होई। अक्षर जो जोग दृढ़ावे सोई।।
चौथा मूल निरञ्जन बानी। लोकवेद की निर्णय ठानी।।
पंचम पंथ टकसार भेद लै आवै। नीर पवन को सन्धि बतावै।।
सो ब्रह्म अभिमानी जानी। सो बहुत जीवन की करी है हानी।।
छठवाँ पंथ बीज को लेखा। लोक प्रलोक कहें हममें देखा।।
पांच तत्व का मर्म दृढावै। सो बीजक शुक्ल ले आवै।।
सातवाँ पंथ सत्यनामि प्रकाशा। घटके माहीं मार्ग निवासा।।
आठवाँ जीव पंथले बोले बानी। भयो प्रतीत मर्म नहिं जानी।।
नौवें राम कबीर कहावै। सतगुरू भ्रमले जीव दृढावै।।
दसवें ज्ञान की काल दिखावै। भई प्रतीत जीव सुख पावै।।
ग्यारहवें भेद परमधाम की बानी। साख हमारी निर्णय ठानी।।
साखी भाव प्रेम उपजावै। ब्रह्मज्ञान की राह चलावै।।
तिनमें वंश अंश अधिकारा। तिनमें सो शब्द होय निरधारा।।
सम्वत् सत्रासै पचहत्तर होई, तादिन प्रेम प्रकटें जग सोई।।
साखी हमारी ले जीव समझावै, असंख्य जन्म ठौर नहीं पावै।।
बारवें पंथ प्रगट है बानी, शब्द हमारे की निर्णय ठानी।।
अस्थिर घर का मरम न पावैं, ये बारा पंथ हमही को ध्यावैं।
बारवें पंथ हम ही चलि आवैं, सब पंथ मेटि एक ही पंथ चलावें।।

उपरोक्त वाणी में ''बारह पंथों'' का विवरण किया है तथा लिखा है कि संवत् 1775 में प्रभु का प्रेम प्रकट होगा तथा हमरी बानी प्रकट होवेगी। (संत गरीबदास जी महाराज छुड़ानी, (हरियाणा) वाले का जन्म 1774 में वैसाख पूर्णमासी को हुआ है उनको प्रभु कबीर 1784 में मिले थे। यहाँ पर इसी का वर्णन है तथा सम्वत् 1775 के स्थान पर 1774 होना चाहिए, गलती से 1775 लिखा है दूसरा कारण यह भी हो सकता है कि भारतीय वर्ष चैत्र मास से प्रारम्भ होता है सन्त गरीबदास जी का जन्म वैसाख मास में हुआ जो चैत्र के बाद प्रारम्भ होता है। कई बार दो चैत्र मास भी बनाए जाते हैं। उस समय शिक्षा का अति अभाव

था। प्रत्येक गाँव में एक ही तीथि बताने वाला होता था। वह भी अशिक्षित ही होता था। आस–पास के शहर या गाँव से तिथि किसी अन्य ब्राह्मण से पता करके फिर गाँव में सर्व को बताता था। इस कारण से भी संवत् 1774 के स्थान पर संवत् 1775 लिखा गया हो वास्तव में यह संकेत गरीबदास जी के विषय में ही है)।

भावार्थ यह है कि :- कबीर परमात्मा ने गरीबदास जी का ज्ञान योग खोल कर उनके द्वारा अपना तत्वज्ञान स्वयं ही प्रकट किया। जो सत्ग्रन्थ साहेब रूप में लीपि बद्ध है। कारण यह था कि कबीर वाणी में नकली कबीर पंथियों ने मिलावट कर दी थी। इसलिए परमेश्वर कबीर जी की महिमा का ज्ञान पुनर् प्रकट कराया फिर भी तत्व भेद (सार ज्ञान) गुप्त ही रखा (जो अब प्रकट हो रहा है।) इस कारण गरीबदास जी के पंथ में तत्वज्ञान नहीं है जिस कारण से वे गरीबदास साहेब की वाणी का विपरीत अर्थ लगा कर जन्म व्यर्थ करते रहे उन्हें असंख जन्म भी ठौर नहीं है अर्थात् वे मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकते केवल एक सन्त शीतल दास जी वाली प्रणाली में संत रामपाल दास जी महाराज तक एक सन्त ही पार होता आया है जो एक सन्त सारनाम प्राप्त करके केवल एक को आगे बताकर गुप्त रखने की कसम दिलाता था। वह भी आगे केवल एक शिष्य को बताकर गुप्त रखता था समय आने पर परमेश्वर कबीर जी के संकेत से ही आगे शिष्य को आज्ञा देता था। इस प्रकार संत रामपाल दास जी महाराज तक यह सारनाम कड़ी से जुड़ा हुआ पहुँचा है अब यह सर्व अधिकारी श्रद्धालु भक्तों को देने का आदेश प्रभु कबीर जी का है इसलिए कहा है बारहवां पंथ जो गरीबदास जी का चलेगा यह पंथ हमारी साखी लेकर जीव को समझाएगें। परन्तु वास्तविक मन्त्र से अपरिचित होने के कारण गरीबदास पंथ के साधक असंख्य जन्म तक सतलोक नहीं जा सकते। उपरोक्त बारह पंथ हमको ही प्रमाण करके भक्ति करेगें परन्तु स्थाई स्थान (सतलोक) प्राप्त नहीं कर सकते। बारहवें पंथ (गरीबदास वाले पंथ) में आगे चलकर हम (कबीर जी) स्वयं ही आऐगें तथा सब बारह पंथों को मिटा एक ही पंथ चलाऐगें। उस समय तक सारशब्द छुपा कर रखना है। यही प्रमाण सन्त गरीबदास जी महाराज ने अपनी अमृतवाणी ''असुर निकंन्दन रमैणी'' में किया है कि ''सतगुरू दिल्ली मण्डल आयसी, सूती धरती सूम जगायसी'' पुराना रोहतक जिला (वर्तमान में सोनीपत जिला, झज्जर जिला, रोहतक जिला) दिल्ली मण्डल कहलाता है। जो पहले अग्रेंजों के शासन काल में केन्द्र के आधीन था। बारह पंथों का विवरण कबीर चरित्र बोध (बोध सागर) पृष्ठ नं. 1870 पर भी है जिसमें बारहवां पंथ गरीबदास जी वाला पंथ स्पष्ट लिखा है।

कबीर साहेब के पंथ में काल द्वार प्रचलित बारह पंथों का विवरण कबीर चरित्र बोध (कबीर सागर) पृष्ठ नं. 1870 से :- (1) नारायण दास जी का पंथ (2) यागौदास (जागू) पंथ (3) सूरत गोपाल पंथ (4) मूल निरंजन पंथ (5) टकसार पंथ (6) भगवान दास (ब्रह्म) पंथ (7) सत्यनामी पंथ (8) कमाली (कमाल का) पंथ (9) राम कबीर पंथ (10) प्रेम धाम (परम धाम) की वाणी पंथ (11) जीवा पंथ (12) गरीबदास पंथ।

कबीर परमश्वेर जी सन् 1518 में सतलोक प्रस्थान के 33 वर्ष पश्चात् सन् 1551 में सात वर्षीय संत दादू साहेब जी को मिले, 209 वर्ष पश्चात् सन् 1727 में दस वर्षीय संत गरीबदास जी को गाँव छुड़ानी, जिला झज्जर(हरियाणा प्रदेश, भारत) में मिले। इसके बाद 292 वर्ष पश्चात् सात वर्षीय संत घीसा दास जी को गाँव खेखड़ा, जिला मेरठ(उतर प्रदेश) में मिले। जो आज भी यादगार साक्षी हैं तथा उपरोक्त संतों द्वारा लिखी अमृत वाणी साक्षी रूप हलफिया ब्यान(एफिडेविट) है कि परमेश्वर कबीर जी काशी वाले जुलाहा धाणक ने स्वयं साक्षात दर्शन दिए तथा अपने सतलोक के भी दर्शन करा करके अपनी समर्थता का प्रमाण दिया।

संत रामपाल दास जी महाराज को परमेश्वर कबीर साहेब जी संवत् 2054 फाल्गुन मास शुक्ल पक्ष एकम (मार्च) 1997 को दिन के दस बजे मिले तथा सारशब्द की वास्तविकता तथा संगत को दान करने का सही समय का संकेत दे कर अर्न्तध्यान हो गए तथा इसको अगले आदेश तक रहस्य युक्त रखने का आदेश दिया।

फोटो कापी कबीर सागर (कबीर वाणी = बोध सागर) पृष्ठ 134 की।

(१३४) कबीरबानी

साखी–बंश थापे सो सार है, जो गुरु दिढकै देहि ।
सांचे दाव बतावही, जीव अपन करि लेहि ॥

धर्मदास उवाच

धर्मदास बिनती अनुसारी । साहब विनती सुनो हमारी ॥
पंथ पंगती कैसे नीर बहाई । सो गुरु साँचे दया कराई ॥

सद्गुरु उवाच

धर्मदास मैं कहौं समुझाई । हमही तुमहि कैसे बनि आई ॥
ऐसे नाद मिले बिंदको जाई । तबही हंस पहुचे वह ठाई ॥
अंश होइहैं उनके कडिहारा । तिनकी छाप चलै संसारा ॥
कोटिन योग युक्ति धरि धावै । विना बिंद नहिं घरको पावै ॥
हम बूंद तुम नाम प्रमाना । नारायण नाम नहिं ठिकाना ॥
वंश विरोध चलिहै पुनि आगे। काल दगा सब पंथहि लागै ॥

वंशप्रकार

प्रथम वंश उत्तम ।१। दूसरा वंश अहंकारी ।२। तीसरा वंश प्रचंड ।३। चौथे वंश बीरहे ।४। पाँचवेंवंशनिद्रा ।५। छटे वंश उदास ।६। सांतवें वंश ज्ञानचतुराई ।७। आठे द्वादश पन्थ विरोध ।८। नौवें वंश पंथ पूजा ।९। दसवें वंश प्रकाश ।१०। ग्यारहवें वंश प्रकट पसारा ।११। बारहवें वंश प्रगट होय उजियारा ।१२। तेरहवें वंश मिटे सकल अँधियारा ।१३। एती दगा कालकी समाई है। तत्त्वबिन्दुकी टेक रह जाई है ॥

इस फोटो कापी में 13 वंशों का विवरण है। जिनमें 12 तो वही है। जो बारह पंथों के मुखिया थे। जिनमें काल का दाव लगा रहा है। 13 वां वंश संत रामपाल दास जी महाराज हैं। जिनसे अध्यात्म का सर्व अज्ञान अंधरा नाश कर दिया गया है।

फोटो कापी कबीर सागर (कबीर वाणी = बोध सागर) पृष्ठ 136 की।

(१३६) कबीरबानी

द्वादश पंथ चलो सो भेद

द्वादश पंथ काल फुरमाना । भूले जीव न जाय ठिकाना ॥
ताते आगम कहि हम राखा । वंश हमार चूरामणि शाखा ॥
प्रथम जगमें जागू भ्रमावै । विना भेद ओ ग्रन्थ चुरावै ॥
दुसरि सुरति गोपालहि होई । अक्षर जो जोग दृढ़ावे सोई ॥
तिसरा मूल निरञ्जन बानी । लोकवेदकी निर्णय ठानी ॥
चौथे पंथ टकसार भेद लै आवै । नीर पवन को सन्धि बतावै ॥
सो ब्रह्म अभिमानी जानी । सो बहुत जीवनकीकरीहै हानी ॥
पांचौ पंथ बीज को लेखा । लोक प्रलोक कहें हममें देखा ॥
पांच तत्व का मर्म दृढ़ावै । सो बीजक शुक्ल ले आवै ॥
छठवाँ पंथ सत्यनामि प्रकाशा । घटके माहीं मार्ग निवासा ॥
सातवां जीव पंथले बोले बानी । भयो प्रतीत मर्म नहिं जानी ॥
आठवे राम कबीर कहावै । सतगुरु भ्रमलै जीव दृढावै ॥
नौमे ज्ञानकी काल दिखावै । भई प्रतीत जीव सुख पावै ॥
दसवें भेद परमधाम की बानी । साख हमारी निर्णय ठानी ॥
साखी भाव प्रेम उपजावै । ब्रह्मज्ञानकी राह चलावै ॥
तिनमें वंश अंश अधिकारा । तिनमेंसो शब्द होय निरधारा ॥
संवत सत्रासै पचहत्तर होई । तादिन प्रेम प्रकटें जग सोई ॥

इस फोटो कापी में प्रथम जागु दास का पंथ लिया है। यह उचित नहीं है। प्रथम पंथ चूड़ामणी जी का है। दूसरा जागू दास।

फोटो कापी कबीर सागर (कबीर वाणी = बोध सागर) पृष्ठ 137 की।

बोधसागर (१३७)

आज्ञा रहै ब्रह्म बोध लावे। कोली चमार सबके घर खावे॥
साखि हमार लै जिव समुझावै। असंख्य जन्ममें ठौर ना पावै॥
बारवै पन्थ प्रगट है बानी। शब्द हमारेकी निर्णय ठानी॥
अस्थिर घरका मरम न पावै। ये बार पंथ हमहीको ध्यावै॥
बारहे पन्थ हमही चलि आवैं। सब पंथ मिट एकही पंथ चलावैं॥
तब लगि बोधो कुरी चमारा। फेरी तुम बोधो राज दर्बारा॥
प्रथम चरन कलजुग नियराना। तब मगहर माडौ मैदाना॥
धर्मरायसे मांडौ बाजी। तब धरि बोधो पंडित काजी॥
बावन वीर कबीरं कहाऊ। भवसागरसों जीव मुकताऊ॥

कलियुगको अंत पठ्यते

ग्रहण परै चौंतीससो वारा। कलियुग लेखा भयो निर्धारा॥
३४००ग्रहणपरैसो लेखाकीन्हा। कलियुग अंतहु पियाना दीन्हा॥
पांच हजार पाँचसौ पांचा। तब ये शब्द होगया सांचा५५०५

किया सोगंद

धर्मदास मोरी लाख दोहाई। मूल शब्द बाहेर न जाई॥
पवित्र ज्ञान तुम जगमों भाखौ। मूलज्ञान गोइ तुम राखौ॥
मूलज्ञान जो बाहेर परही। बिचले पीढीवंशहंस नहिं तरही॥
तेतिस अर्व ज्ञान हम भाखा। मूलज्ञान गोए हम राखा॥
मूलज्ञान तुम तब लगि छपाई। जब लगि द्वादश पंथ मिटाई॥

इस फोटो कापी में लिखा है कि कबीर परमेश्वर ने कहा था कि बारहवें पंथ (गरीबदास वाले पंथ में) आगे चलकर हम ही आऐंगे। सब पंथ मिटाकर एक पंथ चलायेगें। परमेश्वर कबीर जी के प्रतिनिधी सन्त रामपाल जी हैं। कबीर परमेश्वर जी ने कहा था। यह मेरा कथन उस समय सत्य होगा जब कलयुग 5505 वर्ष बीत चुका होगा। पुस्तक ''हिमालय तीर्थ'' जो शंकराचार्य द्वारा लिखी है। इसके पृष्ठ 42 पर कहा है कि आदि शंकराचार्य का जन्म कलयुग के तीन हजार वर्ष बीत जाने पर हुआ था। पुस्तक ''ज्योतिर्मय ज्योतिमठ'' के पृष्ठ 11 पर लिखा है कि आदि शंकराचार्य का जन्म ईसा से 508 वर्ष पूर्व हुआ था। इस प्रकार 2000 सन् का कलयुग 5508 वर्ष बीत चुका है। अधिक ज्ञान के लिए पढ़ें पृष्ठ 103 पर।

फोटो कापी कबीर सागर के पृष्ठ 1870 की।

(१८७०) बोधसागर ८६

कबीर साहबके पंथोंका वृत्तान्त

१-नारायणदासजीका पंथ। २-यागौदासजीकापंथ। ३-सूरत गोपाल पंथ। ४-मूलनिरञ्जनका पंथ। ५-टकसारी पंथ। ६-भगवान्दासजी का पंथ। ७-सत्यनामी पंथ। ८-कमालीपंथ। ९-राम कबीर पंथ। १०-प्रेमधामकी वाणी। ११-जीवा पंथ। १२-गरीबदास पंथ।

यह तो कबीर साहबके बारह पंथ हैं। इनमें कोई २ अच्छे हैं। और कोई निर्बल विश्वासके हैं। और रामकबीरके लोग ठाकुरपूजा करते हैं। और सत्यनामियोंके ध्यान भी विचलित प्रायः हैं। इन बारह पंथोंका यही विवरण है और इन बारह पंथोंके अतिरिक्त कबीर साहबके और पंथ भी हैं।

फोटो कापी कबीर साहेब (बोध सागर=स्वसम वेद बोध) के पृष्ठ 120 की।

(१२०) बोधसागर

निरंजन वचन--चौपाई

धर्मराय अस बिनती ठानी। मैं सेवक दुतिया नहिं मानी॥
ज्ञानी बिनती एक हमारा। सो न करो मोर होय बिगारा॥
पूरुष मोकहँ दीनो राजू। तुमहू देव होय तब काजू॥
बिनती एक करो हो ताता। दृढ़ करि जान्यौ हमरी बाता॥

फोटो कापी कबीर सागर (बोध सागर= स्वसमबेद बोध)
के पृष्ठ 121 की।

स्वसमवेदबोध (१२१)

कहा तुमार जीव नहिं मानै। हमरी दिशभै बाद बखानै॥
मैं दृढ़ फंदा रच्यौ बनाई। जामें जीव परा अरुझाई॥
वेद शास्त्र सुमिरन गुन नाना। पुत्र हैं तीन देव परधाना॥
देवल देव पखान पुजाई। तीरथ व्रत जप तप मन लाई॥
यज्ञ होम अरु नियम अचारा। और अनेक फंद हम डारा॥
जौं ज्ञानी जैहो संसारा। जीव न मानै कहा तुमारा॥

ज्ञानी वचन–चौपाई

ज्ञानी कहै सुनो धर्मराई। काटो फंद जीव ले जाई॥
जेतो फंद रची तुम चारी। सत्यशब्द ले सकल बिडारी॥
जिहि जिवको हम शब्द दृढ़ै हैं। फंद तुम्हार सबै मुक्तैहैं॥

निरंजन वचन चौपाई

सतयुग त्रेता द्वापर माहीं। तीनों युग जिव थोरे जाही॥
चौथा युग जब कलऊ आई। तब तुव शरन जीव बहु जाई॥
ऐसे वचन हारि मोहि दीजै। तब संसार गौन तुम कीजै॥

ज्ञानी वचन चौपाई

अरे काल परपंच पसारा। तीनो युग जीवन दुख डारा॥
बिनती तोरि लीन मैं मानी। मोकहँ ठगे काल अभिमानी॥
चौथा युग जब कलऊ आई। तब हम अपनो अंश पठाई॥
काल फन्द छूटे नर लोई। सकल सृष्टि परवानिक होई॥
घर घर देखो बोध बिचारा। सत्य नाम सब ठौर उचारा॥
पांच हजार पांचसौ पांचा। तब यह बचन होयगा सांचा॥
कलियुग बीत जाय जब येता। सब जिव परम पुरुषपद चेता॥

ये फोटो कापीयाँ कबीर सागर (बोध सागर=स्वसमवेद बोध) के पृष्ठ 120-121 की हैं। इनमें वह वर्णन है जिसमें परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ जी अपने सतलोक वाले पुत्र जोगजीत के रूप में सन्त (ज्ञानी के) वेश में काल निरंजन के इक्कीसवें ब्रह्मण्ड में गए। काल निरंजन ने पूछा जोगजीत

तूं यहां किसलिए आया? यदि कोई संदेश परमात्मा का लाया है तो वह बता? तब परमेश्वर ने कहा था कि परमेश्वर का आदेश सुन! मैं नीचे के लोकों में जाऊँगा तेरी असलियत बताऊंगा कि यह परमात्मा नहीं है तथा कबीर परमेश्वर की महिमा सुनाऊंगा। सतनाम मंत्र जो दो अक्षर का है। उसका जाप करा कर सर्व प्राणियों को सतलोक ले जाऊंगा। यह सुनकर काल निरंजन ने प्रथम तो परमेश्वर को जोगजीत समझ कर मारना चाहा। परन्तु समर्थ शक्ति का कुछ न बिगाड़ सक। इसके विपरित स्वयं ही शक्तिहीन होकर पाताल लोक में जा गिरा, फिर परमेश्वर इसे उसी स्थान पर लाए। तब इसने विनम्र होकर जोगजीत रूप में कबीर परमेश्वर से प्रार्थना की कि ''हे बड़े भाई आप तीन युगों में जीव थोड़े (कम) ले जाना। चौथे युग में जितने चाहो जीव ले जाना। जो जीव तुम्हारा ज्ञान व नाम मंत्र ग्रहण करे व आपका, तथा शेष जो मेरी भक्ति करें वे मेरे, काल ने कहा बचनबद्ध होकर कहिएगा। परमेश्वर ने कहा मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि तीन युगों में सतयुग, त्रेता तथा द्वापर में जीव कम ले जाऊंगा तथा चौथे युग में अधिक जीवों को अपना ज्ञान समझा कर ले जाऊंगा।

जब काल निरंजन ने देखा कि अनुबंध (Agreement) हो गया। उसी समय अपनी असलीयत पर आ गया तथा बोला जोगजीत बेसक नीचे संसार में जाओ। जिस समय कलयुग आवेगा तब तक सर्व प्राणियों को शास्त्र विरूद्ध साधना के ज्ञान से दृढ़ करवा दूंगा। सबको देवी, देवताओं, मन्दिर, मूर्ति पूजाओं पर दृढ़ करवा दूंगा। बारह नकली पंथ कबीर नाम से चलाऊंगा तथा अन्य पंथ चलाऊंगा इस प्रकार सर्व जीवों को भ्रमाऊंगा। जीव तुम्हारी बात पर विश्वास न करके हमारी ओर होकर तुम्हारे साथ वाद-विवाद किया करेंगे। तब परमेश्वर ने कहा है कि मैं कलयुग में अपना अंश अवतार धरती पर भेजूंगा। इस समय सर्व पृथ्वी पर सर्व मानव शरीरधारी प्राणी हमारे ज्ञान को ग्रहण करके उपदेश प्राप्त करेंगे। सबका फंद छूटेगा अर्थात् सब मोक्ष प्राप्त करेंगे। कलयुग में घर-घर में परमेश्वर कबीर जी की महिमा के बोध (ज्ञान) की चर्चा होगी। सर्व मनुष्य सारा दिन व्यर्थ की बातों में व्यतीत न करके परमात्मा के ज्ञान की चर्चा करके पुण्य के भागी होंगे। हमारे भेजे गए अंश अर्थात् धरती पर अवतार (सन्त रामपाल दास जी की ओर संकेत है) से सतनाम (जो दो अक्षर का है जिसे सत्यनाम भी कहते हैं) प्राप्त करके जाप किया करेंगे। यह प्रचार सब ठौर अर्थात् सम्पूर्ण विश्व में होगा। सम्पूर्ण विश्व सतनाम का जाप किया करेगा। मेरा यह वचन (कथन) उस समय सत्य होगा जिस समय कलयुग पचपन सौ पांच वर्ष (5505 वर्ष) बीत चुका होगा। कलयुग इतना समय बीत जाने के पश्चात् सर्व मानव परम पुरूष अर्थात्

परम अक्षर ब्रह्म के पद अर्थात् अमर स्थान को उनकी यथार्थ भक्ति विधी को जानेंगे तथा अपना कल्याण कराऐंगे।

फोटो कापी कबीर सागर (बोध सागर=कबीर चरित्र बोध) के पृष्ठ 1870 की।

(१८७०) बोधसागर ८६

कबीर साहबके पंथोंका वृत्तान्त

१-नारायणदासजीका पंथ। २-यागौदासजीकापंथ। ३-सूरत गोपाल पंथ। ४-मूलनिरञ्जनका पंथ। ५-टकसारी पंथ। ६-भगवान्दासजी का पंथ। ७-सत्यनामी पंथ। ८-कमालीपंथ। ९-राम कबीर पंथ। १०-प्रेमधामकी वाणी। ११-जीवा पंथ। १२-गरीबदास पंथ।

यह तो कबीर साहबके बारह पंथ हैं। इनमें कोई २ अच्छे हैं। और कोई निर्बल विश्वासके हैं। और रामकबीरके लोग ठाकुरपूजा करते हैं। और सत्यनामियोंके ध्यान भी विचलित प्रायः हैं। इन बारह पंथोंका यही विवरण है और इन बारह पंथोंके अतिरिक्त कबीर साहबके और पंथ भी हैं।

फोटो कापी कबीर सागर (कबीर वाणी = बोध सागर) पृष्ठ 136 की।

(१३६) कबीरबानी

द्वादश पंथ चलो सो भेद

द्वादश पंथ काल फुरमाना । भूले जीव न जाय ठिकाना ॥
ताते आगम कहि हम राखा । वंश हमार चूरामणि शाखा ॥
प्रथम जगमें जागू भ्रमावै । विना भेद ओ ग्रन्थ चुरावै ॥
दुसरि सुरति गोपालहि होई । अक्षर जो जोग दृढ़ावे सोई ॥
तिसरा मूल निरञ्जन बानी । लोकवेदकी निर्णय ठानी ॥
चौथे पंथ टकसार भेद लै आवै । नीर पवन को सन्धि बतावै ॥
सो ब्रह्म अभिमानी जानी । सो बहुत जीवनकीकरीहै हानी ॥
पांचौ पंथ बीज को लेखा । लोक प्रलोक कहें हममें देखा ॥
पांच तत्व का मर्म दृढ़ावै । सो बीजक शुक्ल ले आवै ॥
छठवाँ पंथ सत्यनामि प्रकाशा । घटके माहीं मार्ग निवासा ॥
सातवां जीव पंथले बोले बानी । भयो प्रतीत मर्म नहिं जानी ॥
आठवे राम कबीर कहावै । सतगुरु भ्रमलै जीव दृढावै ॥
नौमे ज्ञानकी काल दिखावै । भई प्रतीत जीव सुख पावै ॥
दसवें भेद परमधाम की बानी । साख हमारी निर्णय ठानी ॥
साखी भाव प्रेम उपजावै । ब्रह्मज्ञानकी राह चलावै ॥
तिनमें वंश अंश अधिकारा । तिनमेंसो शब्द होय निरधारा ॥
संवत सत्रासै पचहत्तर होई । तादिन प्रेम प्रकटें जग सोई ॥

इस फोटो कापी में प्रथम जागु दास का पंथ लिया है। यह उचित नहीं है। प्रथम पंथ चूड़ामणी जी का है। दूसरा जागू दास।------- संवत् सत्रासै पचहत्तर होई------- यहाँ से बारहवें पंथ अर्थात् गरीब दास पंथ के विषय में वर्णन है।

फोटो कापी कबीर सागर (कबीर वाणी = बोध सागर) पृष्ठ 137 की।

बोधसागर (१३७)

आज्ञा रहै ब्रह्म बोध लावे। कोली चमार सबके घर खावे॥
साखि हमार लै जिव समुझावै। असंख्य जन्ममें ठौर ना पावै॥
बारवै पन्थ प्रगट है बानी। शब्द हमारेकी निर्णय ठानी॥
अस्थिर घरका मरम न पावै। ये बार पंथ हमहीको ध्यावै॥
बारहे पन्थ हमही चलि आवैं। सब पंथ मिट एकहीपंथ चलावैं॥
तब लगि बोधो कुरी चमारा। फेरी तुम बोधो राज दर्बारा॥
प्रथम चरन कलजुग नियराना। तब मगहर माडौ मैदाना॥
धर्मरायसे मांडौ बाजी। तब धरि बोधो पंडित काजी॥

कलियुगको अंत पठ्यते

ग्रहण परै चौंतीससो वारा। कलियुग लेखा भयो निर्धारा॥
३४००ग्रहणपरैसो लेखाकीन्हा। कलियुग अंतहु पियाना दीन्हा॥
पांच हजार पाँचसौ पांचा। तब ये शब्द होगया सांचा५५०५

किया सोगंद

धर्मदास मोरी लाख दोहाई। मूल शब्द बाहेर न जाई॥
पवित्र ज्ञान तुम जगमों भाखौ। मूलज्ञान गोइ तुम राखौ॥
मूलज्ञान जो बाहेर परही। बिचले पीढीवंशहंस नहिं तरही॥
तेतिस अर्व ज्ञान हम भाखा। मूलज्ञान गोए हम राखा॥
मूलज्ञान तुम तब लगि छपाई। जब लगि द्वादश पंथ मिटाई॥

इस फोटो कापी में लिखा है कि कबीर परमेश्वर ने कहा था कि बारहवें पंथ (गरीबदास वाले पंथ में) आगे चलकर हम ही आऐंगे। सब पंथ मिटाकर एक पंथ चलायेगें। यही प्रमाण कबीर सागर - स्वसम बोध = बोध सागर के पृष्ठ 171 पर भी है। परमेश्वर कबीर जी के प्रतिनिधि सन्त रामपाल दास जी महाराज हैं। कबीर परमेश्वर जी ने कहा था। यह मेरा कथन उस समय सत्य होगा जब कलयुग 5505 वर्ष बीत चुका होगा। पुस्तक ''हिमालय तीर्थ'' जो शंकराचार्य द्वारा लिखी है। इसके पृष्ठ 42 पर कहा है कि आदि शंकराचार्य का जन्म कलयुग के तीन हजार वर्ष बीत जाने पर हुआ था। पुस्तक ''ज्योतिर्मय ज्योतिर्मठ'' के पृष्ठ 11 पर लिखा है कि आदि शंकराचार्य का जन्म ईसा से 508 वर्ष पूर्व हुआ था। इस प्रकार 2000 सन् को कलयुग 5508 वर्ष बीत चुका है। अब गणित की रीति से जानते हैं कि 5505 कलयुग कौन से वर्ष में आता है। सन् 2000 को ईसा जी के जन्म को 2000 वर्ष बीत गए। इससे 508 वर्ष पूर्व आद्य शंकराचार्य जी का जन्म हुआ। पुस्तक ''हिमालय

तीर्थ'' के अनुसार कलयुग के तीन हजार वर्ष बीत जाने पर आद्य शंकराचार्य जी का जन्म होना कहा है। इस प्रकार सन् 2000 को कलयुग (3000+2000+508) 5508 वर्ष बीत चुका है।

''कलयुग का 5505 वर्ष कौन से सन् में पूरा होता है''

सन् 2000 को कलयुग 5508 वर्ष बीत चुका है। सन् 1999 को 5507, सन् 1998 को 5506, सन् 1997 को 5505 वर्ष बीत चुका है। आप जी को याद रहे कि सन्त रामपाल दास जी महाराज ने अपने प्रवचनों में कहा है कि फाल्गुन शुद्धि एकम् विक्रमी संवत् 2054 (सन् 1997) को दिन के 10 बजे परमेश्वर कबीर जी मुझे मिले थे तथा सारनाम को प्रदान करने का उचित समय बताकर तथा सारनाम दान करने का आदेश देकर अन्तरध्यान हो गये थे।

''कबीर परमेश्वर जी द्वारा अवतार धारण का समय''

सत कबीर वचन (अथ स्वस्मवेद की स्फुटवार्ता--चौपाई)

फोटो कापी कबीर सागर (बोध सागर = स्वसमवेदबोध) पृष्ठ 171 की।

दोहा–पांच सहस अरु पांचसौ, जब कलियुग बित जाय।
महापुरुष फरमान तब, जग तारनको आय॥
हिन्दु तुर्क आदिक सबै, जेते जीव जहान।
सत्य नामकी साख गहि, पावैं पद निर्बान॥
यथा सरितगण आपही, मिलैं सिन्धुमें धाय।
सत्य सुकृत के मध्ये तिमि, सबही पंथ समाय॥
जबलगि पूरण होय नहिं, ठीकेको तिथि वार।
कपट चातुरी तबहिलों, स्वसमबेद निरधार॥
सबहिं नारि नर शुद्ध तब, जब टीका दिन अंत।
कपट चातुरी छोड़िके, शरण कबीर गहंत॥
एक अनेक न ह्वै गयो, पुनि अनेक हो एक।
हंस चलै सतलोक सब, सत्यनामकी टेक॥
घर घर बोध विचार हो, दुर्मति दूर बहाय।
कलियुगमें इक है सोई, बरते सहज सुभाय॥
कहा उग्र कह छुद्र हो, हर सबकी भवभीर।
सो समान समदृष्टि है, समरथ सत्य कबीर॥

यह फोटो कापी पवित्र पुस्तक कबीर सागर के अध्याय स्वसमवेद अर्थात् सुक्ष्मवेद = बोधसागर के पृष्ठ 171 की है। परम पुज्य कबीर परमेश्वर जी ने कहा है कि ''जिस समय कलयुग 5500 वर्ष बीत जायेगा उस समय महापुरूष मेरी आज्ञा से विश्व उद्धार के लिए प्रकट होगा। वह महापुरूष ''सतनाम'' का भेदी होगा। वह अधिकारी होगा, उस सत्यनाम (सतनाम) को प्रदान करने का। विश्व के सर्व हिन्दू, मुसलमान व अन्य धर्मों में विभाजित मानव तथा अन्य प्राणी भी जो मानव जीवन प्राप्त करेगें। वे सर्व सत्यनाम (सतनाम) की महिमा से परिचित होकर उस सच्चे नाम को उस महापुरूष (मेरे दास) से प्राप्त करके (पावैं पद निर्बान) पूर्ण मोक्ष पद प्राप्त करेगें। उस मेरे भेजे संत के द्वारा चलाए (सत सुकृत) पवित्र वास्तविक मोक्ष मार्ग के पंथ में सर्व पंथ ऐसे विलीन हो जायेंगे जैसे (सरितगण) सर्व नदियाँ स्वतः ही समुन्द्र में मिलकर एक हो जाती हैं। केवल एक ही पंथ हो जायेगा। जब तक वह निर्धारित समय नहीं आयेगा। तब तक तो मेरे द्वारा कहा गया यह स्वसम वेद निराधार लगेगा। परन्तु जब वह (ठीक का दिन) निर्धारित दिन (आवंत) आएगा। तब सर्व स्त्री-पुरूष कपट त्यागकर शुद्ध होकर कबीर (मुझ सर्वेश्वर कबीर जी) की शरण ग्रहण करेंगे। जो सर्व मानव समाज (अनेकन) अनेकों धर्मों में विभाजित हो चुका है। वह पुनः एक हो जाऐगा। सर्व जीवात्माऐं भक्ति युक्त विकार रहित होकर हंस बन जाऐंगे अर्थात् अविकारी तथा भक्त होकर सत्यलोक में चली जाऐंगी। उस समय घर-घर में परमेश्वर (कबीर परमेश्वर) का निर्मल ज्ञान चर्चा का विषय बनेगा। सर्व मानव दुर्मति त्यागकर नेक नीति अपनायेंगे। इसी कलयुग में जो माया के लिए भाग-दौड़ मची है। वह शांत हो जाऐगी। सर्व मानव शान्त स्वभाव के बन जायेंगे। चाहे कोई उग्र (डाकू, चोर या अन्य कारण से समाज को दुःखी करने वाला) चाहे कोई नीची जाति का हो। सर्व एक होकर रहेंगे। वह महापुरूष अर्थात् तत्वदर्शी संत रूप में प्रकट सर्व के प्रति समान दृष्टि वाला (समर्थ सत्य कबीर) स्वयं सर्वशक्तिमान कबीर है।

नोट :- कबीर सागर स्वसमबेद के पृष्ठ 171 पर लिखे वर्णन में कुछ अक्षर गलत छपे हैं। जैसे छपा है = ठीके को तिथी वार।

इसका शुद्ध इस प्रकार है = ठीक का तिथी वार।

ठीक का अर्थ होता है समय निरधारण करना। जैसे कहा जाता है कि उस व्यक्ति ने रूपये लौटाने की ठीक कब की रखी है, अर्थात् रूपये लौटाने का समय क्या निर्धारित किया है। (टीका दिन अंत) यह अशुद्ध है।

शुद्ध इस प्रकार है = ठीक का दिन आवंत।

''आओ जानें कलयुग कितना बीत चुका है''

शंकराचार्यों के द्वारा रचित पुस्तक ''ज्योतिर्मय ज्योतिर्मठ'' के पृष्ठ 11 पर स्पष्ट है कि श्री आद्य शंकराचार्य का जन्म ईसा से 508 वर्ष पूर्व हुआ। वर्तमान में ईसवीं (सन्) 2000 माने तो शंकराचार्य जी को 2508 वर्ष हो चुके हैं। पुस्तक ''हिमालय तीर्थ'' पृष्ठ 42 पर लिखा है कि कलयुग के 3000 वर्ष बीत जाने पर आद्य शंकराचार्य जी का जन्म हुआ। इस प्रकार सन् 2000 को कलयुग 3000+2508 = 5508 वर्ष बीत चुका है। इस प्रकार गणित की रीती से जानकर अन्य ईसवीं से गणना की जा सकती है। इसी पृष्ठ पर दो समय अंकित किए हैं। लिखा है कि आद्य शंकराचार्य का आविर्भाव (जन्म) काल ईसा पूर्व 508 या 476 वर्ष माना जाता है। पाठकगण यहाँ भ्रमित ना हों जो दूसरा 476 वर्ष समय लिखा है। यह आद्य शंकराचार्य जी का प्रयाण काल (मृत्यु समय) है। क्योंकि शंकराचार्य जी की मृत्यु 32 वर्ष की आयु में हो गई थी। लेखक भी विचलित है। उसे या करके नहीं लिखना चाहिए था।

शंकराचार्यों द्वारा रचित पुस्तक ''हिमालय तीर्थ'' के पृष्ठ 42 पर पुस्तक ''शिव रहस्य'' के एक श्लोक का हवाला देकर लिखा है कि ''कलयुग के तीन हजार वर्ष व्यतीत होने पर शंकर जी स्वयं शंकराचार्य के रूप में शंकर यति रूप में अविर्भूत होगें अर्थात् जन्म लेगें। पुस्तक ''ज्योतिर्मय ज्योतिर्मठ'' के पृष्ठ 11 पर लिखा है कि शंकराचार्य का जन्म 508 वर्ष ईसा पूर्व हुआ। जैसे सन् 2000 को ईसा जी के जन्म को 2000 वर्ष बीत चुके हैं। इस प्रकार 2000+508 = 2508 वर्ष सन् 2000 तक शंकराचार्य के जन्म को हो चुके हैं। अब गणित की रीति से सन् 2000 को कलयुग 3000+2508 = 5508 वर्ष व्यतीत हो चुका है। इस प्रकार कलयुग के समय को गणित की रीति से अन्य सन् से भी जाना जा सकता है।

फोटो कापी ज्योतिर्मय ज्योतिर्मठ पुस्तक के सम्पादक तथा पृष्ठ 11 की।

ज्योतिर्मय ज्योतिर्मठ

जनवरी 2007

संरक्षक

अनन्त श्री विभूषित ज्योतिष्पीठाधीश्वर एवं द्वारका शारदा पीठाधीश्वर
जगद्गुरू शंकराचार्य स्वामी श्री स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज

सम्पादक, लेखक एवं संकलनकर्ता	परामर्श एवं सहयोग	प्रेरणा स्रोत
विष्णु दत्त शर्मा	पं. विपिन बिहारी दत्त 'रामायणी'	श्री सुबुद्धानन्द ब्रह्मचारी जी
अध्यक्ष	श्री पुनीत शर्मा	मुद्रक
आध्यात्मिक उत्थान मण्डल, दिल्ली	श्री आशुतोष जोशी	फाइन प्रिन्ट एण्ड पैक्स

प्रकाशक

अखिल भारतीय आध्यात्मिक उत्थान मण्डल

1/3234 गली नं.-2, राम नगर विस्तार, मण्डोली रोड, शाहदरा, दिल्ली-110032
9810680024, 9212315001, 9212315002, 011-65292892 फैक्स - 011-22570787

आद्यगुरु शंकराचार्य

संक्षिप्त जीवन परिचय

''वैदुष्यं प्रतिभां युक्तिं भाष्यमेतत् प्रभाषते!
सूर्यचन्द्रमसो यावेत्तवत्कीर्विभवेत्तव।।''

विश्व वन्दनीय तपः साधना अलौकिक मेधा, अद्भुत प्रतिभा, क्रांतिकारी रचनात्मकता, समन्वयात्मक प्रज्ञा, असाधारण तर्क कौशल, प्रकाण्ड पांडित्य, अगाध भगवद्भक्ति, उत्कृष्टतम त्याग, गहनगंभीर विचारशीलता आदि गुणों का आगार आदिगुरु शंकराचार्य ने न केवल वैदिक धर्म व दर्शन की युगानुकूल सारगर्भित सरल व्याख्या के साथ भारतीय चेतना को अनुप्राणित किया, अपितु चार मठों के रूप में भारत की चारों दिशाओं में समन्वय, अखण्डता व सांस्कृतिक एकता के चार सुदृढ़ स्तम्भ स्थापित किए।

लगभग 2500 वर्ष पूर्व शंकराचार्य का जन्म चरमराती आस्था के युग में केरल प्रांत में पूर्णानदी के तट पर कालाड़ी ग्राम में धर्मनिष्ठ नम्बूदरी शैव ब्राह्मण श्री शिवगुरु व धर्म परायणा सुभद्रा के घर हुआ। श्री शिवगुरु तैत्तरीय शाखा के यजुर्वेदी थे। शंकराचार्य का जन्म भगवान शंकर के आशीर्वाद से हुआ। अतः उनका नाम शंकर रखा गया। गुरु परम्परागत मठों के अनुसार उनका आर्विभाव काल ई.पू. 508 या 476 वर्ष माना जाता है।

11

यह फोटो कापी शंकराचार्यों के द्वारा रचित पुस्तक ''ज्योतिर्मय ज्योतिर्मठ'' के पृष्ठ 11 की है। जिसमें स्पष्ट है कि श्री आद्यशंकराचार्य का जन्म ईसा से 508 वर्ष पूर्व हुआ। वर्तमान में ईसवीं (सन्) 2000 माने तो शंकराचार्य जी को 2508 वर्ष हो चुके हैं। पुस्तक ''हिमालय तीर्थ'' पृष्ठ 42 पर लिखा है कि कलयुग के 3000 वर्ष बीत जाने पर आद्य शंकराचार्य जी का जन्म हुआ। इस प्रकार सन् 2000 को कलयुग 3000+2508 = 5508 वर्ष बीत चुका है। इस प्रकार गणित की रीती से जानकर अन्य ईसवीं से गणना की जा सकती है। इसी पृष्ठ पर दो समय अंकित किए हैं, लिखा है कि आद्यशंकराचार्य का आविर्भाव(जन्म) काल ईसा पूर्व 508 या 476 वर्ष माना जाता है। पाठकगण यहाँ भ्रमित ना हों जो दूसरा 476 वर्ष समय लिखा है। यह आद्य शंकराचार्य जी का प्रयाण काल (मृत्यु समय) है। क्योंकि शंकराचार्य जी की मृत्यु 32 वर्ष

की आयु में हो गई थी। लेखक भी विचलित है। उसने या करके नहीं लिखना चाहिए था।

फोटो कापी हिमालय तीर्थ पुस्तक के प्रकाशक तथा मुद्रक की व पृष्ठ 42 की।

हिमालय तीर्थ

जे० पी० नम्बूरी

उप मुख्य कार्याधिकारी
श्री बदरीनाथ-केदारनाथ मन्दिर समिति

ट्रेक्स एण्ड टूर्स

कलकाता-७००००८

प्रकाशक :
रन्जु चक्रवर्ती
76A/I, बामाचरण राय रोड
कलकाता-७००००८
दूरभाष : ०३३-२४०६-८५९७

मुद्रक :
गिरि प्रिन्ट सर्विस
कलकाता

42 हिमालय तीर्थ

शंकराचार्य

आदि केदारेश्वर के समक्ष शंकराचार्य जी की दिव्य संगमरमर की मूर्ति है। शिव रहस्य के अनुसार :

कलौगतेत्रिसाहस्त्रे वर्षाणां शंकरो यतिः।
बौद्ध मीमांसक मतं जेतुमाबिर्बभूवह।। (शिव रहस्य)

अर्थात् कलियुग के तीन हजार वर्ष व्यतीत होने पर बौद्ध मीमांसकों के मत पर विजय प्राप्ति के लिए शंकर यति के रूप में अविर्भूत होंगे। शंकराचार्य जी के दर्शनों के उपरान्त भगवान बदरीश्वर के मन्दिर में प्रवेश की परम्परा है।

यह फोटो कापी शंकराचार्यों द्वारा रचित पुस्तक ''हिमालय तीर्थ'' के पृष्ठ 42 की तथा प्रथम पृष्ठ की है। पृष्ठ 42 पर पुस्तक ''शिव रहस्य'' के एक श्लोक का हवाला देकर लिखा है कि ''कलयुग के तीन हजार वर्ष व्यतीत होने पर शंकर जी स्वयं शंकराचार्य के रूप में शंकर यति रूप में अविर्भूत होगें अर्थात् जन्म लेंगे। पुस्तक ''ज्योतिर्मय ज्योतिर्मठ'' के पृष्ठ 11 पर लिखा है कि शंकराचार्य का जन्म 508 वर्ष ईसा पूर्व हुआ। जैसे सन् 2000 में ईसा के जन्म को 2000 वर्ष हो चुके हैं। इस प्रकार 2000+508 = 2508 वर्ष सन् 2000 तक शंकराचार्य के जन्म को हो चुके हैं। अब गणित की रीति से सन् 2000 को कलयुग 3000+2508 = 5508 वर्ष व्यतीत हो चुका है। इस प्रकार कलयुग के समय को गणित की रीति से अन्य सन् से भी जाना जा सकता है।

"उसी दिव्य महापुरूष के विषय में ''नास्त्रेदमस'' की भविष्यवाणी"

(संत रामपाल जी महाराज की अध्यक्षता में हिन्दुस्तान विश्व धर्मगुरु के रूप में प्रतिष्ठित होगा)

फ्रैंच (फ्रांस) देश के नास्त्रेदमस नामक प्रसिद्ध भविष्यवक्ता ने सन् (इ. स.) 1555 में एक हजार श्लोकों में भविष्य की सांकेतिक सत्य भविष्यवाणियां लिखी हैं। सौ-सौ श्लोकों के दस शतक बनाए हैं। जिनमें से अब तक सर्व सिद्ध हो चुकी हैं। हिन्दुस्तान में सत्य हो चुकी भविष्यवाणियों में से :-

1. भारत की प्रथम महिला प्रधानमन्त्री बहुत प्रभावशाली व कुशल होगी (यह संकेत स्व. श्रीमती इन्दिरा गांधी की ओर है) तथा उनकी मृत्यु निकटतम रक्षक द्वारा होना लिखा था, जो सत्य हुई।

2. उसके पश्चात् उन्हीं का पुत्र उनका उत्तराधिकारी होगा और वह बहुत कम समय तक राज्य करेगा तथा आकस्मिक मृत्यु को प्राप्त होगा, जो सत्य सिद्ध हुई। (पूर्व प्रधानमन्त्री स्व. श्री राजीव गांधी जी के विषय में)।

3. संत रामपाल जी महाराज के विषय में भविष्यवाणी नास्त्रेदमस द्वारा जो विस्तार पूर्वक लिखी हैं।

(क) अपनी भविष्यवाणी के शतक पांच के अंत में तथा शतक छः के प्रारम्भ में नास्त्रेदमस जी ने लिखा है कि आज अर्थात् इ.स. (सन्) 1555 से ठीक 450 वर्ष पश्चात् अर्थात् सन् 2006 में एक हिन्दू संत (शायरन) प्रकट होगा अर्थात् सर्व जगत में उसकी चर्चा होगी। उस समय उस हिन्दू धार्मिक संत (शायरन) की आयु 50 व 60 वर्ष के बीच होगी। परमेश्वर ने नास्त्रेदमस को संत रामपाल जी महाराज के अधेड़ उम्र वाले शरीर का साक्षात्कार करवा कर चलचित्र की भांति सारी घटनाओं को दिखाया और समझाया। श्री नास्त्रेदमस जी ने 16 वीं सदी को प्रथम शतक कहा है इस प्रकार पांचवां शतक 20 वीं सदी हुआ। नास्त्रेदमस जी ने कहा है कि वह धार्मिक हिन्दू नेता अर्थात् संत (CHYREN-शायरन) पांचवें शतक के अंत के वर्ष में अर्थात् सन् (ई.सं.) 1999 में घर-घर सत्संग करना त्याग कर अर्थात् चौखटों को लांघ कर बाहर आयेगा तथा अपने अनुयाइयों को शास्त्रविधि अनुसार भक्तिमार्ग बताएगा। उस महान संत के बताए मार्ग से अनुयाइयों को अद्वितीय आध्यात्मिक और भौतिक लाभ होगा। उस तत्वदृष्टा हिन्दू संत के द्वारा बताए शास्त्रप्रमाणित तत्वज्ञान को समझ कर परमात्मा चाहने वाले श्रद्धालु ऐसे अचंभित होगें जैसे कोई गहरी नींद से जागा हो। उस तत्वदृष्टा हिन्दू संत द्वारा सन् 1999 में चलाई आध्यात्मिक क्रांति इ.स. 2006 तक चलेगी। तब

तक बहु संख्या में परमात्मा चाहने वाले भक्त तत्व ज्ञान समझ कर अनुयायी बन कर सुखी हो चुके होंगे। उसके पश्चात् उस स्थान की चौखट से भी बाहर लांघेगा। उसके पश्चात् 2006 से स्वर्ण युग का प्रारम्भ होगा।

नोट : प्रिय पाठकजन कृप्या पढ़ें निम्न भविष्यवाणी जो फ्रांस देश के वासी श्री नास्त्रेदमस ने की थी। जिस के विषय में मद्रास के एक ज्योतिशास्त्री के. एस. कृष्णमूर्ति ने कहा है कि श्री नास्त्रेदमस जी द्वारा सन् 1555 में लिखी भविष्यवाणियों का यथार्थ अनुवाद "सन् 1998 में महाराष्ट्र में एक ज्योतिष शास्त्री करेगा। वह ज्योतिष शास्त्री नास्त्रेदमस की भविष्यवाणियों का सांकेतिक भाषा का स्पष्टीकरण कर उसमें लिखित भविष्य घटनाओं का अर्थ देकर अपना भविष्य ग्रंथ प्रकाशित करेगा।" उसी ज्योतिषशास्त्री द्वारा यथार्थ अनुवादित की गई पुस्तक से अनुवादकर्ता के शब्दों में पढ़ें।

1. (पृष्ठ 32, 33 पर) :-- ठहरो स्वर्ण युग (रामराज्य) आ रहा है। एक अधेड़ उम्र का औदार्य (उदार) अजोड़ महासत्ता अधिकारी भारत ही नहीं सारी पृथ्वी पर स्वर्ण युग लाएगा और अपने सनातन धर्म का पुनरूत्थान करके यथार्थ भक्ति मार्ग बताकर सर्वश्रेष्ठ हिन्दू राष्ट्र बनाएगा। तत्पश्चात् ब्रह्मदेश पाकिस्तान, बांगला, श्रीलंका, नेपाल, तिब्बत (तिबेत), अफगानिस्तान, मलाया आदि देशों में वही सार्वभौम धार्मिक नेता होगा। सत्ताधारी चांडाल चौकड़ियों पर उसकी सत्ता होगी। वह नेता (शायरन) दुनिया को अधाप मालूम होना है, बस देखते रहो।

2. (पृष्ठ 40 पर फिर लिखा है) :-- ठहरो रामराज्य (स्वर्ण युग) आ रहा है। जून इ.स. 1999 से इ.स. 2006 तक चलने वाली उत्क्रांति में स्वर्णयुग का उत्थान होगा। हिन्दुस्तान में उदयन होने वाला तारणहार शायरन दुनिया में सुख समृद्धि व शान्ति प्रदान करेगा। नास्त्रेदमस जी ने निःसंदेह कहा है कि प्रकट होने वाला शायरन (CHYREN) अभी ज्ञात नहीं है लेकिन वह क्रिश्चन अथवा मुस्लमान हरगिज नहीं है। वह हिन्दू ही होगा और मैं नास्त्रेदमस उसका अभी छाती ठोक कर गर्व करता हूं क्योंकि उस दिव्य स्वतंत्र सूर्य शायरन का उदय होते ही सारे पहले वाले विद्वान कहलाने वाले महान नेताओं को निष्प्रभ होकर उसके सामने नम्र बनना पड़ेगा। वह हिन्दुस्तानी महान तत्वदृष्टा संत सभी को अभूतपूर्व राज्य प्रदान करेगा। वह समान कायदा, समान नियम बनाएगा, स्त्री-पुरुष में, अमीर-गरीब में, जाति और धर्म में कोई भेद-भाव नहीं रखेगा, किसी पर अन्याय नहीं होने देगा। उस तत्व दर्शी संत का सर्व जनता विशेष सम्मान करेगी। माता-पिता तो आदरणीय होते ही हैं परन्तु अध्यात्मिकता व पवित्रता के आधार पर उस शायरन (तत्वदर्शी संत) का माता-पिता से भी अलग श्रद्धा स्थान होगा। नास्त्रेदमस

स्वयं ज्यू वंश का था तथा फ्रांस देश का नागरिक था। उसने क्रिश्चन धर्म स्वीकार कर रखा था, फिर भी नास्त्रेदमस ने निःसंदेह कहा है कि प्रगट होने वाला शायरन केवल हिन्दू ही होगा।

3. (पृष्ठ 41 पर) :-- सभी को समान कायदा, नियम, अनुशासन पालन करवा कर सत्य पथ पर लाएगा। मैं (नास्त्रेदमस) एक बात निर्विवाद सिद्ध करता हूं वह शायरन (धार्मिक नेता) नया ज्ञान आविष्कार करेगा। वह सत्य मार्ग दर्शन करवाने वाला तारणहार एशिया खण्ड में जिस देश के नाम महासागर (हिन्द महासागर) है। उसी नाम वाले (हिन्दुस्तान) देश में जन्म लेगा। वह ना क्रिश्चन, ना मुस्लमान, ना ज्यू होगा वह निःसंदेह हिन्दू होगा। अन्य भूतपूर्व धार्मिक नेताओं से महतर बुद्धिमान होगा और अजिंकय होगा। (नास्त्रेदमस भविष्यवाणी के शतक 6 श्लोक 70 में महत्वपूर्ण संकेत संदेश बता रहा है) उस से सभी प्रेम करेगें। उसका बोल बाला रहेगा। उसका भय भी रहेगा। कोई भी अपकृत्य करना नहीं सोचेगा। उसका नाम व कीर्ती त्रिखण्ड में गुंजेगी अर्थात् आसमानों के पार उसकी महिमा का बोल-बाला होगा। अब तक अज्ञान निंद्रा में गाढ़े सोए हुए समाज को तत्व ज्ञान की रोशनी से जगाएगा। सर्व मानव समाज हड़बड़ा कर जागेगा। उसके तत्व ज्ञान के आधार से भक्ति साधना करेगा। सर्व समाज से सत्य साधना करवाएगा। जिस कारण सर्व साधकों को अपने आदि अनादि स्थान (सत्यलोक) में अपने पूर्वजों के पास ले जा कर वहां स्थाई स्थान प्राप्त करवाएगा (वारिस बनाएगा)। इस क्रुर भूमि (काल लोक) से मुक्त करवाएगा, यह शब्द बोल उठेगा।

4. (पृष्ठ 42, 43) :-- यह हिंसक क्रुरचन्द्र (महाकाल) कौन है, कहाँ है, यह बात शायरन (तत्वदर्शी संत) ही बताएगा। उस क्रुरचन्द्र से वह CHYREN - शायरन ही मुक्त करवाएगा। शायरन (तत्वदर्शी संत) के कारकिर्द में इस भूतल की पवित्र भूमि पर (हिन्दुस्तान में) स्वर्णयुग का अवतरण होगा, फिर वह पूरे विश्व में फैलेगा। उस विश्व नेता और उसके सद्गुणों की, उसके बाद भी महिमा गाई जाएगी। उसके मन की शालीनता, विनम्रता, उदारता का इतना रेल-पेल बोल बाला होगा कि इससे पहले नमूद किए हुए शतक 6 श्लोक 70 के आखिरी पंक्ति में किया हुआ उल्लेख कि अपना शब्द खुद ही बोल उठता है और शायरन कि ही जुबान बोल रही है कि "शायरन अपने बारे में बस तीन ही शब्द बोलता है " एक विजयी ज्ञाता" इसके साथ और विशेषण न चिपकाएं मूझे मंजूर नहीं होगा। (यह पृष्ठ 42 वाला 4 उल्लेख वाणी शतक 6 श्लोक 71 है) हिन्दू शायरन अपने ज्ञान से दैदिप्यमान उतुंग ऊंचा स्वरूप का विधान (तत्वज्ञान) फिर से बिना शर्त उजागर करवाएगा। (Chyren will be chief of the world, loved feared and unchallanged) और

मानवी संस्कृती निर्धोक संवारेगा, इसमें संदेह नहीं। अभी किसी को मालूम नहीं, लेकिन अपने समय पर जैसे नरसिंह अचानक प्रगट हुआ था ऐसे ही वह विश्व महान नेता (Great Chyren) अपने तर्कशुद्ध, अचूक आध्यात्मिक ज्ञान और भक्ति तेज से विख्यात होगा। मैं (नास्त्रेदमस) अचंभित हूँ। मैं ना उसके देश (जहां से अवतरित होगा अर्थात् सतलोक देश) को तथा ना उसको जानता हूँ, मैं उसे सामने देख भी रहा हूँ, उसकी महिमा का शब्द बद्ध में कोई मिसाल नहीं कर सकता। बस उसे Great Chyren (महान धार्मिक नेता) कहता हूँ अपने धर्म बंधुओं की सद्द कालीन समस्या से दयनीय अवस्था से बैचेन होता हुआ स्वतंत्र ज्ञान सूर्य का उदय करता हुआ अपने भक्ति तेज से जग का तारणहार 5वें शतक (20 वीं सदी के अंतिम वर्ष में) के अंत में ई. स. 1999 अधेड़ उम्र का विश्व का महान नेता जैसे तेजस्वी सिंह मानव (Great Chyren) उदिवग्न अवस्था से चोखट लांघता हुआ मेरे (नास्त्रेदमस के) मन का भेद ले रहा है और मैं उसका स्वागत करता हुआ आश्चर्य चकित हो रहा हूँ, उदास भी हो रहा हूं, क्योंकि उसका दुनिया को ज्ञान न होने से मेरा शायरन (तत्वदर्शी संत) उपेक्षा का पात्र बन रहा है।

मेरी (नास्त्रेदमस की) चितभेदक भविष्यवाणी की और उस वैश्विक सिंह मानव की उपेक्षा ना करें। उसके प्रकट होने पर तथा उसके तेजस्वी तत्व ज्ञान रूपी सूर्य उदय होने से आदर्शवादी श्रेष्ठ व्यक्तियों का पुनर्उत्थान तथा स्वर्ण युग का प्रभात शतक 6 में आज ई.स. 1555 से 450 वर्ष बाद अर्थात् 2006 में (1555+450=2005 के पश्चात् अर्थात् 2006 में) शुरूआत होगी। इस कृतार्थ शुरूवात का मैं (नास्त्रेदमस) दृष्टा हो रहा हूँ।

5. (पृष्ठ 44, 45, 46) :-- (नास्त्रेदमस शतक 1 श्लोक 50 में फिर प्रमाणित कर रहा है) तीन ओर से सागर से घिरे द्वीप (हिन्दुस्तान देश) में उस महान संत का जन्म होगा उस समय तत्व ज्ञान के अभाव से अज्ञान अंधेरा होगा। नैतिकता का पतन होकर हाहाकार मचा होगा। वह शायरन (धार्मिक नेता) गुरुवर अर्थात् गुरुजी को वर (श्रेष्ठ) मान कर अपनी साधना करेगा तथा करवाएगा। वह धार्मिक नेता (तत्वदर्शी सन्त) अपने धर्म बल अर्थात् भक्ति की शक्ति से तथा तत्वज्ञान द्वारा सर्व राष्ट्रों को नतमस्तक करेगा। एशिया में उसे रोकना अर्थात् उस के प्रचार में बाधा करना पागलपन होगा। (शतक 1 श्लोक 50)

(नोटः- नास्त्रेदमस की भविष्यवाणी फ्रांस देश की भाषा में लिखी गई थी। बाद में एक पाल ब्रन्टन नामक अंग्रेज ने इस नास्त्रेदमस की भविष्यवाणी ''सैन्चयुरी ग्रंथ'' को फ्रांस में कुछ वर्ष रह कर समझा, फिर इंग्लिश भाषा में लिखा। उसने गुरुवर शब्द को (बृहस्पति) गुरुवार अर्थात् थ्रस्डे जान कर

लिख दिया की वह अपनी पूजा का आधार बृहस्पत्तिवार को बनाएगा। वास्तव में गुरुवर शब्द है जिसका अर्थ है सर्व गुरुओं में जो एक तत्वज्ञाता श्रेष्ठ है तथा गुरु को मुख्य मानकर साधना करना होता है। वेद भाषा में बृहस्पति का भावार्थ सर्वोच्च स्वामी अर्थात् परमेश्वर, दूसरा अर्थ बृहस्पति का जगतगुरु भी होता है। जगत गुरु तथा परमेश्वर भी बृहस्पति का बोध है।)

वह अधेड़ उम्र में तत्वज्ञान का ज्ञाता तथा ज्ञेय होकर त्रिखंड में कीर्ति मान होगा। मुझ (नास्त्रेदमस) को उसका नया उपाय साधना मंत्र ऐसा जालिम मालूम हो रहा है जैसे सर्प को वश करने वाला गारडू मंत्र से महाविषैले सर्प को वश कर लेता है। वह नया उपाय, नया कायदा बनाने वाला तत्ववेता दुनिया के सामने उजागर होगा उसी को मैं (नास्त्रेदमस) अचंभित होकर ''ग्रेट शायरन'' बता रहा हूं उसके ज्ञान के दिव्य तेज के प्रभाव से उस द्वीपकल्प (भारतवर्ष) में आक्रामक तूफान, खलबली मचेगी अर्थात् अज्ञानी संतों द्वारा विद्रोह किया जाएगा। उसको शांत करने का उपाय भी उसी को मालूम होगा। जैसे जालिम सर्पनी को वश किया जाता है। वह सिंह के समान शक्तिशाली व तेजपूंज व्यक्तित्व का होगा। यह मैं नास्त्रेदमस स्पष्ट शब्दों में बता रहा हूं कि वह कुण्डलीनी शक्ति धारण किए हुए है। आगे स्पष्ट शब्द यह है कि जिस समय वह शायरन जिस महासागर में द्वीपकल्प है उसी देश के नाम पर महासागर का भी नाम है (हिन्दमहासागर)। विशेषता यह होगी की उस देश की भुजंग सर्पिनी शक्ति (कुण्डलनी शक्ति) का पूर्ण परिचित **True Master** होगा। वह **Chyren**(महान धार्मिक नेता) उदारमत वाला, कृपालु,दयालु, दैदिप्यमान, सनातन साम्राज्य अधिकारी, आदि पुरूष (सत्यपुरूष) का अनुयाई होगा। उसकी सत्ता सार्वभौम होगी उसकी महिमा, उपाय गुरु श्रद्धा, गुरु भक्ति अर्थात् गुरु बिना कोई साधना सफल नहीं होती, इस सिद्धांत को दृढ़ करेगा। तत्वज्ञान का सत्संग करके प्रथम अज्ञान निंद्रा में सोए अपने धर्म बंधुओं (हिन्दुओं) को जागृत करके अंधविश्वास के आधार पर साधना कर रहे श्रद्धालुओं को शास्त्रविधि रहित साधना का बुरका फाड़ कर गूढ़ गहरे ज्ञान (तत्वज्ञान) का प्रकाश करेगा। अपने सनातन धर्म का पालन करवा कर समृद्ध शांति का अधिकारी बनाएगा। तत् पश्चात् उसका तत्वज्ञान सम्पूर्ण विश्व में फैलेगा, उस (महान तत्वदर्शी संत) के ज्ञान की कोई भी बराबरी नहीं कर सकेगा अर्थात् उसका कोई भी सानी नहीं होगा। उसके गूढ़ ज्ञान (तत्वज्ञान) के सामने सूर्य का तेज भी कम पड़ेगा। इसलिए मैं (नास्त्रेदमस) वैश्विक सिंह महामानव इतना महान होगा कि मैं उसकी महिमा को शब्दों में नहीं बांध पांउगा। मैं (नास्त्रेदमस) उस ग्रेट शायरन को देख रहा हूँ।

उपरोक्त विवरण का भावार्थ है कि "उस विश्व नेता को 50 वर्ष की आयु में तत्वज्ञान शास्त्रों में प्रमाणित होगा अर्थात् वह 50 वर्ष की आयु में सन् 2001 में सर्व धर्मो के शास्त्रों को पढ़ कर उनका ज्ञाता (तत्वज्ञानी) होगा तथा उसके पश्चात् उस तत्वज्ञान का ज्ञेय (जानने योग्य परमेश्वर का ज्ञान अन्य को प्रदान करने वाला) होगा तथा उसका अध्यात्मिक जन्म अमावस्या को होगा। उस समय वह प्रौढ़ होगा तथा जब वह प्रसिद्ध होगा तब उसकी आयु पचास से साठ साल के मध्य होगी।"

6. (पृष्ठ 46, 47) :-- नास्त्रेदमस कहता है कि निःसंदेह विश्व में श्रेष्ठ तत्वज्ञाता (ग्रेट शायरन) के विषय में मेरी भविष्यवाणी के शब्दा शब्द को किसी नेताओं पर जोड़ कर तर्क-विर्तक करके देखेगें तो कोई भी खरा नहीं उतरेगा। मैं (नास्त्रेदमस) छाती ठोक कर शब्दा शब्द कह रहा हूं मेरा शायरन का कर्तृत्व और उसका गूढ़-गहरा ज्ञान (तत्वज्ञान) ही सर्व की खाल उतारेगा, बस 2006 साल आने दो। इस विधान का एक-एक शब्द खरा-खरा समर्थन शायरन ही देगा।

7. (पृष्ट 52) :-- नास्त्रेदमस ने अपनी भविष्यवाणी में कहा है कि 21 वीं सदी के प्रारम्भ में दुनिया के क्षितिज पर 'शायरन' का उदय होगा। जो भी बदलाव होगा वह मेरी (नास्त्रेदमस की) इच्छा से नहीं बल्कि शायरन की आज्ञा से नियती की इच्छा से सारा बदलाव होगा ही होगा। उस में से नया बदलाव मतलब हिन्दुस्तान सर्वश्रेष्ठ राष्ट्र होगा। कई सदियों से ना देखा ऐसा हिन्दुओं का सुख साम्राज्य दृष्टिगोचर होगा। उस देश में पैदा हुआ धार्मिक संत ही तत्वदृष्टा तथा जग का तारणहार, जगज्जेता होगा। एशिया खण्डों में रामायण, महाभारत आदि का ज्ञान जो हिन्दुओं में प्रचलित है उससे भी भिन्न आगे का ज्ञान उस तत्वदर्शी संत का होगा। वह सतपुरुष का अनुयाई होगा। वह एक अद्वितीय संत होगा।

8. (पृष्ठ 74) :-- बहुत सारे संत नेता आएगें और जाएगें, सर्व परमात्मा के द्रोही तथा अभिमानी होगें। मुझे (नास्त्रेदमस को) आंतरिक साक्षात्कार उस शायरन का हुआ है।

☆ वह परम सन्त भारत के जिस प्रान्त में जन्म लेगा उसका नाम पाँच नदियों के नाम पर होगा अर्थात् ''पंजाब प्रांत'' (सन्त रामपाल दास जी महाराज का जन्म 8 सितम्बर 1951 में हुआ। उस समय हरियाणा तथा पंजाब एक ही प्रांत था। 1 नवम्बर 1966 को हरियाणा प्रांत पंजाब से भिन्न हुआ है।

☆ नास्त्रेदमस ने यहां तक कहा है कि उस महान संत की माता कुल तीन बहनें होंगी। (सन्त रामपाल जी महाराज की माता जी तीन बहनें थी। दो का देहांत हो चुका है। सन्त की माता आज सन् 2013 तक जीवित है।)

✯ नास्त्रेदमस ने यह भी लिखा है कि जहां वह सन्त आश्रम बनाएगा उसके पास से निकले मार्गों को विशाल किया जाएगा।

हिन्दुस्तान का हिन्दू संत आगामी अंधकारी (भक्तिज्ञान के अभाव से अंधे) प्रलयकारी (स्वार्थ वश भाई-भाई को मार रहा है, बेटा-बाप से विमुख है, हिन्दू-हिन्दू का शत्रु, मुस्लमान-मुस्लमान का दुश्मन बना है) धुंधुकारी (माया की दौड़ में बेसब्रे समाज) जगत को नया प्रकाश देने वाला सर्वश्रेष्ठ जगज्जेता धार्मिक विश्व नेता की अपनी उदासी के सिवा कोई अभिलाषा नहीं होगी अर्थात् मानव उद्धार के लिए चिन्ता के अतिरिक्त कुछ भी स्वार्थ नहीं होगा। ना अभिमान होगा, यह मेरी भविष्यवाणी की गौरव की बात होगी की वास्तव में वह तत्वदर्शी संत संसार में अवश्य प्रसिद्ध होगा। उसके द्वारा बताया ज्ञान सदियों तक छाया रहेगा। वह संत आधुनिक वैज्ञानिकों की आँखें चकाचौंध करेगा ऐसे आध्यात्मिक चमत्कार करेगा कि वैज्ञानिक भी आश्चर्य में पड़ जायेंगे। उसका सर्व ज्ञान शास्त्र प्रमाणित होगा। मैं (नास्त्रेदमस) कहता हूँ कि बुद्धिवादी व्यक्ति उसकी उपेक्षा न करें। उसे छोटा ज्ञानदीप न समझें, उस तत्ववेता महामानव (शायरन को) सिहांसनस्थ करके (आसन पर बैठाकर) उसको आराध्य देव मानकर पूजा करें। वह आदि पुरुष (सतपुरुष) का अनुयाई दुनिया का तारणहार होगा।

विशेष :- भविष्यवक्ता नास्त्रेदमस की भविष्यवाणी को ठीक से न समझकर व्यर्थ की अटकल बाजियाँ लगाई गई हैं। उदाहरण के लिए, नास्त्रेदमस की भविष्यवाणी :- Century=10 Quatrain no. 75 . Long awaited he will never return. In Europe he will appear in Asia. And he will grow over all kings of east. One of the league issued from the great Hermes.

विशेष :- "Hermes" = हरमेश :- यह युनानी भाषा (Greek Language) का शब्द है। जिसका अर्थ है पैगम्बर (Person sent by God himself)

Century No.1 Quatrain No. 50 . Of the aquatic. Triplicity there will be born. His fame, praise, rule and power will grow. By land and sea a tempest to the east.

Century no. 10 Quatrain no. 96 . The religion of the name of seas will win out.

Century no. 6 Quatrain no. 27. within the isles of five rivers to one.

Century no. 5 Quatrain no. 53 . The law of the sun and of venus in strife.

★ Appropriating the spirit of prophecy. The law of the great messiah will hold through the sun.

Century no. 1 Quatrain no. 76 . With a name so wild will he be brought forth.

★ That the three sisters will have the name for destiny. That he will lead a

great people by tongue and deed. More than other will he have fame and renown. Grow over all the kings of the east.

1. वह महान सायरन उस देश में उत्पन्न होगा जो तीन ओर से सागर से घिरा होगा। (भारत ही एक मात्र ऐसा देश हो जो तीन ओर से समुद्र से घिरा है।)

2. उस देश का नाम एक समुद्र के नाम पर होगा। हिन्द महासागर, (हिन्दुस्तान)

3. वह महापुरूष (Chyran Selin) हिन्दुस्तान के उस क्षेत्र में जन्म लेगा जिसमें पाँच नदियाँ (रावी, सतलुज, जेहलम, व्यास, चिनाब) बहती हैं।

विवेचन :- इस आधार से एक सज्जन ने अपना मत व्यक्त किया है कि श्री गुरु नानक जी के विषय में उपरोक्त भविष्यवाणी है। क्योंकि श्री नानक जी का जन्म पंजाब प्रान्त में हुआ था।

विचार करें उस सज्जन को ध्यान नहीं रहा कि श्री नास्त्रेदमस ने यह भविष्यवाणी सन् 1555 में लिखी थी और श्री नानक जी का जीवन काल सन् 1469 से सन् 1539 तक रहा था। यह भविष्यवाणी है, भूतवाणी नहीं है। इसलिए उस सज्जन का तर्क गलत है। सन्त रामपाल दास जी नास्त्रेदमस के उचित पात्र हैं।

4. सैन्चरी नं. 1 प्रश्न नं. 76 में स्पष्ट किया है कि उस महान सायरन की माता जी तीन बहनें होंगी। (संत रामपाल दास जी महाराज की माता जी तीन बहनें थी।)

5. उस महान संत के दो पुत्र तथा दो पुत्री होंगी।

(संत रामपाल दास जी महाराज के दो पुत्र तथा दो पुत्री संतान रूप में हैं।)

"नास्त्रेदमस के समर्थन में अन्य भविष्यवक्ताओं की भविष्यवाणियाँ"

1. इंग्लैण्ड के ज्योतिषी 'कीरो' ने सन् 1925 में लिखी पुस्तक में भविष्यवाणी की है, बीसवीं सदी अर्थात् सन् 2000 ई. के उत्तरार्द्ध में (सन् 1950 के पश्चात्) उत्पन्न सन्त ही विश्व में 'एक नई सभ्यता' लाएगा जो सम्पूर्ण विश्व में फैल जावेगी। भारत का वह एक व्यक्ति सारे संसार में ज्ञानक्रांति ला देगा।

2. भविष्यवक्ता ''श्री वेजीलेटिन'' के अनुसार 20 वीं सदी के उत्तरार्द्ध में, विश्व में आपसी प्रेम का अभाव, मानवता का ह्रास, माया संग्रह की दौड़, लूट व राज नेताओं का अन्यायी हो जाना आदि-२ बहुत से उत्पात देखने को मिलेगें। परन्तु भारत से उत्पन्न हुई शांति भ्रातृत्व भाव पर आधारित नई सभ्यता, संसार में-देश, प्रांत और जाति की सीमायें तोड़कर विश्वभर में अमन

व चैन उत्पन्न करेगी।

3. अमेरिका की महिला भविष्यवक्ता ''जीन डिक्सन'' के अनुसार 20 वीं सदी के अंत से पहले विश्व में एक घोर हाहाकार तथा मानवता का संहार होगा। वैचारिक युद्ध के बाद आध्यात्मिकता पर आधारित एक नई सभ्यता सम्भवतः भारत के ग्रामीण परिवार के व्यक्ति के नेतृत्व में जमेगी और संसार से युद्ध को सदा-सदा के लिए विदा कर देगी।

4. अमेरिका के ''श्री एण्डरसन'' के अनुसार 20 वीं सदी के अन्त से पहले या 21 वीं सदी के प्रथम दशक में विश्व में असभ्यता का नंगा तांडव होगा। इस बीच भारत के एक देहात का एक धार्मिक व्यक्ति, एक मानव, एक भाषा और एक झण्डा की रूपरेखा का संविधान बनाकर संसार को सदाचार, उदारता, मानवीय सेवा व प्यार का सबक देगा। यह मसीहा सन् 1999 तक विश्व में आगे आने वाले हजारों वर्षों के लिए धर्म व सुख-शांति भर देगा।

5. हॉलैण्ड के भविष्यदृष्टा ''श्री गेरार्ड क्राइसे'' के अनुसार 20 वीं सदी के अन्त से पहले या 21 वीं सदी के प्रथम दशक में भयंकर युद्ध के कारण कई देशों का अस्तित्व ही मिट जावेगा। परन्तु भारत का एक महापुरूष सम्पूर्ण विश्व को मानवता के एक सूत्र में बांध देगा व हिंसा, फूट-दुराचार, कपट आदि संसार से सदा के लिए मिटा देगा।

6. अमेरिका के भविष्वक्ता ''श्री चार्ल्स क्लार्क'' के अनुसार 20 वीं सदी के अन्त से पहले एक देश विज्ञान की उन्नति में सब देशों को पछाड़ देगा परन्तु भारत की प्रतिष्ठा विशेषकर इसके धर्म और दर्शन से होगी, जिसे पूरा विश्व अपना लेगा, यह धार्मिक क्रांति 21 वीं सदी के प्रथम दशक में सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित करेगी और मानव को आध्यात्मिकता पर विवश कर देगी।

7. हंगरी की महिला ज्योतिषी ''बोरिस्का'' के अनुसार सन् 2000 ई. से पहले-पहले उग्र परिस्थितियों हत्या और लूटमार के बीच ही मानवीय सद्गुणों का विकास एक भारतीय फरिश्ते के द्वारा भौतिकवाद से सफल संघर्ष के फलस्वरूप होगा, जो चिरस्थाई रहेगा, इस आध्यात्मिक व्यक्ति के बड़ी संख्या में छोटे-छोटे लोग ही अनुयायी बनकर भौतिकवाद को आध्यात्मिकता में बदल देगें।

8. फ्रांस के डॉ. जूलर्वन के अनुसार सन् 1990 के बाद योरोपीय देश भारत की धार्मिक सभ्यता की ओर तेजी से झुकेंगे। सन् 2000 तक विश्व की आबादी 640 करोड़ के आस-पास होगी। भारत से उठी ज्ञान की धार्मिक क्रांति नास्तिकता का नाश करके आँधी तूफान की तरह सम्पूर्ण विश्व को ढक लेगी। उस भारतीय महान आध्यात्मिक व्यक्ति के अनुयाई देखते-देखते एक संस्था के रूप में 'आत्मशक्ति' से सम्पूर्ण विश्व पर प्रभाव जमा लेंगे।

9. फ्रांस के ''नास्त्रेदमस'' के अनुसार विश्व भर में सैनिक क्रांतियों के बाद थोड़े से ही अच्छे लोग संसार को अच्छा बनाऐंगे। जिनका महान् धर्मनिष्ठ विश्वविख्यात नेता 20 वीं सदी के अन्त और 21 वीं सदी की शुरूआत में किसी पूर्वी देश से जन्म लेकर भ्रातृवृत्ति व सौजन्यता द्वारा सारे विश्व को एकता के सूत्र में बांध देगा। (नास्त्रेदमस शतक 1 श्लोक 50 में प्रमाणित कर रहा है) तीन ओर से सागर से घिरे द्वीप में उस महान संत का जन्म होगा। उस समय तत्व ज्ञान के अभाव से अज्ञान अंधेरा होगा। नैतिकता का पतन होकर, हाहाकार मचा होगा। वह शायरन (धार्मिक नेता) गुरुवर अर्थात् गुरुजी को वर (श्रेष्ठ) मान कर अपनी साधना करेगा तथा करवाएगा। वह धार्मिक नेता (तत्वदर्शी सन्त) अपने धर्म बल अर्थात् भक्ति की शक्ति से तथा तत्वज्ञान द्वारा सर्व राष्ट्रों को नतमस्तक करेगा। एशिया में उसे रोकना अर्थात् उस के प्रचार में बाधा करना पागलपन होगा। (शतक 1 श्लोक 50) (सेंचुरी-I, कन्ना-50)

10. इजरायल के प्रो.हरार के अनुसार भारत देश का एक दिव्य महापुरूष मानवतावादी विचारों से सन् 2000 ई. से पहले-पहले आध्यात्मिक क्रांति की जड़े मजबूत कर लेगा व सारे विश्व को उनके विचार सुनने को बाध्य होना पड़ेगा। भारत के अधिकतर राज्यों में राष्ट्रपति शासन होगा, पर बाद में नेतृत्व धर्मनिष्ठ वीर लोगों पर होगा। जो एक धार्मिक संगठन के आश्रित होगें।

11. नार्वे के श्री आनन्दाचार्य की भविष्यवाणी के अनुसार, सन् 1998 के बाद एक शक्तिशाली धार्मिक संस्था भारत में प्रकाश में आवेगी, जिसके स्वामी एक गृहस्थ व्यक्ति की आचार संहिता का पालन सम्पूर्ण विश्व करेगा। धीरे-धीरे भारत औद्योगिक, धार्मिक और आर्थिक दृष्टि से विश्व का नेतृत्व करेगा और उसका विज्ञान (आध्यात्मिक तत्वज्ञान) ही पूरे विश्व को मान्य होगा।

उपरोक्त भविष्यवाणियों के अनुसार ही आज विश्व में घटनाएँ घट रही हैं। युग परिवर्तन प्रकृति का अटल सिद्धांत है। वैदिक दर्शन के अनुसार चार युगों- सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर और कलयुग की व्यवस्था है। जब पृथ्वी पर पापियों का एक छत्र साम्राज्य हो जाता है तब भगवान पृथ्वी पर मानव रूप में प्रकट होता है। मानवता के इस पूर्ण विकास का काम अनादि काल से भारत ही करता आया है। इसी पुण्यभूमि पर अवतारों का अवतरण अनादि काल से होता आ रहा है।

लेकिन कैसी विडम्बना है कि ऋषि-मुनियों महापुरूषों व अवतारों के जीवन काल में उस समय के शासन व्यवस्था व जनता ने उनकी दिव्य बातों

व आदर्शों पर ध्यान नहीं दिया और उनके अन्तर्ध्यान होने पर दूगने उत्साह से उनकी पूजा शुरू कर पूजने लग गये। यह भी एक विडम्बना कि हम जीवंत और समय रहते उनकी नहीं मानते अपितु उनका विरोध व अपमान ही करते रहे हैं। कुछ स्वार्थी तत्व जनता को भ्रमित करके परम सन्त को बदनाम करके बाधक बनते हैं। यह उक्ति हर युग में चरितार्थ होती आई है, और आज भी हो रही है।

जो महापुरूष हजारों कष्टों को सहन कर अपनी तपस्या व सत्य पर अडिग रहता है उनकी बात असत्य नहीं हो सकती। सत्य पर अडिग रहते हुए ईसा मसीह ने अपने शरीर में कीलों की भयंकर पीड़ा को झेला, सुकरात ने जहर का प्याला पिया, श्री राम तथा श्री कृष्ण जी को भी यातनाओं का शिकार होना पड़ा।

सज्जनों ! यदि आज के करोड़ों मानव उस परमतत्व के ज्ञाता सन्त को ढूंढकर, स्वीकार कर, उनके बताए पथानुसार, अपनी जीवन शैली को सुधार लेंगे तो पूरे विश्व में सद्भावना, आपसी भाई-चारा, दया तथा सद्भक्ति का वातावर्ण हो जाएगा। वर्तमान का मानव बुद्धिजीवी है इसलिए उस सन्त के विचारों को अवश्य स्वीकार करेगा तथा धन्य होगा। वह सन्त है जगत् गुरु तत्वदर्शी सन्त रामपाल जी महाराज। कृप्या पढ़ें सन्त रामपाल जी महाराज की संक्षिप्त जीवनी जो सर्व भविष्यवाणियों पर खरी उतर रही है।

"संत रामपाल दास जी महाराज का संक्षिप्त परिचय"

संत रामपाल जी का जन्म 8 सितम्बर 1951 को गांव धनाना जिला सोनीपत हरियाणा में एक जाट किसान परिवार में हुआ। पढ़ाई पूरी करके हरियाणा प्रांत में सिंचाई विभाग में जूनियर इंजिनियर की पोस्ट पर 18 वर्ष कार्यरत रहे। सन् 1988 में परम संत रामदेवानंद जी से दीक्षा प्राप्त की तथा तन-मन से सक्रिय होकर स्वामी रामदेवानंद जी द्वारा बताए भक्ति मार्ग से साधना की तथा परमात्मा का साक्षात्कार किया।

संत रामपाल जी को नाम दीक्षा 17 फरवरी 1988 को फाल्गुन महीने की अमावस्या को रात्री में प्राप्त हुई। उस समय संत रामपाल जी महाराज की आयु 37 वर्ष थी। उपदेश दिवस (दीक्षा दिवस) को संतमत में उपदेशी भक्त का आध्यात्मिक जन्मदिन माना जाता है।

उपरोक्त विवरण श्री नास्त्रेदमस जी की उस भविष्यवाणी से पूर्ण मेल खाता है जो नास्त्रेदमस द्वारा लिखी पुस्तक के पृष्ठ संख्या 44-45 पर लिखी है। "जिस समय उस तत्वदृष्टा शायरन का आध्यात्मिक जन्म होगा उस दिन अंधेरी अमावस्या होगी। उस समय उस विश्व नेता की आयु 16, 20, 25 वर्ष

नहीं होगी, वह तरुण नहीं होगा, बल्कि वह प्रौढ़ होगा और वह 50 और 60 वर्ष के बीच की उम्र में संसार में प्रसिद्ध होगा। वह सन् 2006 होगा।"

सन् 1993 में स्वामी रामदेवानंद जी महाराज ने आपको सत्संग करने की आज्ञा दी तथा सन् 1994 में नामदान करने की आज्ञा प्रदान की। भक्ति मार्ग में लीन होने के कारण जे.ई. की पोस्ट से त्यागपत्र दे दिया जो हरियाणा सरकार द्वारा 16-5-2000 को पत्र क्रमांक 3492-3500, तिथि 16-5-2000 के तहत स्वीकृत है। सन् 1994 से 1998 तक संत रामपाल जी महाराज ने घर-घर, गांव-गांव, नगर-नगर में जाकर सत्संग किया। बहु संख्या में अनुयाई हो गये। साथ-साथ ज्ञानहीन संतों का विरोध भी बढ़ता गया। सन् 1999 में गांव करौंथा जिला रोहतक (हरियाणा) में सतलोक आश्रम करौंथा की स्थापना की तथा एक जून 1999 से 7 जून 1999 तक परमेश्वर कबीर जी के प्रकट दिवस पर सात दिवसीय विशाल सत्संग का आयोजन करके आश्रम का प्रारम्भ किया तथा महीने की प्रत्येक पूर्णिमा को तीन दिन का सत्संग प्रारम्भ किया। दूर-दूर से श्रद्धालु सत्संग सुनने आने लगे तथा तत्वज्ञान को समझकर बहुसंख्या में अनुयाई बनने लगे। चंद दिनों में संत रामपाल महाराज जी के अनुयाइयों की संख्या लाखों में पहुंच गई। जिन ज्ञानहीन संतों व ऋषियों के अनुयाई संत रामपाल जी के पास आने लगे तथा अनुयाई बनने लगे फिर उन अज्ञानी आचार्यों तथा सन्तों से प्रश्न करने लगे कि आप सर्व ज्ञान अपने सद्ग्रंथों के विपरीत बता रहे हो।

यजुर्वेद अध्याय 8 मंत्र 13 में लिखा है कि पूर्ण परमात्मा अपने भक्त के सर्व अपराध (पाप) नाश (क्षमा) कर देता है। आपकी पुस्तक जो हमने खरीदी है उसमें लिखा है कि ''परमात्मा अपने भक्त के पाप क्षमा (नाश) नहीं करता। आपकी पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास 7 में लिखा है कि सूर्य पर पृथ्वी की तरह मनुष्य तथा अन्य प्राणी वास करते हैं। इसी प्रकार पृथ्वी की तरह सर्व पदार्थ हैं। बाग, बगीचे, नदी, झरने आदि, क्या यह सम्भव है। पवित्र यजुर्वेद अध्याय 5 मंत्र 1 में लिखा है कि परमात्मा सशरीर है। अग्ने तनुः असि। विष्णवे त्वां सोमस्य तनुर् असि।। इस मंत्र में दो बार गवाही दी है कि परमेश्वर सशरीर है। उस अमर पुरुष परमात्मा का सर्व के पालन करने के लिए शरीर है अर्थात् परमात्मा जब अपने भक्तों को तत्वज्ञान समझाने के लिए कुछ समय अतिथि रूप में इस संसार में आता है तो अपने वास्तविक तेजोमय शरीर पर हल्के तेजपुंज का शरीर ओढ कर आता है। इसलिए उपरोक्त मंत्र में दो बार प्रमाण दिया है। इस तरह के तर्क से निरूत्तर होकर अपने अज्ञान का पर्दा फास होने के भय से उन अंज्ञानी संतों, महंतों व आचार्यो ने सतलोक आश्रम करौंथा के आसपास के गांवों में संत रामपाल जी

महाराज को बदनाम करने के लिए दुष्प्रचार करना प्रारम्भ कर दिया तथा 12-7-2006 को संत रामपाल को जान से मारने तथा आश्रम को नष्ट करने के लिए आप तथा अपने अनुयाइयों से सतलोक आश्रम पर आक्रमण करवाया। पुलिस ने रोकने की कोशिश की जिस कारण से कुछ उपद्रवकारी चोटिल हो गये। सरकार ने सतलोक आश्रम को अपने आधीन कर लिया तथा संत रामपाल जी महाराज व कुछ अनुयाइयों पर झूठा केस बना कर जेल में डाल दिया। इस प्रकार 2006 में संत रामपाल जी महाराज विख्यात हुए। भले ही अंजानों ने झूठे आरोप लगाकर संत को प्रसिद्ध किया परन्तु संत निर्दोष है। प्रिय पाठको (नास्त्रेदमस) की भविष्यवाणी को पढ़कर सोचेगें कि संत रामपाल जी को इतना बदनाम कर दिया है, कैसे संभव होगा कि विश्व को ज्ञान प्रचार करेगा। उनसे प्रार्थना है कि परमात्मा पल में परिस्थिती बदल सकता है।

कबीर, साहेब से सब होत है, बंदे से कछु नांहि।
राई से पर्वत करे, पर्वत से फिर राई।।

परमेश्वर कबीर जी अपने बच्चों के उद्धार के लिए शीघ्र ही समाज को तत्वज्ञान द्वारा वास्तविकता से परिचित करवाएंगे, फिर पूरा विश्व संत रामपाल जी महाराज के ज्ञान का लोहा मानेगा।

संत रामपाल जी महाराज सन् 2003 से अखबारों व टी वी चैनलों के माध्यम से सत्य ज्ञान का प्रचार कर अन्य धर्म गुरुओं से कह रहे हैं कि आपका ज्ञान शास्त्रविरूद्ध अर्थात् आप भक्त समाज को शास्त्ररहित पूजा करवा रहे हैं और दोषी बन रहे हैं। यदि मैं गलत कह रहा हूँ तो इसका जवाब दो आज तक किसी भी संत ने जवाब देने की हिम्मत नहीं की।

संत रामपाल जी महाराज को ई.सं. (सन्) 2001 में अक्तुबर महीने के प्रथम बृहस्पतिवार को अचानक प्रेरणा हुई कि "सर्व धर्मों के सद्ग्रन्थों का गहराई से अध्ययन कर" इस आधार पर सर्वप्रथम पवित्र श्रीमद् भगवद्गीता जी का अध्ययन किया तथा पुस्तक 'गहरी नजर गीता में' की रचना की तथा उसी आधार पर सर्वप्रथम राजस्थान प्रांत के जोधपुर शहर में मार्च 2002 में सत्संग प्रारंभ किया। इसलिए नास्त्रेदमस जी ने कहा है कि विश्व धार्मिक हिन्दू संत (शायरन) पचास वर्ष की आयु में अर्थात् 2001 ज्ञेय ज्ञाता होकर प्रचार करेगा। संत रामपाल जी महाराज का जन्म पवित्र हिन्दू धर्म में सन् (ई.सं.) 1951 में 8 सितम्बर को गांव धनाना जिला सोनीपत, प्रांत हरियाणा (भारत) में एक जाट किसान परिवार में हुआ। इस प्रकार सन् 2001 में संत रामपाल जी महाराज की आयु पचास वर्ष बनती है, सो नास्त्रेदमस के अनुसार खरी है। इसलिए वह विश्व धार्मिक नेता संत रामपाल जी महाराज

ही हैं जिनकी अध्यक्षता में भारतवर्ष पूरे विश्व पर राज्य करेगा। पूरे विश्व में एक ही ज्ञान (भक्ति मार्ग) चलेगा। एक ही कानून होगा, कोई दुःखी नहीं रहेगा, विश्व में पूर्ण शांति होगी। जो विरोध करेंगे अंत में वे भी पश्चाताप करेंगे तथा तत्वज्ञान को स्वीकार करने पर विवश होंगे और सर्व मानव समाज मानव धर्म का पालन करेगा और पूर्ण मोक्ष प्राप्त करके सतलोक जाएंगे।

जिस तत्वज्ञान के विषय में नास्त्रेदमस जी ने अपनी भविष्यवाणी में उल्लेख किया है कि उस विश्व विजेता संत के द्वारा बताए शास्त्र प्रमाणित तत्व ज्ञान के सामने पूर्व के सर्व संत निष्प्रभ (असफल) हो जाएंगे तथा सर्व को नम्र होकर झुकना पड़ेगा। उसी के विषय में परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ जी ने अपनी अमृत वाणी में पवित्र 'कबीर सागर' ग्रंथ में (जो संत धर्मदास जी द्वारा लगभग 550 वर्ष पूर्व लीपीबद्ध किया गया है) कहा है कि एक समय आएगा जब पूरे विश्व में मेरा ही ज्ञान चलेगा। पूरा विश्व शांति पूर्वक भक्ति करेगा। आपस में विशेष प्रेम होगा, सतयुग जैसा समय (स्वर्ण युग) होगा। परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ द्वारा बताए ज्ञान को संत रामपाल जी महाराज ने समझा है। इसी ज्ञान के विषय में कबीर साहेब जी ने अपनी वाणी में कहा है कि -

कबीर, और ज्ञान सब ज्ञानड़ी, कबीर ज्ञान सो ज्ञान।
जैसे गोला तोब का, करता चले मैदान।।

भावार्थ है कि यह तत्वज्ञान इतना प्रबल है कि इसके समक्ष अन्य संतों व ऋषियों का ज्ञान टिक नहीं पाएगा। जैसे तोब यंत्र का गोला जहां भी गिरता है वहां पर सर्व किलों तक को ढहा कर साफ मैदान बना देता है।

यही प्रमाण संत गरीबदास जी (छुड़ानी, जिला झज्जर, हरियाणा वाले) ने दिया है कि सतगुरु (तत्वदर्शी संत परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ का भेजा हुआ) दिल्ली मण्डल में आएगा।

"गरीब, सतगुरु दिल्ली मण्डल आयसी, सूती धरणी सूम जगायसी"

परमात्मा की भक्ति बिना कंजूस हो गए व्यक्तियों को जगाएगा। गांव धनाना, जिला सोनीपत पहले दिल्ली शासित क्षेत्र में पड़ता था। इसलिए संत गरीबदास जी महाराज ने कहा है कि सतगुरु (वास्तविक ज्ञान जानने वाला संत अर्थात् तत्व दृष्टा संत) दिल्ली मण्डल में आएगा फिर कहा है कि -

"साहेब कबीर तख्त खवासा, दिल्ली मण्डल लीजै वासा"

भावार्थ है कि परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ के तख्त (दरबार) का ख्वास (नौकर) अर्थात् परमेश्वर का नुमायंदा (प्रतिनिधि) दिल्ल मण्डल में वास करेगा अर्थात् वहां उत्पन्न होगा। प्रथम अपने हिन्दू बंधुओं को तत्वज्ञान से परिचित करवाएगा। बुद्धिमान हिन्दू ऐसे जागेंगे जैसे कोई हड़बड़ा कर

जागता है अर्थात् उस संत के द्वारा बताए तत्व ज्ञान को समझ कर अविलम्ब उसकी शरण ग्रहण करेंगे। फिर पूरा विश्व उस तत्वदर्शी हिन्दू संत के ज्ञान को स्वीकार करेगा। यह भविष्यवाणी श्री नास्त्रेदमस जी ने भी की है। नास्त्रेदमस जी ने यह भी लिखा है कि मुझे दुःख इस बात का है कि उससे परिचित न होने के कारण मेरा शायरन (तत्वदृष्टा संत) उपेक्षा का पात्र बना है। हे बुद्धिमान मानव ! उसकी उपेक्षा ना करो। वह तो सिंहासनस्थ करके (आसन पर बैठा कर) अराध्य देव (इष्टदेव) रूप में मान करने योग्य है। वह हिन्दू धार्मिक संत शायरन आदि पुरुष (पूर्ण परमात्मा) का अनुयाई जगत् का तारणहार है।

नास्त्रेदमस जी भविष्य वक्ता ने पुस्तक पृष्ठ 41-42 पर तीन शब्द का उल्लेख किया है। कहा है कि वह विश्व विजेता तत्वदृष्टा संत क्रुरचन्द्र अर्थात् काल की दुःखदाई भूमि से छुड़ा कर अपने आदि अनादि पूर्वजों के साथ वारिस बनाएगा तथा मुक्ति दिलाएगा। यहां पर उपदेश मंत्र की ओर संकेत है कि वह शायरन केवल तीन शब्द (ओम्-तत्-सत्) ही मंत्र जाप देगा। इन तीन शब्दों के साथ मुक्ति का कोई अन्य शब्द न चिपकाएगा। यही प्रमाण पवित्र ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 90 मंत्र 16 में, सामवेद श्लोक संख्या 822 तथा श्रीमद् भगवत् गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में है कि पूर्ण संत (तत्वदर्शी संत) तीन मंत्र (ओम्-तत्-सत् जिनमें तत् तथा सत् सांकेतिक हैं) दे कर पूर्ण परमात्मा (आदि पुरुष) की भक्ति करवा कर जीव को काल-जाल से मुक्त करवाता है। फिर वह साधक की भक्ति कमाई के बल से वहां चला जाता है जहां आदि सृष्टी के अच्छे प्राणी रहते हैं। जहां से यह जीव अपने पूर्वजों को छोड़ कर क्रुरचन्द्र (काल प्रभु) के साथ आकर इस दुःखदाई लोक में फंस कर कष्ट पर कष्ट उठा रहा है। नास्त्रेदमस जी ने यह भी स्पष्ट किया है कि मध्य काल अर्थात् बिचली पीढ़ी हिन्दू धर्म का आदर्श जीवन जीएंगे। शायरन (तत्वदृष्टा संत) अपने ज्ञान से दैदिप्यमान उतंग ऊँचा स्वरूप अर्थात् सर्व श्रेष्ठ शास्त्रानुकूल भक्ति विधान फिर से बिना शर्त उजागर करवाएगा ओर मानवी संस्कृति अर्थात् मानव धर्म के लक्षण निर्धोक (निष्कपट भाव से) संवारेगा। (मधल्या कालात हिन्दू धर्मांचे व हिन्दुच्या आदर्शवत् झालेल - यह मराठी भाषा में पृष्ठ 42 पर लिखा है कि उपरोक्त भावार्थ है कि बिचली पीढ़ी का उद्धार शायरन करेगा। यह उल्लेख पृष्ठ 42 की हिन्दी लिखना रह गया था इसलिए यहां लिख दिया है तथा स्पष्टीकरण भी दिया है। यही प्रमाण स्वयं पूर्ण परमात्मा कबीर जी ने कहा है कि

धर्मदास तोहे लाख दुहाई, सारज्ञान व सारशब्द कहीं बाहर न जाई।
सारनाम बाहर जो परही, बिचली पीढ़ी हंस नहीं तर ही।।

सारज्ञान तब तक छुपाई, जब तक द्वादस पंथ न मिट जाई)।

जैसे ई.सं.(सन्) 1947 में भारतवर्ष अंग्रेजों से मुक्त हुआ। उससे पहले हिन्दुस्तान में शिक्षा नहीं थी। सन् 1951 में संत रामपाल जी महाराज को परमेश्वर जी ने पृथ्वी पर भेजा। सन् 1947 से पहले कलियुग की प्रथम पीढ़ी जानें तथा 1947 से बिचली पीढ़ी प्रारम्भ हुई है। यह एक हजार वर्ष तक सत्य भक्ति करेगी। इस दौरान जो पूर्ण निश्चय के साथ भक्ति करेगा वह सतलोक चला जाएगा। जो सतलोक नहीं जा सके तथा कभी भक्ति की, कभी छोड़ दी, परंतु गुरु द्रोही नहीं हुए वे फिर हजारों मनुष्य जन्म इसी कलियुग में प्राप्त करेंगे क्योंकि यह उनकी शास्त्रविधि अनुसार साधना का परिणाम होगा। इस प्रकार कई हजारों वर्षों तक कलियुग का समय वर्तमान से भी अच्छा चलेगा। फिर अंत की पीढ़ी भक्ति रहित उत्पन्न होगी क्योंकि शुभ कमाई जो भक्ति युग में की है वह बार-२ जन्म प्राप्त करके खर्च (समाप्त) कर दी होगी। इस प्रकार कलियुग के अंत की पीढ़ी कृतघनी होगी। वे भक्ति नहीं कर सकेंगी। इसलिए कहा है कि अब कलियुग की बिचली पीढ़ी चल रही है (1947 से)। सन् 2006 से वह शायरन सर्व के समक्ष प्रकट हो चुका है, वह है "संत रामपाल जी महाराज"।

उपरोक्त ज्ञान जो बिचली पीढ़ी व प्रथम तथा अंतिम पीढ़ी वाला संत रामपाल जी महाराज अपने प्रवचनों में वर्षों से बताते आ रहे हैं जो अब नास्त्रेदमस जी की भविष्यवाणी ने भी स्पष्ट कर दिया। इसलिए संत गरीबदास जी महाराज ने कहा है कि - कबीर परमेश्वर की भक्ति पूर्ण संत से उपदेश लेकर करो नहीं तो यह अवसर फिर हाथ नहीं आएगा।

गरीब, समझा है तो सिर धर पांव, बहुर नहीं रे ऐसा दाव।।

भावार्थ है कि यदि आप तत्वज्ञान को समझ गए हैं तो सिर पर पैर रख अर्थात् अतिशिघ्रता से तत्वदर्शी संत रामपाल जी महाराज से उपदेश लेकर अपना कल्याण करवाओ। यह सुअवसर फिर प्राप्त नहीं होगा। जैसे यह बिचली पीढ़ी (मध्य काल) वाला समय और आपका मानव शरीर तथा तत्वदृष्टा संत प्रकट है। यदि अब भी भक्ति मार्ग पर नहीं लगोगे तो उसके विषय में कहा है कि --

यह संसार समझदा नांही, कहंदा श्याम दुपहरे नूं।
गरीबदास यह वक्त जात है, रोवोगे इस पहरे नूं।।

भावार्थ है कि संत गरीबदास जी महाराज कह रहे हैं कि यह भोला संसार शास्त्रविधि रहित साधना कर रहा है जो अति दुःखदाई है, इसी को सुखदाई कह रहा है। जैसे जून मास दोपहर (दिन के बारह बजे) में धूप में खड़ा-२ जल रहा है उसी को सांय बता रहा है। जैसे कोई शराबी व्यक्ति शराब पीकर

सड़क पर पड़ा है और उससे कोई कहे कि आप दोपहर की धूप में क्यों जल रहे हो, छांया में चलो। वह शराब के नशे में कहता है कि नहीं सांय है, कौन कहता है कि दोपहर है ? इसी प्रकार जो साधक शास्त्रविधि त्याग कर मनमाना आचरण कर रहे हैं वे अपना जीवन नष्ट कर रहे हैं। उसे त्यागना नहीं चाहते अपितु उसी को सर्व श्रेष्ठ मानकर काल के लोक की आग में जल रहे हैं। संत गरीबदास जी महाराज कह रहे हैं कि इतने प्रमाण मिलने के पश्चात् भी सतसाधना पूर्ण संत के बताए अनुसार नहीं करोगे तो यह अनमोल मानव शरीर तथा बिचली पीढ़ी का भक्ति युग हाथ से निकल जाएगा फिर इस समय को याद करके रोवोगे, बहुत पश्चाताप करोगे। फिर कुछ नहीं बनेगा। परमेश्वर कबीर जी बन्दी छोड़ ने कहा है कि -

आच्छे दिन पाछै गए, सतगुरु से किया ना हेत।
अब पछतावा क्या करे, जब चिड़िया चुग गई खेत।।

सर्व मानव समाज से प्रार्थना करते हैं कि पूर्ण संत रामपाल जी महाराज को पहचानों तथा अपना व अपने परिवार का कल्याण करवाओ। अपने रिश्तेदारों तथा दोस्तों को भी बताओ तथा पूर्ण मोक्ष पाओ। स्वर्ण युग प्रारम्भ हो चुका है। लाखों पुण्य आत्मांए संत रामपाल जी तत्वदर्शी संत को पहचान कर सत्य भक्ति कर रहे हैं, वे अति सुखी हो गए हैं। सर्व विकार छोड़ कर निर्मल जीवन जी रहे हैं।

''झूठे मुकदमें''

संत रामपाल दास जी महाराज तथा उनके भक्तों पर झूठे मुकदमें बनाए गए। कुछ भ्रष्ट जज अब इन मुकदमों से बरी करने के लिए रिश्वत माँग रहे हैं। कृपया पढ़ें जजों की शिकायत तथा झूठे मुकदमों का प्रमाण :-

''जज श्री सुशील कुमार गुप्ता का भ्रष्टाचार''

श्री सुशील कुमार गुप्ता जी सैशन कोर्ट रोहतक (हरियाणा) के भ्रष्टाचार की जांच के लिए शिकायत माननीय राष्ट्रपति जी भारत गणराज्य को भेजी गई जो इस प्रकार हैः-

विषयः- माननीय श्री सुशील कुमार गुप्ता सैशन जज रोहतक के भ्रष्टाचार की जांच करके बरखास्त करने हेतु प्रार्थना पत्र।

श्रीमान् जी,

निवेदन है कि हम समाज सेवा समिती के सर्व 10 लाख सदस्य आपको माननीय सैशन जज श्री सुशील कुमार गुप्ता के भ्रष्टाचार की जांच करके सख्त कार्यवाही की प्रार्थना करते हैं। जज को परमात्मा का छोटा रूप माना जाता है। जिसकी कलम में एक व्यक्ति की जीवन-मृत्यु का फैसला होता है। ऐसे माननीय तथा सम्मानीय पद पर विराजमान व्यक्ति अपने स्वार्थवश कानून के विरूद्ध कार्य करके गरीब जनता को सताता है और न्यायालय की छवि को खराब करता है, उसे पद पर बने रहने का कोई अधिकार नहीं है। विवरण इस प्रकार है कि हमारे कुछ सदस्य जज महोदय से मिले थे। उन्होंने समिती के मुख्य सदस्यों को बताया जो इस प्रकार है :-

दिनांक 10-03-2014 को हमारे साथी भक्तों की एक झूठे केस मुकदमा नं. 198/2006 में माननीय सैशन जज रोहतक श्री सुशील कुमार गुप्ता की कोर्ट में तारीख पेशी थी। हम भी तारीख पर उनके साथ गये हुऐ थे। तारीख होने के बाद हमारे मित्र प्रीतम सिंह (राजकुमार) ने मेरे को रणबीर सिंह निवासी किराड़ी व अमन निवासी रोहतक को बताया कि मैंने माननीय जज साहब से प्रार्थना की थी कि माननीय जज साहब यह केस राजनीतिक दबाव के कारण हम पर झूठा बनाया हुआ है। हम सभी इसमें निर्दोष हैं। आपजी से निवेदन है कि इस केस से हमारा पीछा छुड़वाओं, तो माननीय जज साहब कहने लगे अब तो कोर्ट का समय है। आप अपने साथ 2-3 मौजीज व्यक्तियों के साथ शाम 5 बजे के बाद मुझे मिलो। तब तक मैं भी इस केस की फाईल को देख लेता हूँ। मैं, रणबीर निवासी किराड़ी व अमन निवासी रोहतक, बलवान निवासी गाँव बालक (जो बाद में बुलाया गया था) तथा प्रीतम सिंह (राजकुमार) को साथ लेकर माननीय जज साहब के पास गये। तब माननीय

जज साहब कहने लगे अब बताओ। जो भी घटना हमारे साथ घटी थी, उसका विवरण देकर हमने बताया कि हमारे ऊपर मुकदमा नं. 198/2006 गलत बनाया गया है, वास्तविकता यह है कि हमारे सतगुरु रामपाल जी महाराज जी ने ''सत्यार्थ प्रकाश'' पुस्तक के अज्ञान को समाज के सामने रखा, जो की आर्य समाज के आचार्यों को अच्छा नहीं लगा और ज्ञान का जवाब ज्ञान से ना देकर, उन्होंने दिनांक 12-7-2006 को सतलोक आश्रम करौंथा पर हमला बोल दिया।

उस समय ड्यूटी पर तैनात प्रशासनिक अधिकारी S.D.M. श्री वत्सल वशिष्ट जी ने अपनी रिपोर्ट में स्पष्ट आदेश पारित किये हैं कि 8000-10000 उपद्रवीयों ने सतलोक आश्रम करौंथा को घेर लिया और हथियारों से हमला बोल दिया, स्थिति को देखकर S.D.M. साहब ने S.H.O. सदर रोहतक के कहने व हालात को मध्य नजर रखते हुए सतलोक आश्रम के अनुयायियों की सुरक्षा के लिए आश्रम को धारा 145 Cr. P.C. के तहत कब्जा में ले लिया ताकि अनुयाईयों को आश्रम से सुरक्षित निकाला जा सके। (एस.डी.एम. के आदेश की प्रति संलग्न है) S.D.M. ने अपने आदेश में यह भी लिखा है कि ''उस समय रोहतक जिला के S.P. तथा D.C. व अन्य प्रशासनिक अधिकारी भी मौके पर उपस्थित थे। S.H.O. सदर रोहतक ने भी प्रार्थना की थी कि आश्रम के अनुयाईयों को खतरा है। S.P. तथा D.C. भी सहमत थे कि आश्रम के अनुयाईयों को बचाने के लिए आश्रम को जेर धारा 145 Cr. P.C. के तहत कब्जे में लिया जाए, ऐसा ही किया गया।''यह विवरण S.D.M. के आदेश में है। आश्चर्य की बात है कि बाद में मनघड़न्त कहानी बनाकर S.H.O. सदर रोहतक ने हम पर झूठा केस बनाया तथा S.P. रोहतक ने इस झूठे केस की तायद कर दी तथा न्यायालय में पेश कर दिया। यह कैसा घिनौना मजाक है कि हमारे ही भक्तों को पुलिस ने झूठा मुकदमा नं. 198/06 u/s 148-149,323,307,302, I.P.C.व 27, 54, 59 A Act थाना सदर रोहतक में गिरफ्तार कर लिया। हमारे वकील ने इस मुकदमे से हमारे ऊपर लगी धारा 148-149 व अन्य धाराओं को हटवाने के लिए माननीय हाई कोर्ट में रिट डाली फिर इसके बाद माननीय सुप्रीम कोर्ट में रिट डाली की हम आश्रम में सत्संग सुनने के लिए इक्ट्ठे हुए थे। हमारे ऊपर आर्य समाजियों ने आकर हमला किया है। हम हमला करने के लिए मजमा खिलाफे कानून बनाकर कहीं झगड़ा करने के लिए नहीं गये, हमारे ऊपर धारा 148-149 I.P.C. व अन्य धाराऐं हटाई जाऐं। उपद्रवियों, आक्रमणकारियों पर मुकदमा बनाया जाए जो माननीय सुप्रीम कोर्ट के माननीय जज साहेबों ने अपने आदेशों में कहा कि नीचे Trial Court में जाकर अपना पक्ष रखो। इसलिए आपसे प्रार्थना है कि

हम इस केस की धारा 148-149 को हटवाना चाहते हैं। जो हमारे भक्तों पर नाजायज लगी हुई है। जब यह मुकदमा हम पर बनता ही नहीं, तो फिर Trial किसलिए चल रही हैं। यदि पुलिस चोरी के मुकदमे में जो धारा 380 IPC. बनती है। उसके स्थान पर धारा 302 लगा कर कोर्ट में पेश कर देती है तो जज का फर्ज है कि पहले धारा ठीक करे, बाद में Trial चलाए। लेकिन ऐसा न करके गलत धाराऐं लगा कर केस चलाया जा रहा है। आप भी कानून के जानकार हैं।

★ मुख्य गवाह (जिसके नाम से F.I.R. लिखी है) ने भी माननीय सैशन कोर्ट में बयान देकर स्पष्ट किया है कि पुलिस ने मेरे से दस्तखत करवाए थे। मुझे इस घटना के बारे में कुछ भी मालूम नहीं है।

★ F.S.L. Report से भी स्पष्ट है कि आश्रम से बरामद हथियारों से चली गोली से किसी की मृत्यु नहीं हुई।

★ पुलिस की गोलियों से एक व्यक्ति की मृत्यु हुई तथा अन्य घायल हुए। जिनको सरकार ने सहायता के रूप में रूपये भी दिए तथा मृतक के परिवार के एक सदस्य को सरकारी नौकरी दी गई। इससे स्पष्ट है कि मृतक की मृत्यु तथा जो घायल हुए थे वे सभी पुलिस द्वारा चलाई गई गोलियों से हुए थे। तभी तो सरकार ने सहायता राशि दी है। इनकी हत्या व जख्मी होने का झूठा मुकदमा हमारे गुरूजी तथा भक्तों के ऊपर बनाया गया है। इन सब प्रमाणों से स्पष्ट है कि यह झूठा मुकदमा है। अतः आप जी से प्रार्थना है कि इस केस को खत्म कर दो ताकि हमें न्याय मिल सके, आपकी कृपा होगी। तो माननीय सैशन जज साहब श्री सुशील कुमार गुप्ता जी ने कहा मैंने मुकदमा नं. 198/2006 की सारी फाईल देख ली है। आपका काम हो जाऐगा। लेकिन आपको कुछ खर्च करना पड़ेगा। हमने कहा कि जज साहब क्या खर्च करना पड़ेगा। माननीय जज साहेब ने कहा 30 लाख रूपये लगेंगे, हमने कहा जज साहब हम पैसे नहीं दे सकते, तो माननीय जज साहेब बोले इस केस में आपको इससे भी ज्यादा खामियाजा भुगतना पड़ सकता है। मेरे पास स्वयं संज्ञान (Suo motu) रूपी दोधारी तलवार है। मैं केश के तथ्यों के आधार से (जो तुमने बताए हैं, मैंने देख लिए हैं) आपके साथियों को बरी कर सकता हूँ, चाहे सब झूठे गवाह भी तुम्हारे खिलाफ गवाही देदें। यह तो मुझे भी पता है, यह झूठा मुकदमा है। मैं चाहूं तो इन्हीं झूठे गवाहों के आधार से सब कथित दोषियों की सजा भी कर सकता हूँ। आप सोच लेना अभी तुम्हारे पास वक्त है। हम जज साहेब को कहने लगे जज साहब हमारे सारे भक्त जो इस मुकदमा में हैं, सभी गरीब व्यक्ति हैं। तो माननीय जज साहब कहने लगे विजय की अब मैं जमानत नहीं लूंगा और आगे इस केस में जो भी गैरहाजिर

होगा उसको जेल में ही रखूंगा। मैं ऐसा आदेश कर दूँगा, तुम्हें लेने के देने पड़ जाऐंगे। यह सुनकर हम हैरान रह गए तथा वहां से चले आये।

जज श्री सुशील कुमार गुप्ता जी ने इस बात को अपने आदेश दिनांक 5-4-2014 में भी सिद्ध कर दिया है, जिसमें दो जमानतियों पर 1-1 लाख का गलत जुर्माना किया है। जिसमें लिखा है कि मैं (जज साहब) नहीं चाहता कि विजय के जमानतियों के साथ नरम रवैया करूं। इसलिए 1-1 लाख जुर्माना करता हूँ। इस आदेश से स्पष्ट है कि जज श्री सुशील कुमार गुप्ता जी के लिए कानून कोई मायने नहीं रखता, केवल अपनी मनमानी ही करता है। यदि यह चाहते तो नरम रवैया अपनाकर जमानतियों पर जुर्माना नहीं करते। इसका स्पष्ट अर्थ है कि जज महोदय कानून की अहमियत नहीं मानते। यह भी प्रमाणित हुआ कि जज महोदय जिसको चाहें नरम रवैया करके बरी करते हैं। जिसको चाहें नरम रवैया न करके सजा करते हैं।

यह सारी बातें हमने विजय को झज्जर जेल से दिनांक 15-03-2014 को जमानत होने पर बताई। जो दिनांक 6-03-2014 से 15-03-2014 तक झज्जर जेल में अन्य केस में था। यह बात सुनकर विजय ज्यादा तनाव में आ गया जिसको 30-03-2014 को पागल वार्ड P.G.I.MS. रोहतक में दाखिल करवाना पड़ा। उसने कई बार आत्महत्या करने की कोशिश की तथा इसी तनाव के कारण वह P.G.I.M.S. रोहतक से दिनांक 31-3-2014 को पता नहीं कहाँ चला गया जिसको जमानती तथा घरवाले तलाश कर रहे हैं। अगर उसके साथ कोई अनहोनी होती है तो उसका जिम्मेवार माननीय सैशन जज सुशील कुमार गुप्ता होगा।

यह सभी बातें हमने समाज सेवा समिति के मुख्य सदस्यों को बताई। पूरे भारत वर्ष में समाज सेवा समिति के लगभग 10 लाख सदस्य है। उनको भी संदेश भिजवा दिया है इसके बाद समाज सेवा समिती के सदस्यों ने निर्णय लिया, कि माननीय सैशन जज रोहतक श्री सुशील कुमार की शिकायत माननीय मुख्य न्यायधीश पंजाब व हरियाणा हाई कोर्ट को करो तथा हम भी आपका सहयोग करेंगे। यदि इस माननीय भ्रष्ट अत्याचारी जज पर उचित कार्यवाही नहीं हुई तो समाज सेवा समिति पूरे देश में संवैधानिक तरीके से आन्दोलन करने को मजबूर होगी।

उपरोक्त तथ्यों को आधार मान कर माननीय जज महोदय को अपनी पावर का सदुपयोग करके केस को समाप्त करना चाहिए था। इसके विपरीत इसकी मनोकामना पूर्ण न होने के कारण अपनी शक्ति का दुरूपयोग करके विजय के दोनों जमानतियों को उचित समय दिए बिना ही एक-एक लाख रूपये का जुर्माना डाल दिया जिसका विवरण निम्न लिखा है :-

इस मुकदमें की अगली तारीख माननीय जज साहेब ने 31-03-2014 लगाई थी।

दिनांक 10-03-2014 को इस केस में भक्त विजय निवासी सिंहपुरा, किसी अन्य मुकदमे में जेल झज्जर में बन्द होने के कारण तारीख पर नहीं पहुंच पाया था। माननीय जज साहेब ने विजय को Non-Bailable वारंट कर दिये और इसके जमानती शिवमंगल को 31-03-2014 के लिए नोटिस भेज दिया। जो 31-03-2014 को शिवमंगल कोर्ट में पहुंच गया और माननीय जज साहेब से विजय को लाने के लिए समय मांगा था। जिस पर माननीय जज साहब ने जमानती को केवल 4 दिन का समय दिया और दूसरे जमानती सुरेन्द्र निवासी मोखरा को 5-04-2014 को कोर्ट में पेश होने के लिए नोटिस भेज दिया। जो सुरेन्द्र 5-04-2014 को कोर्ट में पेश हुआ और विजय को पेश करने के लिए समय मांगा। लेकिन माननीय जज साहब अपनी 30 लाख रूपये की मंशा पूरी ना होने के कारण क्रूर व्यवहार पर उतर आया और दोनों जमानतियों पर अपने आदेश दिनांक 5-4-2014 के तहत 1-1 लाख जुर्माना लगा दिया। (जिसकी सत्यापित प्रति संलग्न है) शिवमंगल जमानती को 4 दिन का समय दिया तथा सुरेन्द्र जमानती को माननीय विद्वान जज साहेब ने एक दिन का भी समय नहीं दिया। जो जमानती अपने बच्चों का पालन-पोषण मजदूरी करके करते हैं। इस निर्दयी माया के भूखे माननीय जज ने यह नहीं सोचा कि इन गरीबों का क्या होगा? इस झूठे मुकदमें में 38 को मुजरिम बना रखा है। विशेष मजबूरी में ही कोई एक हाजिर नहीं हो पाता। जान बूझकर गैर हाजिर कोई नहीं होता। मजबूरी तथा बीमारी तो माननीय जज साहब को भी हो सकती है। क्या माननीय जज बीमार नहीं होते? मजबूरी तो सबके साथ हो सकती है। जैसे यह जुर्माना लगाने का आदेश करके माननीय विद्वान जज साहब उसी दिन सुबह 11:00 बजे ही छुट्टी चले गये। इससे स्पष्ट है कि माननीय जज साहब 5-04-2014 को केवल इर्षावश क्रूर आदेश पारित करने आए थे। क्योंकि इसको 30 लाख नहीं मिले। जज साहेब ने मलीन नीयत (Malafied Intention) के आधार से अपने आदेश दिनांक 04-03-2014 में (जिसकी सत्यापित प्रति दिनांक 16-04-2014 को प्राप्त की है जो संलग्न है) झूठा आरोप लगाया है कि 04-03-2014 को भी एक आरोपी अनुपस्थित था। जबकि 04-03-2014 को हमारी कोई तारीख नहीं थी। इस आदेश से जज साहब की मनसा स्पष्ट है कि यह कितना अन्याय कर सकता है।

दिनांक 22-04-2014 को दोनों जमानतियों (शिव मंगल तथा सुरेन्द्र) ने जज साहब की कोर्ट में अर्जी लगाई जिसमें बताया गया कि 10-03-2014 को

विजय झज्जर जेल में बंद था तथा 31-03-2014 को P.G.I.M.S. रोहतक में दाखिल था। उसको मानसिक परेशानी है। जिस कारण से वह कहीं चला गया है। हमारे को कुछ समय दो, हम खोज कर लाऐंगे। परन्तु जज महोदय की मनोकामना पूर्ण न होने के कारण एक न सुनी और कहा कि मैं कुछ सुनना नहीं चाहता। यह कह कर 23-04-2014 को सुनवाई करके कहा कि मैं कोई रहम नहीं करूंगा, जुर्माना भरो।

इस से स्पष्ट है कि माननीय जज महोदय कितने खफा हैं लालचवश इतने अंधे हो गये हैं कि कानून को भी भूल गये। माननीय जज महोदय कानून से ऊपर नहीं हैं। कानून माननीय जज साहब के लिए भी है। इस माननीय जज ने अपनी स्वार्थ पूर्ति न होने के कारण कानून का उल्लंघन किया है। माननीय जज साहेब ने तो इन दोनों जमानतीयों को विजय को ढूढ़ंकर लाने के लिए कम से कम एक महीने का समय देना चाहिए था। क्योंकि विजय दिमागी परेशानी के कारण P.G.I.M.S. रोहतक में दाखिल था और दिनांक 31-03-2014 को वह मानसिक परेशानी के कारण उपचार के दौरान P.G.I.M.S. रोहतक से न जाने कहाँ चला गया, जमानती तथा घरवाले उसको तलाश कर रहे हैं। पागल व्यक्ति को ढूढ़ंना इतना आसान नहीं होता। जमानती शिवमंगल ने माननीय जज साहब को वह P.G.I.M.S. का कार्ड भी दिया जिसमें उसको हस्पताल में भर्ती दिखाया गया है परन्तु माननीय जज महोदय ने एक नहीं सुनी। माननीय जज साहब को 30 लाख ना मिलने के कारण उन्हें इतना भी रहम नहीं आया कि विजय मानसिक रूप से परेशान है, जो इस झूठे मुकदमें में फसाये जाने के कारण पागल हो चुका है। जिसका जीवन बरबाद हो चुका है। फिर भी उस पर घोर अत्याचार करते हुए व उसके जमानतीयों की ना सुनते हुऐ, बिना उचित समय दिए ही अपनी पावर का दुरूपयोग करके उसके जमानतीयों पर भी 1-1 लाख रूपये का जुर्माना लगा दिया। इससे भी माननीय जज श्री सुशील कुमार गुप्ता की मलीन नीयत स्पष्ट होती है। दोनों जमानती, यह 2 लाख रूपये विजय से ही मांगेंगे व पहले से झूठे मुकदमें में फंसाये जाने के कारण व माननीय सैशन जज सुशील कुमार गुप्ता के द्वारा जमानत ना दिये जाने व जेल में ही रखने की धमकी के कारण पागल हो चुका विजय, इतने रूपये कहाँ से लाएगा। जिसकी शादी हुए अभी कुछ ही समय हुआ है। उसकी पत्नी व विजय का जीवन बरबाद हो चुका है और ऊपर से यह माननीय जज श्री सुशील कुमार गुप्ता जी अपनी मांग पूरी ना होने के कारण अत्याचार पर अत्याचार किए जा रहा है। माननीय जज महोदय ने स्पष्ट ही कर दिया है कि एक सप्ताह में सब गवाह कराके सजा करके केस को फारिग करूंगा। तो ऐसे भ्रष्ट व्यक्ति से

न्याय की क्या आशा की जा सकती है।

मानव को परमात्मा का अमर संदेश है कि :-

कबीर, गरीब को ना सताईये, जाकि मोटि हाय।
बिना जीव की श्वांस से लोह भस्म हो जाये।।

भावार्थ है कि ''जैसे पुराने समय में लोहार कारीगर अपने औजार बनाने के लिए लोहा गर्म करने के लिए पशु के चर्म की धौंकनी बनवाते थे। उस निर्जीव खाल से अग्नि पर हवा मारते थे। जैसे वर्तमान में पंखे का प्रयोग करते हैं। उस निर्जीव खाल से हवा निकलती थी तथा फिर हवा भरती थी। वह ऐसे हवा लेती और छोड़ती थी जैसे महादुःखी मनुष्य दुःख में आहें भरता है।

परमात्मा कबीर जी सर्तक करते हैं कि यदि कोई किसी प्रकार की भी शक्ति का दुरूपयोग करके गरीब (निर्बल-निर्धन) को परेशान करता है तो उस का सर्वनाश हो जाता है। जैसे बिना जीव की खाल से निकली श्वांस लोहे तक को भस्म (जलाकर नष्ट) कर देती है तो जीवित प्राणी से निकली हाय रूपी श्वांस (बद्दुवा) तेरा सर्वनाश कर देगी। अगले जन्म में वह व्यक्ति कुत्ता बनता है, सिर में कीड़े पड़ते हैं।

जज साहब सदा इस पद पर नहीं रहोगे। कुछ परमात्मा से भी डरो, नेक काम करो। यदि आप जी के हृदय के किसी कोने में दया, भगवान का डर तथा न्याय की नीयत शेष है तो इस मुकदमे को समाप्त कर क्योंकि यह झूठा मुकदमा है। यदि ऐसा करके पुण्य प्राप्त करना आपके भाग्य में नहीं है तो कानून को अनदेखा मत करो। यदि दुःखी जनता ने कानून को अनदेखा कर दिया तो क्या होगा? ऐसी स्थिति उत्पन्न करने वाले आप जैसे ही अधिकारी होते हैं जिन्होंने इस मुकदमे को गैर-कानूनी तरीके से बनाया तथा जिन जजों ने इसकी धाराऐं ठीक किए बिना चलाया है।

आज हम इसी स्थिति में आ चुके हैं यदि कोई हमारे को गैर-कानूनी तरीके से परेशान करेगा तो हम कानूनी तरीके से उसको सजा दिलाकर ही दम लेंगे।

समझदार को संकेत ही पर्याप्त होता है।

जैसा कि माननीय जज सुशील कुमार गुप्ता जी ने अपने आदेश दिनांक 5-4-2014 में 1-1 लाख रूपये का जुर्माना जमानतियों पर करते हुए कारण बताया है कि यह मुकदमा 2006 से विचाराधीन है। ये लोग जानबूझ कर गवाही वाले दिन अनुपस्थित हो जाते हैं। इसलिए इनके जमानतियों पर नम्र होना मैं उचित नहीं समझता। क्या माननीय जज महोदय का यह आदेश किसी तानाशाह से कम है? इसका मुख्य कारण है कि इसकी 30 लाख रूपये

की मांग पूरी नहीं हुई।

इसी मुकदमें के सम्बंध में हमने कई पटिशन माननीय पंजाब व हरियाणा हाई कोर्ट चण्डीगढ़ में सन् 2006 से ही डाल रखी हैं। किन्हीं कारणों से उनका फैसला आज तक नहीं हो पाया। हम तो माननीय जज साहेबानों को नहीं कहते कि वे जानबूझ कर देरी करते हैं। कार्य कानून के अन्तर्गत हो वही अच्छा रहता है।

माननीय रोहतक कोर्ट में एक साथी भक्त कृष्ण जी ने आचार्य बलदेव तथा सत्यवीर शास्त्री के खिलाफ सन् 2005 से इस्तगासा मुकदमा डाल रखा है। जिसमें केवल तीन गवाह हैं। उसका फैसला आज तक नहीं हुआ। हम तो इन माननीय जजों को भी नहीं कहते की ये जानबूझ कर देरी कर रहे हैं। कार्य तो कानून के अनुसार ही होना चाहिए। इन सभी कारणों से स्पष्ट है कि माननीय श्री सुशील कुमार गुप्ता जज अपनी Malafide Intention का शिकार है। इसके द्वारा किया गया गैर कानूनी आदेश दिनांक 5-04-2014 ही माननीय जज के दोष को स्पष्ट करने के लिए पर्याप्त है। हम सभी शिकायतकर्ता, जांच अधिकारी को शपथ पत्र भी देंगे। इस माननीय भ्रष्ट जज के खिलाफ कानूनी कार्यवाही की जाए। इसको इस पद पर रहने का कोई अधिकार नहीं है। इसको इस सम्मानीय पद से तुरंत बरखासत किया जाऐ ताकि जनता का न्यायालय के प्रति विश्वास कायम रह सके तथा गरीब जनता को न्याय मिल सके। आपकी अति कृपा होगी।

प्रार्थी

राष्ट्रीय समाज सेवा समीति के

सर्व 10 लाख सदस्य

(यह समीति पूर्ण रूप से धार्मिक तथा गैर-राजनीतिक संस्था है।)

सम्पर्क सूत्र :- 09992373237, 09416296541,
09416296397, 09813844747

(S.D.M. रोहतक का आदेश)

Case No. - 99-4A
12/7/2006.

ORDER OF SUB DIVISIONAL MAGISTRATE, ROHTAK

Whereas, there has been tension between the management of Satlok Ashram, Karontha and the residents of the nearby villages creating law and order problem in the area especially the area around the Asharm. Recently, some of the followers of the Ashram allegedly attacked some persons of another Ashram situated at District Jhajjar resulting in registering a criminal case against some of the inmates of the Satlok Ashram. The District Police of Jhajjar arrested 3-4 persons of the Ashram on the basis of that case. As a result Sant Rampal Maharaj and his followers blocked the Rohtak – Jhajjar Highway to agitate against the arrest of his followers and to force the administration to withdraw the cases. However, this blockade has created further tension in the area especially adjoining villages of Karontha, Baland, Dighal and some other villages and they also blocked the road. They convened a Maha Panchayat of all the nearby villages on 12-07-2006 at Dighal as there had been allegations of various illegal activities against the management of the Ashram. On 12-07-2006 i.e. today some young elements numbering 800-1000 left the panchayat and proceeded towards the Ashram to raise slogans against it. The Jhajjar Police tried to stop them on the Rohtak – Jhajjar border but they crossed the boundary from the nearby fields and have came on the main Rohtak – Jhajjar road within the boundary of District Rohtak raising slogans against the Sant of Ashram. This has angered the followers of the Sant and they have started firing indiscriminately on the agitating villagers causing one death on the spot and injuring nearly 60 persons. This has caused resentment and rumors have spread in all the nearby villages resulting in the movement of a large number of persons from the nearby villages towards the Ashram. Nearly 8-10 thousands villagers have been gathered around the Ashram at a distance of half Kilometer shouting slogans against the Sant of the Ashram and are further proceeding towards the Ashram. The agitators are also shouting that they will take the possession of the Ashram as it has become the "*Adda*" of illegal activities like immoral trafficking of women, weapons and exploitation etc. The situation is very grave, therefore, the police has been already directed to disperse the mob by using water cannons and teargas shells. The police has tried its best to stop the agitating villagers and has been able to stop the reaching agitators. However, situation is becoming more serious as there are reports that more and more villagers are coming towards the Ashram from the villages of District Rohtak as well as of Jhajjar. Therefore, there is an urgent need to take further precautionary measures to maintain peace and law and order. SHO, PS, Sadar has made a verbal request that the Ashram may be attached so that possession of the same can be taken over by the Police and inmates can be shifted to safer places.

Whereas, I am fully satisfied from the report of the SHO, PS, Sadar, Rohtak and from my own information, being on the spot itself that this dispute is likely to cause breach of peace which may further lead to loss of life and / or injury to hundreds of persons. I am further satisfied that there is urgent need to take extra ordinary steps to save the situation and to maintain the law and order. Therefore, I, Vatsal Vashisht, H.C.S., Sub Divisional Magistrate, Rohtak by exercising the powers under section 145 of the Cr.P.C. direct all concerned parties to put their

-43
(2)

respective claims regarding of the fact of the actual possession of the spot in dispute today itself ...ur within 10 minutes infront of the Ashram on Rohtak – Jhajjar road. These directions were pronounced on the mike fitted on my official vehicle and a notice has been given to the Sant of the Ashram as well as all the agitators numbering 8-10 thousand, who are within the reach of hearing this order through public address system. The SHO, PS, Sadar, has also conveyed this order to the Sant through his followers who are at the main Gate, so that the situation can be saved.

Whereas, after issue of order Section 145(I) Cr.P.C. and conveying the same through the Public Address System to all concerned of the gravity of situation I am of the view that to save the situation and to maintain law and order, it is the urgent need to attach the property. I am fully satisfied that the above order had been fully conveyed to the all concerned including the Sant Rampal who was inside the Asharm and his followers and also to the agitators. However, no one came forward to put their claim at that stage, therefore, in exercise of the powers given under Section 146(I) I. attach this property until a competent court might determine the rights of the parties thereof regarding person entitled to the possession thereof and also appoint SHO, PS, Sadar as receiver thereof who shall have all the powers of receiver appointed under the C.P.C.

This order was initially announced orally on the spot and conveyed to each and every one concerned through public address system in the interest of maintaining peace, law & order. However, this order is being dictated & issued today itself after reaching Rohtak with taking the prior approval of the District Magistrate to leave the spot. This fact is recorded in this order itself to put every thing on record as the situation on the spot was very serious and grave and it was not possible to pass a written order on the spot as neither stationery nor type writing machine or other equipment was available on the spot. Moreover, being Magistrate on duty, no time was available to first come to Rohtak and to pass a written order. D.M., Rohtak & S.P., Rohtak were also present on the spot when this order was issued and pronounced. The parties are directed to appear in my court on 27-07-2006 and present their respective claims.

Dated : 12-07-2006

Place: Rohtak

Sub Divisional Magistrate
Rohtak.

DEPUTY COMMISSIONER'S OFFICE
Certified To Be A True Copy
Date 12/2/08
As defined in section of the
Indian Evidence Act 1872

''आश्रम की जमीन का झूठा मुकदमा''

★ अश्वनी कुमार ACJM की कोर्ट में आश्रम की जमीन का मुकदमा चल रहा था। जज अश्वनी कुमार के विषय में भ्रष्टाचार की शिकायत माननीय पंजाब तथा हरियाणा हाई कोर्ट में मुख्य न्यायाधीश को की गई जो इस प्रकार है :-

विषय :- श्री अश्वनी कुमार मेहता C.J.M. रोहतक कोर्ट के भ्रष्टाचार की जांच करके उचित कानूनी कार्यवाही करने हेतू प्रार्थना पत्र।

श्रीमान् जी,

निवेदन है कि हम राष्ट्रीय समाज सेवा समिति के लगभग दस लाख सदस्य आप जी से निवेदन करते हैं कि उपरोक्त जज श्री अश्वनी कुमार मेहता C.J.M. की जांच करके इसके खिलाफ सख्त कानूनी कार्यवाही करने की प्रार्थना करते हैं।

हम भारतीय संविधान का सम्मान करते हैं। हम यह भी मानते हैं कि अधिकतर जज न्यायप्रिय तथा कानून का पालन करने वाले हैं। हम जज को परमात्मा को छोटा रूप मानते हैं। जिसकी कलम में एक व्यक्ति की जीवन व मृत्यु का फैसला होता है। यदि कोई ऐसे माननीय तथा सम्माननीय पद पर विराजमान जज अपने स्वार्थवश कानून को अनदेखा करता है। गरीब जनता को न्याय नहीं देता है। वह न्यायालय की छवि खराब करता है तो उसे पद पर बने रहने का कोई अधिकार नहीं है।

जज श्री अश्वनी कुमार मेहता माननीय के भ्रष्टाचार तथा अन्याय का उल्लेखः-

राष्ट्रीय समाज सेवा समीति के कुछ सदस्य 1. सतीश चन्द्र गाँव-सुण्डाना 2. राजेन्द्र सिंह गाँव-बरौदा 3. बलवान सिंह गाँव-बालक 4. चान्दीराम गाँव-बालक माननीय जज श्री अश्वनी कुमार मेहता जी से दिनांक 23-01-2014 को कोर्ट में मिले तथा उससे मुकदमा नं. 446/2006 की वास्तविकता से परिचय कराने का प्रयास किया तथा इस केस से सन्त रामपाल जी का नाम निकालने के लिए प्रार्थना की क्योंकि इस केस में सन्त रामपाल जी महाराज का नाम झूठा तथा बेबुनियाद है। माननीय जज श्री अश्वनी कुमार जी ने कहा कि अब कोर्ट का समय है। आप मुझे कोर्ट के समय के बाद मिलना तब तक मैं इस केस की फाईल पढ़ लूंगा। हमारे उपरोक्त सदस्य माननीय जज श्री अश्वनी कुमार से पुनः मिले तथा उनको बताया।

मामला यह कि ''सतलोक आश्रम करौंथा'' की जमीन पर झूठा मुकदमा नं. 446 Dt. 21-07-2006 रोहतक कोर्ट (हरियाणा) में विचाराधीन है। जिस

समय यह जमीन कुछ भक्तों द्वारा बन्दी छोड़ भक्ति मुक्ति ट्रस्ट को स्वइच्छा से दान की गई। हमारे सतगुरूदेव सन्त रामपाल दास जी महाराज हरियाणा से बाहर महाराष्ट्र प्रान्त में सत्संग करने के लिए गए हुए थे। उनको तो जमीन लेने के बारे में तीन महीने के बाद जब हरियाणा में आए तब बताया गया था कि हम सर्व भक्तो ने विचार विमर्श करके तीन एकड़ जमीन का टुकड़ा गाँव करौंथा जिला-रोहतक में आश्रम के लिए अपने भक्तों ने ही दान किया है। दानकर्ता के विशेष आग्रह पर जमीन बन्दी छोड़ भक्ति मुक्ति ट्रस्ट के नाम ट्रस्टी भक्त राजेन्द्र के नाम से करा दी है। हमने पहली बार ट्रस्ट बनाया था। ट्रस्ट की ओर से कोई रेजूलेशन भी पास नहीं किया गया था।

हमारे सतगुरू रामपाल दास जी महाराज के कहीं भी जमीन की खरीद के कागजात पर हस्ताक्षर नहीं हैं। इनका नाम भी राजनीतिक दबाव में बनाए मुकदमा नं. 446 Dt. 21-07-2006 में डाल कर व्यर्थ परेशान किया जा रहा है।

इस जमीन के मुकदमा नं. 446 Dt. 2006 में मुख्य गवाह ने (जिसके नाम से F.I.R. काटी गई थी उसने) न्यायालय में ब्यान देकर स्पष्ट कर दिया है कि इस F.I.R. में क्या लिखा है। मुझे कुछ जानकारी नहीं क्योंकि पुलिस ने जबरदस्ती मेरे से हस्ताक्षर कराए थे।

★ दान अपनी इच्छा से किया जाता है। जमीन ट्रस्ट के नाम हुई है। किसी ट्रस्टी या चेयरमैन के नाम नहीं हुई है। ट्रस्ट का नियम है कि यदि ट्रस्ट का प्रबन्धन ट्रस्ट चलाने में असफल रहता है तो उस ट्रस्ट की चल-अचल संपत्ति सरकार सील कर देती है। इसलिए यह मामला 420 धारा का नहीं है।

राष्ट्रीय समाज सेवा समिति के सदस्यों ने सर्व जानकारी माननीय जज श्री अश्वनी कुमार जी को दी।

जज अश्वनी कुमार जी ने कहा कि मैंने केस को पढ़ लिया है। यह केस तो आप पर बनता ही नहीं है। जमीन दानकर्ता ''कमला'' के माता-भाई-बहन तथा बुआ हैं। मैंने यह देख लिया है कि जिस समय जमीन दान की अप्रैल 1999 को तथा आज 2014 तक कमला ने किसी कोर्ट में इस सम्बन्ध में कोई मुकदमा भी दायर नहीं किया है।

पुलिस ने चालान के साथ कमला पुत्री श्री साहब सिंह का 161 का ब्यान भी नहीं लगा रखा। जज महोदय ने आगे कहा कि यदि आप मुझ से पहले मिल लेते तो मैं कमला को गवाह रूप में भी स्वीकार नहीं करता। इस केस की गवाहियाँ 2007 से चल रही हैं। दिनांक 01-08-2013 (6 वर्ष) तक यह कमला पुत्री श्री साहब सिंह ब्यान देने भी नहीं आई थी। जमीन की रजिस्ट्री से (1999) से 01-08-2013 तक 14 वर्ष बीत गए हैं। इस आधार से भी स्पष्ट है कि सर्व कार्य इसकी सहमति से ही हुआ था। बाद में किसी ने इसको

उकसाया है।

जज ने यह भी बताया कि मैं अपने अनुभव से बताता हूँ कि कमला ने जो 01-08-2013 को कोर्ट में ब्यान दिया है, उस में जो उसने प्रारम्भ में कहा है वह तो उसके वकील द्वारा तोते की तरह रटाई गई कहानी थी। फिर उसने अन्त में वास्तविकता भी बता दी। उसने कहा है कि ''मैंने बयनामा (रजिस्ट्री) देख लिया है। यह मैंने ही लिखवाया है। फिर कहा कि कृष्णा ने लिखवाया है (जो नाते में इसकी सगी बुआ है) इस से भी स्पष्ट है कि कमला की सहमति से ही जमीन ट्रस्ट को दान की गई है।

कमला ने ब्यान में स्वीकारा है कि ''मैं अपनी जमीन नहीं देना चाहती थी।'' इस से स्वसिद्ध है कि जमीन दान इसकी सहमति से हुई है। कमला के ब्यान का भावार्थ है कि मैं जमीन नहीं देना चाहती थी परन्तु जमीन दे दी गई। इस से स्पष्ट है कि कमला को पूरी स्थिति का पता था। सर्व कार्य इसकी सहमति के अनुसार हुआ था। यदि ऐसा न होता तो उसी समय न्यायालय में अपील कर सकती थी जो कि कमला ने आज तक भी ऐसा नहीं किया है। इस से स्पष्ट है कि जमीन दान करने में जो कृष्णा को कमला बना कर बैठाया गया है। यह इस के परिवार ने कमला को विश्वास में लेकर कृष्णा को कमला के स्थान बैठाया है। ट्रस्टी तथा चेयरमैन का तो कोई दोष ही नहीं है। फिर भी यह झूठा मुकदमा आप के गले में सरकार ने डाल दिया है। इसको अपने गले से निकालना तो पड़ेगा ही।

श्री अश्वनी कुमार माननीय जज जी ने कहा कि आप भी जानते हैं वर्तमान में कैसे काम बनता है? आप लोगों को कुछ खर्च करना पड़ेगा।

समिति के सदस्यों ने पूछा कि क्या खर्च करना पड़ेगा?

जज श्री अश्वनी कुमार जी ने कहा कि मात्र 20 लाख रूपये लगेंगे। हाई कोर्ट तक सैटिंग करनी पड़ती है। मैंने कुछ नहीं लेना, यह सारा खर्चा आगे ही देना है। मैं तो भगवान से डरने वाला हूँ। याद रखना जजों के पास स्वयं संज्ञान रूपी दो धारी तलवार हैं। सर्व गवाह भी आप के पक्ष में हों तो भी जज सजा कर सकते हैं। चाहे सारे गवाह आप के विरूद्ध हों तो भी स्वयं संज्ञान लेकर बरी कर सकते हैं। यदि छोटी-छोटी तारीखें भी लगेंगी तो आप के घर-व्यवसाय के कार्य की हानि होगी और आप मानसिक रूप से भी परेशान होंगे। आप को इससे (20 लाख से) भी अधिक हानि हो जाएगी। विचार कर लेना।

यह सर्व बातें श्री अश्वनी कुमार जज के मुख से सुनकर सर्व सदस्य दंग रह गए और कहा जज जी हम यह नहीं कर पाऐंगे। आप जी केस की वास्तविकता के आधार पर वैसे ही दया कर दें।

जज अश्वनी कुमार जी ने कहा कि मैंने तो आप को सलाह दी है, मानना या न मानना आपका काम है। आप के ट्रस्टी व गुरू पर तो यह केस बनता ही नहीं है। वैसे ही बरी हो सकते हैं।

यह सर्व दास्तां राष्ट्रीय सेवा समिति के सदस्यों 1. सतीश चन्द्र गाँव-सुण्डाना 2. राजेन्द्र सिंह गाँव-बरौदा 3. बलवान सिंह गाँव-बालक 4. चान्दीराम गाँव-बालक ने राष्ट्रीय सेवा समिति के मुख्य सदस्यों को मिटिंग करके बताई तो यही निर्णय लिया कि जज साहब का आगे कैसा बर्ताव रहेगा, उस को देखकर ही ऊपर के अधिकारियों को शिकायत की जाएगी।

20 लाख की मनसा पूरी न होने के पश्चात् माननीय जज श्री अश्वनी कुमार मेहता जी की अन्याय की झलक।

दिनांक 23-01-2014 के पश्चात् जज महोदय ने छोटी-छोटी तारीख लगानी प्रारम्भ की। दिनांक 31-01-2014 (8 दिन की) अगली 05-02-2014 (5 दिन की) अगली 13-02-2014 (8 दिन की) अगली 19-02-2014 (6 दिन की) अगली 20-02-2014 लगाई (1 दिन की)। 20-02-2014 को हमें परेशान करने के उद्देश्य से स्वयं कोर्ट में नहीं आया। उस दिन कोई कार्यवाही नहीं की। फिर जज अश्वनी कुमार मेहता जी के स्थान पर दूसरे जज ने कार्यभार संभाला।

इस के अतिरिक्त अन्य अन्याय जो जज अश्वनी कुमार जी ने किया। इस प्रकार है:-

श्रीमति कमला पुत्री साहब सिंह की ओर से कुछ वकील आने लगे। हमारे वकील जी ने जज श्री अश्वनी कुमार जी की कोर्ट में अपील लगाई कि कमला पुत्री साहब सिंह एक गवाह है। उसने जो ब्यान देना था, दे दिया। अब इसकी ओर से वकील नहीं आने चाहिए, ये कानून के विरूद्ध है।

दोनों पक्षों की सुनवाई के पश्चात् जज श्री अश्वनी कुमार जी ने अपने आदेश दिनांक 19-02-2014 में कहा कि कमला Victim (पीड़ित) है, इसके साथ धोखा (Fraud) हुआ है। यह वकील कर सकती है।

20 लाख की हवस पूरी न होने के कारण माननीय जज श्री अश्वनी कुमार जी ने पक्का इरादा कर लिया था कि स्वयं संज्ञान के जरिए ट्रस्ट के ट्रस्टी तथा चेयरमैन को सजा देगा ही देगा। यह आदेश पारित करते समय कमला के कोर्ट में दिए ब्यान को भी अनदेखा कर दिया। जज साहब पहले स्वयं कह रहे थे कि कमला की सहमति से जमीन दान की गई है। यह बात इसके ब्यान से स्पष्ट है और 20 लाख रूपये न मिलने के कारण कमला को बाद में जज साहब ने Victim (पीड़ित) घोषित कर दिया और लिख दिया कि इसकी जमीन धोखे से दान की गई है। कमला को पीड़ित घोषित करना ही सिद्ध

करता है कि जज ने (Malafied Intention) बदनीयत से ही यह आदेश किया है। कमला पीड़ित है तो सिद्ध कर दिया कि अन्य सब दोषी हुए। जज श्री अश्वनी कुमार जी ने अपने आदेश में भी स्पष्ट किया है कि केस दर्ज कराने वाला करतार सिंह कमला का सगा चाचा है। फिर यह भी कहा है कि वह दोषियों के साथ मिलीभगत करके Hostile हो गया है। जमीन दान करने वाले कमला के माता, भाई-बहन हैं। क्या वे भी कमला से धोखा करके हमारे को मुफ्त जमीन दे सकते हैं? जज श्री अश्वनी कुमार जी ने 20 लाख रूपये की हवस पूरी न होने के कारण कानून का जानकार होते हुए भी जानबूझ कर गैर-जिम्मेदाराना आदेश पारित करके अपनी मलीन मानसिकता को प्रदर्शित कर दिया और सम्माननीय न्यायाधीश की छवि को धूमिल किया है।

जबकि सर्वोच्च न्यायालय का आदेश नं. 2009 (S) Law of HERALD (S.C.) 3310 For Criminal Appeal No. 1695 of 2009 arising of out of SLP (crl.) No. 6211 of 2007 भी स्पष्ट करता है कि यदि A ने B की जमीन ''B'' बन कर ''C'' को बेच दी या दान कर दी तो ''A'' दोषी है। ''C'' दोषी नहीं ठहराया जा सकता। हम तो ''C'' हैं जमीन प्राप्त करने वाले। हम पर यह मुकदमा ही नहीं बनता। यह राजनीतिक दबाव से बनाया गया है। इसे समाप्त किया जाना चाहिए था। सर्वोच्च न्यायालय का यह आदेश भी जज महोदय ने लालचवश अनदेखा कर दिया।

यदि सर्वोच्च न्यायालय के आदेश के विरूद्ध यदि जमीन लेने वाले दोषी बनाए गऐ हैं। फिर तो तहसीलदार, रजिस्ट्री कलर्क तथा अर्जीनविस को भी दोषी बनाया जाना चाहिए था। जिन्होंने सारे कागजात की पूरी जाँच-पड़ताल करके रजिस्ट्री की है। यहां पर यह बताना भी अनिवार्य है कि जमीन दान की रजिस्ट्री ट्रस्ट के नाम है। यह किसी ट्रस्टी तथा चेयरमैन की निजी संपत्ति नहीं है और न ही हो सकती है। इसलिए हमारा परोपकार के लिए प्रयत्न है जिसे धोखा (420) की संज्ञा नहीं दी जा सकती। पूरे घटनाक्रम को जान कर यह निष्कर्ष निकलता है कि कमला ने अपनी जमीन स्वेच्छा से ट्रस्ट को दान की है। किन्हीं कारणों से यह तहसील में उपस्थित नहीं हो पाई। फिर इसको रजिस्ट्री के सर्व कागजात तैयार करके दिखाए गये थे। तब इसने अपनी मर्जी से अपनी बुआ को तहसील में भेज कर अपने स्थान पर खड़ा किया है। जो इसके ब्यान से भी स्पष्ट है जो ब्यान इसने न्यायालय में जज श्री अश्वनी कुमार जी के समक्ष दिए हैं। यह बात हमें अब स्पष्ट हो गई है यदि यह धोखा (Fraud) 420 है तो कमला तथा कृष्णा द्वारा किया गया है। इसमें ट्रस्ट का कोई दोष नहीं है।

हमारा सौभाग्य था कि उसी दौरान एक नया जज श्री लोकेश गुप्ता जी आ गए। माननीय भ्रष्ट जज श्री अश्वनी कुमार जी के जुल्म व अन्याय से बच गए नहीं तो जज अश्वनी कुमार जी अपने स्वार्थवश हम निर्दोषों को सजा कर देता।

विश्वसनीय सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि श्री अश्वनी कुमार जज 20 लाख रूपये न मिलने के कारण कितने घटिया हथकण्डे अपना रहा है। इसने श्री लोकेश कुमार गुप्ता जज से कहा था कि आप इस केस 446/2006 में ट्रस्टी तथा चेयरमैन की भी सजा करना, ये जजों की शिकायत करते हैं। ज्ञात हुआ है कि जज श्री लोकेश गुप्ता ने ऐसा करने से मना कर दिया। फिर जज श्री अश्वनी कुमार जी ने यह केस श्रीमति कीर्ति जैन J.M.I.C. के यहाँ ट्रांस्फर करा दिया जो जूनियर डिविजन में जज है जो श्री अश्वनी कुमार A.C.J.M. के आधीन है। इससे यह जो अन्याय चाहेगा, करा लेगा। यदि जज कीर्ति जैन जी ने कानून को अनदेखा किया और गैर-कानूनी कार्य किया तो उसकी जानकारी भी उच्च अधिकारी जज को दी जाएगी।

जो आदेश श्री अश्वनी कुमार जी ने लालचवश पारित किया था, कहा था कि ''कमला'' Victim (पीड़ित) है। इस आदेश के खिलाफ हमारे वकील ने सैशन जज की कोर्ट में अपील की। एडीश्नल सैशन जज श्री नरेश कुमार सिंगला जी की कोर्ट में सुनवाई के लिए केस लगा। श्री अश्वनी कुमार जी ने अपनी निजी तालुकात से एडीश्नल सैशन जज श्री नरेश कुमार सिंगला जी को भी भ्रमित करके अपने आदेश के अनुरूप फैसला करा दिया। इस आदेश के खिलाफ हमारे वकील जी ने माननीय हाई कोर्ट पंजाब व हरियाणा चण्डीगढ़ में अपील की ''माननीय विद्वान जज श्री सुरेन्द्र गुप्ता जी ने अपने आदेश नं. Crl. Misc No. M-17667 of 2014 Dt. 22-05-2014 में न्याय किया, कहा कि ट्रायल कोर्ट में केस की सुनवाई चल रही है। ऐसे समय में Victim पीड़ित and Fraud (धोखा) शब्दों का प्रयोग करना गलत है। कमला को असन्तुष्ट (aggrieved) कहा जा सकता है। फिर कहा कि अपनी सलाह के लिए गवाह भी वकील कर सकता है परन्तु वह वकील कोर्ट में सीधा कोई पक्ष नहीं रख सकता। (हाई कोर्ट का आदेश संलग्न है।)

हमारे को माननीय हाई कोर्ट से न्याय मिला। हम इस प्रार्थना पत्र के आरम्भ में ही लिख चुके हैं कि अधिकतर जज न्यायकारी हैं। कुछ भ्रष्ट जज ही अपने स्वार्थवश अन्याय करके गरीब जनता को सताते हैं क्योंकि भ्रष्ट जजों को पता होता है कि आम व्यक्ति ऊपर की कोर्टों में नहीं जा सकता क्योंकि वकीलों की मंहगी फीस होती है जो गरीब के वश के बाहर की बात होती है।

आप जी से पुनः प्रार्थना है कि माननीय भ्रष्ट जज श्री अश्वनी कुमार मेहता C.J.M. रोहतक कोर्ट (हरियाणा) की जांच करके कानूनी कार्यवाही की जाए, ऐसे व्यक्ति ऐसे सम्माननीय पद पर बने रहने के योग्य नहीं हैं। इसको तुरन्त प्रभाव से बरखास्त किया जाए ताकि गरीब जनता अन्याय से बच सके। जांच अधिकारी के सामने जांच के समय हमारे वो सदस्य जो जज श्री अश्वनी कुमार से मिले थे, शपथ पत्र देंगे तथा जांच में पूरा योगदान देंगे।

कानून को अनदेखा करके जज श्री अश्वनी कुमार जी ने अच्छा नहीं किया। यदि गरीब जनता ने दुःखी होकर कानून को अनदेखा कर दिया तो क्या होगा?

यदि इस जज के खिलाफ कार्यवाही नहीं हुई तो हम सर्व 10 लाख राष्ट्रीय समाज सेवा समिति के सदस्यों को सवैंधानिक तरीके से आंदोलन व प्रदर्शन करने के लिए विवश होना पड़ेगा।

धन्यवाद।

प्रार्थी
राष्ट्रीय समाज सेवा समीति के
सर्व 10 लाख सदस्य
(यह समीति पूर्ण रूप से धार्मिक तथा गैर-राजनीतिक संस्था है।)
सम्पर्क सूत्र :- 09992373237, 09416296541,
09416296397, 09813844747

''आर्यसमाजियों को रिश्वत लेकर बरी किया''
जज सविता कुमारी के भ्रष्टाचार की शिकायत की गई
जो इस प्रकार है :-

सेवा में,
माननीय मुख्य न्यायाधीश
पंजाब एवं हरियाणा हाई कोर्ट
चण्डीगढ़।

विषयः- जज श्रीमति सविता कुमारी JMIC रोहतक के भ्रष्टाचार की जांच करके उचित कानूनी कार्यवाही करने हेतू प्रार्थना पत्र।

श्रीमान् जी,

निवेदन है कि हम राष्ट्रीय समाज सेवा समिति के लगभग दस लाख सदस्य आप से निवेदन करते हैं कि उपरोक्त जज की जांच करके सख्त कार्यवाही करने की प्रार्थना करते हैं।

हम मानते हैं कि अधिकतर जज कानून का पालन करने वाले हैं, न्यायप्रिय हैं। हम जज को परमात्मा का छोटा रूप मानते हैं। जिसकी कलम में एक व्यक्ति की जीवन-मृत्यु का फैसला होता है। ऐसे माननीय तथा सम्माननीय पद पर विराजमान व्यक्ति अपने स्वार्थवश अन्याय करता है। गरीब जनता को न्याय नहीं देता है। वह न्यायालय की छवि को खराब करता है। उसे पद पर बने रहने का कोई अधिकार नहीं है। मामला यह कि हमारे कुछ सदस्यों पर मुकदमा नं. 192 Dt. 18-09-2006 PS Sadar Rohtak माननीय जज सविता जी की कोर्ट में विचाराधीन है।

केस नं. 178 Dt. 09-12-2005 इस्तगासा आश्रम के ट्रस्टी डॉ. कृष्ण जी ने आश्रम की मानहानि का सत्यवीर शास्त्री पर डाल रखा था तथा केस नं. 176 Dt. 06-03-2006 आचार्य बलदेव के खिलाफ था जो माननीय जज सविता जी की कोर्ट में सुनवाई चल रही थी। जिसमें माननीय जज सविता जी ने हमारे विरोधियों से रूपये लेकर उनके पक्ष में फैसला कर दिया।

दिनांक 02 मई 2014 को इस्तगासा केस नं. 178 Dt. 09-12-2005 तथा केस नं. 176 Dt. 06-03-2006 की तारीख थी। हमारे कुछ सदस्य भी ट्रस्टी कृष्ण के साथ कोर्ट में गए थे जो प्रत्येक पेशी पर जाते हैं। उन्होंने हमें बताया कि :-

दिनांक 2 मई 2014 को इस्तगासा केस नं. 178 Dt. 09-12-005 तथा केस नं. 176 Dt. 06-03-2006 की पेशी थी। उस दिन माननीय जज सविता जी छुट्टी पर थी। दोषी आचार्य बलदेव पहले से अनुपस्थित चल रहा था। 2 मई 2014 को आचार्य बलदेव कोर्ट में पेश हुआ। उसकी जमानत की अर्जी लगाई गई। जमानत की सुनवाई के लिए माननीय जज कीर्ति जैन जी की कोर्ट में लगी जो उस दिन ड्यूटी मजिस्ट्रेट थी।

आचार्य बलदेव के साथ आर्यसमाज के कई व्यक्ति कोर्ट से बाहर एक वृक्ष के नीचे खड़े थे। एक व्यक्ति और आया जिसको पटवारी जी कह रहे थे। उसने पूछा आचार्य जी की जमानत का क्या रहा? दूसरे व्यक्तियों ने बताया कि जमानत हो जाएगी। हमें जज कीर्ति जैन का दलाल मिल गया है। हमें कल ही पता चला था कि जज सविता छुट्टी पर हैं। हमने जज कीर्ति जैन से पांच लाख रूपये में सैटिंग कर रखी है। हमारी सैशन जज सुशील कुमार गुप्ता से भी सैटिंग हो चुकी है।

हमारे तीन सदस्यों ने बताया कि हम अनजान से बनकर मुँह दूसरी ओर करके अखबार पढ़ने का बहाना करके उनकी सारी वार्ता सुन रहे थे जिनके नाम हैं 1. बिजेन्द्र निवासी गाँव-गांधरा 2. महेन्द्र निवासी-मादीपुर (दिल्ली) 3.ओमप्रकाश निवासी गाँव-गांधरा।

उसी व्यक्ति ने (जिसको पटवारी जी कह रहे थे) फिर पूछा कि जो मुकदमें रामपाल के चेलों ने कर रखे हैं जो सविता जज की कोर्ट में आचार्य बलदेव तथा सत्यबीर शास्त्री पर चल रहे हैं। इनकी क्या संभावना है? आर्य समाज के व्यक्तियों ने कहा कि सविता जज का भी दलाल मिल गया है, सब सैटिंग हो गई है। दोनों मुकदमों में बरी हो जाऐंगे और रामपाल और उसके चेलों पर दो मुकदमे हैं एक आश्रम की जमीन का तथा दूसरा करौंथा काण्ड का इनमें इनकी सजा कराऐंगे। यह भी सैटिंग जजों से हो चुकी है।

वही हुआ जो सुना था :- 02-05-2014 को Working जज सविता कुमारी जी छुट्टी पर थी। दूसरी जज कीर्ति जैन ड्यूटी मजिस्ट्रेट के यहां जमानत लगी। जमानत मंजूर हो गई। हमारे भक्तों के ऊपर आर्य समाज के व्यक्तियों ने झूठा केस नं. 198/06 Date-12-07-2006 करौंथा काण्ड का चल रहा है और जो मुकदमा नं. FIR No. 192 Dt. 18-09-2006 PS Sadar Rohtak का है। यदि हमारे भक्त किसी कारण से किसी दिन अनुपस्थित हो जाते हैं तो उनके किसी प्रमाण को नहीं माना जाता। कई तो मानसिक रोग से ग्रस्त होकर बुरे हाल में जजों के सामने पेश किये गये। सब को जेल भेजा गया क्योंकि हम इन जजों को रूपये नहीं दे सकते।

वही हुआ जो सुना था :-

19 मई 2014 को माननीय भ्रष्ट जज सविता कुमारी जी ने दोनों दोषियों 1. आचार्य बलदेव 2. सत्यवीर शास्त्री को दोनों केसों में बरी कर दिया। जज ने बरी करने के आदेश में आधार बनाया है कि ''शिकायतकर्ता सिद्ध नहीं कर सका की समाचार पत्र में ब्यान दोषियों ने दिया था।

कृपया पढ़ें जज के उस आदेश के पृष्ठ 7 की फोटोकापी।

Krishan Singh v. Satbir Shastri

7

11. Thus, complainant having failed to prove the guilt of the accused beyond shadow of reasonable doubt, accused is hereby acquitted from the offences charged with. Bail bonds and surety bonds furnished stand extended for a further period of six months and in case no appeal is preferred after lapse of six months, same shall stand discharged. File be consigned to record room after due compliance.

Pronounced in Open Court.
Dated: 19.05.2014

Savita kumari
(Savita Kumari)
Judicial Magistrate Ist Class
Rohtak.

जबकि दोषी सत्यवीर ने स्वयं न्यायालय में जवाबदावे में स्वीकारा है कि मैंने यह ब्यान समाचार पत्र में छपवाया था। इससे स्पष्ट है कि जज सविता कुमारी ने दोषियों से रिश्वत लेकर बरी किया है। अधिक जानकारी इस प्रकार है :-

★ इन मुकदमों में दोषियों के विरूद्ध सब सबूत थे। समाचार पत्रों में प्रकाशित होने से यह स्व प्रमाणित है तथा हमारे तीन गवाह भी गवाही दे चुके थे।

★ सत्यवीर शास्त्री ने स्वयं स्वीकारा है कि मैंने यह स्टेटमैंट समाचार पत्रों में निकलवाई है। सत्यबीर ने न्यायालय में जवाब दावा दिया है। उसमें भी स्वीकारा है कि मैंने समाचार पत्र में यह ब्यान दिया था। मैंने ही समाचार पत्र छपवाया है। वह भी जज सविता जी को दिखाया गया। उसकी सत्यापित प्रति भी जज के माँगने पर दी गई। (जवाबदावा की प्रति संलग्न है)

कृपया पढ़ें जवाब दावे की फोटोकापी पृष्ठ 4 की जिसमें दोषी सत्यबीर ने स्वयं स्वीकारा है कि 24-11-2005 को यह समाचार दैनिक जागरण तथा भास्कर समाचार पत्रों में मैंने ही निकलवाया था। जब दोषी स्वयं स्वीकारता है कि मैंने अपराध किया है, फिर गवाह की क्या आवश्यकता है? इस भ्रष्ट जज ने मोटी रिश्वत लेकर यह फैसला दिया है।

public was legitimately interested and it affected the administration of justice. These were fair comments on a matter of public interest and the public in general was loving directly or indirectly involved. The views of the defendant were ~~lovent~~ correct and relevant. The comments expressed in the news item were fair and were based upon news item dated 22.11.2005 and the FIR recorded in the case. The defendant believes those facts as true while issuing the press statement which was published on 24.11.2005. The defendant has a legal and vested right to comment on acts/deeds of public man which concern him.

★ जिस समय यह गलत समाचार छपा था। उसी समय हमारे ट्रस्ट के सदस्यों ने यह खण्डन भी किया था कि यह सर्व झूठ समाचार है। हमने भी

समाचार पत्र में निकलवाया था।

★ पुलिस ने अपनी जाँच में भी स्पष्ट किया है कि यह बलात्कार की घटना गाँव-बोहर के खेतों की है जो सतलोक आश्रम से लगभग 25 कि.मी. दूर है।

★ उसी समय इस सिलसिले में हमारा शिष्ट मंडल एस.पी. रोहतक से भी मिला था कि यह समाचार पत्र कैसे छपा है? यह सुनकर तत्कालीन एस.पी. भी आश्चर्य में पड़ गया, कहा कि हमारे सामने लड़की ने स्वयं बताया कि बोहर गाँव के खेतों में यह घटना घटी। बोहर गाँव के गणमान्य व्यक्तियों ने भी यही बताया कि यह घटना गाँव के निकट ही खेतों में हुई है। हमारे पास सब के ब्यान हैं।

आर्यसमाज के लोगों को हमारे आश्रम को बदनाम करने का कौन सा अधिकार है। जज महोदय सविता जी ने भी अपने लालच में कानून को अनदेखा करके उनके पक्ष में फैसला कर दिया।

★ जज सविता जी से प्रार्थना है कि इनका लाईसैंस बना दे कि ये किसी की मानहानि करें इनको कोई नहीं रोकेगा।

★ हमारे भक्तों ने 50000/- (पचास हजार रूपये) भी कोर्ट फीस भर कर मुकदमा डाला था। यदि यह मुकदमा झूठा होता तो क्या हमारे सिर में दर्द था कि हम 50000/- रूपये खर्चते तथा वकीलों की फीस भरते।

★ पुलिस ने जिस व्यक्ति के खिलाफ बलात्कार का मुकदमा बनाया उसमें स्पष्ट लिखा है कि बोहर गाँव के बाहर खेतों में एक मकान के खण्डहर में बलात्कार हुआ था।

★ मुकदमा नं. **FIR No. 192 Dt. 18-09-2006 PS Sadar Rohtak** का केस माननीय जज सविता जी की कोर्ट में विचाराधीन है।

उसी दिन दिनांक **19-05-2014** को इस केस की पेशी भी थी जिस दिन केस नं. **178 Dt. 09-12-2005** तथा केस नं. **176 Dt. 06-03-2006** में दोषियों को बरी कर दिया। उसी दिन मुकदमा नं. **192 Dt. 18-09-2006 PS Sadar Rohtak** की तारीख पेशी थी। एक गवाह जिसका नाम मेघराज पुलिस वाला आया हुआ था। उस के सामने जज सविता जी ने प्रत्येक नामजद मुकदमा के नाम-पिता का नाम से बुला कर अन्दर एक-एक करके कोर्ट में बुलाया। हमने प्रार्थना की कि गवाह के सामने एक-एक को बुलाया जा रहा है। उसको पहचान कराई जा रही है। जज सविता ने हमारी एक नहीं सुनी और सर्व नामजद मुकदमा के हमारे भक्तों को बुला-बुलाकर गवाह के सामने पहचान कराई गई।

इस से भी स्पष्ट है कि जज सविता जी लालच में अन्धी हो गई है। कानून की भी पालना नहीं कर रही है।

★ एक तारीख पर हमारा वकील किसी कारण से कोर्ट में पेशी पर उपस्थित नहीं हो सका। उस दिन केस नं. 178 Dt. 09-12-2005 तथा केस नं. 176 Dt. 06-03-2006 की पेशी थी। आवाज लगने पर एक भक्त ने जज सविता जी से प्रार्थना की कि ''जज साहब हमारा वकील नहीं आ सका है।

इस बात पर जज बहुत क्रोध में आकर बोली कि बुलाओ अपने वकील को नहीं तो मैं एक-तरफा फैसला कर दूंगी।

★ जो भक्त इस केस की पेशी पर पैरवी के लिए जाते हैं तथा जिन पर यह मुकदमा बना रखा है उनमें से चार व्यक्तियों ने 1. जगदीश निवासी-पंजाबखोड़ 2. बिजेन्द्र निवासी-गांधरा 3. महेन्द्र निवासी-मादीपुर (दिल्ली) 4. ओम प्रकाश निवासी-गांधरा ने दिनांक 25-03-2014 को जज सविता जी से प्रार्थना की कि यह मुकदमा जो रोड़ जाम का है। यह राजनीति के दबाव में झूठा बनाया गया है। हमने रोड़ जाम नहीं किया, रोड़ जाम तो आर्य समाजियों ने किया था। उन पर मुकदमा नहीं बनाया गया। हमारे सर्व भक्त निर्दोष हैं। कृपया इस मुकदमें से हमारा पीछा छुड़वाऐं। 2006 से सैंकड़ों पेशियों पर आए हैं। हम घर का कार्य भी नहीं कर सकते। हम बहुत दुःखी हो चुके हैं। जज ने कहा कि कुछ कोर्ट का खर्चा भरना पड़ेगा। मुकदमा जल्दी तथा तुम्हारे पक्ष में हो जाएगा। हमने कहा कि जी कितने रूपये खर्चा भरना पड़ेगा। उस समय जज सविता कुमारी कोर्ट में अकेली बैठी थी। उसने बताया कि 10 लाख रूपये कोर्ट फीस है। यह मुझे गुप्त देनी होगी। यदि ऐसा नहीं करोगे तो छोटी-छोटी तारीख लगने से आप घर के कार्य भी ठीक से नहीं कर पाओगे। जिस कारण से आप को अधिक हानि हो जाएगी। विचार कर लेना, आप 19 व्यक्ति हैं। पचास हजार रूपये ही एक के हिस्से आते हैं। मैं तो आप को सलाह दे रही हूँ। आप की इच्छा है जैसे करो, कर लेना। 10 लाख रूपये कोर्ट फीस सुनकर हमें आश्चर्य तो हुआ परन्तु कहा कि मैडम हम विचार करके बताऐंगे। हम निर्धन व्यक्ति हैं, 10 लाख रूपये कोर्ट फीस भरने में असमर्थ हैं। इसलिए हमने दोबारा जज से कोई बात नहीं की। उसके पश्चात् तो जज सविता का हमारे प्रति आक्रामक रवैया हो गया। छोटी-छोटी तारीख देने लगी। 25-03-2014 के पश्चात् 26-04-2014 (31 दिन की) इस दौरान एक नामजद मुकदमा अनुपस्थित चल रहा था। उसको P.O. करने के लिए 31 दिन की तारीख दी थी। यह इस जज की मजबूरी थी। इस के पश्चात् 02-05-2014 (8 दिन की), फिर 08-05-2014 (6 दिन की) फिर 19-05-2014 (11 दिन की), फिर 24-05-2014 (5 दिन की), फिर 31-05-2014 (7 दिन की)।

उन चारों भक्तों ने राष्ट्रीय समाज सेवा समिति के मुख्य सदस्यों को बताया। जब वकीलों से पूछा गया तो हमारी हँसी करने लगे कि ऐसा कोई

कानून नहीं बना है कि कोर्ट फीस भरो और बरी हो जाओ। यह तो जज की सीधा-2 रिश्वत की माँग है।

फिर हमने राष्ट्रीय समाज सेवा समिति की मिटिंग बुलाई तथा माननीय भ्रष्ट जज सविता जी की शिकायत उच्च अधिकारियों को करने का निर्णय लिया गया।

आप जी से नम्र निवेदन है कि भ्रष्ट जज की जांच करके कानूनी कार्यवाही की जाऐ।

आप जी की अति कृपा होगी और न्यायालय की गरिमा बनी रहेगी।

जांच अधिकारी को हमारे चारों भक्त शपथ पत्र भी देंगे। यदि भ्रष्ट जज पर कार्यवाही नहीं हुई तो हम राष्ट्रीय समाज सेवा समिति के सर्व (10 लाख) सदस्य संवैधानिक तरीके से आंदोलन करने के लिए मजबूर होंगे। जब तक इस भ्रष्ट जज को पद से मुक्त नहीं किया जाएगा तब तक आंदोलन करेंगे।

आप जी से पुनः निवेदन है कि इस माननीय भ्रष्ट जज सविता कुमारी जी को बरखास्त करके सख्त कार्यवाही की जाये। इस से हमें न्याय की कोई उम्मीद नहीं है।

धन्यवाद।

प्रार्थी

राष्ट्रीय समाज सेवा समीति के

सर्व 10 लाख सदस्य

(यह समीति पूर्ण रूप से धार्मिक तथा गैर-राजनीतिक संस्था है।)

सम्पर्क सूत्र :- 09992373237, 09416296541, 09416296397, 09813844747

''हमारा उद्देश्य महर्षि दयानंद का अपमान करना नहीं है''

★ महर्षि दयानंद के विषय में जो भी जानकारी हमने दी है, यह आर्यसमाजियों द्वारा प्रकाशित पुस्तकों से है। फिर भी हम स्पष्ट करना चाहते हैं कि हम किसी का अपमान करने का उद्देश्य नहीं रखते अपितु सतर्क करना चाहते हैं कि जो भक्ति दयानंद जैसे प्रभु प्रेमी ने की। वह शास्त्रानुकूल न होने से उनको भक्ति लाभ प्राप्त नहीं हुआ। शास्त्रानुकूल भक्ति संत रामपाल दास जी महाराज के पास है। उसको जांचो, फिर नाम-दीक्षा ग्रहण करके कल्याण कराओ।

''महर्षि दयानन्द के अज्ञान व दुर्व्यसन का प्रमाण''

महर्षि दयानंद तम्बाकू खाता था, सूंघता था, का प्रमाण

पुस्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित्र के पृष्ठ 208 की फोटो कापी।

ओ३म्

महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित्र

[अमर शहीद पं० लेखराम द्वारा संकलित प्रामाणिक उर्दू-भाषा का आर्य-भाषा में अनुवाद]

अनुवादक - आर्य महोपदेशक श्री कविराज रघुनन्दनसिंह 'निर्मल'

सम्पादक - श्री पं० हरिश्चन्द्र विद्यालंकार

प्रकाशक - आर्यसमाज नयाबांस दिल्ली-६

(स्वर्ण-जयन्ति के उपलक्ष में)

प्रथम बार सृष्टि सम्बत् १९६०८५३०७२ मूल्य—कपड़े की जिल्द २२०० विक्रम-सम्बत् २०२८ - 1971 सन् सहित १६ रुपये

२०८ जीवनचरित्र-महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

''**रामगोपाल वैश्य** ने, जो वेदान्ती था, बहुत सी टीकायें गीता की देखीं परन्तु एक श्लोक के विषय में जो उसका सन्देह था वह दूर न हुआ। अन्त में वह एकदिन हमको साथ लेकर स्वामी जी के पास गया और स्वामी जी से कहा कि आपसे कुछ पूछना है। उन्होंने आज्ञा दी तब यह श्लोक पूछा 'सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज''। स्वामी जी ने कहा कि "शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यम्" इस वार्तिक से वकार के अकार के आगे (परे जो) अकार रहा उसको तद्रूप हो गया अर्थात् वह शब्द धर्म ही रहा परन्तु वास्तव में अधर्म है ; अर्थ अधर्म होगा। जिससे वह बहुत प्रसन्न हुआ और (उसने) फिर पूछा कि कोई प्रमाण भी है ? स्वामी जी ने ऋग्वेद की दो-तीन **श्रुतियों के प्रमाण दिये।**

पंडित रामप्रकाश जी ने वर्णन किया कि 'स्वामी जी संवत् १९२६ में प्रयाग के माघमेले के पश्चात् यहां आये और ला० रामरतन के बागीचे में उतरे तो हमारा आना-जाना प्रारम्भ हो गया। यहां के पंडित लोग प्रतिदिन शास्त्रार्थ के लिये जाया करते थे और हम सुना करते थे।

स्वामी जी के पास एक सूँघने की डिबिया हुलास की थी। और एक ओर पत्थर पर खाने का तंबाकू रखा था। छोटूगिरि वह उठा कर नाक में भरने लगा। स्वामी जी ने कहा कि यदि सूँघना है तो इस डिबिया को लो परन्तु उसने न लिया'

यह फोटो कापी '' जीवन चरित्र महर्षि-दयानन्द सरस्वती'' की है जो अमर शहीद पं. लेखराम द्वारा संकलित प्रामाणिक उर्दू-भाषा का आर्य-भाषा में अनुवाद है। इस के अनुवाद कर्ता ''आर्य महोपदेशक श्री कविराज रघुनन्दन

सिंह '' निर्मल'' सम्पादक श्री पं. हरिश्चन्द्र विद्यालंकार। प्रकाशक : आर्य समाज नयाबांस दिल्ली-6 (प्रथम बार विक्रमी संवत् 2028=सन् 1971 को छपा) इस लेख में स्पष्ट है कि महर्षि दयानन्द तम्बाकू सूंघते थे तथा तम्बाकू खाते भी थे।

''महर्षि दयानन्द को श्रीमद्भगवत् गीता का भी ज्ञान नहीं था''

ऊपर पृष्ठ 208 की फोटो कापी में लिखे वृतान्त से सिद्ध है कि महर्षि दयाननद का अध्यात्मिक ज्ञान शून्य था। प्रकरण इस प्रकार है। एक रामगोपाल वैश्य जो वेदान्ती था। उस ने बहुत सी टीकायें (अनुवाद) गीता की देखी। गीता अध्याय 18 श्लोक 66 में ''व्रज'' शब्द है श्लोक 66 :- सर्वधमान् परित्यज्य माम् एकम् शरणं व्रज, अहम् त्वा सर्व पापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः (अध्याय 18 श्लोक 66)

इस गीता अध्याय 18 श्लोक 66 के अनुवाद में सर्व टीका कारों (अनुवादकों) ने ''व्रज'' शब्द का विपरित अर्थ ''आना'' किया है। जब कि 'व्रज' का अर्थ जाना होता है। जैसे अंग्रेजी के शब्द (Go) का अर्थ जाना होता है। यदि कोई इसका अर्थ ''आना'' करता है तो वह विपरितार्थ कर रहा है। जिस कारण से उस प्रकरण का यथार्थ भावार्थ नहीं जाना जा सकता। इसी शंका का समाधान कराने के लिए ''रामगोपाल वैश्य ने महर्षि दयानन्द से जानना चाहा कि आप बताईऐ ''व्रज'' का अर्थ ''जाना'' है ''आना'' किस कारण से किया है यह तो उचित नहीं है।

महर्षि दयानन्द ने शंका का समाधान इस प्रकार किया :- कृप्या पढ़ें उपरोक्त फोटो कापी में लिखा है स्वामी जी (महर्षि दयानन्द) ने कहा (उत्तर) दिया :- ''शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यम्'' इस वार्तिक से वकार के अकार के आगे (परे जो) अकार रहा उसको तद्रूप हो गया अर्थात् वह शब्द धर्म ही रहा परन्तु वास्तव में अधर्म है; अर्थ अधर्म होगा। यह उत्तर दिया उस अज्ञानी महर्षि दयानन्द ने। लेखक ने लिखा है कि इस उत्तर को सुनकर रामगोपाल वैश्य बहुत प्रसन्न हुआ और (उसने) फिर पूछा कि कोई प्रमाण भी है ? स्वामी जी (महर्षि दयानन्द) ने ऋग्वेद की दो-तीन श्रुतियों के प्रमाण दिये।

यह समझो की प्रमाण के रूप में ऋग्वेद के दो तीन मंत्र सुना दिए।

★ जिस प्रकार सातवीं कक्षा के विद्यार्थी ने एक अंग्रेज यात्री के रास्ता पूछने पर अंग्रेजी भाषा में उत्तर देना गर्व की बात जान कर छुट्टी के लिए प्रार्थना पत्र (Sick leave Application) सुना दी। अंग्रेज माथे में हाथ मार कर चला गया। यह सोच कर कि इस मूर्ख ने क्या उत्तर दिया। मैंने जानना चाहा था मार्ग और यह सुना रहा है अंग्रेजी में छुट्टी के लिए प्रार्थना पत्र। महर्षि दयानन्द अज्ञानी ने ऐसा समाधान किया। उस रामगोपाल वैश्य के शंका का

कृप्या पढ़िए गीता अध्याय 18 श्लोक 66 का यथार्थ अनुवाद सन्त रामपाल दास जी महाराज द्वारा किया गया। श्री मद्भगवत् गीता का यथार्थ अनुवाद पुस्तक ''गहरी नजर गीता में''।

विशेष :- उपरोक्त समीक्षा सन्त रामपाल जी द्वारा अपने सत्संगों में बहुत बार की है तथा यथार्थ अनुवाद गीता अध्याय 18 श्लोक 66 का करके बताया है। अज्ञानियों के अज्ञान का पर्दाफास परमात्मा का भेजा अवतार ही कर सकता है।

पुस्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित्र के पृष्ठ 50 की फोटो कापी।

''महर्षि दयानंद भांग पीता था'' का प्रमाण

॥ ओ३म् ॥

महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवनचरित्र

[अमर शहीद पं० लेखराम द्वारा संकलित प्रामाणिक उर्दू संस्करण (१८९७ में प्रकाशित) का आर्यभाषा (हिन्दी) में अनुवाद]

अनुवादक-स्व० कविराज रघुनन्दनसिंह 'निर्मल'

सम्पादक - डॉ० भवानीलाल भारतीय

सेवानिवृत्त प्रोफेसर तथा अध्यक्ष — दयानन्द शोध पीठ, पंजाब विश्वविद्यालय

प्रकाशक — आर्ष साहित्य-प्रचार ट्रस्ट

४५५, खारी बावली, दिल्ली-११०००६

ईस्वी : २००७

मुद्रक :

इरानियन आर्ट प्रिण्टर्स

१५३४, गली कासिमजान, बल्लीमारान, दिल्ली-६

अपने दुर्व्यसन की स्वीकारोक्ति तथा उसका परित्याग—१ अक्तूबर सन् १८५६ बुधवार तदनुसार आसौज सुदी २ संवत् १९१३ को दुर्गाकुण्ड के मन्दिर पर जो चांडालगढ़[१९९] में स्थित है, पहुंचा। वहां मैंने दस दिन व्यतीत किये। वहां मैंने चावल खाने बिल्कुल छोड़ दिये और केवल दूध पर अपना निर्वाह करके दिन रात योगविद्या के पढ़ने और उसके अभ्यास में संलग्न रहा। दुर्भाग्य से इस स्थान पर मुझे एक बड़ा व्यसन लग गया अर्थात् मुझको भंग सेवन करने का अभ्यास पड़ गया और प्रायः उसके प्रभाव से मैं मूर्छित हो जाया करता था।

50

यह फोटो कापी महर्षि दयानन्द के भक्तों द्वारा लिखे गये ''जीवन चरित्र'' की है। जो पहले उर्दू भाषा में पं. लेखराम द्वारा लिखा गया था। उस उर्दू संस्करण का हिन्दी में अनुवाद स्व. कविराज रघुनन्दन सिंह 'निर्मल' ने किया है। इसमें स्पष्ट लिखा है कि महर्षि दयानन्द ने स्वयं अपने द्वारा लिखी जीवनी में कहा है कि मुझे भांग पीने का दोष लग गया। उसके प्रभाव से पूर्ण रूप से बेसुध हो जाता था और योग अभ्यास भी करता था।

विचार करें :- ऐब करने वाला व्यक्ति साधना कर सकता है? बेसुध व्यक्ति अभ्यास रत हो सकता है?

इस प्रकार का व्यक्ति था, यह महर्षि दयानन्द। जो सर्व बुराई करता था, लेकिन दावा करता था, समाज सुधार का। अधिक जानकारी के लिए कृप्या पढ़ें पुस्तक धरती पर अवतार के पृष्ठ 166 से 185 तक।

''महर्षि दयानंद का स्वतंत्रता संग्राम में कोई योगदान नहीं था''

पुस्तक नवजागरण के पुरोधा दयानन्द सरस्वती के प्रकाशक, मुद्रक की फोटोकापी है।

नवजागरण के पुरोधा दयानन्द सरस्वती

लेखक : डॉ. भवानीलाल भारतीय एम. ए. पी-एच. डी.
प्रोफेसर तथा अध्यक्ष : दयानन्द चेयर फॉर वैदिक स्टडीज
पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

प्रकाशक : **वैदिक पुस्तकालय,**
परोपकारिणी सभा, दयानन्दाश्रम, अजमेर

प्रकाशक :
वैदिक पुस्तकालय
परोपकारिणी सभा, दयानन्दाश्रम
केसरगंज, अजमेर
मुद्रक :
सतीशचन्द्र शुक्ल
प्रबन्धक, वैदिक यन्त्रालय, अजमेर

प्रथम संस्करण
दयानन्द सरस्वती की प्रथम निर्वाण शताब्दी
कार्तिक अमावस्या (दीपावली) २०४० वि.
१९८३ ख्रीस्ताब्द

यह उपरोक्त मुद्रण की पुस्तक नवजागरण के पुरोधा के पृष्ठ 38 की फोटो कापी।

३८] [नवजागरण के पुरोधा : दयानन्द सरस्वती

स्वामी दयानन्द और १८५७ की हलचल

स्वामी दयानन्द के जीवन के ये तीन वर्ष अज्ञात अवस्था के माने जाते हैं। इस अवधि में वे कहाँ रहे, क्या करते रहे आदि प्रश्नों को लेकर अनेक सम्भावनाएँ प्रकट की गई हैं। सर्वप्रथम 'हमारा राजस्थान' पुस्तक के लेखक पृथ्वीसिंह महता विद्यालंकार ने इस सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखा—

''मार्च १८५७ तक वह प्रायः गंगा के साथ साथ गंगोत्तरी और बद्रीनाथ से बनारस तक गढ़वाल, रुहेलखण्ड, दोआब और काशी के प्रदेश में घूमता रहा, जहाँ तक क्रान्ति की तैयारियां जनता में भीतर ही भीतर जोरों से की जा रही थीं।

१८५६ के मई मास में वह नाना के नगर कानपुर में गया और आगे पांच मास तक कानपुर, इलाहाबाद के बीच ही चक्कर काटता रहा। फिर बनारस, मिर्जापुर, चुनार होकर मार्च १८५७ में जब क्रांति की तैयारियाँ लगभग पूरी हो चुकीं और नाना साहब के सैकड़ों संदेशवाहक साधुओं, फकीरों आदि के रूप में पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण देश के हर कोने में क्रान्ति का संदेश लेकर रवाना हुए और स्वयं नाना साहब और अजीमुल्ला भी क्रान्ति आरंम्भ करने की तारीख निश्चय कर उसकी सारी तैयारी अपनी आंखों से देख लेने को तीर्थयात्रा करने निकले तब दयानन्द भी बनारस से मिर्जापुर, चुनार होकर नर्मदा स्रोतों के लिये दक्षिण की ओर निकल पड़ा। अपने प्रारम्भिक जीवन का परिचय देने के लिये दयानन्द की स्वलिखित जीवनी का यहां आकर एकाएक अन्त हो जाता है। आगे तीन साल क्रान्ति युद्ध के दिनों में वह कहां रहा और क्या करता रहा इसकी कोई विगत उसने कभी नहीं दी

महर्षि दयानन्द स्वतन्त्रता संग्राम में डर कर तीन वर्ष लापता रहा :- यह

ऊपर लगी फोटो कापी महर्षि दयानन्द के भक्तों द्वारा वैदिक पुस्तकालय, परोपकारिणी सभा, दयानन्दाश्रम, अजमेर (राजस्थान) से प्रकाशित '' नवजागरण के पुरोधा दयानन्द सरस्वती'' के पृष्ठ 38 की है। इसमें स्पष्ट किया है कि महर्षि दयानन्द मार्च 1857 तक तो गंगा नदी के साथ-२ घूमता रहा। जब मई 1857 में स्वतन्त्रता संग्राम की तैयारी चल रही थी, उसी समय लापता हो गया। फिर तीन वर्ष तक उसका कहीं पता नहीं लगा। जून 1857 में स्वतन्त्रता संग्राम हुआ। उसके भय से छुप गया। महर्षि की फोकट महिमा बनाई जाती रही कि स्वतन्त्रता संग्राम में महर्षि दयानन्द का बड़ा योगदान रहा।

विचार करें :- क्या खाक योगदान था स्वतंत्रता संग्राम में, उन दिनों भांग पीकर डर के मारे जंगलों में छुपा रहा और महर्षि दयानन्द के समर्थक कहते हैं कि परमात्मा की खोज में दयानन्द जंगलों, पहाड़ों, गुफाओं में गया। विचार करें परमात्मा कोई गाय-भैंस थोड़े ही है, कि गुम हो गई और वह कहीं जंगल में खोजने गया था। परमात्मा वेदों में वर्णित विधानुसार मिलता है और वेद ज्ञान महर्षि दयानन्द की बुद्धि से परे की बात थी। जिस कारण से अपना अज्ञान अनुभव जो वेद ज्ञान विरूद्ध है ''सत्यार्थ प्रकाश'' में भर दिया जो आप के समक्ष है।

''महर्षि दयानंद सन् 1877 तक हुक्का पीता था''

॥ ओ३म् ॥

महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवनचरित्र

[अमर शहीद पं० लेखराम द्वारा संकलित प्रामाणिक उर्दू संस्करण (१८९७ में प्रकाशित) का आर्यभाषा (हिन्दी) में अनुवाद]

अनुवादक-स्व० कविराज रघुनन्दनसिंह 'निर्मल'

सम्पादक-डॉ० भवानीलाल भारतीय

सेवानिवृत्त प्रोफेसर तथा अध्यक्ष—दयानन्द शोध पीठ, पंजाब विश्वविद्यालय

प्रकाशक—आर्ष साहित्य-प्रचार ट्रस्ट

४५५, खारी बावली, दिल्ली-११०००६

ईस्वी: २००७

मुद्रक :

इरानियन आर्ट प्रिण्टर्स

१५३४, गली कासिमजान, बल्लीमारान, दिल्ली-६

यह पुस्तक आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट 455, खारी बावली दिल्ली द्वारा प्रकाशित है। इसके लेखक पंडित लेखराम उर्दू भाषा अनुवादक है = आर्य महोपदेशक श्री कविराज रघुनंदन सिंह निर्मल, सम्पादक :- भवानी लाल भारतीय तथा मुद्रकः- इरानियन आर्ट प्रिंटर्स 1534, गली कासिम जान बल्लीमारान दिल्ली-6

मेरठ में ठहरे—स्वामी जी पण्डित भीमसेन सहित, दिल्ली से चलकर १६ जनवरी[७५], सन् १८७७ को मेरठ पधारे और सूरजकुण्ड पर बनी हुई डिप्टी महताबसिंह की कोठी में ठहरे। उस कोठी पर अंग्रेजी में यह लिखा हुआ था कि यह कोठी प्लोडन महोदय की स्मृति में यूरोपियनों के प्रयोग के लिये बनाई गई है। वहां स्वामी जी १०-१५ दिन रहे। उस लेख के लिखे हुए होने के कारण, गोरे लोग आकर तंग करते थे, इसलिए वहां से समीपस्थ लेखराज के बाग में चले गये। दस दिन वहां रहे। यह मकान यद्यपि बहुत अच्छा नहीं था परन्तु पहले मकान में जैसी कठिनाई आई वैसी इसमें कोई कठिनाई नहीं थी। भागीरथ और कमलनयन पंडित प्रायः जाया करते थे।'

इस बार कोई व्याख्यान नहीं दिया, केवल मिलनेवाले लोगों से धार्मिक बातें करते रहे। नगर में प्रसिद्ध हो गया कि एक साधु, नास्तिक, मूर्ति का खंडन करने वाला और श्राद्धों का न मानने वाला आया है। मेरठ निवासी ला० ज्वालाप्रसाद वैश्य, कहते हैं कि चूंकि मैं शिव का भक्त था, इस कारण स्वामी जी से न मिला। पंडित पालीराम, मुंशी कल्याणराय व ला० सरनदास आदि कई सज्जन जाया करते थे।[1] प्रबन्ध किसी विशेष मनुष्य का न था, अपने पास से खाते और 'ऋग्वेदादि-भाष्यभूमिका' बनाते थे। लोगों ने यह भी प्रसिद्ध कर रखा था कि यह अंग्रेजों से वेतन पाते हैं।

फरवरी तथा मार्च, सन् १८७७—४ फरवरी, सन् १८७७ को मेरठ से चलकर स्वामी जी सहारनपुर पधारे। पनचक्की के पास ला० कन्हैयालाल के शिवालय के समीप वाले मकान में निवास किया। उस समय स्वामी जी के साथ निम्नलिखित व्यक्ति थे—१. पंडित भीमसेन, २. बिहारी बाबू, ३. सामन्ता, ४. भूदेव, ५. बलदेव ब्रह्मचारी।

---

1. इस स्थान पर उर्दू संस्करण में स्वामी जी के हुक्का पीने के विषय में निम्नलिखित शब्दों में विवरण लिखा है—"इन दिनों स्वामी जी हुक्का पीते थे। एक दिन भागीरथ पं० जी ने प्रश्न किया यह जो तम्बाकू पीते हो इसके विषय में बताओ अर्थात् क्या वेद में कहीं हुक्का पीना लिखा है? स्वामी जी ने कहा कि—वेद में कहीं निषेध है? इस पर थोड़ा सा विवाद हुआ आखिरकार उसने कहा कि तुम संन्यासी होकर हुक्का पीते हो? स्वामी जी ने कहा कि यदि तू हुक्के से क्रुद्ध होता है तो ले! यह कहा और उसे तोड़ डाला।'

285

यह फोटोकापी ''महर्षि दयानंद सरस्वती का जीवन चरित्र'' के पृष्ठ 285 की है। यह पुस्तक आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट 455, खारी बावली दिल्ली द्वारा प्रकाशित है। इसके लेखक पंडित लेखराम उर्दू भाषा अनुवादक है = आर्य महोपदेशक श्री कविराज रघुनंदन सिंह निर्मल, सम्पादक :- भवानी लाल भारतीय तथा मुद्रकः- इरानियन आर्ट प्रिंटर्स 1534, गली कासिम जान बल्लीमारान दिल्ली-6

इस पृष्ठ 285 पर जो प्रकरण रेखा के नीचे लिखा है कि :- 1. इस स्थान पर उर्दू संस्करण में स्वामी जी के हुक्का पीने के विषय में निम्नलिखित शब्दों में विवरण लिखा है- ''इन दिनों स्वामी जी हुक्का पीते थे। एक भागीरथ पं० जी ने प्रश्न किया यह जो तम्बाकू पीते हो इसके विषय में बताओ अर्थात् क्या वेद में कहीं हुक्का पीना लिखा है? स्वामी जी ने कहा कि-वेद में कहीं निषेध है? इस पर थोड़ा सा विवाद हुआ आखिरकार उसने कहा कि तुम संन्यासी होकर हुक्का पीते हो? स्वामी जी ने कहा कि यदि तू हुक्के से क्रुद्ध होता है तो ले! यह कहा और उसे तोड़ डाला।''

यह विवरण पृष्ठ की फोटोकापी का है जिसका भावार्थ है कि ''एक भागीरथ पंडित ने स्वामी दयानंद से प्रश्न किया कि आप सन्यासी होकर हुक्का पीते हो। क्या वेद में हुक्का पीने की आज्ञा है? महर्षि दयानंद ने कहा कि वेद में हुक्का पीना मना भी तो नहीं किया है। फिर हुक्का तोड़ दिया।''

इससे स्पष्ट है कि महर्षि दयानंद सन् 1877 तक भी तम्बाकू का सेवन किया करते थे। एक हुक्का तोड़ने मात्र से संसार के हुक्के समाप्त नहीं हो गए। फिर खरीद लिया होगा। स्पष्ट है कि सन् 1877 में महर्षि दयानंद जी हुक्का पीते थे। सन् 1875 में आर्यसमाज की स्थापना महर्षि दयानंद जी द्वारा की गई। स्वयं दो वर्ष पश्चात् तक हुक्का पी रहे थे। तम्बाकू सेवन कर रहे थे। पूर्व में आप पढ़ चुके हैं कि महर्षि दयानंद भांग पीता था, तम्बाकू खाता था, तम्बाकू सूंघता था स्वामी दयानंद खाक समाज सुधारक थे?

इसी पृष्ठ में रेखा के नीचे लेखक ने टिप्पणी की है कि हुक्का पीने की बात जो पंडित लेखराम जी के द्वारा लिखे जीवन चरित्र उर्दू संस्करण में लिखी है। उसके विषय में भ्रमित करने के लिए लीपा-पोती करते हुए अनुवादक ने कहा है कि वह विश्वसनीय नहीं लगती। इसी पुस्तक के प्रथम पृष्ठ पर लेखक के परिचय में कहा है कि यह उर्दू संस्करण पं. लेखराम द्वारा सन् 1897 में लिखा गया था। सन् 1883 में स्वामी दयानंद जी का निधन हुआ था। भावार्थ है कि स्वामी दयानंद जी की मृत्यु के 14 वर्ष पश्चात् यह उर्दू संस्करण वाला जीवन चरित्र लिखा गया था। यह भी लिखा है कि यह हिन्दी में लिखा जीवन चरित्र प्रमाणित ग्रंथ उर्दू से लिया गया है जो पंडित लेखराम द्वारा लिखा गया था।

क्या अन्य सर्व बातें तो इस ग्रन्थ की विश्वसनीय हैं? लेकिन हुक्का पीने वाली विश्वसनीय नहीं है। या तो सर्व ही अविश्वसनीय है, नहीं तो हुक्का पीने वाली भी सत्य ही है क्योंकि उर्दू वाला सन् 1897 का लिखा हुआ है, सत्य यही है कि महर्षि दयानंद को किसी वस्तु का परहेज नहीं था। यह किसी भी कसौटी में खरा व्यक्ति नहीं था।

''महर्षि दयानन्द की दुर्गति से सन् 1883 में मृत्यु''

''महर्षि दयानन्द ने पाप कर्मों का दण्ड भोगा''

पुस्तक दयानन्द चरित की फोटो कापीयाँ

दयानन्दचरित

(103 वर्ष पूर्व प्रकाशित बंगला ग्रन्थ का अनुवाद)

लेखक

श्री देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय

अनुवादक

बाबू घासीराम

एम०ए०, एल०एल०बी०

सम्पादक

डॉ० (प्रो०) भवानीलाल भारतीय

विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द

प्रकाशक : विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द
4408, नई सड़क, दिल्ली-110006, भारत

संस्करण : वर्ष 2000

मुद्रक : नवशक्ति प्रिंटर्स
दिल्ली-110032

पुस्तक दयानन्द चरित के पृष्ठ 216 की फोटो कापी।

216 दयानन्दचरित

आश्विन मास में स्वामी जी को एक दिन ठण्ड लग गई। उस दिन बृहस्पतिवार और एकादशी थी। ठण्ड के कारण शरीर के अस्वस्थ होने से चतुर्दशी की रात को दयानन्द केवल दुग्धपान करके सोए। रात्रि में दो-तीन बार वमन हुई। परन्तु वह किसी से भी कुछ न कहकर स्वयं ही आचमन करके सोते रहे। प्रातःकाल उठकर भ्रमण करना दयानन्द का दैनिक अभ्यास था। परन्तु उस दिन अपेक्षाकृत विलम्ब से उठे और उठकर एक वार वमन हुई। इस प्रकार वमन पर वमन होने से दयानन्द के मन में सन्देह हुआ। उन्होंने इच्छापूर्वक बहुत-सा जलपान करके और एक बार वमन की। परन्तु उससे भी उनकी वमननिवृत्ति नहीं हुई। तब दुर्गन्ध दूर करने के लिए उन्होंने कमरे में अग्नि जलाने के लिए कहा, और उस अग्निकुण्ड में धूप आदि सुगन्धित द्रव्य डालने लगे। धूपादि की सुगन्ध से वहाँ का दुर्गन्ध तो दूर हो गया, परन्तु उनके उदर में शूल की पीड़ा आरम्भ हो गई। इसलिए डॉक्टर सूरजमल को बुलाया गया। सूरजमल के पीड़ा की कथा को सविस्तर पूछने पर स्वामी जी उदर की असह्य वेदना और पिपासा की कथा पुनः-पुनः कहने लगे। तब सूरजमल की समझ में ठीक व्यवस्था आ गई और प्रस्थान करने के समय स्वामी जी पर लक्ष्यपात करके यह कहकर चले गए कि आपके समान कोई महापुरुष मारवाड़ में कभी नहीं आए, इसलिए कि मारवाड़ के लोग आपके माहात्म्य को कैसे समझ सकते हैं! सूरजमल के चले जाने पर उनकी शूलवेदना क्रमशः यहाँ तक बढ़ी कि निःश्वास-प्रश्वास की क्रिया के साथ उनकी वेदना का वेग बढ़ने लगा। सुतरां निःश्वास-प्रश्वास करना स्वामीजी के लिए विशेष क्लेशदायक हो गया।

यह फोटो कापी ''दयानन्द चरित'' नामक पुस्तक के पृष्ठ 216 की है जिसके लेखक है श्री देवेन्द्र नाथ मुखोपाध्याय जिन्होंने सन् 1897 में (2000-103=1897) बंगला भाषा में लिखा था। इसका अनुवाद सन् 2000 में 103 वर्ष पश्चात् बाबू घासी राम एम.ए., एल.एल.बी. ने हिन्दी में किया। जिस पुस्तक के सम्पादक हैं। डा. (प्रो) भवानी लाल भारतीय। इसके पृष्ठ 216 में लेखक ने स्पष्ट किया है कि आश्विन मास (आसौज महिने) की बदी एकादशी को महर्षि दयानन्द को ठण्ड लग गई थी। जिस कारण से शरीर अस्वस्थ था। इसलिए चौदह को रात्री में केवल दूध पीकर सोया। रात्री में उल्टियाँ लगी। फिर डाक्टरों का आना आरम्भ हुआ। लेकिन दवाईयों से कोई लाभ नहीं मिला, पेट का दर्द बढ़ता चला गया। स्वांस लेना भी कठिन हो गया। इससे यह स्पष्ट हुआ कि महर्षि दयानन्द की मृत्यु कांच या विष देने से नहीं हुई बल्कि ठण्ड लगने से हुई तथा पाप बढ़ जाने के कारण से हुई। दूसरी दुर्दशाऐं पुस्तक श्रीमद्दयानन्द प्रकाश की फोटो कापियों में आप पढ़ेंगे कि

यह व्यक्ति किस तरह दुर्गति को प्राप्त होकर सन् 1883 में मरा? जिसे पढ़कर कलेजा मुंह को आता है।

पुस्तक दयानन्द चरित के पृष्ठ 217 की फोटो कापी।

द्वादश परिच्छेद 217

ईश्वरचिन्तन और नामोच्चारण से भिन्न और कुछ नहीं किया। 30वीं सितम्बर को महाराज प्रतापसिंह परिषद्-वर्ग के साथ दयानन्द के पास आए। महाराज के साथ अलीमर्दान खाँ नामक एक डॉक्टर भी आए। अलीमर्दान ने स्वामी जी की सारी अवस्था को जानकर उनके उदर पर ब्लिस्टर लगाया। उस दिन सन्ध्याकाल को रावराजा तेजसिंह भी स्वामी जी के देखने के लिए आए। ब्लिस्टर के लगाने से दयानन्द को विशेष क्लेश होने लगा। दूसरी अक्तूबर को स्वामी जी ने अलीमर्दान को बुलाकर कहा—''हम एक जुलाब लेना चाहते हैं, क्योंकि उससे उदर की यावतीय ग्लानि दूर हो जायगी।'' अलीमर्दान उसे युक्तिसंगत विवेचना करके घर चले गए, और स्वामी जी के पास एक विरेचक औषध भेजी। तीसरी अक्तूबर के प्रात:काल डॉक्टर के निर्देशानुकूल दयानन्द ने उस विरेचक औषध का सेवन किया। एक प्रहर तक औषध का फल कुछ नहीं मालूम हुआ, परन्तु दश बजे के पीछे उसका प्रभाव होने लगा। दश बजे से रात्रि तक 30 से न्यून दस्त नहीं आए। दूसरे दिन प्रात:काल डॉक्टर के आने पर स्वामी जी ने धीरे-धीरे कहा—''आपने तो कहा था कि छ: या सात से अधिक दस्त नहीं आएँगे, परन्तु तीस से अधिक दस्त आए।'' यह सुनकर डॉक्टर चुप हो गए। पहले दिन के समान उस दिन भी दस्त आने लगे। दो दिन बराबर दस्त आने से स्वामी जी नितान्त निर्बल हो गए, यहाँ तक कि उनकी दोनों आँखें कुछ बाहर को निकल आईं। छठी अक्तूबर को उन्होंने डॉक्टर से कहा—''दस्त बन्द न होंगे, तो मैं नहीं बचूँगा।'' इसके उत्तर में डॉक्टर ने कहा—''दस्तों का अपने-आप ही बन्द होना अच्छा है। चेष्टा करके बन्द करने से रोगवृद्धि की सम्भावना है।'' इसके पश्चात् दयानन्द के उदर से कण्ठदेश तक सारे स्थल में, मुखविवर में, हाथ में, पैरों के तलुओं में छोटी-छोटी फुंसियाँ दिखाई पड़ने लगीं। इसलिए वह बहुत क्लेश के साथ बातें करने लगे। इसके भिन्न उन्हें हिचकी आने लगी।

इस पृष्ठ 217 की फोटो कापी में आप स्वयं पढ़ें महर्षि दयानन्द की दुर्दशा। यह पृष्ठ 217 की फोटो कापी भी उपरोक्त पुस्तक ''दयानन्द चरित'' की है।

पुस्तक ''श्री मद्दयानन्द प्रकाश'' के प्रकाशक तथा मुद्रक की फोटो कापी।

।। ओ३म्।।

श्रीमद्दयानन्द-प्रकाश

लेखक

स्वामी सत्यानन्द

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

प्रकाशक

३/५ महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली–२

प्रकाशक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

३/५ महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली–२

सम्वत् २०५६, मई २००२

मुद्रक

प्रिन्स ऑफ सैट पटौदी हाऊस

दरिया गंज, नई दिल्ली–२

पुस्तक श्री मद्दयानन्द प्रकाश के पृष्ठ 437 की फोटो कापी।

चौथा सर्ग] राजस्थान काण्ड ४३७

महाराज का स्वास्थ्य दो चार दिन से कुछ शिथिल था। आश्विन बदी चतुर्दशी सम्वत् १९४० को रात्रि समय महाराज ने अपने रसोइए से दूध लेकर पान किया और फिर सो गये। थोड़ी ही देर तक आँख लगने पाई थी कि उदर-वेदना की खलबली ने उनको जगा दिया। उसी विकट व्याकुलता में उन्होंने तीन बार वमन की। आप ही जलादि लेकर कुल्ले करते रहे। पास सोये सेवकों को जगाकर कष्ट नहीं दिया।

यह फोटो कापी पुस्तक ''श्रीमद्दयानन्द प्रकाश'' के पृष्ठ 437 के आंशिक विवरण की है। इस के लेखक व प्रकाशक तथा मुद्रक की भी फोटो कापी पहले लगी है। इसमें भी स्पष्ट है कि महर्षि दयानन्द कई दिन से अस्वस्थ चल रहे थे। आश्विन बदी चतुर्दशी (चौदस) सम्वत् 1940 (सन् 1883) को केवल दूध पीकर सोए। बस फिर उसके पाप ने इतना बल दिया कि उसको किसी भी औषधि ने लाभ नहीं किया। पाप अधिक बढ़ गया था जिस कारण से औषधि विपरित कार्य (रियैक्शन) करने लगी। आप पढ़ें आगे लगी फोटो कापियाँ जो पुस्तक ''श्रीमद्दयानन्द प्रकाश'' की हैं। जो सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधी सभा 3/5 महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली से प्रकाशित है। पुस्तक श्री मद्दयानन्द प्रकाश के पृष्ठ 443 की फोटो कापी।

पांचवां सर्ग] राजस्थान काण्ड ४४३

पांचवां सर्ग

उस समय डाक्टर लक्ष्मणदास अजमेर जा रहे थे परन्तु उनका कलेजा इतना भर आया कि वे आबू मार्ग स्टेशन की ओर एक डग भी न उठा सके, और महाराज के साथ साथ ही लौट पड़े।

महाराज को कोई पन्द्रह दिन से हिचकियों का उपद्रव सता रहा था। उनके वेग से सारी अंतड़ियाँ तनी जाती थीं। सम्पूर्ण तन में ऐंठनसी हो रही थी। उदर तो बार बार की खींच से हाथ लगाने पर भी दुखता था। परन्तु प्रेमी लक्ष्मणदासजी की चिकित्सा से यह उपद्रव दूसरे ही दिन दूर हो गया। अतिसार भी बंद हो गये।

यह फोटो कापी पुस्तक श्रीमद्दयानन्द प्रकाश के पृष्ठ 443 की है। इसमें लिखा है कि 15 दिन तक अतिसार (दस्त) लगे रहे। हिचकियाँ लगी रही। पेट को हाथ लगाने से भी दर्द होता था।

पुस्तक श्री मद्दयानन्द प्रकाश के पृष्ठ 444 की फोटो कापी।

४४४ श्रीमद्दयानन्द प्रकाश [पाँचवाँ सर्ग

आबू से नीचे आते समय, भक्त लक्ष्मण को कई आर्य्य पुरुष ऊपर जाते मिले। उन्होंने भक्तराज को पहचानकर उससे भगवान् का समाचार उतनी ही आतुरता से पूछा, जितनी से पाण्डु-पुत्र ने श्री कृष्ण का ऊधवजी से पूछा था। भक्त ने अनर्गल आँसू बहाते हुए कहा, "भगवान की अवस्था अतीव शोचनीय है। निर्बलता परले पार की बढ़ गई है। उनके कण्ठ में, जीभ पर, मुख में, माथे और सिर पर छाले पड़ गए हैं। पानी का घूंट भी बड़ी कठिनता से गले से नीचे उतरता है।

यह फोटो कापी पुस्तक ''श्रीमद्दयानन्द प्रकाश'' के पृष्ठ 444 के आंशिक विवरण की है। इसमें स्पष्ट किया है कि दयानन्द की दुर्गति किस सीमा तक बढ़ी हुई थी। उनके कण्ठ में छाले, जीभ पर छाले, मुख में छाले, माथे पर सिर पर छाले पड़ गए थे। पानी की घूंट भी बड़ी कठिनाई से गले से नीचे जाती थी।

पुस्तक श्री मद्दयानन्द प्रकाश के पृष्ठ 445 की फोटो कापी।

पाँचवाँ सर्ग] राजस्थान काण्ड ४४५

ठाकुर भूपालसिंहजी स्वामीजी के साथ जोधपुर में भी थे। आपने उनकी सेवा में रात दिन कुछ नहीं देखा। यद्यपि आप जिला अलीगढ़ के भूमिहार ठाकुरों में से एक प्रतिष्ठित ठाकुर थे परन्तु उन्होंने महाराज की उलटियों को अपने हाथ से उठाकर दूर बाहर फेंका। वे महाराज का मूत्र-पुरीष तक उठाते रहे। अपनी गोद में उठाकर उनको शौच-स्थान में ले जाते। कई बार उनके हाथों पर ही अतिसार हो गए। वे उनके मलमूत्र के वस्त्रों को भी धोते। जो भी गुरु-सेवा कोई आदर्श सेवक कर सकता है वह ठाकुर महाशय ने की और रातों जागकर की।

कार्तिक कृष्णा द्वादशी से फिर डाक्टर लक्ष्मणदासजी की औषधि आरम्भ हो गई। भक्त लक्ष्मणदास नियत समय पर बदलव दल कर औषधि देते, आप भी अधिक समय वहाँ रहते परन्तु सभी प्रयत्न निष्फल जाते थे। कोई भी औषधि लगती न थी। पल पल, घड़ीघड़ी और दिन दिन में महा-रोग भीषणाकार होता चला गया।

यह फोटो कापी इस पुस्तक ''श्रीमद्दयानन्द प्रकाश की है जिसमें लिखा है कि उसका मल-मूत्र वस्त्रों में ही निकल जाता था। दयानन्द को अतिसार (दस्त) लगे हुए थे। ठाकुर भूपाल सिंह के हाथों पर ही कई बार मल-मूत्र निकल जाता था।

इस प्रकार महापीड़ा को भोगकर, भुगत कर, मृत्यु को प्राप्त हुआ महर्षि दयानन्द। धिक्कार है ऐसी भक्ति को तथा महर्षि को जिससे भक्त के पाप कर्म का कष्ट समाप्त नहीं हुआ।

४४६ श्रीमद्दयानन्द प्रकाश [पांचवां सर्ग

श्रीमन्महाराणा सज्जन-सिंहजी ने, उदयपुर से, पण्डया मोहनलाल जी को पूज्यपादजी का कुशल-समाचार पूछने के लिए भेजा। पण्डयाजी ने जब आकर देखा कि उनके फेफड़े काश-श्वास से धौंकनी की भाँति धौंक रहें हैं, अन्तकालीन वेदना से उनका बदन व्यथित हो गया है, उनकी परिपुष्ट काया अब अस्थि-पिंजरावशेष यष्टि बन गई है, और उनके जीवन-स्रोत के सामने उसे शोषण करने के लिए मृत्यु की महामरुस्थली आपड़ी है तो वे पांव के तलुओं से सिर की चुटिया तक थरथर कांप गये।

कार्त्तिक कृष्णा १४ को महाराज के शरीर पर नाभि तक छाले पड़

पांचवाँ सर्ग] राजस्थान काण्ड ४४७

गये थे। उनका जी घबराता था गला बैठ गया था। श्वास-प्रश्वास के वेग से उनकी नस नस हिल जाती थी। सारी देह में दाहसी लगी हुई थी

यह फोटो कापी पुस्तक ''श्रीमद् दयानन्द प्रकाश'' के पृष्ठ 446-447 के आंशिक प्रकरण की है। जिसमें लिखे विवरण को पढ़कर पता चलता है कि महर्षि दयानन्द के ऊपर पाप कर्मों ने कैसा कहर बरसाया था। महर्षि दयानन्द की दुर्दशा को देखकर कलेजा मुंह को आता है। आम आदमी यही सोचेगा कि इस व्यक्ति ने कितनी साधना की फिर भी ऐसी दुर्दशा को प्राप्त होकर सन् 1883 में 59 वर्ष की आयु में मरा तो क्या रखा है भक्ति में? आम आदमी भी नास्तिक हो जाएगा।

''महर्षि दयानंद की दुर्गति का कारण''

महर्षि दयानंद जी ने परमेश्वर कबीर जी की निंदा की तथा उनकी महिमा पर अनर्गल आक्षेप लगाए। प्रमाण के लिए पुस्तक ''सत्यार्थ प्रकाश'' के समुल्लास 11 में पृष्ठ 306-307 पर प्रकरण :-

प्रश्न :- कबीर पंथी तो अच्छे हैं। उत्तर महर्षि दयानंद का = नहीं।

अधिक जानकारी के लिए पढ़ें पुस्तक ''सत्यार्थ प्रकाश''।

महर्षि दयानन्द की दुर्दान्त मृत्यु का कारण यह है कि श्रीमद्भगवत् गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में कहा है कि जो व्यक्ति शास्त्रविधि को त्यागकर मन-माना आचरण करता है वह न तो सुख को प्राप्त होता है न परमगति को तथा न सिद्धि को ही प्राप्त होता है अर्थात् उसका जीवन व्यर्थ हो जाता है। इसलिए श्लोक 24 में कहा है कि अर्जुन शास्त्रों में जो प्रमाण हैं उसी आधार से साधना करने से ही भक्ति का लाभ साधक को प्राप्त होता है।

महर्षि दयानन्द को न तो वेदों का ज्ञान था न श्रीमद्भगवत गीता का, इसलिए हठयोग करके भांग आदि नशीली वस्तुओं का सेवन करके दीवार से कमर लगा कर बैठा रहता। जनता भोली थी वह यह सोचते कि बड़ा योगी पुरूष है, और यह फोड़ रहा था अपने भाग्य को। ऐसे व्यक्ति के विषय में संत गरीबदास जी महाराज ने कहा है :-

गरीब, डीम्ब करें डूंगर चढ़े, अन्तर झीनि झूल।
जग जाने बन्दगी करें, ये बोवै सूल बबूल।।

महर्षि दयानन्द को स्वयं निश्चय नहीं था कि क्या साधना की जाए ?

उदाहरण :- पुस्तक ''नवजागरण के पुरोधा दयानन्द सरस्वती'' के पृष्ठ 93 पर लिखा है कि महर्षि दयानन्द गायत्री मंत्र का जाप करने को कहते थे। पुस्तक नवजागरण के पुरोधा दयानन्द सरस्वती के पृष्ठ 93 की फोटो कापी।

गांगेय प्रदेश का भ्रमण (१)] **[९३**

मार्गशीर्ष मास में ही वे रामघाट से चल कर बेलौन (जिला बुलन्दशहर) आ गये। खेरा नामक एक स्थान पर पीपल वृक्ष के नीचे निवास किया। यहां भी गायत्री जप के उपदेश का कार्य यथावत् चलता रहा। गायत्री मंत्र से अनभिज्ञ लोगों को न केवल मंत्र का पाठ ही लिख कर देते, साथ ही उसके नीचे १००० का अंक भी लिख देते, जिसका अर्थ होता कि इस मंत्र का सहस्र बार पाठ अभीष्ट है।

यह फोटो कापी पुस्तक ''नव जागरण के पुरोधा'' ''दयानन्द सरस्वती'' के पृष्ठ 93 की है। इसमें स्पष्ट है कि महर्षि दयानन्द ''गायत्री मंत्र का जाप करने को कहा करते थे''।

➢ **पुस्तक ''महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित्र''**

जिसके लेखक है पं. लेखराम तथा अनुवादक = श्री कविराज रघुनंदन निर्मल, प्रकाशक = आर्यसमाज नयाबांस दिल्ली-6 के पृष्ठ 62 पर लिखा है कि महर्षि दयानन्द अपने चेलों को ''सच्चिदानन्द'' नाम जाप करने को कहता था।

पुस्तक जीवन चरित्र महर्षि दयानन्द सरस्वती के पृष्ठ 62 की फोटो कापी।

६२ जीवनचरित्र-महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

पाखण्ड छोड़कर 'सच्चिदानन्द' नाम जपो—पुजारी ने पूजा छोड़कर डाकखाने में नौकरी करली—शिवदयाल ब्राह्मण पराशरी पुरोहित पुष्कर भूतपूर्व पुजारी मन्दिर श्री ब्रह्माजी ने कहा कि जब स्वामी जी पुष्कर पधारे मैं उन दिनों ब्रह्माजी के मन्दिर में पूजा करता था।

मैं ने पूछा कि स्वयं ईश्वर का जो नाम है वह मुझे बता दीजिये क्योंकि बड़े ब्रह्मा को ही विष्णु आदि कहते हैं। तब स्वामी जी ने कहा कि "सच्चिदानन्द" यही नाम जाप किया करो और नहीं।

➢ **सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास 11 पृष्ठ 263-264 में महर्षि दयानन्द ने कहा है कि नाम जाप करने से कुछ नहीं होता। इससे सिद्ध है कि उन्होंने परमात्मा**

के नाम का जाप भी त्याग दिया था।

➢ देखें फोटो कापी सत्यार्थ प्रकाश समु. 11 पृष्ठ 263-264 कि जिसमें नाम जाप को नकारा है तथा अपना अज्ञान विद्यान पुष्ट किया है कि केवल परमात्मा के गुणों का स्मरण करना चाहिए।

➢ सत्यार्थ प्रकाश समु. 1 पृष्ठ 15 पर तथा यजुर्वेद अध्याय 40 मंत्र 15 के अनुवाद में स्पष्ट किया है कि जिस परमात्मा का नाम ''ओम्'' है उसकी उपासना करें। भावार्थ स्पष्ट है कि महर्षि दयानन्द ''ओम्'' (ॐ) नाम जाप करने के पक्ष में नहीं है। केवल हठयोग करना तथा भांग पीना, हुक्का पीना आदि बकवाद करके जीवन नाश कर गया तथा लाखों भोले अनुयाईयों का जीवन नरक बना गया। मनमाना आचरण करके दयानन्द की क्या दुर्दशा हुई ? जो आप जी ने पढ़ ली। सर्व मानव समाज से प्रार्थना है कि अब तो सम्भलो! करा लो कल्याण समय जा रहा है :-

गरीब, यह संसार समझदा नाहीं, कहता शाम दोपहरे नूं।
गरीबदास यह वक्त जात है, रोवोगे इस पहरे नूं।।

भावार्थ है कि मानव जीवन बार-२ नहीं मिलता। शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचरण करने वाले व्यक्ति का जीवन नष्ट हो जाता है। उदाहरण के लिए ''महर्षि दयानन्द'' जो आप देख चुके हैं। यह मानव जीवन का समय जा रहा है। फिर इस पहरे अर्थात् समय को याद करके दयानन्द की तरह रोया करोगे।

उपरोक्त निर्णायक ज्ञान सन्त रामपाल दास जी महाराज द्वारा दिया गया है। जो एक अवतार ही कर सकता है। इसलिए सन्त रामपाल दास जी इस धरती पर अवतार धार कर जन कल्याण के लिए शास्त्रविधि अनुसार साधना करा रहे हैं। आप भी अविलम्ब प्राप्त करें अपना तथा अपने परिवार व बन्धुओं का भी कल्याण कराऐं।

यजुर्वेद अध्याय 40 मंत्र 15 की फोटो कापी।

वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्तꣳ शरीरम् ।
ओ३म् क्रतो स्मर क्लिबे स्मर कृतꣳ स्मर ॥१५॥

पदार्थः - हे (**क्रतो**) कर्म करने वाले जीव ! तू शरीर छूटते समय (**ओ३म्**) इस नामवाच्य ईश्वर को (**स्मर**) स्मरण कर (**क्लिबे**) अपने सामर्थ्य के लिये परमात्मा और अपने स्वरूप का (**स्मर**) स्मरण कर (**कृतम्**) अपने किये का (**स्मर**) स्मरण कर। इस संस्कार का (**वायुः**) घनञ्जयादिरूप वायु (**अनिलम्**) कारणरूप वायु को, कारणरूप वायु (**अमृतम्**) अविनाशी कारण को धारण करता (**अथ**) इसके अनन्तर (**इदम्**) यह (**शरीरम्**) नष्ट होने वाला सुखादि का आश्रय शरीर (**भस्मान्तम्**) अन्त में भस्म होने वाला होता है ऐसा जानो ॥१५॥

यह फोटो कापी यजुर्वेद अध्याय 40 मंत्र 15 की है जो महर्षि दयानन्द द्वारा अनुवादित है। इसमें स्पष्ट है कि महर्षि दयानन्द ने अनुवाद अनुचित किया है तथा सिद्ध किया है कि ''ओ३म्'' नाम वाच्च अर्थात् जिसका ओम् नाम है उस ईश्वर का स्मरण कर न की ओम् (ॐ) मंत्र का। जबकि मंत्र 15 के मूल पाठ से स्पष्ट है कि =ओ३म् क्रतो स्मर क्लिवे स्मर कृतम् स्मर।

भावार्थ है कि = ॐ नाम का स्मरण (क्रतो) कार्य करते-२ करो (क्लिबे) विशेष श्रद्धा के साथ स्मरण करो तथा मनुष्य जीवन का (कृतम्) मुख्य कर्तव्य जानकर ओ३म नाम का स्मरण करो। यह है यथार्थ भाव यजुर्वेद अध्याय 40 मंत्र 15 का।

➢ महर्षि दयानन्द ओ३म नाम (ॐ नाम) के जाप के पक्ष में नहीं थे अन्य प्रमाण सत्यार्थ प्रकाश समु. 1 पृष्ठ 15 पर भी है। कृप्या देखें फोटो कापी जो नीचे लगी है। इसमें भी स्पष्ट किया है कि ''ओ३म'' जिसका नाम है जिसका नाश कभी नहीं होता उसकी उपासना (हठयोग) करनी चाहिए न कि ''ओ३म'' नाम का जाप।

पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश के समु. 1 पृष्ठ 15 की फोटो कापी।

प्रथमसमुल्लासः १५

'ओम्' आदि नाम सार्थक हैं—जैसे (ओं खं०) **'अवतीत्योम्, आकाशमिव व्यापकत्वात् खम्, सर्वेभ्यो बृहत्वाद् ब्रह्म'** रक्षा करने से (ओम्), आकाशवत् व्यापक होने से (खम्), सबसे बड़ा होने से ईश्वर का नाम ब्रह्म है।।१।।

(ओमित्येत०) ओ३म् जिसका नाम है और जो कभी नष्ट नहीं होता, उसी की उपासना करनी योग्य है, अन्य की नहीं।।२।।

पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश के समु. 11 पृष्ठ 263-264 की फोटो कापी।

एकादशसमुल्लासः २६३

प्रश्न—परमेश्वर निराकार है, वह ध्यान में नहीं आसकता, इसलिये मूर्त्ति का होना अवश्य है। भला कुछ भी नहीं करे तो मूर्त्ति के सामने जाते हैं तब कुछ परमेश्वर का स्मरण करते और नाम लेते हैं।

उत्तर—जब परमेश्वर निराकार है, तब उसकी मूर्त्ति ही नहीं बन सकती। जो मूर्त्ति के देखने से परमेश्वर का स्मरण होवे तो परमेश्वर की बनाई पृथिवी, जल, अग्नि, वनस्पति आदि, रचनायुक्त पृथिवी पहाड़ आदि परमेश्वर—रचित महामूर्त्तियां कि जिन पहाड़ आदि से ये मनुष्यकृत मूर्त्तियां बनती हैं, देखकर परमेश्वर स्मरण क्या नहीं आसकता ? जो किसी दूसरे को देख दूसरे का स्मरण करे, तो जब वह सामने न रहे, तब परमेश्वर को भी भूल जायें और जब परमेश्वर को मनुष्य भूल जाता है तभी वह एकान्त पाकर अन्याय कर लेता है कि यहां मुझको कोई नहीं देखता।

जो मूर्त्ति को न मान परमेश्वर को व्यापक माने तो वह उसके डर से कि मुझको परमेश्वर देखता है, पाप न करे। नामस्मरण से कुछ भी नहीं होता। जैसा कि मिश्री कहने से मुख न मीठा और नीम कहने से कडुवा नहीं होता, किन्तु उनको जीभ से

२६४ सत्यार्थप्रकाशः

चाखने से मीठा वा कडुवा होता है। नाम लेने की तुम्हारी रीति उत्तम नहीं। वह इस प्रकार करना चाहिये—जैसे 'न्यायकारी' ईश्वर का नाम है कि जैसे पक्षपातरहित होकर परमात्मा सब का यथावत् न्याय करता है, वैसे नामों के अर्थों को अपने में धारण करे।

यह फोटो कापी सत्यार्थ प्रकाश के समुल्लास 11 पृष्ठ 263-264 के सम्बंन्धित प्रकरण की है। इनमें महर्षि दयानन्द ने स्पष्ट किया है कि ईश्वर का नाम स्मरण नहीं करना चाहिए केवल परमात्मा के गुणों का स्मरण करना चाहिए।

उपरोक्त प्रमाणों से स्पष्ट हुआ कि महर्षि दयानन्द ओ३म नाम का जाप भी नहीं करता था। यह भी स्पष्ट हुआ कि उनको निश्चय भी नहीं था कि परमात्मा प्राप्ति का मार्ग कौन सा है? इसीलिए किसी को कहता था ''सच्चिदानन्द'' नाम जाप करो, किसी को कहता था, गायत्री मंत्र एक हजार बार जाप करो, किसी को कहता था कि ईश्वर का नाम स्मरण करने से कुछ नहीं होता। इसके परिणामस्वरूप नकली महर्षि दयानन्द की दुर्गति से मृत्यु हुई और अधोगति को प्राप्त हुआ।

''नाम जाप से मोक्ष संभव है या नहीं''

महर्षि दयानंद जी ने स्पष्ट किया कि किसी मंत्र अर्थात् नाम (ॐ, राम आदि-२) से कोई लाभ नहीं होता। उदाहरण भी दिया है कि ''मिश्री'' कहने से मुख मीठा नहीं होता। सुक्ष्मवेद में परमात्मा ने कहा है कि मिश्री कहने से मिश्री का गुण तो प्राप्त नहीं होता। परंतु ''मिश्री'' जिस पदार्थ से मुख मीठा

होता है। उसको प्राप्त करने के लिए ''मिश्री'' नाम जाप करना पड़ेगा। जैसे ''मिश्री'' लेने के लिए बाजार में गए। हम वहां जाकर कहेंगे कि ''मिश्री'' देना तो मिश्री मिलेगी। यदि हम कुछ नाम (मिश्री) बोलेंगे ही नहीं और मिश्री के गुणों का मन-मन में चिंतन करते रहेंगे तो ''मिश्री'' नहीं मिलेगी। मिश्री को प्राप्त करने के लिए मिश्री के नाम का जाप करना ही पड़ेगा। ठीक इसी प्रकार परमात्मा प्राप्ति के लिए राम का नाम जाप करना ही पड़ेगा। तब वह परमात्मा प्राप्त होगा जिसमें वे सर्व गुण हैं जिनके लिए परमात्मा को प्राप्त करना चाहते हैं। परंतु राम का नाम भी वास्तविक हो, यदि वास्तविक नाम नहीं है तो भी परमात्मा प्राप्ति नहीं हो सकती। जैसे ''मिश्री'' के स्थान पर हम मटर-मटर मांगेंगे तो मटर ही मिलेगी मिश्री नहीं। मिश्री के लिए ''मिश्री'' नाम ही उच्चारण करना पड़ेगा।

उदाहरण :- एक ग्रामीण व्यक्ति का लड़का दिल्ली की कॉलोनी ''दरियागंज'' में नौकरी करता था। वहां मकान किराए पर लेकर परिवार सहित रह रहा था। एक दिन उसके पिताजी ने उसके पास मिलने के लिए जाना चाहा। उसका पता था ''दरियागंज, हनुमान मंदिर के सामने म.नं. क ख''। पिताजी ने दिल्ली में जाकर पूछा कि गसागंज कहां पर है? वहां के व्यक्तियों ने कहा कि गसागंज नाम की कोई कॉलोनी नहीं है। सारा दिन भटक कर पिता जी वापिस घर लौट आया। लड़के ने घर जाकर पूछा कि पिताजी आप आए नहीं। मैं आपका इंतजार करता रहा। पिता ने उत्तर दिया कि बेटा मैं सारी दिल्ली पूछता रहा किसी ने गसागंज नहीं बताया। लड़के ने कहा पिता जी आप ने दरियागंज पूछना था, तब मिलता। पिताजी ने कहा कि भाई दरियागंज और गसागंज एक ही तो पदार्थ का नाम है।

विशेष :- हरियाणा प्रान्त के फरीदाबाद जिले के व्यक्ति दलिए (खिचड़ी) को दरिया तथा गसा कहते हैं। इसलिए उस ग्रामीण ने दरियागंज के स्थान पर गसागंज नाम से लड़के का मकान खोजना चाहा, नहीं मिला। इसलिए वह मकान दरियागंज वास्तविक नाम से पुकारने से ही मिलना था। ठीक इसी प्रकार परमात्मा को भी उसके वास्तविक शास्त्रसमन्त नाम से पुकारेंगे, तभी मिलेगा।

राम का वास्तविक नाम कौन-सा है? उसके लिए कृपया पढ़ें पुस्तक ''ज्ञान गंगा''। पुस्तक प्राप्ति के लिए इन संपर्क सूत्रों पर अपना पूरा पता S.M.S. करें। संपर्क सूत्र :- 09992600804, 09992600806, 09992600855

मेरे पूज्य गुरुदेव स्वामी रामदेवानन्द जी महाराज 108 वर्ष की आयु पूर्ण करके सतनाम (दो अक्षर) का स्मरण करते-२ शरीर त्याग गए। मेरे दादा गुरु जी पं. चिदानन्द जी जिनका आश्रम गांव-गोपालपुर में त. खरखौदा, जि. सोनीपत, हरियाणा प्रान्त में है 80 वर्ष की आयु में नाम स्मरण करते-२

बैठे-२ ही शरीर छोड़ गए। मेरे परम पूज्य परमेश्वर कबीर जी 120 वर्ष की लीलामय आयु में सशरीर स्वधाम चले गए।

''गांव बरहाना में मौत का कहर''

गांव बरहाना जि. झज्जर (हरियाणा) में करौंथा काण्ड के पश्चात् केवल दो वर्षों में मौत के कहर के शिकार हुए नौजवानों की सूची।

क्रम	नाम	पिता का नाम	आयु	मौत का कारण
1	राहुल	चाँद	18	मोटर साईकिल दुर्घटना
2	सन्तु	जगते	30	हार्ट अटैक
3	संजीत	जगदीश	17	फाँसी लगाकर
4	मीठी	रामफल	18	जहर खाकर
5	बिजेन्द्र	राजकरण	32	जहर खाकर
6	मकडू	जयपाल	16	करंट लगने से
7	डोली	मेहर सिहँ	30	शराब के कारण
8	बाले	मांगे	35	हार्ट अटैक
9	भुण्डू	गोपी राम	50	कार दुर्घटना
10	ऋषि	करतार	25	कार दुर्घटना
11	नरेश	बलजीत	26	कार दुर्घटना
12	सुण्डल	दीपे	40	ट्रक दुर्घटना
13	राम निवास	सुबे	40	शराब के कारण
14	मंजीत	बन्नी	23	कैंसर
15	सरोज	सतवीर	35	ट्रैक्टर दुर्घटना
16	सुन्दर	मेदू	38	फाँसी लगाकर
17	संजय	सुरजमल	19	हार्ट अटैक
18	अमन	युधवीर	22	जहर खाकर
19	फौजी	रमेश	48	हार्ट अटैक
20	ढीला	रमेश	19	कार दुर्घटना
21	मंदीप	नान्हा	18	कार दुर्घटना
22	अजय	रमेश	18	मोटर साईकिल दुर्घटना
23	बिन्दू	जीतू	18	जहर खाकर
24	राजेश	सुरते	30	फाँसी लगाकर
25	जग्गू	कलेकीराम	38	हार्ट अटैक
26	नान्हा	आन्धा	40	शराब के कारण
27	लीलू	अतर	45	शराब के कारण
28	रणवीर	धूप	45	पेट में इन्फैक्शन
29	बिजेन्द्र	चन्दरूप	32	हार्ट अटैक
30	बिजेन्द्र	राम कुवार	35	शराब के कारण
31	काला	बलजीत	30	मोटर साईकिल दुर्घटना
32	बल्ले	हवा सिहँ	30	मोटर साईकिल दुर्घटना

''गांव करौंथा में मौत का कहर'' - शेष

क्रम	नाम	पिता का नाम	आयु	मौत का कारण
10	मनबीर	मामचंद	50	सल्फॉस की गोली खाकर मरा।
11	कैप्टन नफे सिंह		70	दिल के दौरे से मरा।
12	करण सिंह	शेर सिहं	78	लकवा होकर मरा।
13	सचिन	महाबीर	15	गैस सिलेंडर फटने से मरा इकलौता पुत्र था।
14	दिनेश उर्फ नान्हा	बलबीर	38	रेल के नीचे कटकर मरा।
15	आशीष	फुलकुंवार	17	रेत की भरी ट्राली में टक्कर लगने से मरा।
16	दीपक	मंगत	24	हार्ट अटैक से मरा।
17	राहुल	राजू	23	सल्फॉस की गोली खाकर मरा।
18	राजू	बलबीर	40	सल्फॉस की गोली खाकर मरा।
19	रामनिवास	शिवनारायण	60	कैंसर से मरा।
20	दीपक	टोलू	25	सल्फॉस की गोली खाकर मरा।
21	रणबीर	चंदन	55	कैंसर से मरा।
22	राज	बलवंत	45	सड़क दुर्घटना में मौत हुई।
23	राजीव	करतारा	18	फांसी लगाकर मरा।
24	राधा	मनोज	16	फांसी लगाकर मरा।
25	अजय	संजय	20	पानी में डूबकर मरा।
26	उमेद	मुंशी	72	हार्ट अटैक से मरा।
27	सोमदा	जिले	40	हार्ट अटैक से मरा।
28	सेसा	रामकुमार	25	कैंसर से मरा।
29	मंजीत	भंगू	18	फरसों, चाकूओं से काटकर मार दिया।
30	कप्तान	ईश्वर	45	इसका पांच पुत्रियों पर एक ही तीन साल का पुत्र था। वही बस के नीचे आकर मर गया।

विशेषः- पुस्तक विस्तार के कारण और नहीं लिख रहे हैं, अन्यथा और भी सैंकड़ों प्रमाण हैं। समझदार को चाहिए कि गांव में हो रहे कहर से बचने का उपाय करें। किसी की आत्मा नहीं दुखाऐं। संत रामपाल दास जी महाराज के प्रवचन सुनें। किसी की बातों में आकर अपने कर्म खराब न करें।

धन्यवाद।